

समसामयिकी

सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा + मुख्य परीक्षा + साक्षात्कार की एकीकृत तैयारी के लिए



विशेष आकर्षण

मासिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

नवम्बर

THE HINDU

The Indian EXPRESS
JOURNALISM OF COURAGE

*प्रारंभिक परीक्षा के नवीनतम पैटर्न पर आधारित बहुवैकल्पिक अभ्यास प्रश्न

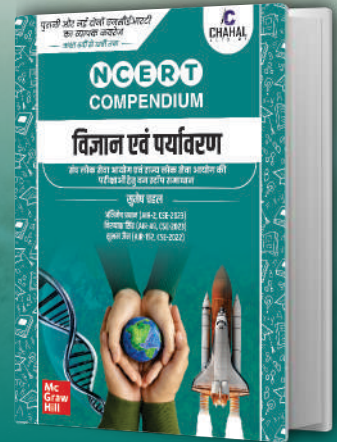
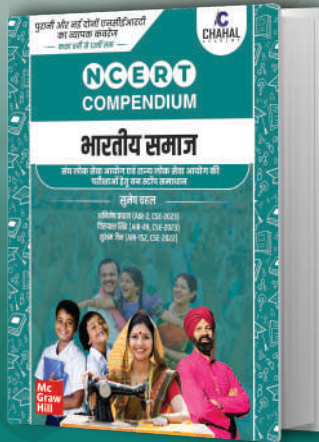
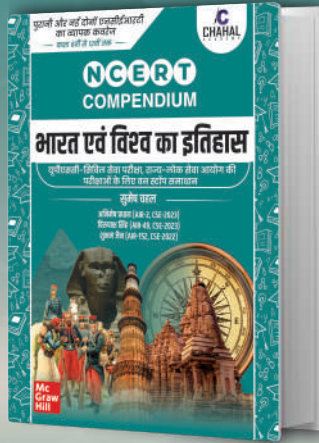
- मार्केट एक्सेस सपोर्ट (MAS) योजना
- समुद्री मत्स्य पालन जनगणना 2025
- 4,000 वर्ष पुराने दिलमुन मंदिर की खोज
- भारत सरकार द्वारा नई श्रम संहिताएं लागू
- भारत-फ्रांस रक्षा सहयोग: हैमर आयुध सामग्री
- रोगाणुरोधी प्रतिरोध 2.0 पर राष्ट्रीय कार्य योजना
- ब्राजील-नेतृत्व वाले TFFF पहल में भारत शामिल

- भारत-रूस रणनीतिक आर्थिक पहल
- वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक - 2025
- संविधान (131वाँ संशोधन) विधेयक, 2025
- भारतीय रेल द्वारा 'आभार' स्टोर को संरक्षण
- ऑनर किलिंग रोकने हेतु प्रस्तावित 'मान्य एक्ट'
- भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)
- भारतीय विश्वविद्यालयों में तीन नवीन डॉ. अंबेडकर पीठ

चहल एकेडमी द्वारा एनसीईआरटी कॉम्पेंडियम

"हमारी एनसीईआरटी कॉम्पेंडियम सीरीज एक ही विषय के लिए विभिन्न कक्षाओं की कई एनसीईआरटी पुस्तकों को कवर करने की समस्या का समाधान करती है। यह कॉम्पेंडियम सीरीज अभ्यर्थियों को कम समय में समग्र एनसीईआरटी को कवर करने में मदद करेगी, साथ ही प्रत्येक इकाई के बाद अभ्यास प्रश्न के माध्यम से अपने प्रदर्शन के स्व-परीक्षण में भी सहायक सिद्ध होगी।"

चहल एनसीईआरटी कॉम्पेंडियम सीरीज की सभी पुस्तकें



CHAHAL ACADEMY
(Chahal Academy Pvt. Ltd.)

www.chahalacademy.com

Follow Us    

अनुक्रमणिका

राज्यव्यवस्था एवं शासन.....1

- संविधान (131वाँ संशोधन) विधेयक, 2025.....1
- एससी/एसटी लाभ व धर्मांतरण सम्बंधी मामला.....2
- राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क.....3
- रक्षा लेखा महानियंत्रक (CGDA).....4
- मतदान का अधिकार बनाम मतदान की स्वतंत्रता.....6
- एआई जनरेटेड कंटेंट रेगुलेशन हेतु आईटी नियम में संशोधन.....8
- ऐतिहासिक श्रम कानून सुधार : नई श्रम संहिताएँ लागू.....9
- संविधान दिवस - 2025.....10

अंतरराष्ट्रीय संबंध.....12

- उच्च समुद्री संधि (हाई सी ट्रीटी).....12
- भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय संबंध.....13
- भारत-ब्राज़ील : मर्कोसुर व्यापार समझौते का विस्तार.....14
- भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC).....15
- भारत-अमेरिका प्रमुख रक्षा साझेदारी.....16
- भारत और आसियान : आर्थिक एवं सुरक्षा सहयोग.....17
- भारत-रूस रणनीतिक आर्थिक पहल.....19
- मंगोलिया की पहली तेल रिफाइनरी.....20
- आयनी एयरबेस में भारत का संचालन समाप्त.....22
- भारत-कनाडा : व्यापार व निवेश पर मंत्रीस्तरीय संवाद.....23
- भारत-स्लोवेनिया : संयुक्त व्यापार व आर्थिक सहयोग समिति.....24
- भारत-वियतनाम : रक्षा नीति संवाद (DPD).....25
- भारत-ऑस्ट्रेलिया : व्यापक द्विपक्षीय सुरक्षा समझौता.....26
- G20 जोहान्सबर्ग शिखर सम्मेलन.....27

अर्थव्यवस्था एवं कृषि29

- समुद्री मत्स्य पालन जनगणना - 2025.....29
- भारत का हथकरघा एवं हस्तशिल्प उद्योग.....30
- रोजगार का संकट (एम्प्लॉयबिलिटी क्राइसिस).....31
- भारत का सेवा क्षेत्र.....32
- 8वाँ केंद्रीय वेतन आयोग.....34
- भारत की मजबूत जीडीपी वृद्धि दर.....35
- राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण (NIC) - 2025.....36
- आरबीआई बुलेटिन: समष्टि-आर्थिक आधारों की मजबूती.....37
- निजी क्षेत्र के विस्तार की न्यूनतम वृद्धि.....37
- मार्केट एक्सेस सपोर्ट (MAS) योजना.....38
- सेबी द्वारा व्यापक सुधारों की घोषणा.....40

पर्यावरण एवं भूगोल42

- ताल ज्वालामुखी (फिलिपीन्स).....42

- दुर्लभ धारीदार लकड़बग्घा (स्ट्राइप्ड हायना).....42
- बीवा झील (जापान).....44
- कुनमिंग जैव विविधता कोष (KBF).....44
- भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा क्रांति को नया रूप दिया.....45
- ब्राज़ील-नेतृत्व वाले TFFF पहल में भारत शामिल.....47
- आइबेरियन लाईनक्स.....48
- दिल्ली-स्थानीय स्थलाकृति द्वारा वायु प्रदूषण में योगदान.....49
- डब्ल्यूएमओ की 'अर्ली वार्निंग्स फॉर ऑल' रिपोर्ट.....50

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी.....53

- जुवेनाइल हंटिंगटन डिजीज.....53
- टाइफाइड कांजुगेट वैक्सीन (TCV).....54
- क्रॉनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (COPD).....55
- घटते डिम्बग्रंथि रिजर्व (डिमिनिशिंग ओवेरियन रिजर्व).....57
- रोगाणुरोधी प्रतिरोध 2.0 पर राष्ट्रीय कार्य योजना.....58
- विश्व का सबसे छोटा स्वायत्त रोबोट.....59
- जेमिनिड उल्का बौछार.....60
- नई मंगल मिशन ब्लूप्रिंट.....60

रक्षा एवं सुरक्षा.....63

- दिल्ली कार विस्फोट 2025.....63
- न्योमा एयरबेस का परिचालन.....64
- भारत के बम निरोधक तंत्र को सशक्त बनाना.....66
- भारत-फ्रांस रक्षा सहयोग: हैमर आयुध सामग्री.....67
- अभ्यास 'त्रिशूल'.....68
- चाणक्य डिफेंस डायलॉग (CDD) - 2025.....69
- भारत की विमानन विजन - 2047.....70
- आईएनएस माहे : स्वदेशी पनडुब्बी-रोधी युद्ध पोत.....71

सामाजिक मुद्दे.....72

- राजस्थान - बाल श्रम कानून में सुधार.....72
- भारत में भविष्य के कैसर का बोझ.....73
- कर्नाटक - मासिक धर्म अवकाश नीति.....74
- छत्तीसगढ़ - माओवादी कैडरों का आत्मसमर्पण.....75
- केरल : अति-निर्धनता का उन्मूलन करने वाला भारत का पहला राज्य.....75
- मानसिक स्वास्थ्य (मेंटल हेल्थ) की समझ.....76
- भारत सरकार द्वारा नई श्रम संहिताएँ लागू.....77
- ऑनर किलिंग रोकने हेतु प्रस्तावित 'मान्य एक्ट'.....79

इतिहास एवं संस्कृति.....81

- अरुणाचलेश्वर मंदिर (तमिलनाडु).....82
- भारत के शाही राज्यों का संग्रहालय.....82

- रम्माण उत्सव (उत्तराखंड).....82
- जनजातीय गौरव वर्ष पखवाड़ा समारोह.....84
- भारत में शास्त्रीय भाषाओं की सूची में विस्तार.....85
- 4,000 वर्ष पुराने दिलमुन मंदिर की खोज.....86
- दीपावली : यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल...86
- फूल वालों की सैर महोत्सव.....87

सरकारी योजनाएं.....89

- Tex-RAMPS योजना89
- भारतीय रेल द्वारा 'आभार' स्टोर को संरक्षण.....90
- विशिष्ट इस्पात प्रोत्साहन योजना.....90
- 'कोयला शक्ति' - स्मार्ट कोल एनालिटिक्स डैशबोर्ड.....91

महत्वपूर्ण रिपोर्ट92

- भारत में धन का अंतर वृद्धि.....92
- ईएटी-लैसेट रिपोर्ट - 2025.....93
- हेनली पासपोर्ट इंडेक्स - 2025.....94
- वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक - 2025.....95

- वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI) - 2025.....96
- जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI) - 2026.....97

समाचारों में चर्चित प्रमुख व्यक्तित्व.....100

- सरदार वल्लभभाई पटेल.....100
- बंकिम चंद्र चटर्जी.....101
- महर्षि दयानंद सरस्वती.....102
- रानी चेत्रम्मा.....103

विविध समाचार.....105

- भारतीय विश्वविद्यालयों में तीन नवीन डॉ. अंबेडकर पीठ.....105
- अंतर्राष्ट्रीय पर्पल फेस्ट.....105
- समाचारों में चर्चित स्थल - विश्व.....106

'द हिन्दू' एवं 'इंडियन एक्सप्रेस' से दैनिक अभ्यास प्रश्न.....109

- दैनिक वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्न.....109
- उत्तर कुंजी.....122

राजव्यवस्था एवं शासन

संविधान (131वाँ संशोधन) विधेयक, 2025

चर्चा में क्यों: हाल ही में, भारत सरकार ने संसद के शीतकालीन सत्र में संविधान (131वाँ संशोधन) विधेयक, 2025 प्रस्तुत करने का इरादा घोषित किया।

मुख्य बिंदु

- यह विधेयक भारतीय संविधान के अनुच्छेद 240 के अंतर्गत चंडीगढ़ को शामिल करने का प्रस्ताव करता है, जिससे राष्ट्रपति को चंडीगढ़ के लिए सीधे नियम बनाने और कानून बनाने की शक्ति मिलेगी, जैसे अन्य ऐसे केंद्र शासित प्रदेशों के लिए होती है जिनकी अपनी विधानसभाएँ नहीं हैं।

अन्य विवरण

- प्रस्ताव:** संविधान (131वाँ संशोधन) विधेयक, 2025 का उद्देश्य चंडीगढ़ को संविधान के अनुच्छेद 240 के दायरे में लाना है।
- अनुच्छेद 240:** भारत के राष्ट्रपति को उन केंद्र शासित प्रदेशों के लिए नियम बनाने का अधिकार देता है जिनकी अपनी विधानसभाएँ नहीं हैं, और ऐसे नियमों को विधि (कानून) का बल प्राप्त होता है।
- प्रशासनिक परिवर्तन:** इस कदम से चंडीगढ़ के लिए एक स्वतंत्र प्रशासक या उपराज्यपाल की नियुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है, जिससे वर्तमान व्यवस्था में बदलाव होगा, जहाँ पंजाब के राज्यपाल चंडीगढ़ के प्रशासक के रूप में कार्य करते हैं।
- राजनीतिक विरोध:** पंजाब की राजनीतिक पार्टियों ने इस प्रस्ताव का कड़ा विरोध किया है और इसे पंजाब के हितों के विरुद्ध बताया है।
- सरकारी स्पष्टीकरण:** गृह मंत्रालय (MHA) ने स्पष्ट किया है कि अभी कोई अंतिम निर्णय नहीं लिया गया है और वर्तमान में इस विधेयक को आगामी सत्र में लाने का कोई इरादा नहीं है।

चंडीगढ़ की वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था

- चंडीगढ़ एक केंद्र शासित प्रदेश है और पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 के तहत पंजाब और हरियाणा की संयुक्त राजधानी के रूप में कार्य करता है।
- वर्तमान में पंजाब के राज्यपाल चंडीगढ़ के प्रशासक के रूप में अतिरिक्त प्रभार संभालते हैं, जबकि शहर का प्रशासन केंद्र सरकार के अधीन है।

अनुच्छेद 240

- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 240 राष्ट्रपति को उन केंद्र शासित प्रदेशों के लिए विनियम (नियम) बनाने की अनुमति देता है जिनकी

अपनी विधानसभाएँ नहीं हैं, जिससे ऐसे क्षेत्रों में कार्यपालिका को अर्ध-विधायी शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

- उदाहरणों में अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह, लक्षद्वीप, दादरा एवं नगर हवेली तथा दमन एवं दीव, और पुडुचेरी (जब वहाँ विधानसभा कार्यरत न हो) शामिल हैं।

महत्व

- केंद्र शासित प्रदेशों का शासन:** यदि यह संशोधन पारित होता है, तो चंडीगढ़ की विधायी व्यवस्था को अनुच्छेद 240 के अंतर्गत लाया जाएगा, जहाँ राष्ट्रपति बिना किसी स्थानीय विधानसभा के सीधे कानून बनाते हैं।
- संघीय प्रभाव:** शासन संरचना में कोई भी परिवर्तन शक्ति संतुलन को केंद्र की ओर झुका हुआ माना जा सकता है, विशेषकर चंडीगढ़ की विशिष्ट द्वि-राज्यीय भूमिका को देखते हुए।
- पूर्व उदाहरण:** यह अन्य केंद्र शासित प्रदेशों या प्रशासनिक व्यवस्थाओं के लिए एक मिसाल बन सकता है, जिससे भविष्य में केंद्र शासित प्रदेशों के शासन से जुड़े विमर्श प्रभावित हो सकते हैं।

आगे की राह

- परामर्श प्रक्रिया:** संवैधानिक बदलावों को अंतिम रूप देने से पहले पंजाब और हरियाणा सरकारों, संबंधित पक्षों तथा नागरिक समाज से परामर्श किया जाए।
- स्पष्ट संवाद:** भ्रम और गलतफहमी से बचने के लिए उद्देश्यों और सुरक्षा प्रावधानों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाए।
- कानूनी एवं नीतिगत प्रभाव अध्ययन:** विधेयक को पुनः प्रस्तुत करने से पहले संवैधानिक, कानूनी और प्रशासनिक प्रभावों का आकलन किया जाए।
- संघीय सिद्धांतों की रक्षा:** यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी संशोधन संघवाद और स्वायत्तता की भावना का सम्मान करे, साथ ही प्रशासनिक एकरूपता भी बनाए रखे।

निष्कर्ष

प्रस्तावित संविधान (131वाँ संशोधन) विधेयक, 2025, चंडीगढ़ को अनुच्छेद 240 के अंतर्गत लाने का प्रयास करता है, जो संघीय शासन और क्षेत्रीय पहचान के बीच तनाव को उजागर करता है। यद्यपि इसका उद्देश्य प्रशासन को सरल बनाना है, लेकिन विशेष रूप से पंजाब से राजनीतिक विरोध यह दर्शाता है कि चंडीगढ़ का मुद्दा संवेदनशील है। अतः किसी भी संशोधन से पहले सावधानीपूर्वक परामर्श और संवैधानिक स्पष्टता अत्यंत आवश्यक है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. चंडीगढ़ और अनुच्छेद 240 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

1. अनुच्छेद 240 राष्ट्रपति को उन केंद्र शासित प्रदेशों के लिए नियम बनाने की अनुमति देता है जिनकी अपनी विधानसभाएँ नहीं हैं।
2. वर्तमान में चंडीगढ़ का प्रशासन पंजाब के राज्यपाल द्वारा किया जाता है।
3. चंडीगढ़ को अनुच्छेद 240 के अंतर्गत लाने से केंद्र सरकार को स्वतंत्र प्रशासक की नियुक्ति की अनुमति मिल जाती है।

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

एससी/एसटी लाभ व धर्मांतरण सम्बंधी मामला

चर्चा में क्यों: हाल ही में, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने धर्म परिवर्तन करने वाले व्यक्तियों द्वारा अनुसूचित जाति(SC)/अनुसूचित जनजाति (ST)/ओबीसी लाभों के फर्जी दावों से जुड़े व्यापक मुद्दों पर संज्ञान लिया है और ऐसे कृत्यों को "संविधान के साथ धोखाधड़ी" बताया है।

मुख्य विवरण

- उच्च न्यायालय ने कहा कि केवल आरक्षण का लाभ लेने के उद्देश्य से धर्म परिवर्तन करना असंवैधानिक है और यह संविधान के साथ धोखा है।
- केंद्र सरकार के कैबिनेट सचिव, उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव तथा जिलाधिकारियों को ऐसे फर्जी दावों को रोकने के लिए समयबद्ध कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए।
- न्यायालय ने संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 का उल्लेख किया, जिसके अनुसार केवल हिंदू, सिख और बौद्ध धर्म के अनुयायियों को ही अनुसूचित जाति माना जा सकता है।
- न्यायालय ने सरकार को आरक्षण और धार्मिक पहचान से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों के पालन को सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

मामले का विवरण

- यह मामला उत्तर प्रदेश के महाराजगंज ज़िले से संबंधित है, जहाँ आरोपी पर एक सभा में हिंदू देवताओं के विरुद्ध आपत्तिजनक भाषा का प्रयोग करने का आरोप है।
- आरोपी पर यह भी आरोप है कि वह ईसाई धर्म में परिवर्तित होने के बावजूद आरक्षण का लाभ ले रहा था और न्यायालय में स्वयं को हिंदू बताता रहा।

कानूनी ढांचा

- भारतीय दंड संहिता (IPC) — धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने और वैमनस्य फैलाने से संबंधित प्रावधान।
- संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 — अनुसूचित जाति का दर्जा केवल हिंदू, सिख और बौद्ध धर्मावलंबियों तक सीमित।
- सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय — जिनमें यह स्पष्ट किया गया है कि धर्म परिवर्तन के बाद आरक्षण का लाभ बनाए रखना असंवैधानिक है।

आलोचना

- **अल्पसंख्यक अधिकारों से जुड़ी चिंताएँ:** धर्म परिवर्तन को आरक्षण के दुरुपयोग से जोड़ना विवादास्पद हो सकता है और यदि प्रशासनिक सुरक्षा उपाय न हों तो इससे धार्मिक अल्पसंख्यकों को कलंकित किए जाने की आशंका रहती है।

महत्त्व

- **कानूनी एवं संवैधानिक महत्त्व:** यह स्पष्ट करता है कि आरक्षण लाभ किसे वैध रूप से मिल सकता है तथा संवैधानिक और वैधानिक प्रावधानों का किस प्रकार प्रयोग किया जाना चाहिए। साथ ही यह कार्यपालिका द्वारा अनुपालन के लिए प्रक्रियात्मक अपेक्षाएँ निर्धारित करता है।
- **सामाजिक-राजनीतिक महत्त्व:** सकारात्मक भेदभाव (आरक्षण) योजनाओं के दुरुपयोग को लेकर जन चिंताओं को संबोधित करता है। यह धार्मिक स्वतंत्रता और विधि के समक्ष समता से जुड़े विमर्श को प्रभावित करता है।

चुनौतियाँ

- **प्रशासनिक समन्वय:** यह सुनिश्चित करना कि जिलाधिकारी बिना पक्षपात या विलंब के सत्यापन की प्रक्रिया पूरी करें।
- **संवेदनशील कार्यान्वयन:** धार्मिक भाषण या वास्तविक धर्मांतरण के मामलों में कानूनी प्रावधानों के दुरुपयोग को रोकना। (यह संबंधित अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जुड़े न्यायिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।)
- **सार्वजनिक धारणा प्रबंधन:** कानूनी कार्रवाई के दौरान सांप्रदायिक धुवीकरण से बचना, विशेषकर जब मामला धार्मिक भावनाओं से जुड़ा हो।

प्रभाव/परिणाम

- **कानूनी मिसाल:** यह पुनः स्थापित करता है कि संवेदनशील मामलों में यदि जाँच और साक्ष्य मज़बूत हों तो आरोप टिक सकते हैं।
- **प्रशासनिक सुधार:** आरक्षण की सही पहचान सुनिश्चित करने हेतु सत्यापन अभियानों को बढ़ावा मिलने की संभावना।
- **सार्वजनिक विमर्श:** अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सार्वजनिक व्यवस्था और धार्मिक भावनाओं के सम्मान के बीच संतुलन पर चर्चा को प्रोत्साहन।

सुझाव/आगे की राह

- **धार्मिक भाषण पर स्पष्ट दिशा-निर्देश:** विधि आयोग या संसद को मौलिक अधिकारों से समझौता किए बिना अभिव्यक्ति की सीमाएँ स्पष्ट करनी चाहिए।
- **संतुलित आरक्षण नीति का क्रियान्वयन:** धार्मिक पहचान के संदर्भ में आरक्षण मानकों की पारदर्शी समीक्षा।
- **प्रशासनिक क्षमता निर्माण:** मजिस्ट्रेटों और पुलिस को धार्मिक एवं धर्मांतरण से जुड़े मामलों के संवेदनशील निपटारे का प्रशिक्षण।
- **जन जागरूकता अभियान:** नागरिकों को अभिव्यक्ति की कानूनी सीमाओं, धर्मांतरण के अधिकार और आरक्षण पात्रता के बारे में जागरूक करना।

निष्कर्ष

उच्च न्यायालय का यह आदेश आरक्षण से जुड़े संवैधानिक संरक्षणों तथा धर्म से संबंधित कानूनी प्रावधानों की पवित्रता को रेखांकित करता है। साथ ही, यह धार्मिक भावनाओं से जुड़े मामलों में विधि के शासन की पुनः पुष्टि करता है। यह निर्णय जहाँ एक ओर फर्जी दावों पर सख्त निगरानी की आवश्यकता को दर्शाता है, वहीं दूसरी ओर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और संवेदनशील प्रशासन जैसे व्यापक प्रश्न भी उठाता है। यह स्पष्ट करता है कि आस्था से जुड़े मामलों में कानूनी हस्तक्षेप अत्यंत संतुलित और विवेकपूर्ण होना चाहिए।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. धार्मिक भावनाओं से जुड़े मामलों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा और विस्तार पर भारतीय न्यायपालिका की भूमिका का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। हाल के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के उस आदेश के संदर्भ में उत्तर दीजिए, जिसमें हिंदू देवताओं का अपमान करने के आरोपी के विरुद्ध दायर आरोपपत्र को निरस्त करने से इनकार किया गया। (15 अंक / 250 शब्द)

राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क (NBF)

चर्चा में क्यों: इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क (NBF) शुरू किया है, जो सार्वजनिक सेवाओं और शासन में ब्लॉकचेन को अपनाने के लिए एक एकीकृत, सुरक्षित और विस्तार योग्य ढांचा प्रदान करता है।

भारत के लिए ब्लॉकचेन का महत्व

- ब्लॉकचेन एक वितरित और एन्क्रिप्टेड लेजर तकनीक है, जो बिना किसी केंद्रीय मध्यस्थ के स्थायी रूप से सत्यापित अभिलेख बनाए रखती है — इससे डेटा में छेड़छाड़ की संभावना कम होती है और पारदर्शिता बढ़ती है।

- पारंपरिक केंद्रीकृत प्रणालियों की तुलना में ब्लॉकचेन की विकेंद्रीकृत संरचना धोखाधड़ी को कम करती है, अनधिकृत बदलाव को रोकती है और डिजिटल लेन-देन व अभिलेखों में विश्वास बढ़ाती है।
- डिजिटल इंडिया के तहत बढ़ते डिजिटलीकरण और ऑनलाइन सार्वजनिक सेवाओं के विस्तार के साथ, भारत सुरक्षित डिजिटल अवसंरचना के माध्यम से शासन प्रणाली को आधुनिक बनाने और नागरिक-केंद्रित सेवा वितरण को सुदृढ़ करने का लक्ष्य रखता है।

राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क (NBF) के घटक

NBF की संरचना कई प्रमुख घटकों से बनी है, जिनका उद्देश्य विभिन्न प्रकार के अनुप्रयोगों को सक्षम बनाना है:

- **विश्वास्य ब्लॉकचेन स्टैक:** यह एक स्वदेशी, मॉड्यूलर ब्लॉकचेन स्टैक है जो सरकार और उद्यमों को ब्लॉकचेन-एज़-ए-सर्विस (BaaS) प्रदान करता है, जिससे अलग से अवसंरचना बनाने की आवश्यकता नहीं होती। इसे भुवनेश्वर, पुणे और हैदराबाद स्थित NIC डेटा केंद्रों में होस्ट किया गया है ताकि वितरित लचीलापन और विस्तारशीलता सुनिश्चित की जा सके।
- **NBF लाइब्रेरी (Sandbox):** स्टार्टअप, शिक्षाविदों और नवप्रवर्तकों के लिए एक परीक्षण वातावरण, जहाँ वे ब्लॉकचेन आधारित उपयोग मामलों का विकास कर सकते हैं। इसमें डिजिटल प्रमाणपत्रों और आपूर्ति श्रृंखला समाधानों के लिए पूर्व-निर्मित टेम्पलेट उपलब्ध हैं।
- **प्रमाणिक (Pramaanik):** एक ब्लॉकचेन आधारित समाधान जो मोबाइल अनुप्रयोगों की प्रामाणिकता की जाँच करता है तथा दुर्भावनापूर्ण ऐप्स और साइबर धोखाधड़ी से निपटने में सहायता करता है।
- **राष्ट्रीय ब्लॉकचेन पोर्टल:** यह एक केंद्रीय मंच है जो मानकीकरण, विभिन्न क्षेत्रों के बीच सहयोग और सरकार व उद्योग में ब्लॉकचेन तकनीक को रणनीतिक रूप से अपनाने को बढ़ावा देता है।

सार्वजनिक सेवा रूपांतरण सम्बंधी ब्लॉकचेन उपयोग मामले

भारत की ब्लॉकचेन रणनीति पहले से ही शासन और सेवा वितरण में ठोस परिणाम दे रही है। इसके प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं:

1. **प्रमाणपत्र एवं दस्तावेज़ श्रृंखला:** केंद्र और राज्य सरकारें शैक्षिक प्रमाणपत्र, जाति प्रमाणपत्र, आय प्रमाणपत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, जन्म/मृत्यु प्रमाणपत्र आदि को ब्लॉकचेन पर जारी और संग्रहीत कर रही हैं। अक्टूबर 2025 तक 34 करोड़ से अधिक दस्तावेज़ों का सुरक्षित सत्यापन किया जा चुका है।
2. **लॉजिस्टिक्स श्रृंखला:** ब्लॉकचेन का उपयोग आपूर्ति श्रृंखला में वस्तुओं की वास्तविक समय में निगरानी के लिए किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, कर्नाटक की औषधि आपूर्ति प्रणाली (Aushadha) में दवाओं की निर्माता से अस्पताल तक की पूरी आवाजाही दर्ज की जाती है, जिससे गुणवत्ता सुनिश्चित होती है और नकली दवाओं पर रोक लगती है।

- 3. न्यायपालिका और ICJS:** न्यायिक श्रृंखला के अंतर्गत न्यायालयी आंकड़ों का सुरक्षित और समय-चिह्नित भंडारण किया जाता है। अंतर-संचालनीय आपराधिक न्याय प्रणाली (ICJS) के साथ एकीकरण के माध्यम से 39,000 से अधिक दस्तावेजों का सत्यापन किया जा चुका है, जिससे न्यायिक डेटा पर भरोसा बढ़ा है।
- 4. संपत्ति श्रृंखला:** ब्लॉकचेन संपत्ति लेन-देन के अपरिवर्तनीय अभिलेख सुरक्षित करता है, जिससे स्वामित्व इतिहास, अधिकारों और दायित्वों का सत्यापन संभव होता है। इससे विवाद कम होते हैं और भूमि लेन-देन की प्रक्रिया तेज होती है। अब तक 34 करोड़ से अधिक संपत्ति दस्तावेजों का सत्यापन ब्लॉकचेन के माध्यम से किया जा चुका है।

पारितंत्र आधारित समर्थन एवं रणनीतिक साझेदारियाँ

- **ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी में उत्कृष्टता केंद्र (CoE):** राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (NIC) में स्थापित यह केंद्र परामर्श, प्रशिक्षण और पायलट परियोजनाओं के लिए सहायता प्रदान करता है, जिसमें ओपन-सोर्स औद्योगिक प्लेटफॉर्म का उपयोग किया जाता है।
- **नियामक एकीकरण:** भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (TRAI) एसएमएस संदेशों की एंड-टू-एंड ट्रेकिंग के लिए ब्लॉकचेन का उपयोग कर रहा है, ताकि स्पैम पर नियंत्रण और अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके।
- **वित्तीय पायलट परियोजनाएँ:** भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) डिजिटल रुपया (e₹) के पायलट परीक्षण कर रहा है, जिससे ब्लॉकचेन आधारित त्वरित भुगतान & लेन-देन की पारदर्शिता प्रदर्शित होती है।
- **पूंजी बाज़ार:** नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSDL) ने निवेशक रिकॉर्ड और परिसंपत्ति ट्रेकिंग में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए ब्लॉकचेन आधारित डिबेंचर अनुबंध निगरानी प्रणाली शुरू की है।

मानव संसाधन एवं कौशल विकास

सरकार ने ब्लॉकचेन विशेषज्ञता विकसित करने हेतु व्यापक क्षमता निर्माण कार्यक्रम भी शुरू किए हैं -

- हजारों सरकारी अधिकारियों के लिए कौशल प्रशिक्षण।
- **फिनटेक व ब्लॉकचेन डेवेलपमेंट में पीजी डिप्लोमा (PG-DFBD):** 900 घंटे का पाठ्यक्रम, जिसमें ब्लॉकचेन, फिनटेक, एआई/एमएल और साइबर सुरक्षा शामिल हैं।
- छात्रों और नव-प्रवेशी पेशेवरों के लिए **BLEND ऑनलाइन पाठ्यक्रम**।
- **FutureSkills PRIME पहल:** अत्याधुनिक तकनीकों, विशेषकर ब्लॉकचेन, में आईटी कार्यबल को दक्ष बनाने के लिए।

आगे की राह

भारत का राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क विश्वसनीय डिजिटल शासन की दिशा में एक दीर्घकालिक रणनीतिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

यह केवल प्रयोगात्मक परियोजनाओं तक सीमित न रहकर प्रमाणन, न्याय, लॉजिस्टिक्स, संपत्ति और वित्तीय सेवाओं जैसे क्षेत्रों में व्यावहारिक अनुप्रयोगों को बढ़ावा दे रहा है। नवाचार, नियामकीय समन्वय और मानव संसाधन विकास को प्रोत्साहित करके भारत स्वयं को उत्तरदायी और विस्तार योग्य ब्लॉकचेन अपनाने में वैश्विक अग्रणी के रूप में स्थापित कर रहा है—जिससे अधिक सुरक्षित, पारदर्शी और डिजिटल रूप से सशक्त शासन व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न भारत के राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क (NBF) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) द्वारा प्रारंभ किया गया है।
2. विश्वास्य ब्लॉकचेन स्टैक, NIC डेटा केंद्रों के माध्यम से ब्लॉकचेन-एज़-ए-सर्विस (BaaS) प्रदान करता है।
3. प्रामाणिक (Praamaanik) मोबाइल अनुप्रयोगों की प्रामाणिकता सत्यापित करने हेतु एक ब्लॉकचेन आधारित मंच है।
4. राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क केवल क्रिप्टोकॉरेसी से संबंधित अनुप्रयोगों तक सीमित है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 1 और 4
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क (NBF) भारत में डिजिटल शासन को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके उद्देश्यों, प्रमुख विशेषताओं तथा पारदर्शिता और सेवा वितरण पर इसके संभावित प्रभावों की चर्चा कीजिए। साथ ही, इसके कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियों की समीक्षा करते हुए आगे की राह सुझाइए। (15 अंक / 250 शब्द)

रक्षा लेखा महानियंत्रक (CGDA)

चर्चा में क्यों: श्री विश्वजीत सहाय ने 1 नवम्बर 2025 को रक्षा लेखा महानियंत्रक (CGDA) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

रक्षा लेखा महानियंत्रक (CGDA) के बारे में

- रक्षा लेखा महानियंत्रक (CGDA), रक्षा लेखा विभाग (Defence Accounts Department – DAD) के प्रमुख होते हैं, जो रक्षा मंत्रालय (MoD) के अंतर्गत कार्य करता है।
- CGDA की भूमिका भारत के रक्षा व्यय में वित्तीय शुचिता, जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

श्री विश्वजीत सहाय के बारे में

- वे 1990 बैच के भारतीय रक्षा लेखा सेवा (IDAS) के अनुभवी अधिकारी हैं और औपचारिक रूप से रक्षा लेखा महानियंत्रक (CGDA) के पद पर नियुक्त हुए हैं, जो रक्षा लेखा विभाग में सर्वोच्च पद है।
- उन्हें रक्षा वित्त एवं सार्वजनिक प्रशासन में तीन दशकों से अधिक का अनुभव प्राप्त है।
- उन्होंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग में अतिरिक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, भारी उद्योग विभाग में संयुक्त सचिव तथा रक्षा मंत्रालय के अधिग्रहण विंग में वित्त प्रबंधक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है।
- रक्षा लेखा विभाग में उनके पूर्व दायित्वों में प्रधान रक्षा लेखा नियंत्रक (पेंशन), प्रयागराज, संयुक्त CGDA आदि पद शामिल हैं।
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (यूके) तथा जॉर्ज सी. मार्शल यूरोपीय सुरक्षा अध्ययन केंद्र, जर्मनी में प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

संगठनात्मक स्थिति

- CGDA, भारतीय रक्षा लेखा सेवा (IDAS) से संबंधित एक वरिष्ठ सिविल सेवक होता है।
- यह पद रक्षा मंत्रालय के कार्यकारी नियंत्रण के अंतर्गत कार्य करता है, न कि किसी संवैधानिक या वैधानिक निकाय के रूप में।
- यह व्यवस्था वित्तीय निगरानी के माध्यम से सेना पर नागरिक नियंत्रण को सुदृढ़ करती है।

कार्य एवं दायित्व

1. वित्तीय लेखांकन

- ✓ थल सेना, नौसेना और वायु सेना के खातों का रख-रखाव
- ✓ आयुध कारखानों तथा रक्षा प्रतिष्ठानों के लेखे
- ✓ संसद की स्वीकृति हेतु रक्षा व्यय का संकलन

2. आंतरिक लेखा-परीक्षा

- ✓ रक्षा व्यय का आंतरिक लेखा-परीक्षण करना
- ✓ वित्तीय नियमों और प्रक्रियाओं के अनुपालन को सुनिश्चित करना
- ✓ वित्तीय अनियमितताओं को रोकने के लिए निवारक तंत्र के रूप में कार्य करना

3. रक्षा पेंशन

- ✓ सेवा पेंशन, पारिवारिक पेंशन एवं दिव्यांग पेंशन का प्रशासन और वितरण
- ✓ वन रैंक वन पेंशन (OROP) जैसी पेंशन योजनाओं का क्रियान्वयन

4. वित्तीय परामर्श

- ✓ रक्षा सेवाओं, अंतर-सेवा संगठनों तथा अधिग्रहण एवं खरीद प्रभागों को वित्तीय परामर्श प्रदान करना

- ✓ रक्षा परियोजनाओं की लागत समीक्षा और वित्तीय जांच में सहायता करना

CGDA का महत्व

- उच्च रक्षा व्यय:** भारत का रक्षा बजट विश्व में सबसे बड़े बजटों में से एक है, जिसके लिए मजबूत वित्तीय प्रबंधन आवश्यक है।
- बढ़ती पेंशन भार:** रक्षा पेंशन, कुल रक्षा व्यय का एक बड़ा हिस्सा है।
- खरीद प्रक्रिया की जटिलता:** आधुनिक रक्षा खरीद में दीर्घकालिक अनुबंध और विदेशी आपूर्तिकर्ता शामिल होते हैं।
- संसदीय जवाबदेही:** CGDA संसद को सटीक और पारदर्शी वित्तीय जानकारी उपलब्ध कराता है।

चुनौतियाँ

1) बढ़ती पेंशन देनदारियाँ

- ✓ सेवानिवृत्त कर्मियों की संख्या में वृद्धि
- ✓ राजकोषीय स्थिरता को लेकर चिंताएँ

2) जटिल खरीद पारिस्थितिकी तंत्र

- ✓ बहु-विक्रेता अनुबंध
- ✓ प्रौद्योगिकी-आधारित रक्षा प्रणालियाँ

3) डिजिटल परिवर्तन

- ✓ पूर्णतः डिजिटल लेखांकन और लेखा-परीक्षा प्रणालियों की आवश्यकता
- ✓ साइबर सुरक्षा से जुड़ी चिंताएँ

4) समन्वय से जुड़ी समस्याएँ

- ✓ सशस्त्र बलों की परिचालन आवश्यकताओं और वित्तीय अनुशासन के बीच संतुलन बनाना

सुधार एवं पहलें

- एकीकृत वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (IFMS) की शुरुआत
- डिजिटल माध्यमों से पेंशन प्रक्रिया को सरल बनाना
- रक्षा लेखा कर्मियों के क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण पर जोर

अन्य समुत्पन्न पहलें

व्यापक संदर्भ में, भारत सरकार नेतृत्व और डिजिटल पहलों के माध्यम से संस्थागत ढांचे को सुदृढ़ कर रही है। उदाहरणस्वरूप:

- **PIB फैक्ट चेक इकाई का विस्तार:** सरकारी नीतियों और रक्षा मामलों से जुड़ी गलत सूचनाओं से निपटना।
- **सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन सुधार:** राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस प्रभाग की भागीदारी के साथ विभिन्न मंत्रालयों में सुधार।
- **चाणक्य रक्षा संवाद 2025:** नीति संवाद और रणनीतिक विमर्श को बढ़ावा देने हेतु आयोजित पहल।

आगे की राह

श्री विश्वजीत सहाय के नेतृत्व में, रक्षा लेखा विभाग से अपेक्षा है कि वह—

- डिजिटल वित्तीय प्रबंधन को और अधिक सुदृढ़ करेगा

- लेखा-परीक्षा और अनुपालन ढांचे को मजबूत बनाएगा
- रक्षा व्यय में पारदर्शिता बढ़ाएगा
- रक्षा वित्तीय प्रणालियों को राष्ट्रीय रणनीतिक प्राथमिकताओं के अनुरूप बनाएगा

निष्कर्ष

श्री विश्वजीत सहाय द्वारा रक्षा लेखा महानियंत्रक के रूप में पदभार ग्रहण करना भारत के रक्षा वित्तीय प्रशासन में एक महत्वपूर्ण क्षण है। अपने व्यापक अनुभव और संस्थागत ज्ञान के आधार पर उनका नेतृत्व विभाग को वैश्विक परिवर्तनों और आंतरिक आधुनिकीकरण की आवश्यकताओं के अनुरूप दिशा देने में सहायक होगा।

यह नियुक्ति केवल एक प्रशासनिक उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह बढ़ती भू-राजनीतिक और तकनीकी चुनौतियों के युग में मजबूत, पारदर्शी और प्रभावी रक्षा वित्त प्रबंधन के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न रक्षा लेखा महानियंत्रक (CGDA) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. CGDA, रक्षा लेखा विभाग का प्रमुख होता है।
2. रक्षा लेखा विभाग, रक्षा मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है।
3. CGDA राष्ट्रीय रक्षा रणनीति से संबंधित नीतियों के निर्माण के लिए उत्तरदायी होता है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

मतदान का अधिकार बनाम मतदान की स्वतंत्रता

चर्चा में क्यों: भारत का सर्वोच्च न्यायालय एक महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न की सुनवाई करने जा रहा है — क्या “मतदान का अधिकार” और “मतदान की स्वतंत्रता” एक-दूसरे से भिन्न हैं?

पृष्ठभूमि / संदर्भ

- यह याचिका **जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951** के उन प्रावधानों को चुनौती देती है, जिनके तहत यदि किसी निर्वाचन क्षेत्र में उम्मीदवारों की संख्या सीटों के बराबर हो, तो बिना मतदान कराए ही उन्हें निर्वाचित घोषित किया जा सकता है।
- याचिकाकर्ताओं का तर्क है कि यह व्यवस्था मतदाताओं को **NOTA (इनमें से कोई नहीं)** के माध्यम से असंतोष व्यक्त करने के अधिकार से वंचित करती है।

मुख्य बिंदु व तथ्य

- केंद्र सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय को बताया, कि -
 - ✓ **मतदान का अधिकार एक वैधानिक अधिकार** है, जो जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 से प्राप्त होता है।
 - ✓ जबकि **मतदान की स्वतंत्रता** — अर्थात् मतदाता किस प्रकार वोट डाले — यह **संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a)** के अंतर्गत **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता** का हिस्सा है।
- कानूनी चुनौती **धारा 53(2)** और उससे संबंधित चुनावी नियमों पर है, जिनके अनुसार यदि नामांकन के बाद शेष उम्मीदवारों की संख्या सीटों के बराबर हो, तो **मतदान कराए बिना ही उन्हें निर्वाचित घोषित कर दिया जाता है।**
- याचिकाकर्ताओं, जिनमें **विधि सेंटर फॉर लीगल पॉलिसी** और **एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (ADR)** शामिल हैं, का तर्क है कि इससे नागरिकों का असहमति व्यक्त करने का अधिकार समाप्त हो जाता है।
- **भारतीय निर्वाचन आयोग (ECI)** ने केंद्र के पक्ष का समर्थन करते हुए कहा है कि
 - ✓ वर्तमान कानून में **NOTA** को उम्मीदवार नहीं माना गया है,
 - ✓ और उसे उम्मीदवार के रूप में मान्यता देने के लिए विधायी संशोधन आवश्यक होगा।
- यह मामला सर्वोच्च न्यायालय की पीठ के समक्ष सूचीबद्ध था, लेकिन बिहार में चल रही चुनावी गतिविधियों के कारण सुनवाई स्थगित कर दी गई।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

- यह मामला लोकतांत्रिक भागीदारी के मूल स्वरूप से जुड़े गहरे प्रश्न उठाता है। यदि मतदान की प्रक्रिया — यहाँ तक कि उसके अभिव्यक्ति पूर्ण रूप में भी - अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हिस्सा है, तो ऐसे प्रावधान जो चुनाव ही न होने दें, लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति को सीमित कर सकते हैं।
- यह विषय संवैधानिक व्याख्या, वैधानिक चुनावी प्रावधानों और मतदाता अधिकारों से जुड़ा है, जिससे यह शासन, राजनीतिक अधिकारों व न्यायिक समीक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है।

मुख्य अंतर

- **वैधानिक बनाम मौलिक अधिकार:** मतदान का अधिकार एक वैधानिक अधिकार है, जिसे संसद कानून बनाकर नियंत्रित या सीमित कर सकती है। वहीं मतदान की स्वतंत्रता अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का विस्तार है और यह व्यक्ति को बिना दबाव के अपनी पसंद प्रकट करने का अधिकार देती है।
- **निर्विरोध चुनाव से जुड़ा विवाद:** वर्ष 2025-26 में यह विवाद तब प्रमुख हुआ जब जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 53(2) को

चुनौती दी गई। सरकार का तर्क था कि यदि केवल एक उम्मीदवार हो, तो मतदान नहीं कराया जाता और इसलिए **मतदान की स्वतंत्रता (और NOTA का अधिकार)** लागू ही नहीं होता, क्योंकि अभिव्यक्ति का कोई अवसर नहीं बनता।

- **NOTA की भूमिका:** NOTA को कानूनी रूप से एक अभिव्यक्ति माना गया है, न कि एक उम्मीदवार। चूँकि यह अभिव्यक्ति का माध्यम है, इसलिए यह मतदान की स्वतंत्रता के अंतर्गत आता है। आलोचकों का कहना है कि निर्विरोध चुनावों में मतदान न कराना मतदाताओं से यह मौलिक अधिकार छीन लेता है।

मतदान का अधिकार बनाम मतदान की स्वतंत्रता

विशेषता	मतदान का अधिकार	मतदान की स्वतंत्रता
कानूनी प्रकृति	वैधानिक अधिकार	मौलिक अधिकार (अनुच्छेद 19(1)(a))
मुख्य स्रोत	जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951	अनुच्छेद 19(1)(a) — अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
शर्त	प्रत्येक पात्र पंजीकृत नागरिक के लिए उपलब्ध	केवल तब लागू, जब वास्तव में मतदान हो
क्षेत्र	मतदाता के रूप में पंजीकरण और मत डालने का अधिकार	पसंद या असहमति व्यक्त करने की स्वतंत्रता (NOTA सहित)

अधिकारों के प्रकार

1. प्राकृतिक अधिकार

- वे अधिकार जो प्रत्येक मानव को जन्म से प्राप्त होते हैं।
- ये राज्य द्वारा प्रदान नहीं किए जाते, बल्कि कानून से स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में रहते हैं।
- उदाहरण:
 - ✓ जीवन का अधिकार
 - ✓ स्वतंत्रता का अधिकार
 - ✓ गरिमा का अधिकार

2. संवैधानिक अधिकार

- वे अधिकार जो भारत के संविधान द्वारा प्रदान और संरक्षित किए गए हैं।
- ये न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय (Enforceable) होते हैं।

(A) मौलिक अधिकार (भाग-III)

- व्यक्तियों / नागरिकों को सुनिश्चित किए गए अधिकार
- **अनुच्छेद 32 (सर्वोच्च न्यायालय)** और **अनुच्छेद 226 (उच्च न्यायालय)** के अंतर्गत प्रवर्तनीय
- **छः मौलिक अधिकार —**
 - ✓ समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14-18)
 - ✓ स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 19)
 - ✓ शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद 23-24)
 - ✓ धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 25-28)
 - ✓ सांस्कृतिक एवं शैक्षिक अधिकार (अनुच्छेद 29-30)
 - ✓ संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनुच्छेद 32)

(B) अन्य संवैधानिक अधिकार

- ✓ ये भाग-III में शामिल नहीं होते, लेकिन संविधान के अन्य भागों में उल्लिखित होते हैं।

- ✓ उदाहरण: संपत्ति का अधिकार (अनुच्छेद 300A)

3. विधिक / वैधानिक अधिकार

- संसद या राज्य विधानसभाओं द्वारा बनाए गए कानूनों से उत्पन्न होते हैं।
- इन्हें विधायिका द्वारा बदला या समाप्त किया जा सकता है।
- उदाहरण:
 - ✓ मतदान का अधिकार
 - ✓ सूचना का अधिकार (RTI अधिनियम)
 - ✓ उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत अधिकार

4. नागरिक अधिकार

- राज्य के मनमाने हस्तक्षेप से व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करने वाले अधिकार।
- स्वतंत्रता और समानता पर केंद्रित।
- उदाहरण:
 - ✓ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
 - ✓ भेदभाव से मुक्ति
 - ✓ निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार

5. राजनीतिक अधिकार

- राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करने वाले अधिकार।
- उदाहरण:
 - ✓ मतदान का अधिकार

- ✓ चुनाव लड़ने का अधिकार
- ✓ राजनीतिक दल बनाने का अधिकार

6. मानवाधिकार

- ऐसे सार्वभौमिक अधिकार जिन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है।
- भारत इन्हें निम्न माध्यमों से मान्यता देता है—
 - ✓ संविधान
 - ✓ मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993
- उदाहरण:
 - ✓ जीवन का अधिकार
 - ✓ यातना के विरुद्ध अधिकार
 - ✓ विधि के समक्ष समानता का अधिकार

7. नैतिक अधिकार

- कानून के बजाय नैतिक सिद्धांतों पर आधारित होते हैं।
- कानूनी रूप से प्रवर्तनीय नहीं होते।
- उदाहरण:
 - ✓ निष्पक्ष व्यवहार का अधिकार
 - ✓ सामाजिक संबंधों में गरिमा का अधिकार

8. आर्थिक अधिकार

- भौतिक कल्याण और आजीविका सुनिश्चित करते हैं।
- उदाहरण:
 - ✓ काम करने का अधिकार
 - ✓ उचित वेतन का अधिकार
 - ✓ आजीविका का अधिकार (अनुच्छेद 21 से व्युत्पन्न)

9. सामाजिक अधिकार

- सामाजिक न्याय और कल्याण की दिशा में उन्मुख।
- उदाहरण:
 - ✓ शिक्षा का अधिकार (अनुच्छेद 21A)
 - ✓ स्वास्थ्य का अधिकार (अनुच्छेद 21 से व्युत्पन्न)
 - ✓ सामाजिक सुरक्षा का अधिकार

10. सामूहिक / समूह अधिकार

- व्यक्तियों के बजाय समूहों से संबंधित अधिकार।
- उदाहरण:
 - ✓ अल्पसंख्यक अधिकार
 - ✓ जनजातीय अधिकार
 - ✓ अनुच्छेद 29-30 के अंतर्गत सांस्कृतिक अधिकार

11. नकारात्मक एवं सकारात्मक अधिकार

- **नकारात्मक अधिकार**
 - ✓ राज्य के हस्तक्षेप न करने की अपेक्षा रखते हैं।
 - ✓ उदाहरण: अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
- **सकारात्मक अधिकार**
 - ✓ राज्य से सक्रिय कार्रवाई की अपेक्षा रखते हैं।

- ✓ उदाहरण: शिक्षा का अधिकार

12. प्रवर्तनीय एवं अप्रवर्तनीय अधिकार

- **प्रवर्तनीय अधिकार:** मौलिक अधिकार
- **अप्रवर्तनीय अधिकार:** नीति-निर्देशक तत्व (भाग-IV)

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में अधिकारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सभी संवैधानिक अधिकार मौलिक अधिकार होते हैं।
2. वैधानिक अधिकारों में विधायिका द्वारा संशोधन या उन्हें निरस्त किया जा सकता है।
3. मौलिक अधिकार केवल राज्य के विरुद्ध ही प्रवर्तनीय होते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 2
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

एआई जनरेटेड कंटेंट रेगुलेशन हेतु आईटी नियम, 2021 में संशोधन

चर्चा में क्यों: हाल ही में, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यस्थ दिशा-निर्देश एवं डिजिटल मीडिया आचार संहिता) संशोधन नियम, 2025 का मसौदा जारी किया है। इसका उद्देश्य कृत्रिम रूप से निर्मित सूचना, जैसे: डीपफेक, एआई-जनित सामग्री से उत्पन्न चुनौतियों से निपटना है, जो आईटी नियम, 2021 के अंतर्गत आती हैं।

पृष्ठभूमि

- आईटी नियम, 2021 मध्यस्थों (Intermediaries) को विनियमित करते हैं — जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, मैसेजिंग सेवाएँ और अन्य डिजिटल मंच, जो तृतीय-पक्ष सामग्री को होस्ट या प्रसारित करते हैं।
- जनरेटिव एआई में तेज़ प्रगति के कारण अब अत्यंत वास्तविक दिखने वाली नकली सामग्री (चित्र, वीडियो, ऑडियो) बनाना आसान हो गया है, जिसका दुरुपयोग गलत सूचना, धोखाधड़ी, प्रतिष्ठा को नुकसान और राजनीतिक हेरफेर के लिए किया जा सकता है।
- MeitY ने पहले भी 2022 और 2023 में परामर्श जारी करते हुए आईटी नियमों में संशोधन किए थे, जो नवीनतम संशोधन कृत्रिम रूप से निर्मित सामग्री (कंटेंट) के लिए स्पष्ट कानूनी आधार प्रदान करते हैं।

प्रस्तावित संशोधनों की प्रमुख विशेषताएँ

1. “कृत्रिम रूप से निर्मित सूचना” की परिभाषा

- ✓ संशोधन में ऐसी सामग्री की औपचारिक परिभाषा दी गई है, जो कंप्यूटर या एआई के माध्यम से बनाई या बदली गई हो और देखने में वास्तविक प्रतीत होती हो।
- ✓ यह सुनिश्चित करता है कि ऐसी सामग्री मध्यस्थों पर लागू ड्यू डिलिजेंस (उचित सावधानी) के दायरे में आए।

2. अनिवार्य लेबलिंग एवं मेटा डाटा आवश्यकताएँ

- ✓ जो प्लेटफॉर्म सिंथेटिक मीडिया के निर्माण या संशोधन की सुविधा देते हैं, उन्हें उस सामग्री पर स्पष्ट लेबल या एम्बेडेड मेटा डाटा देना होगा।
- ✓ दृश्य सामग्री में लेबल स्क्रीन पर स्पष्ट दिखना चाहिए, जबकि ऑडियो सामग्री में प्रारंभ में ही चेतावनी देना आवश्यक होगा, ताकि उपयोगकर्ता जागरूक हो सकें।

3. प्लेटफॉर्म के लिए कठोर ड्यू डिलिजेंस

- ✓ महत्वपूर्ण सोशल मीडिया मध्यस्थों (SSMIs) को निम्नलिखित करना अनिवार्य होगा:
 - उपयोगकर्ताओं से यह घोषणा लेना कि अपलोड की गई सामग्री कृत्रिम है या नहीं।
 - सामग्री की सत्यता की जाँच और नियमों के पालन के लिए उचित तकनीकी उपाय अपनाना।

4. सद्भावना में सामग्री हटाने पर संरक्षण

- ✓ संशोधन में ऐसा प्रावधान शामिल किया गया है, जिसके तहत उपयोगकर्ता शिकायत तंत्र के अंतर्गत हानिकारक कृत्रिम सामग्री हटाने पर मध्यस्थों की सेफ हार्बर सिक््युरिटी समाप्त नहीं होगी।

महत्व

- **उपयोगकर्ता संरक्षण एवं पारदर्शिता:** अनिवार्य लेबलिंग और मेटा डाटा टैगिंग से उपयोगकर्ता मानव-निर्मित और एआई-निर्मित सामग्री में अंतर कर सकेंगे, जिससे डिजिटल साक्षरता बढ़ेगी और धोखे की संभावना कम होगी।
- **प्लेटफॉर्म की जवाबदेही:** कठोर ड्यू डिलिजेंस प्रावधान प्लेटफॉर्म को सिंथेटिक सामग्री की पहचान और प्रबंधन के लिए अधिक उत्तरदायी बनाएंगे, जिससे डिजिटल सुरक्षा के लक्ष्य पूरे होंगे।
- **कानूनी स्पष्टता:** सिंथेटिक सामग्री के विनियमन को वैधानिक आधार मिलने से भारत की साइबर-नियामक संरचना सुदृढ़ होगी और संसद में उठी चिंताओं तथा वास्तविक दुनिया की गलत सूचना की समस्याओं का समाधान होगा।

मुद्दे और चुनौतियाँ

- **नवाचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में संतुलन:** अनिवार्य घोषणा और लेबलिंग जैसे प्रावधान प्लेटफॉर्म पर अतिरिक्त बोझ डाल सकते हैं और यदि सही ढंग से लागू न हों तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रभाव डाल सकते हैं।

- **तकनीकी व्यवहार्यता:** वर्तमान तकनीक से उपयोगकर्ता घोषणाओं का सत्यापन पूरी तरह सटीक नहीं हो सकता, जिससे गलत पहचान (फॉल्स पॉजिटिव) की संभावना रहती है।
- **परिभाषा की व्यापकता:** “सिंथेटिक सूचना” की व्यापक परिभाषा के कारण निर्दोष रचनात्मक या एआई-सहायता प्राप्त सामग्री भी इसके दायरे में आ सकती है, जिससे स्पष्ट संचालन दिशानिर्देशों की आवश्यकता होगी।

निष्कर्ष

सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यस्थ दिशानिर्देश एवं डिजिटल मीडिया आचार संहिता) संशोधन नियम, 2025 भारत द्वारा डिजिटल शासन के अंतर्गत कृत्रिम एवं एआई-निर्मित सामग्री को नियंत्रित करने का पहला ठोस वैधानिक प्रयास है। हालाँकि ये पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाते हैं, फिर भी नवाचार, डिजिटल अधिकारों और प्रभावी प्रवर्तन के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए इनका सावधानीपूर्वक क्रियान्वयन आवश्यक है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न “सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यस्थ दिशानिर्देश एवं डिजिटल मीडिया आचार संहिता) संशोधन नियम, 2025 का उद्देश्य सिंथेटिक एवं एआई-जनित सूचना को विनियमित करना है। भारत में डिजिटल शासन के संदर्भ में इन संशोधनों के संभावित लाभों और चुनौतियों की समालोचनात्मक समीक्षा कीजिए।” (10 अंक / 150 शब्द)

ऐतिहासिक श्रम कानून सुधार : नई श्रम संहिताएँ लागू

चर्चा में क्यों: 21 नवम्बर 2025 को भारत सरकार ने औपचारिक रूप से चार नई श्रम संहिताओं को लागू किया —

- ✓ वेतन संहिता, 2019
- ✓ औद्योगिक संबंध संहिता, 2020
- ✓ सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020
- ✓ व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं कार्य स्थितियाँ संहिता, 2020

इनके माध्यम से 29 पुराने केंद्रीय श्रम कानूनों को समाहित कर एक आधुनिक नियामक ढांचा बनाया गया है।

सुधारों की प्रमुख विशेषताएँ

- श्रमिकों के लिए **न्यूनतम वेतन की गारंटी** और समय पर वेतन भुगतान का प्रावधान।
- **सामाजिक सुरक्षा का विस्तार**, जिसमें 40 करोड़ से अधिक श्रमिक शामिल, साथ ही गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को औपचारिक मान्यता।
- **नियत अवधि (फिक्सड टर्म) कर्मचारियों** को एक वर्ष की सेवा के बाद ग्रेजुटी का अधिकार।
- **एकीकृत संहिता संरचना**, जिससे नियोक्ताओं के लिए अनुपालन सरल होगा और वैश्विक श्रम मानकों के अनुरूप व्यवस्था बनेगी।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

यह सुधार स्वतंत्र भारत में श्रम शासन से जुड़ा सबसे व्यापक परिवर्तन माना जा रहा है। इसका उद्देश्य पुराने कानूनों को आधुनिक बनाना, सामाजिक सुरक्षा को सुदृढ़ करना और व्यवसाय करने में आसानी के साथ श्रमिकों के अधिकारों का संतुलन स्थापित करना है।

आलोचना

सरकार के आधुनिकीकरण के दावों के बावजूद, श्रमिक संगठनों और कुछ राजनीतिक दलों ने इन संहिताओं की आलोचना की है। जिनके अनुसार —

- इससे श्रमिक अधिकार संवेदनशील हो सकते हैं,
- छंटनी के नियम आसान हो गए हैं,
- और सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति घट सकती है।

महत्त्व

- यह सामाजिक कल्याण और आर्थिक उदारीकरण के बीच संतुलन बनाने में राज्य की भूमिका को दर्शाता है।
- यह संघीय ढांचे की गतिशीलता को भी उजागर करता है, क्योंकि इन कानूनों का क्रियान्वयन और नियम निर्माण संविधान की समवर्ती सूची के अंतर्गत केंद्र-राज्य समन्वय पर निर्भर करेगा।

आगे की राह

- चूंकि श्रम समवर्ती सूची का विषय है, इसलिए नियम निर्माण में **केंद्र-राज्य समन्वय** को प्रभावी बनाया जाए।
- **रोज़गार सुरक्षा** से जुड़ी चिंताओं को दूर करने के लिए श्रमिक संगठनों के साथ सामाजिक संवाद को मजबूत किया जाए।
- **शिकायत निवारण और सामाजिक सुरक्षा वितरण** के लिए सशक्त डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित किए जाएँ।
- यह सुनिश्चित करने के लिए नियमित **प्रभाव आकलन** किए जाएँ कि श्रमिक कल्याण से समझौता न हो।

निष्कर्ष

चारों श्रम संहिताओं का कार्यान्वयन भारत के श्रम शासन ढांचे में एक ऐतिहासिक परिवर्तन को दर्शाता है। ये सुधार कानूनों को सरल बनाते हैं, सामाजिक सुरक्षा का विस्तार करते हैं और श्रम विनियमों को आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप बनाते हैं। हालाँकि, इन सुधारों की वास्तविक सफलता उनके निष्पक्ष क्रियान्वयन तथा श्रमिकों और राज्यों द्वारा स्वीकृति पर निर्भर करेगी।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. 2025 में लागू की गई नई श्रम संहिताओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ये 29 केंद्रीय श्रम कानूनों को चार संहिताओं में समाहित करती हैं।
2. गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों से बाहर रखा गया है।

3. श्रम संविधान की समवर्ती सूची का विषय है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 1
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. "नई श्रम संहिताएँ व्यापार करने में सुगमता और श्रमिकों के अधिकारों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं।" भारत के श्रम शासन सुधारों के संदर्भ में इस कथन की समालोचनात्मक समीक्षा कीजिए। (10 अंक / 150 शब्द)

संविधान दिवस - 2025

चर्चा में क्यों: भारत ने 26 नवंबर 2025 को **संविधान दिवस** मनाया, जो 1949 में संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान को अंगीकृत किए जाने की स्मृति में मनाया जाता है। इस अवसर पर राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किए गए, गणमान्य व्यक्तियों के भाषण हुए तथा संविधान को अनेक भारतीय भाषाओं में जारी किया गया।

आयोजन की प्रमुख झलकियाँ

- राष्ट्रपति की अध्यक्षता में राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें प्रमुख संवैधानिक पदाधिकारियों ने भाग लिया।
- जन-जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से संविधान को **9 भारतीय भाषाओं** में जारी किया गया।
- नेतृत्व द्वारा **समानता, गरिमा और स्वतंत्रता** को संविधान के मूल मूल्यों के रूप में रेखांकित किया गया।

पृष्ठभूमि

- संविधान दिवस प्रतिवर्ष **26 नवंबर** को मनाया जाता है, क्योंकि इसी दिन 1949 में भारतीय संविधान को अंगीकृत किया गया था। यह 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ, जिसे हम गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

- ✓ यह भारत की शासन व्यवस्था में **संवैधानिक लोकतंत्र की भावना** को सुदृढ़ करता है।
- ✓ नागरिकों में **मौलिक अधिकारों, कर्तव्यों और शासन व्यवस्था** के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देता है।

मुख्य संवैधानिक महत्त्व

- यह भारतीय संविधान के **जीवंत स्वरूप** को रेखांकित करता है, जो समय के साथ विकसित होता हुआ अधिकार, शासन प्रणाली और लोकतांत्रिक मूल्यों को निरंतर दिशा देता है।

आगे की राह

- स्कूल और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में संवैधानिक शिक्षा को और अधिक सशक्त रूप से शामिल किया जाए।
- संविधानिक मूल्यों के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने के लिए उन्हें स्थानीय भाषाओं में व्यापक रूप से प्रसारित किया जाए।
- शासन और नीति-निर्माण में संवैधानिक नैतिकता को बनाए रखने के लिए संस्थानों को प्रोत्साहित किया जाए।
- संविधान को अधिक सुलभ बनाने के लिए प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग किया जाए।

निष्कर्ष

संविधान दिवस 2025 ने लोकतंत्र, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मूल मूल्यों की पुनः पुष्टि की। यह नागरिकों और संस्थाओं दोनों को यह स्मरण कराता है कि भारत के लोकतांत्रिक शासन को बनाए रखने के लिए **संवैधानिक नैतिकता** अत्यंत आवश्यक है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में संविधान दिवस 26 नवंबर को इसलिए मनाया जाता है क्योंकि:

- (a) उस दिन संविधान लागू हुआ था।
- (b) उस दिन संविधान सभा की पहली बैठक हुई थी।
- (c) उस दिन संविधान को अंगीकृत किया गया था।
- (d) उस दिन प्रथम आम चुनावों की घोषणा की गई थी।

उत्तर: (c)

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. समकालीन भारत में संवैधानिक मूल्यों और लोकतांत्रिक शासन को सुदृढ़ करने में संविधान दिवस की प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

चहल एकेडमी द्वारा निःशुल्क पहल

‘द हिन्दू’ में क्या पढ़ें?

क्यू आर कोड स्कैन करें



CCHAHAL ACADEMY

अंतरराष्ट्रीय संबंध

उच्च समुद्री संधि (हाई सी ट्रीटी)

चर्चा में क्यों: उच्च समुद्री संधि (High Seas Treaty), जिसे औपचारिक रूप से राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से परे क्षेत्रों में समुद्री जैव विविधता के संरक्षण और सतत उपयोग पर समझौता (BBNJ) कहा जाता है, ने 60 देशों के अनुमोदन की सीमा पूरी कर ली है। इससे इसके 17 जनवरी 2026 से लागू होने का मार्ग प्रशस्त हो गया है।

मुख्य बिंदु

- यह पहली बार है जब राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से बाहर स्थित उच्च समुद्री क्षेत्र हेतु एक कानूनी रूप से बाध्यकारी वैश्विक ढांचा बनाया गया है।
- यह विश्व के लगभग दो-तिहाई महासागरों को कवर करता है, जिन्हें ऐतिहासिक रूप से समग्र कानूनी संरक्षण प्राप्त नहीं था।

महत्व

- उच्च समुद्री क्षेत्र, तटीय देशों के 200 समुद्री मील के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (EEZ) से आगे स्थित होते हैं और संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (UNCLOS) के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय जल माने जाते हैं।
- ये जल क्षेत्र जैव विविधता, जलवायु विनियमन, वैश्विक मत्स्य पालन, समुद्री जैव प्रौद्योगिकी, खाद्य सुरक्षा, ऑक्सीजन उत्पादन, कार्बन अवशोषण तथा वैश्विक व्यापार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
- अब तक उच्च समुद्री क्षेत्र में समुद्री जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के लिए कोई समर्पित कानूनी तंत्र नहीं था, जिससे अत्यधिक मछली पकड़ने, प्रदूषण, समुद्री खनन और अनियमित दोहन जैसी गतिविधियाँ सीमित निगरानी में होती रहीं।
- यह संधि UNCLOS को पूरक बनाती है तथा संरक्षण से जुड़ी कमियों को दूर करती है। साथ ही यह समुद्री संरक्षित क्षेत्रों (MPAs), पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA), समुद्री आनुवंशिक संसाधनों के न्यायसंगत बंटवारे, उद्योग शासन और वैज्ञानिक सहयोग को बढ़ावा देती है।

मुख्य विशेषताएँ और प्रमुख बिंदु

- **संरक्षण के लिए कानूनी ढांचा:** यह संधि राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से बाहर जैव विविधता के संरक्षण और सतत उपयोग के लिए पहला वैश्विक कानूनी ढांचा स्थापित करती है।
- **समुद्री संरक्षित क्षेत्र (MPAs):** उच्च समुद्री क्षेत्र में MPAs की स्थापना को सक्षम बनाती है, जो "इंटरनेशनल पार्क" की तरह कार्य कर संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्र और प्रजातियों की रक्षा करते हैं।
- **पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA):** प्रस्तावित गतिविधियों से होने वाले संभावित पर्यावरणीय नुकसान का आकलन सुनिश्चित करता है तथा सतर्क योजना और पर्यावरणीय संरक्षण को बढ़ावा देता है।

- **समुद्री आनुवंशिक संसाधनों का न्यायसंगत बंटवारा (MGRs):** समुद्री आनुवंशिक संसाधनों से प्राप्त लाभों के निष्पक्ष और समान वितरण के लिए ढांचा प्रदान करता है तथा "जैव-डकैती" और असमान पहुँच जैसी चिंताओं को संबोधित करता है।
- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण एवं क्षमता निर्माण:** विकासशील देशों के लिए वैज्ञानिक सहयोग, क्षमता निर्माण और संधारणीय समुद्री प्रौद्योगिकियों के साझा उपयोग को प्रोत्साहित करता है।
- **कार्यान्वयन तंत्र:** कांफ्रेंस ऑफ़ पार्टिज (COP), वैज्ञानिक एवं तकनीकी निकाय, क्लियरिंग हाउस तंत्र और अनुपालन समितियाँ कार्यान्वयन और सहयोग को दिशा प्रदान करेंगी।

चुनौतियाँ और मुद्दे

अपने ऐतिहासिक महत्व के बावजूद, इसके प्रभावी कार्यान्वयन में कई प्रमुख चुनौतियाँ आ सकती हैं:

1) वैचारिक और कानूनी अस्पष्टता

- ✓ यह संधि "मानवता की साझा विरासत" और "उच्च समुद्रों की स्वतंत्रता" के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करती है।
- ✓ यह द्वैतता अधिकारों और दायित्वों को परिभाषित करने में अनिश्चितता उत्पन्न करती है, विशेषकर समुद्री आनुवंशिक संसाधनों (MGRs) और लाभ-साझेदारी के संदर्भ में।

2) भागीदारी और अनुमोदन की कमी

- ✓ संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और रूस जैसे प्रमुख समुद्री देशों द्वारा अनुमोदन न किया जाना संधि की सार्वभौमिकता और प्रवर्तन क्षमता को कमजोर करता है।

3) कार्यान्वयन और निगरानी से जुड़ी बाधाएँ

- ✓ विशाल समुद्री क्षेत्र, अधिकार क्षेत्र की सीमाएँ, सीमित निगरानी अवसंरचना और उच्च लागत के कारण हाई सीज़ में प्रवर्तन स्वभावतः कठिन है।

4) संस्थागत समन्वय की कमी

- ✓ मौजूदा व्यवस्थाओं (जैसे क्षेत्रीय मत्स्य प्रबंधन संगठन, अंतरराष्ट्रीय समुद्री प्राधिकरण) के साथ ओवरलैप से शासन में विखंडन और नियामक टकराव की संभावना बनी रहती है, यदि समन्वय न हो।

5) समानता और प्रौद्योगिकी अंतर

- ✓ विकासशील देशों को समुद्री विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वित्त तक सीमित पहुँच के कारण समान रूप से भागीदारी करने में कठिनाई हो सकती है, भले ही संधि में सहयोग के प्रावधान हों।

6) वैज्ञानिक और डेटा संबंधी कमी

- ✓ प्रभावी समुद्री संरक्षित क्षेत्र (MPA) निर्धारण और पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) के लिए ठोस वैज्ञानिक जानकारी

आवश्यक है, जबकि गहरे समुद्र के पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित डेटा की कमी एक बड़ी बाधा बनी हुई है।

परिणाम और प्रभाव

- **पर्यावरणीय:** यह संधि अंतरराष्ट्रीय जल क्षेत्रों में जैव विविधता के संरक्षण के लिए एक ढांचा प्रदान करती है और 2030 तक 30% महासागरों के संरक्षण (30x30 लक्ष्य) जैसे वैश्विक लक्ष्यों को समर्थन देती है।
- **आर्थिक:** उच्च समुद्री क्षेत्र स्थित संसाधनों का सतत प्रबंधन मत्स्य भंडार को स्थिर कर सकता है और समुद्री जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र को बढ़ावा दे सकता है, जबकि न्यायसंगत लाभ-साझेदारी असमानताओं को कम कर सकती है।
- **भू-राजनीतिक:** यह संधि महासागर शासन में बहुपक्षीय सहयोग को सशक्त बनाती है, हालांकि दक्षिण चीन सागर जैसे क्षेत्रों में क्षेत्रीय विवाद MPA वार्ताओं को जटिल बना सकते हैं।
- **नीति और वैश्विक साझेदारी संपदा:** यह वैश्विक साझेदारी संसाधनों के शासन के लिए सामूहिक कार्रवाई का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है और अन्य सीमापार संसाधनों के लिए मिसाल कायम करती है।

सरकारी पहलें और वैश्विक गति

- **भारत:** भारत ने संधि पर हस्ताक्षर किए हैं और अनुमोदन की प्रक्रिया में है। यह समुद्री संरक्षण और सतत उपयोग के प्रति उसकी ब्लू आर्थिक दृष्टि के अनुरूप है।
- **अंतरराष्ट्रीय गठबंधन:** यूरोपीय संघ, पलाऊ, सेशेल्स आदि के नेतृत्व में गठित BBNJ उच्च महत्वाकांक्षी गठबंधन (हाई एम्बिशन कोएलिशन) इस संधि के शीघ्र अनुमोदन और प्रभावी क्रियान्वयन को बढ़ावा दे रहा है।
- **संयुक्त राष्ट्र प्रणाली और क्षमता निर्माण:** संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन (UNCTAD) तथा अन्य संयुक्त राष्ट्र संस्थाएँ विकासशील देशों के समर्थन हेतु क्षमता निर्माण, EIA दायित्वों और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर बल दे रही हैं।

आगे की राह और सुधार

- **अनुमोदन का विस्तार:** वैश्विक अनुपालन और प्रभावी प्रवर्तन को मजबूत करने के लिए प्रमुख देशों द्वारा संधि का अनुमोदन आवश्यक है।
- **संस्थागत ढांचे को सुदृढ़ करना:** अनुपालन, विवाद समाधान और मौजूदा महासागरीय शासन व्यवस्थाओं के साथ समन्वय के लिए स्पष्ट तंत्र विकसित किए जाने चाहिए।
- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी में निवेश:** उन्नत अनुसंधान, डेटा नेटवर्क और निगरानी प्रणालियाँ निर्णय-निर्माण को अधिक प्रभावी बनाएंगी।
- **वित्तीय और तकनीकी सहायता:** समर्पित वित्तीय संसाधन और तकनीकी सहयोग से वैश्विक दक्षिण के देशों की समान भागीदारी सुनिश्चित होगी।

- **क्षेत्रीय संस्थाओं के साथ सहयोग:** मत्स्य पालन, पोत परिवहन और समुद्री तल नियामक संस्थाओं के बीच तालमेल से दोहराव और प्रवर्तन की कमियों को रोका जा सकता है।

निष्कर्ष

उच्च समुद्री संधि राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से परे स्थित महासागरीय क्षेत्रों में शासन संबंधी कमियों को दूर करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। इसकी सफलता सार्वभौमिक अनुमोदन, प्रभावी प्रवर्तन, वैज्ञानिक सहयोग और समान क्षमता निर्माण पर निर्भर करेगी, जिससे समुद्री जैव विविधता का दीर्घकालिक और सतत संरक्षण सुनिश्चित हो सकेगा।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. हाल ही में अपनाई गई हाई सीज़ संधि राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से परे क्षेत्रों में लंबे समय से चली आ रही शासन संबंधी कमियों को दूर करने का प्रयास करती है। वैश्विक महासागर शासन और जैव विविधता संरक्षण के लिए इसके महत्व पर चर्चा कीजिए। इसके प्रभावी क्रियान्वयन में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की विवेचना कीजिए, विशेषकर विकासशील देशों के संदर्भ में। (15 अंक, 250 शब्द)

भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय संबंध

चर्चा में क्यों: श्रीलंका की प्रधानमंत्री ने सितंबर 2024 में पद ग्रहण करने के बाद 16-18 अक्टूबर 2025 के दौरान भारत की अपनी पहली आधिकारिक यात्रा की।

मुख्य विवरण

- यह यात्रा रणनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को सुदृढ़ करने पर केंद्रित थी।
- इसका उद्देश्य भारत की पड़ोस प्रथम (Neighbourhood First) और महासागर (MAHASAGAR) विजन के अंतर्गत भारत-श्रीलंका संबंधों को और मजबूत करना था।

पृष्ठभूमि और महत्व

- श्रीलंका हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और भौगोलिक रूप से पाल्क जलडमरूमध्य के पार भारत के तमिलनाडु तट के निकट स्थित है। ऐतिहासिक रूप से दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापारिक संबंध रहे हैं।
- भारत-श्रीलंका संबंध उच्च स्तरीय आदान-प्रदान, आर्थिक सहयोग, सुरक्षा साझेदारी और जन-जन के संपर्क के माध्यम से सुदृढ़ बने रहे हैं।
- हिंद महासागर क्षेत्र में बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों के बीच श्रीलंका के साथ स्थिर और सहयोगात्मक संबंध बनाए रखना भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, समुद्री हितों और आर्थिक सहभागिता के लिए अत्यंत आवश्यक है, विशेष रूप से पड़ोसी क्षेत्र में बढ़ते बाहरी प्रभाव के संदर्भ में।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- दोनों देशों ने शिक्षा, प्रौद्योगिकी, व्यापार और मछुआरों के कल्याण जैसे क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया।
- उन्होंने नई दिल्ली में आयोजित एनडीटीवी वर्ल्ड समिट 2025 में मुख्य भाषण दिया, जिसमें वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर विचार रखे तथा आर्थिक लचीलापन और सतत विकास के लिए सहयोग पर बल दिया।
- आईआईटी दिल्ली, नीति आयोग और सर्वोदय को-एड स्कूल की यात्राओं के दौरान उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, अनुसंधान, नवाचार और विद्यालयी सहयोग के क्षेत्रों में संभावनाओं को रेखांकित किया गया, साथ ही प्रस्तावित दिल्ली-कोलंबो शिक्षा सेतु पर भी चर्चा हुई।
- प्रधानमंत्री अमरसूरिया ने अपने अल्मा मेटर, हिंदू कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) का दौरा किया, जिससे दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंध और मजबूत हुए।

प्रभाव और परिणाम

- इस यात्रा ने भारत और श्रीलंका के बीच मजबूत कूटनीतिक संबंधों की पुष्टि की तथा विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग को गति दी।
- इससे श्रीलंका को भारतीय निवेश आकर्षित करने और शिक्षा, कौशल विकास, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में साझेदारी की संभावनाएँ तलाशने का अवसर मिला।
- शैक्षणिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान से दीर्घकालिक जन-जन संपर्क को बढ़ावा मिला, जिससे जमीनी स्तर पर संबंध और सुदृढ़ हुए।

आगे की राह

- आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करना:** द्विपक्षीय व्यापार, निवेश सुगमता और अवसंरचना साझेदारियों पर ध्यान केंद्रित कर श्रीलंका की आर्थिक स्थिरता और विकास को समर्थन देना।
- सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देना:** समुद्री सुरक्षा संवाद को नियमित करना तथा मत्स्य प्रबंधन, तस्करी-रोधी अभियानों और खोज एवं बचाव (Search and Rescue) सहयोग के लिए संयुक्त ढांचे विकसित करना।
- शैक्षिक सहयोग:** छात्र विनिमय, अनुसंधान, संकाय सहयोग और व्यावसायिक प्रशिक्षण पहलों के लिए संरचित संस्थागत समझौतों को लागू करना।
- क्षेत्रीय एकीकरण:** IORA और BIMSTEC जैसे बहुपक्षीय मंचों को सशक्त बनाकर भारत और श्रीलंका को व्यापक क्षेत्रीय सहयोग तंत्र में मजबूती से जोड़ना।

निष्कर्ष

श्रीलंका के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा साझा इतिहास, रणनीतिक हितों और आर्थिक सहयोग पर आधारित द्विपक्षीय संबंधों को और गहरा करने की नई प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह यात्रा शिक्षा, प्रौद्योगिकी, व्यापार और

सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग को सुदृढ़ करने की दोनों देशों की इच्छाशक्ति को दर्शाती है तथा हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के नेतृत्व और स्थिरता एवं समृद्धि में श्रीलंका की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत की यात्रा पर आए श्रीलंका के प्रधानमंत्री की यात्रा हिंद महासागर क्षेत्र में भारत-श्रीलंका संबंधों के विकसित होते स्वरूप को दर्शाती है। भारत के लिए श्रीलंका के रणनीतिक महत्व की व्याख्या कीजिए तथा द्विपक्षीय सहयोग को सुदृढ़ करने में मौजूद प्रमुख चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

भारत-ब्राज़ील : मर्कोसुर व्यापार समझौते का विस्तार

चर्चा में क्यों: भारत और ब्राज़ील ने मर्कोसुर (MERCOSUR) समूह के साथ मौजूदा अधिमान्य व्यापार समझौते (PTA) के दायरे को बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की है। इसका उद्देश्य आर्थिक संबंधों को गहरा करना, व्यापार व निवेश प्रवाह बढ़ाना और द्विपक्षीय व्यापार को प्रोत्साहित करना है।

मर्कोसुर (MERCOSUR) समूह

- मर्कोसुर (Mercado Común del Sur) एक दक्षिण अमेरिकी व्यापार समूह है, जिसकी स्थापना 1991 में अर्जेंटीना, ब्राज़ील, पराग्वे और उरुग्वे द्वारा की गई थी।
- इसका उद्देश्य वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और लोगों की मुक्त आवाजाही के लिए साझा बाजार बनाना है।
- यह एक कस्टम्स यूनिन के रूप में कार्य करता है, जिसमें समान बाह्य शुल्क लागू होता है।
- वेनेजुएला इसका पूर्ण सदस्य रहा है (फिलहाल निलंबित), जबकि चिली, कोलंबिया, इक्वाडोर, गुयाना, पेरू और सूरीनाम सहयोगी सदस्य हैं।
- इसका लक्ष्य क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण व विकास को बढ़ावा देना है।

अधिमान्य व्यापार समझौता (PTA)

- PTA दो या अधिक देशों के बीच ऐसा समझौता होता है, जिसमें कुछ वस्तुओं पर शुल्क कम किया जाता है।
- इसमें सभी व्यापार बाधाएँ समाप्त नहीं की जातीं, जैसा कि मुक्त व्यापार समझौते (FTA) में होता है।
- यह आमतौर पर चुनिंदा वस्तुओं की सूची पर आधारित होता है और गहन आर्थिक एकीकरण की दिशा में पहला कदम माना जाता है।
- भारत-मर्कोसुर अधिमान्य व्यापार समझौते (PTA) भी इसी प्रकार का समझौता है।

विस्तारित समझौते की प्रमुख विशेषताएँ

- व्यापक शुल्क एवं गैर-शुल्क कवरेज:** वर्तमान 450 टैरिफ लाइनों से आगे बढ़कर अधिक वस्तुओं और संभावित गैर-शुल्क मुद्दों को

शामिल किया जाएगा, जिससे भारतीय और मर्कोसुर उत्पादों को अधिक प्राथमिकता मिलेगी।

- **महत्वाकांक्षी व्यापार लक्ष्य:** भारत और ब्राज़ील का लक्ष्य द्विपक्षीय व्यापार को वर्तमान 12-17 अरब अमेरिकी डॉलर से बढ़ाकर 2030 तक 20 अरब डॉलर तक पहुँचाना है।
- **आर्थिक पूरकता:** यह साझेदारी दवा उद्योग, आईटी सेवाएँ, इंजीनियरिंग वस्तुएँ (भारत) तथा कृषि, ऊर्जा और खनिज संसाधन (मर्कोसुर देश) जैसे पूरक क्षेत्रों पर आधारित है।
- **प्रौद्योगिकी और डिजिटल सहयोग:** डिजिटल साझेदारी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), स्टार्टअप, स्वच्छ ऊर्जा और तकनीकी नवाचार के क्षेत्रों में सहयोग को भी शामिल किया गया है।

चुनौतियाँ

- **कृषि संरक्षणवाद:** मर्कोसुर देशों के मजबूत कृषि क्षेत्र और संरक्षणवादी नीतियाँ चीनी, डेयरी और दालों जैसे संवेदनशील उत्पादों में पारस्परिक बाजार पहुँच को सीमित करती हैं।
- **आर्थिक असमानता:** भारत की विविध विनिर्माण एवं सेवा आधारित अर्थव्यवस्था, मर्कोसुर की वस्तु-निर्यात केंद्रित अर्थव्यवस्था से पूरी तरह मेल नहीं खाती, जिससे शुल्क रियायतों पर सहमति कठिन हो जाती है।
- **गैर-शुल्क बाधाएँ (NTBs):** मानकों, नियामक नियमों और अनुपालन प्रक्रियाओं में अंतर व्यापार को बाधित कर सकता है।
- **लॉजिस्टिक्स और संपर्क:** भारत और दक्षिण अमेरिका के बीच भौगोलिक दूरी और आपूर्ति श्रृंखला की सीमाएँ लागत बढ़ाती हैं, जिससे प्रतिस्पर्धात्मकता प्रभावित होती है।
- **सर्वसम्मति की आवश्यकता:** मर्कोसुर में किसी भी व्यापार निर्णय के लिए सभी सदस्य देशों की सहमति आवश्यक होती है, जिससे वार्ता प्रक्रिया धीमी हो सकती है।

परिणाम और प्रभाव

1. आर्थिक प्रभाव

- ✓ बेहतर अधिमान्य बाजार पहुँच से भारतीय उद्योगों (जैसे दवा, रसायन, वस्त्र) की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ेगी।
- ✓ निर्यात आधार के विस्तार से निर्यात विविधीकरण, रोजगार सृजन और भारत-मर्कोसुर देशों के बीच निवेश प्रवाह को बढ़ावा मिलेगा।

2. रणनीतिक प्रभाव

- ✓ ब्राज़ील और मर्कोसुर के साथ मजबूत संबंध भारत की दक्षिण-दक्षिण सहयोग नीति और कूटनीतिक पहुँच को सुदृढ़ करेंगे।
- ✓ लैटिन अमेरिका के साथ व्यापार विस्तार, आसियान, यूरोपीय संघ और इंडो-पैसिफिक देशों के साथ भारत के संतुलित वैश्विक व्यापार संबंधों को मजबूती देगा।

आगे की राह

- **विस्तार वार्ताओं को पूर्ण करना:** व्यापक शुल्क कवरेज और बेहतर गैर-शुल्क सहयोग के लिए वार्ताओं को समयबद्ध रूप से अंतिम रूप देना।
- **उत्पाद विविधीकरण:** आईटी, नवीकरणीय ऊर्जा, ऑटो घटक और डिजिटल व्यापार जैसे उच्च-मूल्य क्षेत्रों को शामिल करना।
- **गैर-शुल्क बाधाओं का समाधान:** मानकों का सामंजस्य, सीमा शुल्क प्रक्रियाओं का सरलीकरण और डिजिटल व्यापार को बढ़ावा देना।
- **संपर्क सुदृढ़ करना:** भारत और लैटिन अमेरिका के बीच व्यापार मार्गों को बेहतर बनाने हेतु लॉजिस्टिक्स समाधान विकसित करना।

निष्कर्ष

भारत और ब्राज़ील के साथ मर्कोसुर व्यापार समझौते का विस्तार पारंपरिक साझेदारियों से आगे बढ़कर आर्थिक सहयोग को गहरा करने की एक रणनीतिक पहल है। अधिमान्य बाजार (Preferential Market) पहुँच के माध्यम से यह पहल व्यापार मात्रा बढ़ाने, दक्षिण-दक्षिण सहयोग को सशक्त करने तथा बदलते वैश्विक व्यापार परिदृश्य में मजबूत और पारस्परिक रूप से लाभकारी आर्थिक संबंध स्थापित करने में सहायक होगी।

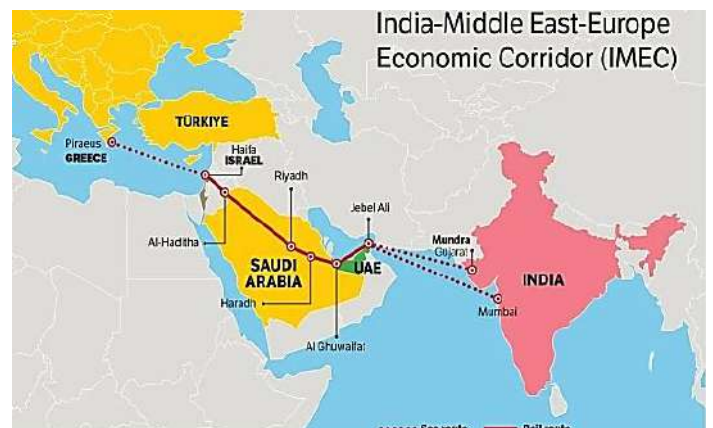
यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत और ब्राज़ील ने भारत-मर्कोसुर के बीच मौजूदा अधिमान्य व्यापार समझौते (PTA) के दायरे का विस्तार करने पर सहमति व्यक्त की है। भारत के व्यापार विविधीकरण और दक्षिण-दक्षिण सहयोग के संदर्भ में इस कदम के महत्व की चर्चा कीजिए। इसके पूर्ण लाभ को प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों की भी विवेचना कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)

चर्चा में क्यों: भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) एक प्रमुख मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी पहल है, जिसे नई दिल्ली में आयोजित G20 शिखर सम्मेलन (सितंबर 2023) के दौरान शुरू किया गया था। मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक व्यापार परिदृश्य में हो रहे बदलावों के कारण यह पुनः चर्चा में है।



भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) क्या है?

- IMEC एक प्रस्तावित अंतर-महाद्वीपीय गलियारा है, जिसका उद्देश्य भारत को अरब खाड़ी के माध्यम से यूरोप से जोड़ना है। इसमें समुद्री मार्ग और उच्च गति रेल सहित मल्टी-मॉडल परिवहन नेटवर्क शामिल हैं, साथ ही ऊर्जा पाइपलाइन, समुद्र के नीचे डिजिटल केबल और स्वच्छ ऊर्जा ग्रिड जैसी उभरती अवसंरचनाएं भी शामिल हैं। इसकी परिकल्पना परिवहन समय को 40% तक घटाने और पारंपरिक स्वेज नहर मार्ग की तुलना में लागत को लगभग 30% तक कम करने के लिए की गई है।
- प्रारंभिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने वाले देशों में भारत, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, यूरोपीय संघ, फ्रांस, जर्मनी और इटली शामिल हैं। यह गलियारा दो खंडों को जोड़ता है — पूर्वी गलियारा (भारत से खाड़ी तक) और उत्तरी गलियारा (खाड़ी से यूरोप तक)।

महत्त्व और रणनीतिक महत्व

(A) आर्थिक संपर्क और व्यापार विविधीकरण

- IMEC पारंपरिक समुद्री मार्गों—विशेष रूप से स्वेज नहर—का एक विश्वसनीय विकल्प प्रस्तुत करता है, जो क्षेत्रीय संघर्षों और हूती हमलों के कारण लाल सागर में उत्पन्न व्यवधानों के दौरान अपनी कमजोरियाँ दिखा चुका है। एक वैकल्पिक गलियारा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाएगा, दक्षता बढ़ाएगा और एशिया, पश्चिम एशिया तथा यूरोप के बीच आर्थिक एकीकरण को प्रोत्साहित करेगा।

(B) मौजूदा संपर्क ढाँचों के संतुलन के रूप में

- यह गलियारा व्यापक पश्चिम-नेतृत्व वाली अवसंरचना कूटनीति का हिस्सा माना जाता है, जो चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) का संभावित विकल्प प्रदान करता है। यह भाग लेने वाले देशों के लिए पारदर्शी, नियम-आधारित संपर्क और ऋण-निर्भरता से बचाव पर जोर देता है।

(C) ऊर्जा और अवसंरचना एकीकरण

- IMEC केवल व्यापार तक सीमित नहीं है; इसमें इलेक्ट्रॉनिक्स, डिजिटल संपर्क, विद्युत और नवीकरणीय ऊर्जा से जुड़ी कड़ियाँ भी शामिल हैं, जो सदस्य देशों के बीच आर्थिक सहयोग और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के अवसरों को बढ़ाती हैं।

IMEC के समक्ष चुनौतियाँ

A. भू-राजनीतिक तनाव

- इज़राइल-गाज़ा युद्ध जैसे जारी संघर्षों ने गलियारे की संभावनाओं को काफी जटिल बना दिया है, विशेषकर इज़राइल, जॉर्डन और सऊदी अरब को जोड़ने वाले उत्तरी रेल खंड को लेकर। अस्थिरता और तनावपूर्ण कूटनीतिक संबंध सीमा-पार अवसंरचना समझौतों की व्यवहार्यता को प्रभावित करते हैं।

B. क्षेत्रीय सुरक्षा और लॉजिस्टिक जोखिम

- महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों (जैसे लाल सागर) पर बार-बार होने वाले व्यवधान उन कमजोरियों को उजागर करते हैं जिन्हें IMEC संबोधित करना चाहता है, लेकिन साथ ही यह भी दर्शाता है कि यह गलियारा अरब प्रायद्वीप और भूमध्यसागर क्षेत्र में सापेक्षिक शांति पर निर्भर करता है — जो स्वयं एक चुनौतीपूर्ण पूर्वशर्त है।

C. अवसंरचना और समन्वय की कमी

- कई देशों के बीच कानूनी, नियामक और तकनीकी मानकों का सामंजस्य स्थापित करना, साथ ही रेल, बंदरगाह और डिजिटल अवसंरचना में निवेश का समन्वय करना, एक जटिल कार्य है जिसके लिए निरंतर कूटनीतिक प्रयास आवश्यक हैं।

परिणाम और प्रभाव

- आर्थिक प्रभाव:** यदि सफलतापूर्वक लागू किया गया, तो IMEC एशिया-यूरोप व्यापार को रूपांतरित कर सकता है, अवसंरचना और लॉजिस्टिक्स क्षेत्रों में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को आकर्षित कर सकता है, तथा परिवहन लागत और समय घटाकर भारतीय निर्यात को अधिक प्रतिस्पर्धी बना सकता है। अनुमान बताते हैं कि इससे निर्यात मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि और वैश्विक बाजारों तक बेहतर पहुँच संभव होगी।
- रणनीतिक प्रभाव:** यह गलियारा भारत के भू-आर्थिक प्रभाव को मजबूत कर सकता है, खाड़ी देशों और यूरोपीय साझेदारों के साथ संबंधों को गहरा कर सकता है, तथा आर्थिक परस्पर निर्भरता को भू-राजनीतिक ढाँचे में समाहित कर क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान दे सकता है।

भारत-अमेरिका प्रमुख रक्षा साझेदारी

चर्चा में क्यों: हाल ही में भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने 12वें आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक-प्लस (ADMM-Plus) के दौरान कुआलालंपुर, मलेशिया में "भारत-अमेरिका प्रमुख रक्षा साझेदारी के लिए 10-वर्षीय रूपरेखा" समझौते पर हस्ताक्षर किए।

समझौते की प्रमुख विशेषताएँ

- अवधि:** 10 वर्ष (2025-35) दीर्घकालिक नीति दिशा प्रदान करता है।
- रणनीतिक फोकस:** बेहतर समन्वय, सूचना साझा करने और प्रौद्योगिकीय सहयोग के माध्यम से रक्षा संबंधों को मजबूत करना।
- सैन्य सहयोग:** वर्तमान और भविष्य के संयुक्त अभ्यासों, प्रशिक्षण, परिचालन सहयोग और अंतःक्रियाशीलता को सुदृढ़ करता है।
- प्रौद्योगिकी एवं उद्योग:** रक्षा प्रौद्योगिकी साझाकरण, सह-विकास, रक्षा उद्योग संपर्क और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देता है।
- क्षेत्रीय सुरक्षा:** हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा संरचना को मजबूत करता है तथा स्वतंत्र, मुक्त और नियम-आधारित व्यवस्था में योगदान देता है।

रणनीतिक एवं भू-राजनीतिक आयाम

- 1) **हिंद-प्रशांत सुरक्षा को सुदृढ़ करना:** यह समझौता हिंद-प्रशांत क्षेत्र में दोनों देशों के रणनीतिक हितों के अनुरूप है, जिसमें क्षेत्रीय खतरों का सामना करने और नियम-आधारित व्यवस्था को बनाए रखने पर बल दिया गया है।
- 2) **प्रमुख रक्षा साझेदार का दर्जा:** भारत 2016 से अमेरिका का प्रमुख रक्षा साझेदार रहा है, जो अमेरिका के रक्षा साझेदारों में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह ढांचा उस दर्जे को और मजबूत करता है।
- 3) **क्षेत्रीय बहुपक्षीय सहभागिता:** आसियान के एक प्रमुख मंच पर हस्ताक्षरित यह समझौता दक्षिण-पूर्व एशिया के क्षेत्रीय भागीदारों के साथ साझा हितों को दर्शाता है और सामूहिक सुरक्षा सहयोग को सुदृढ़ करता है।
- 4) **रक्षा औद्योगिक सहयोग:** यह समझौता गहन रक्षा औद्योगिक सहयोग को बढ़ावा देता है, जिससे 'मेक इन इंडिया' पहल और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौतों को लाभ मिलता है।

पृष्ठभूमि और इसकी गतिशीलता

- यह रक्षा ढांचा नई दिल्ली और वाशिंगटन के बीच उच्च-स्तरीय वार्ताओं के व्यापक परिप्रेक्ष्य में तैयार किया गया था, जिसमें 2025 की शुरुआत में विदेश और रक्षा अधिकारियों की बैठकें शामिल थीं।
- यह ऐसे समय में सामने आया है जब द्विपक्षीय संबंधों पर व्यापारिक तनाव जैसे दबाव भी रहे हैं, फिर भी दोनों देशों ने रणनीतिक साझेदारी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है।

भारत की रक्षा रणनीति के लिए महत्व

- प्रमुख वैश्विक शक्ति के साथ रणनीतिक सहयोग में स्थिरता और निरंतरता प्रदान करता है।
- सतत अभ्यासों और उन्नत प्रौद्योगिकी तक पहुँच के माध्यम से भारत की सैन्य तैयारी को सुदृढ़ करता है।
- क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों से निपटने हेतु बेहतर खुफिया साझाकरण और संयुक्त प्रतिक्रिया को सक्षम बनाता है।

आगे की राह

- **समयबद्ध क्रियान्वयन:** 10-वर्षीय ढांचे को स्पष्ट लक्ष्यों और चरणबद्ध उपलब्धियों के साथ कार्यान्वयन योग्य रोडमैप में बदलना।
- **प्रौद्योगिकी सह-विकास:** एआई, साइबर, अंतरिक्ष और ड्रोन जैसे उभरते क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान एवं विकास तथा सह-उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करना।
- **रक्षा औद्योगिक संपर्क:** 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' के साथ सहयोग को जोड़कर स्वदेशी क्षमताओं को बढ़ावा देना।
- **उन्नत अंतःक्रियाशीलता:** संयुक्त सैन्य अभ्यासों और लॉजिस्टिक समन्वय के दायरे और जटिलता का विस्तार करना।

- **हिंद-प्रशांत पर फोकस:** QUAD और ADMM-Plus जैसे मंचों का उपयोग कर नियम-आधारित क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना, साथ ही भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखना।

निष्कर्ष

भारत और अमेरिका के बीच 10-वर्षीय रक्षा ढांचा द्विपक्षीय संबंधों में एक परिवर्तनकारी मील का पत्थर है, जो साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, पारस्परिक सुरक्षा हितों और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता के साझा दृष्टिकोण पर आधारित रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न भारत-अमेरिका 10-वर्षीय रक्षा ढांचा किस प्रकार भारत की प्रमुख रक्षा साझेदार के रूप में स्थिति को सुदृढ़ करता है, साथ ही उसकी रणनीतिक स्वायत्तता को कैसे संरक्षित रखता है? (10 अंक, 150 शब्द)

भारत और आसियान : आर्थिक एवं सुरक्षा सहयोग

चर्चा में क्यों: भारतीय प्रधानमंत्री ने 47वें आसियान शिखर सम्मेलन को वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया, जिसमें भारत की कूटनीतिक प्राथमिकताओं की पुनः पुष्टि की गई।

आसियान समझौते के प्रमुख बिंदु

- **भारत-आसियान साझेदारी:** प्रधानमंत्री मोदी ने भारत-आसियान व्यापक रणनीतिक साझेदारी को "स्थिरता और विकास की आधारशिला" बताया। उन्होंने आर्थिक सहयोग, डिजिटल समावेशन, समुद्री सुरक्षा, हरित ऊर्जा और सुदृढ़ आपूर्ति शृंखलाओं जैसे साझा लक्ष्यों पर बल दिया।
- **आसियान-भारत समुद्री सहयोग का वर्ष:** हिंद-प्रशांत क्षेत्र में क्षेत्रीय अनिश्चितताओं का संतुलन बनाने हेतु भारत ने 2026 को "आसियान-भारत समुद्री सहयोग वर्ष" घोषित किया, जिसमें आपदा राहत (HADR) और ब्लू इकोनॉमी पहलों को बढ़ावा दिया जाएगा।
- **एक्ट ईस्ट नीति की निरंतरता:** भारत ने दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ संपर्क, व्यापार और जन-से-जन संबंधों को मजबूत करने की प्रतिबद्धता दोहराई, जो भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' के केंद्र में है।

अमेरिका के व्यापारिक कदम और भारत की प्रतिक्रिया

- **भारतीय निर्यात पर उच्च शुल्क:** संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारतीय निर्यात पर—विशेषकर रूस से तेल आयात जारी रखने के कारण—50% तक के ऊँचे शुल्क लगाए हैं।
- **निर्यात पर प्रभाव:** व्यापार विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि इससे अमेरिका को भारत के निर्यात पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है, विशेषकर वस्त्र, रत्न और आभूषण तथा विनिर्मित वस्तुओं जैसे क्षेत्रों में।

कूटनीतिक संवाद

- **भारत-अमेरिका वार्ताएँ जारी:** तनाव के बावजूद कूटनीतिक चैनल सक्रिय बने रहे, अमेरिकी अधिकारियों की यात्राएँ और शुल्क घटाने या हटाने के लिए व्यापार वार्ताएँ जारी रहीं।
- **व्यक्तिगत समीकरण बनाए रखना:** राजकीय यात्राएँ, सार्वजनिक मित्रता के संकेत और रणनीतिक संवाद जारी रहे, जो दर्शाते हैं कि वर्तमान आर्थिक तनाव के बावजूद दोनों देश दीर्घकालिक भारत-अमेरिका व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

चीन और व्यापार स्थिरता

- अमेरिकी शुल्क दबावों और बदलते वैश्विक गठबंधनों के बीच भारत बहुपक्षीय मंचों पर चीन के साथ भी संवाद बनाए हुए है।
- भारत और चीन ने सार्वजनिक रूप से अपने संबंधों को साझेदारी के रूप में वर्णित किया है तथा व्यापार स्थिरता सहित वैश्विक आर्थिक मुद्दों पर सहयोग और रणनीतिक स्वायत्तता की पुष्टि की है।

आसियान का तटस्थ रुख

- दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों ने अमेरिका-चीन व्यापार टकराव में किसी एक पक्ष का समर्थन करने से सावधानीपूर्वक परहेज किया है।
- इसके बजाय उन्होंने दोनों शक्तियों के साथ सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया है, जो भारत के साथ आसियान की निरंतर भागीदारी में भी परिलक्षित होता है।

भारत की विदेश नीति के लिए महत्व एवं प्रभाव

यह अवधि भारत की बहु-वेक्टर कूटनीति को दर्शाती है, जहाँ —

- **आर्थिक हितों** (व्यापार समझौते और शुल्क वार्ताएँ) का संतुलन किया जाता है,
- **रणनीतिक स्वायत्तता** की नीति के तहत अमेरिका और चीन दोनों से संवाद बनाए रखा जाता है,
- **क्षेत्रीय नेतृत्व की आकांक्षाएँ**, विशेष रूप से आसियान और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में, सुदृढ़ की जाती हैं।

यह विकास क्यों महत्वपूर्ण है?

1. वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता

- ✓ संरक्षणवादी व्यापार नीतियों की पुनरावृत्ति, विशेष रूप से अमेरिका द्वारा शुल्क संबंधी धमकियों ने वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं को बाधित किया है।
- ✓ वैश्विक व्यापार से गहराई से जुड़े आसियान देशों की अर्थव्यवस्थाएँ अमेरिका-चीन तनाव के परोक्ष प्रभावों के प्रति संवेदनशील हैं।
- ✓ आसियान को स्थिरता के एक स्तंभ के रूप में स्थापित करना भारत की आर्थिक साझेदारियों में विविधता लाने के प्रयास को दर्शाता है।

2. हिंद-प्रशांत में आसियान की केंद्रीय भूमिका

- ✓ आसियान वैश्विक समुद्री व्यापार मार्गों के चौराहे पर स्थित है।
- ✓ हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नौवहन की स्वतंत्रता, ऊर्जा सुरक्षा और व्यापार प्रवाह के लिए आसियान में स्थिरता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. भारत की रणनीतिक स्वायत्तता

- ✓ आसियान के साथ भारत का जुड़ाव कठोर सैन्य या व्यापारिक गुटों में शामिल हुए बिना उसे निम्नलिखित के साथ संतुलन बनाने में सक्षम बनाता है:
 - संयुक्त राज्य अमेरिका (रणनीतिक एवं रक्षा साझेदार)
 - चीन (आर्थिक प्रतिस्पर्धी और भू-राजनीतिक चुनौती)

भारत के लिए महत्व

1. रणनीतिक महत्व

- ✓ भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' और हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण को सुदृढ़ करता है।
- ✓ समुद्री सहयोग, मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (HADR) तथा नौसैनिक अभ्यासों के माध्यम से क्षेत्र में शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की भूमिका को मजबूत करता है।
- ✓ क्षेत्रीय निर्णय-निर्माण और महाशक्ति प्रतिस्पर्धा में भारत की आवाज़ को सशक्त बनाता है।

2. आर्थिक महत्व

- ✓ आसियान भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक है।
- ✓ भारत को निम्नलिखित में सहायता करता है:
 - अमेरिका और यूरोपीय संघ जैसे पारंपरिक बाजारों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करना।
 - लचीली और विविधीकृत आपूर्ति शृंखलाओं में एकीकरण।
- ✓ विनिर्माण, डिजिटल अर्थव्यवस्था और हरित विकास में भारत की महत्वाकांक्षाओं को समर्थन देता है।

3. कूटनीतिक महत्व

- ✓ समावेशी और नियम-आधारित बहुपक्षवाद के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- ✓ भारत को वैश्विक दक्षिण और प्रमुख शक्तियों के बीच एक सेतु के रूप में स्थापित करता है।
- ✓ टकरावकारी शक्ति के बजाय एक स्थिरकारी शक्ति के रूप में भारत की विश्वसनीयता बढ़ाता है।

4. भू-राजनीतिक महत्व

- ✓ आसियान के साथ जुड़ाव भारत को निम्न परिस्थितियों में रणनीतिक बढ़त प्रदान करता है:
 - अमेरिका के शुल्क संबंधी दबाव,
 - चीन की आर्थिक आक्रामकता,
 - वैश्विक व्यापार व्यवस्था का विखंडन (डब्ल्यूटीओ का कमजोर होना)।

- ✓ किसी गुटीय राजनीति को उकसाए बिना क्षेत्रीय संतुलन को मजबूत करता है।

सुझाव / आगे की राह

1) आर्थिक एकीकरण को गहरा करना

- ✓ भारत-आसियान एफटीए को उन्नत एवं तर्कसंगत बनाना ताकि व्यापार असंतुलन को दूर किया जा सके।
- ✓ इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर, औषधि और हरित प्रौद्योगिकियों में मूल्य-श्रृंखला एकीकरण को बढ़ावा देना।

2) संपर्क सुदृढ़ करना

- ✓ भौतिक संपर्क परियोजनाओं को तीव्र गति से आगे बढ़ाना।
- ✓ डिजिटल संपर्क और फिनटेक सहयोग का विस्तार करना।

3) समुद्री एवं सुरक्षा सहयोग

- ✓ संयुक्त समुद्री क्षेत्र जागरूकता को संस्थागत रूप देना।
- ✓ नौसैनिक अभ्यासों, तटीय सुरक्षा सहयोग और आपदा प्रतिक्रिया तंत्र का विस्तार करना।

4) व्यापार कूटनीति एवं बहुपक्षवाद

- ✓ वैश्विक व्यापार संस्थाओं (WTO) में सुधार की वकालत करना।
- ✓ अत्यधिक संरक्षणवाद और एकतरफा शुल्कों का विरोध करने हेतु आसियान के साथ समन्वय करना।

5) जन-से-जन संपर्क एवं सॉफ्ट पावर

- ✓ शैक्षिक आदान-प्रदान, पर्यटन और सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ावा देना।
- ✓ भारत के डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) को आसियान देशों के लिए विकास मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना।

निष्कर्ष

ऐसे समय में जब वैश्विक व्यापार तेजी से भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और शुल्क युद्धों से प्रभावित हो रहा है, भारत द्वारा आसियान को स्थिरता और विकास के स्तंभ के रूप में महत्व देना एक परिपक्व, बहु-संरक्षित विदेश नीति को दर्शाता है। भारत-आसियान संबंधों को सुदृढ़ करना केवल आर्थिक हितों से जुड़ा नहीं है, बल्कि संतुलित, समावेशी और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत व्यवस्था को बनाए रखने के लिए भी आवश्यक है। आगे बढ़ते हुए, निरंतर संवाद, आर्थिक व्यावहारिकता और रणनीतिक संयम ही कूटनीतिक मंशा को ठोस परिणामों में बदलने की कुंजी होंगे।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न बढ़ते संरक्षणवाद और अमेरिका-चीन व्यापार तनाव की पृष्ठभूमि में, भारत ने आसियान को स्थिरता और विकास के स्तंभ के रूप में रेखांकित किया है। भारत की विदेश नीति के लिए भारत-आसियान संबंधों के रणनीतिक, आर्थिक और भू-राजनीतिक महत्व की समीक्षा कीजिए। इस साझेदारी को और सुदृढ़ करने हेतु उपाय सुझाइए। (15 अंक / 250 शब्द)

भारत-रूस रणनीतिक आर्थिक पहल

चर्चा में क्यों: भारत और रूस ने 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 100 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँचाने के अपने संकल्प को दोहराया है, साथ ही भारतीय वस्तुओं और सेवाओं के लिए आर्थिक संबंधों को मजबूत करने और बाज़ार पहुँच बढ़ाने के उद्देश्य से यूरोशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU) के साथ मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर वार्ताओं को आगे बढ़ाया है।

पृष्ठभूमि

- भारत और रूस के बीच ऊर्जा, रक्षा, अंतरिक्ष और व्यापार सहयोग को समाहित करने वाली दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी रही है।
- 2024-25 में द्विपक्षीय व्यापार लगभग 70 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने और पिछले एक दशक में तेज़ी से बढ़ने के साथ, दोनों देश वैश्विक भू-राजनीतिक बदलावों और व्यापार पुनर्संयोजन की पृष्ठभूमि में अपने आर्थिक जुड़ाव को और गहरा कर रहे हैं।

प्रमुख घटनाक्रम

1. 2030 तक 100 अरब अमेरिकी डॉलर का व्यापार लक्ष्य

- ✓ भारत और रूस ने 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 100 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँचाने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है, जो वर्तमान लगभग 70 अरब अमेरिकी डॉलर के स्तर से एक उल्लेखनीय वृद्धि है।
- ✓ दोनों सरकारों ने उर्वरक, विनिर्माण, खाद्य सुरक्षा और शिपिंग सहित विभिन्न क्षेत्रों में व्यापार और निवेश के विस्तार हेतु आर्थिक सहयोग कार्यक्रम अपनाए हैं।

2. भारत-EAEU एफटीए की प्रगति

- ✓ भारत और यूरोशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU)—जिसमें रूस, आर्मेनिया, बेलारूस, कज़ाखस्तान और किर्गिज़ गणराज्य शामिल हैं—ने वस्तुओं और सेवाओं में व्यापार को बढ़ावा देने, बाज़ार पहुँच में सुधार करने और एमएसएमई को समर्थन देने हेतु मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के लिए संदर्भ शर्तों (ToR) पर हस्ताक्षर किए हैं।
- ✓ ToR में 18 महीनों की कार्य योजना निर्धारित की गई है, जिसका उद्देश्य बाज़ारों का विविधीकरण, गैर-शुल्क बाधाओं का समाधान और व्यापक आर्थिक सहयोग का मार्ग प्रशस्त करना है।

3. नियामक एवं व्यापार सुगमता उपाय

- ✓ भारतीय और EAEU नियामकों के बीच नियमित त्रैमासिक संवाद आयोजित किए जाएंगे, जिनमें प्रमाणीकरण, कृषि एवं समुद्री निर्यात, प्रतिस्पर्धा-विरोधी मानदंड, लॉजिस्टिक्स तथा भुगतान तंत्र से जुड़े मुद्दों का समाधान कर व्यापार सुगमता बढ़ाई जाएगी।

महत्व एवं प्रासंगिकता

1) आर्थिक विविधीकरण और विकास

- ✓ 100 अरब अमेरिकी डॉलर के व्यापार लक्ष्य से भारत के निर्यात को ऊर्जा आयातों से आगे विविध बनाने के प्रयास को दर्शाया गया है, जो वर्तमान में व्यापार असंतुलन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- ✓ लगभग 6.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की संयुक्त जीडीपी वाले EAEU बाज़ार तक बेहतर पहुँच, औषधि, मशीनरी, रसायन, ऑटोमोबाइल, दूरसंचार उपकरण और चमड़ा उत्पाद जैसे भारतीय क्षेत्रों के लिए अवसर प्रदान करती है।
- ✓ रूस के साथ व्यापार को मजबूत करने से एमएसएमई, किसानों और नए क्षेत्रों को समर्थन मिलेगा, जिससे रोजगार और घरेलू औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

2) रणनीतिक साझेदारी और भू-राजनीतिक संतुलन

- ✓ वैश्विक व्यापार गतिशीलता—जैसे अमेरिकी शुल्क दबाव और व्यापक भू-राजनीतिक बदलाव—के बीच रूस के साथ संबंधों को सुदृढ़ करना भारत की आर्थिक रणनीतिक स्वायत्तता को मजबूत करता है।
- ✓ गहन आर्थिक सहयोग बहु-संरक्षण कूटनीति को दर्शाता है, जिसमें भारत पश्चिमी देशों के साथ संतुलन बनाते हुए रूस के साथ मजबूत सहयोग बनाए रखता है।

3) क्षेत्रीय व्यापार एकीकरण

- ✓ भारत-EAEU एफटीए यूरोशियाई बाजारों में व्यापक भागीदारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है, जिससे भारत को क्षेत्रीय मूल्य श्रृंखलाओं और आर्थिक गलियारों में प्रमुख भूमिका मिल सकती है।

चुनौतियाँ

1. **व्यापार असंतुलन:** वृद्धि के बावजूद, रूस को भारत का निर्यात आयात की तुलना में काफी कम है, जिससे व्यापार घाटा बना रहता है। इस असंतुलन को दूर करने के लिए शुल्क और गैर-शुल्क बाधाओं का समाधान आवश्यक है।
2. **गैर-शुल्क बाधाएँ और लॉजिस्टिक्स:** प्रमाणीकरण से जुड़ी कठिनाइयाँ, लॉजिस्टिक सीमाएँ और भुगतान तंत्र व्यापार विस्तार में बाधा उत्पन्न करते हैं।
3. **भू-राजनीतिक जटिलताएँ:** रूस पर पश्चिमी प्रतिबंध और अन्य व्यापारिक साझेदारों से जुड़े शुल्क विवाद गहन आर्थिक एकीकरण को जटिल बना सकते हैं।

सुझाव / आगे की राह

- **संतुलित व्यापार रणनीति:** औषधि, इंजीनियरिंग वस्तुएँ, इलेक्ट्रॉनिक्स, खाद्य उत्पाद और वस्त्र जैसे उच्च-विकास क्षेत्रों में निर्यात बढ़ाकर व्यापार संतुलन सुधारना।

- **भुगतान एवं निपटान प्रणालियों को सुदृढ़ करना:** रुपये-रुबल व्यवस्था और राष्ट्रीय मुद्रा निपटान तंत्र का विस्तार कर द्विपक्षीय व्यापार में पूर्वानुमेयता और वित्तीय सहयोग बढ़ाना।
- **व्यापार सुगमता में सुधार:** प्रमाणीकरण प्रक्रियाओं को सरल बनाना, गैर-शुल्क बाधाओं को कम करना और परिवहन व लॉजिस्टिक्स संपर्क को सुदृढ़ करना ताकि भारतीय वस्तुएँ रूसी और EAEU बाजारों में अधिक प्रतिस्पर्धी बन सकें।
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देना:** भारतीय कंपनियों को रूसी और EAEU फर्मों के साथ संयुक्त उद्यम और सह-उत्पादन पहलों में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना, जिससे गहन एकीकरण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा मिलेगा।

निष्कर्ष

भारत और रूस द्वारा 2030 तक 100 अरब अमेरिकी डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार लक्ष्य को प्राप्त करने तथा भारत-EAEU मुक्त व्यापार समझौते (FTA) को आगे बढ़ाने पर दिया गया नया जोर उनकी आर्थिक साझेदारी में एक रणनीतिक मील का पत्थर है। यह पहल न केवल व्यापार और औद्योगिक विकास को गति देने की बड़ी संभावनाएँ रखती है, बल्कि जटिल वैश्विक परिदृश्य में भारत की आर्थिक कूटनीति को भी सशक्त बनाती है। संरचनात्मक चुनौतियों का समाधान, निर्यात विविधीकरण को बढ़ावा और व्यापार सुगमता में सुधार के माध्यम से दोनों देश इस साझेदारी की पूर्ण क्षमता को साकार कर सकते हैं, जिससे सतत समृद्धि और गहन क्षेत्रीय एकीकरण संभव होगा।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न भारत-रूस आर्थिक सहयोग तथा प्रस्तावित भारत-EAEU एफटीए के संदर्भ में, रूस और यूरोशियन आर्थिक संघ के साथ व्यापार विस्तार के संभावित लाभों और जोखिमों का विश्लेषण कीजिए। भारत इस साझेदारी का उपयोग अपने व्यापार विविधीकरण और आर्थिक कूटनीति को सुदृढ़ करने के लिए कैसे कर सकता है? (15 अंक / 250 शब्द)

मंगोलिया की पहली तेल रिफाइनरी

चर्चा में क्यों: भारत और मंगोलिया ने भारतीय वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से मंगोलिया की पहली तेल रिफाइनरी के निर्माण के साथ अपने द्विपक्षीय सहयोग को और गहरा किया है।

प्रमुख विवरण

- यह रिफाइनरी वर्ष 2028 तक परिचालन में आने की संभावना है, जो दोनों देशों के बीच ऊर्जा सहयोग में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर होगी।
- इस परियोजना की घोषणा मंगोलिया के राष्ट्रपति खुरेलसुख उखना की भारत यात्रा के दौरान की गई, जो दोनों देशों के बढ़ते रणनीतिक और आर्थिक संबंधों को दर्शाती है।

परियोजना का विवरण

- **परियोजना का नाम एवं स्थान:** मंगोल रिफाइनरी का निर्माण मंगोलिया के डोर्नोगोवी प्रांत के अल्तानशिरी क्षेत्र में किया जा रहा है।
- **क्षमता:** यह रिफाइनरी प्रति वर्ष लगभग 1.5 मिलियन मीट्रिक टन कच्चे तेल का प्रसंस्करण करेगी (लगभग 30,000 बैरल प्रतिदिन), जिससे पेट्रोल, डीज़ल, एलपीजी और विमान ईंधन जैसे उत्पादों का उत्पादन होगा।
- **वित्तपोषण:** यह परियोजना भारत के निर्यात-आयात (EXIM) बैंक द्वारा प्रदान की गई 1.7 अरब अमेरिकी डॉलर की ऋण सहायता से वित्तपोषित की जा रही है, जो भारत की सबसे बड़ी विदेशी विकास परियोजनाओं में से एक है।
- **निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स:** रिफाइनरी के उपकरण भारत में निर्मित किए जा रहे हैं और स्थापना के लिए मंगोलिया भेजे जाएंगे।

यह विकास क्यों महत्वपूर्ण है

1. मंगोलिया के लिए ऊर्जा सुरक्षा और आयात प्रतिस्थापन

- ✓ मंगोलिया वर्तमान में परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों के आयात पर अत्यधिक निर्भर है, मुख्यतः रूस से।
- ✓ एक घरेलू रिफाइनरी की स्थापना से आयातित ईंधन पर निर्भरता काफी कम होगी, ऊर्जा आत्मनिर्भरता बढ़ेगी और घरेलू मूल्य स्थिरता सुनिश्चित होगी।

2. भारत-मंगोलिया रणनीतिक साझेदारी को सुदृढ़ करना

- ✓ यह परियोजना द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो पारंपरिक सांस्कृतिक और कूटनीतिक सहयोग से आगे बढ़कर अवसंरचना और ऊर्जा सहयोग तक विस्तारित होती है।
- ✓ यह हिंद-प्रशांत और मध्य एशिया क्षेत्र में भारत की एक विश्वसनीय विकास साझेदार के रूप में भूमिका को मजबूत करती है।

3. आर्थिक एवं औद्योगिक संपर्क को बढ़ावा

- ✓ रिफाइनरी परियोजना से भारतीय इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण कंपनियों के लिए कार्यान्वयन और परामर्श से जुड़े अवसर उत्पन्न होंगे।
- ✓ तेल और गैस अन्वेषण में सहयोग को बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि मंगोलिया ने घरेलू हाइड्रोकार्बन संसाधनों की खोज के लिए भारतीय कंपनियों को आमंत्रित किया है।
- ✓ मंगोलिया से कोकिंग कोयले जैसे खनिजों के आयात की संभावनाएँ बढ़ेंगी, जो भारतीय उद्योगों को समर्थन दे सकती हैं।

4. भू-रणनीतिक निहितार्थ

- ✓ रूस और चीन के बीच स्थित एक स्थलरुद्ध देश होने के कारण, मंगोलिया में भारत की ऊर्जा अवसंरचना भागीदारी 'एक्ट ईस्ट' और 'कनेक्ट सेंट्रल एशिया' नीतियों के अनुरूप है, जिससे दक्षिण एशिया से परे भारत का प्रभाव बढ़ता है।

चुनौतियाँ और विचारणीय बिंदु

- **लॉजिस्टिक्स और संपर्क:** मंगोलिया की स्थलरुद्ध भौगोलिक स्थिति के कारण कच्चे तेल की आपूर्ति और परिष्कृत उत्पादों के निर्यात के लिए रूस या चीन के माध्यम से प्रभावी परिवहन गलियारों की आवश्यकता होगी। भारत व्लादिवोस्तोक (रूस) और तियानजिन (चीन) जैसे मार्गों की संभावनाएँ तलाश रहा है ताकि ऊर्जा और खनिज संसाधनों की आवाजाही को सुगम बनाया जा सके।
- **आर्थिक व्यवहार्यता और बाजार गतिशीलता:** रिफाइनरी की व्यावसायिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए निरंतर कच्चे तेल की आपूर्ति, प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण और क्षेत्रीय ईंधन बाजारों के साथ एकीकरण आवश्यक होगा।
- **भू-राजनीतिक संवेदनशीलताएं:** मंगोलिया के ऊर्जा क्षेत्र में भारत की भागीदारी को क्षेत्रीय भू-राजनीतिक समीकरणों के अनुरूप संतुलित करना होगा, क्योंकि मंगोलिया की भौगोलिक स्थिति और पड़ोसी देशों के साथ उसके संबंध संवेदनशील हैं।

आगे की राह / सुझाव

- **परिवहन गलियारों को सुदृढ़ करना:** बहु-मॉडल संपर्क—रेल, सड़क और पाइपलाइन नेटवर्क—का निर्माण करना, जिससे मंगोलिया, भारत और तृतीय देशों के बाजारों को जोड़ने वाली लागत-प्रभावी आपूर्ति शृंखलाएँ विकसित हो सकें।
- **तकनीकी सहयोग का विस्तार:** भारतीय सार्वजनिक और निजी कंपनियों को रिफाइनरी संचालन, रखरखाव और अपस्ट्रीम अन्वेषण में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना। इससे औद्योगिक सहयोग बढ़ेगा और दीर्घकालिक व्यावसायिक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण होगा।
- **एकीकृत ऊर्जा साझेदारी:** कच्चे तेल की आपूर्ति, परिशोधन, डाउनस्ट्रीम उत्पादों के विपणन और लॉजिस्टिक्स एकीकरण को शामिल करते हुए एक व्यापक ऊर्जा साझेदारी ढांचा विकसित करना, जिससे पारस्परिक लाभ बढ़ें।
- **क्षेत्रीय संपर्क नीतियों का उपयोग:** इस परियोजना को भारत की कनेक्ट सेंट्रल एशिया पहल के साथ जोड़ना, ताकि व्यापार, निवेश और सांस्कृतिक संबंधों सहित व्यापक आर्थिक सहयोग को बढ़ावा मिल सके।

निष्कर्ष

2028 तक मंगोलिया की पहली तेल रिफाइनरी को चालू करने के लिए भारत का समर्थन द्विपक्षीय सहयोग में एक परिवर्तनकारी कदम है, जिसके दूरगामी प्रभाव ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक एकीकरण और मध्य एवं पूर्वी एशिया में रणनीतिक सहभागिता पर पड़ेंगे। मंगोलिया की पहली रिफाइनरी को वित्तपोषित और समर्थन देकर भारत ने स्वयं को एक विश्वसनीय विकास साझेदार और ऊर्जा सहयोगी के रूप में स्थापित किया है। बेहतर संपर्क

और विविधकृत सहयोग के माध्यम से इस अवसर का उपयोग दोनों देशों को क्षेत्रीय स्थिरता और समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ाएगा।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न "मंगोलिया की पहली तेल रिफाइनरी के लिए भारत का समर्थन मध्य एशिया में उसकी रणनीतिक ऊर्जा कूटनीति को दर्शाता है।" भारत की एक्ट ईस्ट और कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीतियों के संदर्भ में इस कथन की विवेचना कीजिए। (10 अंक / 150 शब्द)

आयनी एयरबेस में भारत का संचालन समाप्त

चर्चा में क्यों: भारत ने औपचारिक रूप से ताजिकिस्तान स्थित आयनी एयरबेस पर अपने संचालन को समाप्त कर दिया है, जिससे उसका एकमात्र पूर्णतः संचालित विदेशी सैन्य ठिकाना बंद हो गया है।



आयनी एयरबेस की पृष्ठभूमि और विकास

आयनी एयरबेस - ताजिकिस्तान की राजधानी दुशांबे के पास स्थित है। मूल रूप से यह एक पूर्व सोवियत सुविधा थी, भारत ने 2000 के शुरुआती वर्षों में ताजिकिस्तान के साथ इसे आधुनिक बनाने और संयुक्त रूप से संचालित करने के लिए एक समझौता किया, जो मध्य एशिया में उसकी रणनीतिक पहुँच का हिस्सा था।

मुख्य घटनाक्रम:

- **2000 के शुरुआती वर्ष:** भारत ने रनवे उन्नयन, ईंधन डिपो, हैंगर और एयर ट्रेफिक सिस्टम पर लगभग 80-100 मिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश करते हुए नवीनीकरण और विकास शुरू किया।
- **परिचालन भूमिका:** इस एयरबेस पर भारतीय वायुसेना के कर्मियों की एक छोटी टुकड़ी तैनात थी और कुछ समय के लिए Su-30MKI लड़ाकू विमान भी रहे, जो इसे एक रणनीतिक हब और लॉजिस्टिक सुविधा दोनों बनाते थे।
- **निकासी प्रयास:** 2021 में तालिबान के सत्ता में लौटने के बाद अफगानिस्तान से भारतीय नागरिकों की निकासी में आयनी एयरबेस ने भूमिका निभाई।

भारत ने क्यों वापसी की

भारत-ताजिकिस्तान व्यवस्था 2022 में समाप्त हो गई। इसके पीछे कई कारण थे:

- **द्विपक्षीय समझौते की समाप्ति:** भारत की लीज़ और संयुक्त उपयोग व्यवस्था समाप्त हो गई और इसका नवीनीकरण नहीं किया गया।
- **भू-राजनीतिक दबाव:** क्षेत्रीय शक्तियों — विशेष रूप से रूस और चीन — ने दुशांबे पर गैर-क्षेत्रीय सैन्य उपस्थिति सीमित करने का दबाव डाला, जिससे भारत की रणनीतिक गुंजाइश कम हुई।
- **परिचालन सीमाएँ:** भारत को कभी भी स्थायी-स्थिति बल (Permanent-Status Forces) जैसे अधिकार नहीं मिले, जिससे बेस की रणनीतिक उपयोगिता सीमित रही।
- **लॉजिस्टिक चुनौतियाँ:** दूरस्थ स्थान, आपूर्ति की कठिनाइयाँ और तृतीय-पक्ष पहुँच पर निर्भरता के कारण समय के साथ संचालन कठिन होता गया।

रणनीतिक महत्व

आयनी एयरबेस भारत की विदेश नीति और रक्षा दृष्टिकोण के लिए काफी महत्वपूर्ण था:

- **मध्य एशिया तक पहुँच:** इसने मध्य एशिया तक विशिष्ट भू-राजनीतिक पहुँच प्रदान की, जो आर्थिक और सुरक्षा दृष्टि से बढ़ते महत्व का क्षेत्र है।
- **मुख्य सीमाओं के निकटता:** यह बेस अफगानिस्तान के वखान कॉरिडोर, पाकिस्तान-प्रशासित कश्मीर और शिनजियांग (चीन) के पास स्थित था, जिससे निगरानी और त्वरित प्रतिक्रिया संभव थी।
- **शक्ति प्रक्षेपण:** आयनी भारत का दक्षिण एशिया से बाहर सैन्य उपस्थिति दिखाने और प्रतिस्पर्धी हितों को संतुलित करने का प्रयास था।

भारत की सुरक्षा और कूटनीति पर प्रभाव

आयनी सुविधा के बंद होने से कई रणनीतिक पहलुओं पर विचार उत्पन्न हुए हैं:

1. **अग्रिम मौजूदगी (फॉरवर्ड प्रेज़ेन्स) की हानि:** भारत का एकमात्र विदेशी एयरबेस रणनीतिक गहराई और संवेदनशील भू-राजनीतिक क्षेत्र तक त्वरित पहुँच प्रदान करता था। इसके अभाव में भारत की खतरों की निगरानी और त्वरित प्रतिक्रिया क्षमता सीमित हो गई है।
2. **भू-राजनीतिक महत्व:** यह बदलाव मध्य एशिया में बदलते शक्ति संतुलन को दर्शाता है, जहाँ रूस और चीन अपना प्रभाव मजबूत कर रहे हैं और भारत की भूमिका तुलनात्मक रूप से कम हो गई है।
3. **नीति पुनर्संयोजन:** विशेषज्ञों के अनुसार, यह वापसी भारत की व्यापक रणनीतिक पुनर्संतुलन नीति का हिस्सा है, जिसमें अब फोकस हिंद महासागर और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र पर है, जहाँ भारत को अधिक प्रभाव और बेहतर अवसरचना प्राप्त है, जैसे कि क्वाड और समुद्री लोकतंत्रों के साथ साझेदारी।
4. **बहुआयामी जुड़ाव:** भारत मध्य एशियाई देशों के साथ कूटनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को जारी रखे हुए है, जैसे इंडिया-सेंट्रल एशिया डायलॉग, व्यापार पहल और कनेक्टिविटी परियोजनाएँ, जिससे गैर-सैन्य उपस्थिति को मजबूती मिलती है।

आगे की राह

हालाँकि आयनी से बाहर निकलना भारत की सैन्य कूटनीति के एक अध्याय का अंत दर्शाता है, लेकिन यह उन क्षेत्रों की ओर रणनीतिक झुकाव को भी दर्शाता है जहाँ नई दिल्ली अधिक प्रभावी हो सकती है:

- **इंडो-पैसिफिक फोकस:** समुद्री सुरक्षा, गठबंधन ढाँचे और क्षमता निर्माण पर अधिक जोर।
- **आर्थिक और सांस्कृतिक कूटनीति:** व्यापार, निवेश और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से मध्य एशियाई देशों के साथ संबंध मजबूत करना प्राथमिकता बना रहेगा।
- **प्रौद्योगिकी और खुफिया सहयोग:** आतंकवाद-रोधी प्रयासों और खुफिया साझाकरण में क्षेत्रीय भागीदारों के साथ सहयोग बढ़ने की संभावना है।

निष्कर्ष

आयनी एयरबेस से भारत की वापसी न केवल एक द्विपक्षीय समझौते के अंत को दर्शाती है, बल्कि बदलती भू-राजनीतिक वास्तविकताओं के अनुरूप रणनीतिक पुनर्संतुलन को भी दर्शाती है। जैसे-जैसे नई दिल्ली अपनी विदेश नीति की प्राथमिकताओं को अनुकूलित कर रही है, ध्यान उन क्षेत्रों पर रहेगा जहाँ अधिक लाभ और पारस्परिक रणनीतिक लाभ संभव हों, भले ही मध्य एशिया भारत की व्यापक क्षेत्रीय संलग्नता में महत्वपूर्ण बना रहे।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. "ताजिकिस्तान के साथ भारत के रणनीतिक समझौते की समाप्ति और आयनी एयरबेस के बंद होने से विदेशों में सैन्य ठिकानों की सीमाओं पर प्रकाश पड़ता है। इस संदर्भ में, मध्य एशिया में भारत की रणनीतिक पहुँच को सीमित करने वाले कारकों पर चर्चा कीजिए तथा क्षेत्रीय प्रभाव बढ़ाने के उपाय सुझाइए।" (15 अंक, 250 शब्द)

भारत-कनाडा : व्यापार व निवेश पर मंत्रीस्तरीय संवाद

चर्चा में क्यों: भारत और कनाडा के बीच उच्च-स्तरीय व्यापार और निवेश पर मंत्रीस्तरीय संवाद (MDTI) का आयोजन 11-14 नवंबर 2025 को नई दिल्ली में संयुक्त रूप से किया गया।

अन्य विवरण

- यह दोनों देशों के बीच इस रणनीतिक संवाद का **7वाँ संस्करण** था।
- यह आयोजन दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों द्वारा कनाडा के कनानास्किंस में आयोजित **G7 शिखर सम्मेलन 2025** के दौरान दी गई दिशानिर्देशों के बाद आर्थिक संबंधों को गहरा करने के निरंतर प्रयासों का हिस्सा था।

पृष्ठभूमि

- MDTI भारत और कनाडा के बीच द्विपक्षीय व्यापार और निवेश सहयोग की समीक्षा और विस्तार के लिए प्रमुख संस्थागत तंत्र के रूप में कार्य करता है।
- हाल के वर्षों में भारत-कनाडा आर्थिक जुड़ाव में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जहाँ वस्तुओं और सेवाओं में द्विपक्षीय व्यापार 2024 में लगभग 23.66 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया, जिसमें वस्तु व्यापार का मूल्य 8.98 अरब अमेरिकी डॉलर रहा — जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 10 प्रतिशत वृद्धि दर्शाता है।

प्रमुख विशेषताएँ

- **रणनीतिक साझेदारी की पुनः पुष्टि:** संवाद ने निरंतर मंत्रीस्तरीय और निजी क्षेत्र की भागीदारी के माध्यम से आर्थिक सहयोग को गहरा करने के लिए भारत और कनाडा की साझा प्रतिबद्धता को दोहराया।
- **व्यापार और निवेश में वृद्धि:** दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय व्यापार और निवेश में मजबूत विस्तार का स्वागत किया तथा बाज़ार पहुँच, पारदर्शी नीतियों और संस्थागत प्रवाह को मजबूत करने की भूमिका पर जोर दिया, जो दोनों अर्थव्यवस्थाओं को समर्थन देते हैं।
- **क्षेत्रीय और भविष्य सहयोग:** मंत्रियों ने रणनीतिक और उभरते क्षेत्रों में सहयोग की पहचान करने और उसे बढ़ाने पर सहमति जताई, जिनमें शामिल हैं:
 - ✓ **महत्वपूर्ण खनिज (क्रिटिकल मिनरल्स)** — ऊर्जा संक्रमण और डीकार्बोनाइजेशन के लिए आवश्यक;
 - ✓ **स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियाँ** — सतत विकास लक्ष्यों को समर्थन देने हेतु;
 - ✓ **एयरोस्पेस और द्वि-उपयोग क्षमताएँ** — कनाडा की क्षमताओं और भारत के विस्तारित विमानन क्षेत्र का लाभ उठाने के लिए।
- **आपूर्ति शृंखला लचीलापन:** हालिया वैश्विक व्यवधानों से मिले सबक को ध्यान में रखते हुए, आपूर्ति शृंखला की मजबूती पर संयुक्त जोर दिया गया, ताकि कृषि और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में दीर्घकालिक स्थिरता और विविधीकरण सुनिश्चित किया जा सके।
- **जन-से-जन संपर्क:** मजबूत जन-से-जन संबंधों को एक महत्वपूर्ण आधार मानते हुए, दोनों पक्षों ने नागरिक समाज, अकादमिक और व्यापारिक संपर्कों को बढ़ावा देने पर बल दिया, ताकि द्विपक्षीय विश्वास और सहयोग को और गहरा किया जा सके।

भारत की विदेश व्यापार नीति के लिए महत्व

- **आर्थिक कूटनीति को मजबूती:** यह संवाद भारत की आर्थिक कूटनीति को प्रमुख साझेदारों जैसे कनाडा के साथ विस्तारित करने पर जोर देता है, जिससे वैश्विक आर्थिक रुझानों के अनुरूप व्यापार प्राथमिकताओं को संरक्षित किया जा सके।
- **व्यापार साझेदारियों का विविधीकरण:** कनाडा के साथ प्रबल होते संबंध भारत की पारंपरिक बाज़ारों से आगे बढ़कर, विशेष रूप से

उच्च-प्रौद्योगिकी और हरित क्षेत्रों में, व्यापक रणनीति को पूरक बनाते हैं।

- **रणनीतिक क्षेत्रीय जुड़ाव:** महत्वपूर्ण खनिजों और एयरोस्पेस में सहयोग आत्मनिर्भर भारत की प्राथमिकताओं तथा वैश्विक मूल्य शृंखलाओं में भागीदारी के अनुरूप है, जिससे परस्पर लाभ सुनिश्चित होता है।
- **निजी क्षेत्र की भूमिका:** निरंतर निजी क्षेत्र की भागीदारी को नए अवसर खोलने, बाज़ार पहुँच बढ़ाने और नवाचार-आधारित विकास को गति देने के लिए महत्वपूर्ण माना गया है।

निष्कर्ष

2025 का व्यापार और निवेश पर मंत्रीस्तरीय संवाद ऐसे समय में भारत-कनाडा आर्थिक सहयोग को मज़बूती देता है जब वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में बदलाव हो रहे हैं। द्विपक्षीय व्यापार के विस्तार, रणनीतिक क्षेत्रीय साझेदारियों और मज़बूत नीति समन्वय के साथ, दोनों देश भविष्य की विकास संभावनाओं को साकार करने, आपूर्ति शृंखला लचीलापन बढ़ाने और एक सतत व दूरदर्शी आर्थिक साझेदारी बनाने की दिशा में अग्रसर हैं।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. "द्विपक्षीय संवाद और रणनीतिक साझेदारियाँ भारत के व्यापार और निवेश परिदृश्य को तेजी से आकार दे रही हैं। इस संदर्भ में, कनाडा के साथ भारत की भागीदारी किस प्रकार आर्थिक विकास, तकनीकी सहयोग और आपूर्ति शृंखला लचीलापन बढ़ाने में योगदान देती है, विश्लेषण कीजिए।" (15 अंक, 250 शब्द)

भारत - स्लोवेनिया : संयुक्त व्यापार व आर्थिक सहयोग समिति

चर्चा में क्यों: हाल ही में, भारत-स्लोवेनिया संयुक्त व्यापार और आर्थिक सहयोग समिति (JCTEC) का 10वाँ सत्र नई दिल्ली में आयोजित किया गया।



अन्य विवरण

- इस सत्र का उद्देश्य द्विपक्षीय आर्थिक सहभागिता को मज़बूत करना, सहयोग के नए क्षेत्रों की खोज करना और व्यापार व निवेश के लिए भविष्य उन्मुख रोडमैप तैयार करना था।

- JCTEC भारत और स्लोवेनिया के बीच आर्थिक सहभागिता को सुदृढ़ करने वाला एक प्रमुख संस्थागत तंत्र है, जो द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक सहयोग की नियमित समीक्षा को सुगम बनाता है।
- स्लोवेनिया, जो रणनीतिक रूप से मध्य यूरोप में स्थित है, भारत की व्यापक यूरोपीय क्षेत्र में व्यापार और आर्थिक पहुँच के लिए एक प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है। इससे यूरोपीय संघ के साथ संबंधों को गहरा करने के भारत के प्रयासों में इसकी प्रासंगिकता बढ़ गई है।

मुख्य चर्चा बिंदु और परिणाम

1. **द्विपक्षीय व्यापार वृद्धि की समीक्षा:** दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय व्यापार की दिशा का आकलन किया और हाल के वर्षों में बढ़ते रुझान को नोट किया, जो साझेदारी की गहराई और मज़बूती को दर्शाता है।
2. **क्षेत्रीय सहयोग:** सत्र में विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा की गई, जिनमें शामिल हैं: कृषि, रसायन और औषधि, स्वास्थ्य सेवा, परिवहन और ऊर्जा, पर्यटन, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSMEs), आयुर्वेद या पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ। इन क्षेत्रों को व्यापार विस्तार, संयुक्त उपक्रमों और प्रौद्योगिकी आदान-प्रदान के संभावित चालक के रूप में पहचाना गया।
3. **निवेश और कनेक्टिविटी:** प्रतिभागियों ने निवेश प्रवाह को बढ़ाने और आर्थिक संपर्क को मज़बूत करने के उपायों पर चर्चा की, जिसमें यूरोपीय और भारतीय बाज़ारों में व्यापार सुगमता और पारस्परिक हितों पर ज़ोर दिया गया।
4. **भारत-ईयू एफटीए पर विचार:** दोनों पक्षों ने संतुलित और पारस्परिक रूप से लाभकारी भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के शीघ्र निष्कर्ष को लेकर आशावाद व्यक्त किया, जिसे न केवल स्लोवेनिया बल्कि पूरे यूरोपीय संघ के साथ आर्थिक सहयोग को बढ़ाने वाला उत्प्रेरक माना गया।

महत्त्व और रणनीतिक आयाम

- **आर्थिक कूटनीति को मज़बूती:** JCTEC यूरोपीय भागीदारों के साथ व्यापार संबंधों को गहरा करने की भारत की रणनीति को सुदृढ़ करता है, जो व्यापक आर्थिक कूटनीति, बाज़ार विविधीकरण और आपूर्ति शृंखला लचीलापन का हिस्सा है।
- **व्यापार में पूरकता:** स्लोवेनिया औषधि, प्रौद्योगिकी, परिवहन उपकरण और सेवाओं जैसे क्षेत्रों में पूरक क्षमताएँ प्रदान करता है, जो भारत की आर्थिक प्राथमिकता व निर्यात संभावनाओं के अनुरूप हैं।
- **यूरोप का प्रवेश द्वार:** मध्य यूरोप में स्लोवेनिया की भौगोलिक और आर्थिक स्थिति यूरोपीय बाज़ारों तक रणनीतिक पहुँच प्रदान करती है और यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत की व्यापक सहभागिता को मज़बूत करती है।

आगे की राह

संयुक्त समिति ने पारस्परिक विश्वास और साझा हितों पर आधारित एक गतिशील और भविष्य उन्मुख आर्थिक साझेदारी को पोषित करने की

प्रतिबद्धता दोहराई। भविष्य में सहयोग का फोकस द्विपक्षीय व्यापार मात्रा बढ़ाने, निवेश साझेदारियों को सुगम बनाने, MSMEs को समर्थन देने और उच्च-विकास क्षेत्रों में सहयोग के अवसरों का लाभ उठाने पर रहेगा।

निष्कर्ष

10वाँ भारत-स्लोवेनिया संयुक्त व्यापार और आर्थिक सहयोग समिति (JCTEC) सत्र द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। यह न केवल व्यापार और सहयोग में निरंतर वृद्धि को दर्शाता है, बल्कि भारत और यूरोपीय आर्थिक परिदृश्य के बीच एक रणनीतिक सेतु के रूप में इस साझेदारी की भूमिका को भी स्थापित करता है। निरंतर संवाद और संयुक्त पहलों के प्रभावी क्रियान्वयन से आने वाले वर्षों में इस साझेदारी की पूर्ण क्षमता को साकार करने में मदद मिलेगी।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत-स्लोवेनिया संयुक्त व्यापार और आर्थिक सहयोग समिति जैसे द्विपक्षीय आर्थिक संवाद भारत की आर्थिक कूटनीति के महत्वपूर्ण उपकरण हैं। व्यापार, निवेश और यूरोप के साथ रणनीतिक जुड़ाव को बढ़ाने में इनके महत्व का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

भारत-वियतनाम : रक्षा नीति संवाद (DPD)

चर्चा में क्यों: हाल ही में, भारत-वियतनाम रक्षा नीति संवाद (DPD) का 15वाँ संस्करण हनोई में आयोजित किया गया। इस नीति संवाद में रक्षा सहयोग की प्रगति की समीक्षा की गई और विभिन्न क्षेत्रों में भविष्य के सहयोग की दिशा तय की गई।

अन्य विवरण

- भारत-वियतनाम रक्षा नीति संवाद, भारत-वियतनाम व्यापक रणनीतिक साझेदारी के अंतर्गत द्विपक्षीय रक्षा सहभागिता को दिशा देने वाला एक प्रमुख संस्थागत तंत्र है।
- रक्षा सहयोग, भारत की **एक्ट ईस्ट नीति** और व्यापक **इंडो-पैसिफिक रणनीति** का एक मुख्य स्तंभ है, जो क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और स्थिरता में साझा हितों को दर्शाता है।

प्रमुख विशेषताएँ

1. **जारी सहयोग की समीक्षा:** दोनों पक्षों ने निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रगति पर संतोष व्यक्त किया: हाइड्रोग्राफी सहयोग, क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण, संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में सहयोग, पोर्ट कॉल्स और शिप विज़िट्स में वृद्धि; साथ ही उभरते क्षेत्रों में सहयोग, जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) और शिपयार्ड आधुनिकीकरण।
2. **उभरते क्षेत्रों में विस्तार:** संवाद में कई रणनीतिक और उभरते क्षेत्रों में सहयोग को गहरा करने पर सहमति बनी, जिनमें शामिल हैं: साइबर

सुरक्षा, रियल-टाइम सूचना साझा करना, सैन्य चिकित्सा, विशेषज्ञों और कार्मिकों का आदान-प्रदान।

3. **पनडुब्बी संचालन पर समझौता ज्ञापन:** पनडुब्बी खोज और बचाव सहायता (Submarine Search and Rescue Support) के लिए एक समझौता ज्ञापन (MoA) पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे जलमग्न आपात स्थितियों से निपटने की क्षमता बढ़ेगी।
4. **रक्षा उद्योग सहयोग:** रक्षा उद्योग सहयोग को सशक्त करने के लिए एक लेटर ऑफ इंटेन्ट (LoI) पर हस्ताक्षर किए गए। इसका फोकस है:
 - ✓ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (ToT),
 - ✓ उच्च-प्रौद्योगिकी और कोर तकनीकी क्षेत्रों में सहयोग,
 - ✓ संयुक्त अनुसंधान एवं विकास,
 - ✓ संयुक्त उपक्रम और उपकरणों की खरीद,
 - ✓ डिज़ाइन और उत्पादन में विशेषज्ञों का आदान-प्रदान।
5. **संस्थागत निरंतरता:** रक्षा उद्योग सहयोग से जुड़े मौजूदा कार्यान्वयन तंत्र के अंतर्गत, दोनों पक्षों ने दिसंबर 2025 में बैठक आयोजित करने का निर्णय लिया तथा 16वाँ रक्षा नीति संवाद (DPD) वर्ष 2026 में भारत में आयोजित करने पर सहमति व्यक्त की।

रणनीतिक महत्व

- **रक्षा संबंधों को सुदृढ़ करना:** रक्षा नीति संवाद (DPD) द्विपक्षीय रक्षा सहयोग की समीक्षा और मार्गदर्शन के लिए प्रमुख तंत्र के रूप में कार्य करता है, जो सैन्य सहयोग को व्यापक रणनीतिक प्राथमिकताओं के साथ संरक्षित करने में सहायक है।
- **पनडुब्बी बचाव और समुद्री सुरक्षा:** पनडुब्बी खोज और बचाव पर MoA समुद्री सुरक्षा सहयोग को मजबूत करता है, जो इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- **रक्षा औद्योगिक सहयोग:** रक्षा उद्योग संबंधों को मजबूत करना मेक इन इंडिया को समर्थन देता है, नवाचार को बढ़ावा देता है और वियतनामी क्षमताओं के साथ जुड़कर रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करता है।
- **एक्ट ईस्ट नीति और इंडो-पैसिफिक दृष्टिकोण:** वियतनाम की रणनीतिक स्थिति और साझा सुरक्षा चिंताएँ इसे भारत की एक्ट ईस्ट नीति और इंडो-पैसिफिक दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण साझेदार बनाती हैं, जिससे क्षेत्रीय संतुलन सुदृढ़ होता है।

निष्कर्ष

15वाँ भारत-वियतनाम रक्षा नीति संवाद दोनों देशों के बीच बहुआयामी रक्षा सहयोग की पुनः पुष्टि करता है। पारंपरिक क्षेत्रों से आगे बढ़ते हुए उभरते और भविष्य उन्मुख क्षेत्रों तक विस्तार, उन्नत रणनीतिक समन्वय, संयुक्त परिचालन ढाँचे और गहरे औद्योगिक सहयोग के साथ, भारत-वियतनाम रक्षा साझेदारी दक्षिण-पूर्व एशिया और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की सुरक्षा एवं कूटनीतिक पहुँच की एक मजबूत आधारशिला बनी हुई है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत की दक्षिण-पूर्व एशिया में रक्षा सहभागिता, विशेष रूप से वियतनाम के साथ, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में उसकी रणनीतिक प्राथमिकताओं को दर्शाती है। विवेचना कीजिए कि ये साझेदारियाँ क्षेत्रीय सुरक्षा, समुद्री क्षेत्रीय जागरूकता और भारत के रक्षा उद्योग के विकास में किस प्रकार योगदान देती हैं। (15 अंक, 250 शब्द)

भारत-ऑस्ट्रेलिया : व्यापक द्विपक्षीय सुरक्षा समझौता

चर्चा में क्यों: हाल ही में, भारत और ऑस्ट्रेलिया ने कैनबरा में भारतीय रक्षा मंत्री की यात्रा के दौरान एक व्यापक द्विपक्षीय सुरक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते में सैन्य वार्ता, समुद्री सहयोग, सूचना साझा करना और पनडुब्बी बचाव सहयोग शामिल हैं।

समझौते की प्रमुख विशेषताएँ

- **पनडुब्बी बचाव और समुद्री समर्थन:** पनडुब्बी खोज और बचाव सहयोग पर एक MoU पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे संकट की स्थिति में पनडुब्बियों को पारस्परिक सहायता का ढाँचा स्थापित होता है।
- **संयुक्त स्टाफ वार्ता:** नियमित सैन्य-स्तरीय परामर्श के लिए संदर्भ शर्तें (Terms of Reference) तय की गईं, जिससे परिचालन समन्वय में सुधार होगा।
- **सूचना साझा करना:** रक्षा संबंधी सूचना और खुफिया जानकारी साझा करने के समझौते से रक्षा समन्वय और रणनीतिक योजना को मजबूती मिलेगी।
- **विस्तारित सैन्य अभ्यास:** AUSINDEX, TALISMAN SABRE, MALABAR और अन्य अभ्यासों में भारत की भागीदारी से पारस्परिक संचालन क्षमता (Interoperability) बढ़ेगी।
- **रक्षा उद्योग सहयोग:** रक्षा उद्योग राउंडटेबल और कार्मिक आदान-प्रदान (जैसे ऑस्ट्रेलियाई रक्षा संस्थानों में प्रशिक्षण) पर चर्चा की गई, ताकि रक्षा सहयोग को और गहरा किया जा सके।

पृष्ठभूमि: भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध

- भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध 2020 में शुरू की गई **समग्र रणनीतिक साझेदारी (CSP)** पर आधारित हैं, जो रक्षा, व्यापार, संस्कृति और विज्ञान सहयोग को समेटे हुए है।
- संयुक्त नौसैनिक अभ्यासों और लॉजिस्टिक समझौतों के माध्यम से सैन्य सहयोग में वृद्धि हुई है, विशेष रूप से समुद्री क्षेत्रीय जागरूकता और हिंद महासागर सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

रणनीतिक संदर्भ

यह समझौता इंडो-पैसिफिक सुरक्षा परिदृश्य में हो रहे बदलावों के बीच आया है, जो निम्नलिखित से प्रभावित है:

- **चीन की बढ़ती नौसैनिक सक्रियता**, विशेषकर हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर में।
- **AUKUS के तहत ऑस्ट्रेलिया के अमेरिका और ब्रिटेन के साथ गहराते रक्षा संबंध**, जिनमें परमाणु-संचालित पनडुब्बियों की योजना भी शामिल है।
- **मालाबार 2025 जैसे बहुपक्षीय अभ्यासों का विस्तार**, जिनमें ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान और अमेरिका शामिल रहे, जिससे क्राड देशों के बीच समुद्री समन्वय मजबूत हुआ।

महत्व

- **इंडो-पैसिफिक में रणनीतिक संतुलन:** यह समझौता औपचारिक सैन्य गठबंधनों से बाहर रहते हुए रक्षा सहयोग को मजबूत कर नियम-आधारित क्षेत्रीय व्यवस्था को सुदृढ़ करता है। इससे विश्वसनीय समुद्री प्रतिरोधक क्षमता और साझा निगरानी क्षमता विकसित होती है।
- **पनडुब्बी संचालन और क्षमता निर्माण:** पारंपरिक पनडुब्बी संचालन में भारत की विशेषज्ञता (जैसे कलवरी श्रेणी की तैनाती) AUKUS के तहत ऑस्ट्रेलिया की परमाणु पनडुब्बी योजना को पूरक बनाती है, जिससे लॉजिस्टिक समर्थन और परिचालन समन्वय को बल मिलता है।
- **क्राड और क्षेत्रीय सहयोग:** यद्यपि यह द्विपक्षीय समझौता है, फिर भी यह क्राड की अंतःक्रियाशीलता को मजबूत करता है — संयुक्त अभ्यास, सूचना साझा करना और समुद्री सुरक्षा ढाँचे को सुदृढ़ करता है।
- **रक्षा कूटनीति:** यह समझौता भारत की विस्तारित रणनीतिक पहुँच को दर्शाता है, जो अब केवल पड़ोसी क्षेत्रों तक सीमित न रहकर समान विचारधारा वाले साझेदारों के साथ साझा इंडो-पैसिफिक सुरक्षा हितों को समाहित करता है।

चुनौतियाँ और अवसर

- **परिचालन एकीकरण:** विभिन्न कमांड संरचनाओं और सैन्य सिद्धांतों के बीच प्रभावी समन्वय अभी भी एक कार्य प्रगति में है।
- **गुटनिरपेक्षता बनाम साझेदारी:** भारत रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए बढ़ते परिचालन सहयोग के बीच संतुलन साध रहा है।
- **चीन की प्रतिक्रिया:** बीजिंग ऐसे समझौतों को संतुलनकारी कदम के रूप में देखता है, जिससे क्षेत्रीय तनाव बढ़ने की संभावना बनी रहती है।

आगे की राह

- उभरती प्रौद्योगिकियों सहित संयुक्त अनुसंधान एवं विकास (R&D) और रक्षा उद्योग सहयोग का विस्तार।
- समुद्री सुरक्षा पहलों और मानवीय अभ्यासों में बढ़ी हुई भागीदारी।
- AUKUS ढाँचे और क्राड की रणनीतिक परियोजनाओं के साथ संभावित समन्वय।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत की विदेश नीति में इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में रणनीतिक साझेदारियों और बहुपक्षीय सहभागिता पर बढ़ता जोर देखा जा रहा है। विवेचना कीजिए कि ऐसे सहयोग भारत की समुद्री सुरक्षा और वैश्विक रणनीतिक प्रभाव में कैसे योगदान देते हैं, तथा क्षेत्रीय संवेदनशीलताओं के साथ राष्ट्रीय हितों के संतुलन में आने वाली चुनौतियों पर चर्चा कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

✓ प्रमुख उपयोग क्षेत्र: कृषि, मत्स्य पालन, आपदा प्रबंधन, जलवायु निगरानी।

6. G20 क्रिटिकल मिनरल्स सर्कुलैरिटी पहल

- ✓ महत्वपूर्ण खनिजों के लिए आपूर्ति शृंखला सुरक्षा को मजबूत करने का लक्ष्य।
- ✓ रीसाइक्लिंग, अर्बन माइनिंग, सेकंड-लाइफ बैटरियों और स्वच्छ एवं सतत नवाचारों को प्रोत्साहन।

रणनीतिक और वैश्विक संदर्भ

- **अफ्रीका का पहला G20 शिखर सम्मेलन मेज़बान:** जोहान्सबर्ग ने पहली बार G20 की मेज़बानी की, जिससे वैश्विक एजेंडा में अफ्रीकी विकास के बढ़ते महत्व को रेखांकित किया गया।
- **एकात्म मानववाद (इंटीग्रल ह्यूमनिज़्म) एक रूपरेखा के रूप में:** प्रधानमंत्री ने वैश्विक विकास योजना के मार्गदर्शक दर्शन के रूप में समाज, अर्थव्यवस्था और प्रकृति के संतुलन पर आधारित एकात्म मानववाद पर जोर दिया।
- **आपदा लचीलापन पर फोकस:** प्रधानमंत्री ने आपदा प्रबंधन में प्रतिक्रिया-केंद्रित दृष्टिकोण से विकास-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर बढ़ने की आवश्यकता दोहराई, जिससे भारत की G20 अध्यक्षता के दौरान शुरू किए गए डिज़ास्टर रिस्क रिडक्शन वर्किंग ग्रुप की विरासत को सशक्त किया जा सके।

भारत और विश्व के लिए महत्व

1. वैश्विक शासन में नेतृत्व

- ✓ स्वास्थ्य, कौशल, प्रौद्योगिकी और सतत विकास जैसे क्षेत्रों में संरचनात्मक वैश्विक चुनौतियों के समाधान प्रस्तुत कर भारत ने उभरते वैश्विक नेतृत्व की भूमिका को रेखांकित किया है।

2. ग्लोबल साउथ और विकास समानता

- ✓ 'ओपन सैटेलाइट डेटा पार्टनरशिप और स्किल्स मल्टीप्लायर' पहल जैसे प्रस्ताव विकासशील देशों में तकनीकी लोकतंत्रीकरण और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने की भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

3. सुरक्षा और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का समाधान

- ✓ ड्रग-आतंक गठजोड़ से निपटना और समन्वित वैश्विक स्वास्थ्य प्रतिक्रियाएँ विकसित करना, एक आपस में जुड़े विश्व में सुरक्षा और विकास के अंतर्संबंध की भारत की समझ को दर्शाता है।

4. सततता और स्वच्छ प्रौद्योगिकी

- ✓ 'क्रिटिकल मिनरल्स सर्कुलैरिटी' पहल स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण, लचीली आपूर्ति शृंखलाओं और जलवायु शमन से जुड़े वैश्विक लक्ष्यों के अनुरूप है।

चुनौतियाँ और विचार

G20 जोहान्सबर्ग शिखर सम्मेलन

चर्चा में क्यों: हाल ही में, भारत के प्रधानमंत्री ने जोहान्सबर्ग में आयोजित G20 शिखर सम्मेलन के उद्घाटन दिवस पर G20 नेताओं के समक्ष वैश्विक विकास से जुड़ी छह प्रमुख पहलें प्रस्तावित कीं। इन पहलों का उद्देश्य समावेशी, सतत, लचीली और न्यायसंगत वैश्विक वृद्धि को बढ़ावा देना है।

छह वैश्विक विकास पहलें

1. G20 ग्लोबल ट्रेडिशनल नॉलेज रिपॉजिटरी

- ✓ स्वास्थ्य, पर्यावरण और सतत जीवन से संबंधित पारंपरिक एवं स्वदेशी ज्ञान का दस्तावेज़ीकरण और साझा करने का उद्देश्य।
- ✓ भविष्य की पीढ़ियों के लिए "मानवता की सामूहिक बुद्धिमत्ता" को संरक्षित करने का प्रयास।

2. G20-अफ्रीका स्किल्स मल्टीप्लायर पहल

- ✓ अगले एक दशक में 10 लाख प्रमाणित प्रशिक्षकों का समूह तैयार कर अफ्रीका के युवाओं को कौशल प्रदान करने पर केंद्रित।
- ✓ प्रशिक्षक विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकास और दीर्घकालिक रोजगार सृजन को गति देंगे।

3. G20 वैश्विक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया दल

- ✓ वैश्विक स्वास्थ्य आपात स्थितियों और आपदाओं में सहायता के लिए G20 देशों के स्वास्थ्य विशेषज्ञों की त्वरित तैनाती की परिकल्पना।
- ✓ COVID-19 महामारी से मिले अनुभवों के आधार पर समन्वित स्वास्थ्य प्रतिक्रिया को बढ़ावा देता है।

4. ड्रग-आतंक नेटवर्क से निपटने हेतु G20 पहल

- ✓ मादक पदार्थों की तस्करी और आतंकवाद के वित्तपोषण से जुड़े नेटवर्क को निशाना बनाती है।
- ✓ ड्रग-आतंक अर्थव्यवस्था को बाधित करने के लिए वित्तीय, प्रशासनिक और सुरक्षा ढाँचों में एकीकृत कार्रवाई का प्रस्ताव।

5. G20 ओपन सैटेलाइट डेटा साझेदारी

- ✓ G20 अंतरिक्ष एजेंसियों के उपग्रह डेटा और विश्लेषण को विकासशील देशों के साथ साझा करने को बढ़ावा।

- **कार्यान्वयन और सहमति:** प्रस्तावों को G20 सदस्यों के बीच बाध्यकारी या सहयोगात्मक ढाँचों में बदलने के लिए निरंतर कूटनीतिक प्रयास और संसाधनों की आवश्यकता होगी।
- **वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव:** महाशक्ति प्रतिस्पर्धा और आपूर्ति शृंखला राजनीति तकनीक और संसाधन शासन पर सहमति को प्रभावित कर सकती है।
- **डेटा समानता और पहुँच:** यह सुनिश्चित करना आवश्यक होगा कि ओपन सैटेलाइट डेटा वास्तव में ग्लोबल साउथ को समान रूप से लाभ पहुँचाए, जिसके लिए मजबूत नीतिगत ढाँचे आवश्यक हैं।

आगे की राह

भारत की ये पहलें G20 एजेंडा को समावेशी विकास, लचीलापन और प्रौद्योगिकीय लोकतंत्रीकरण की दिशा में आगे बढ़ाने का प्रयास हैं। ये

प्रस्ताव नई दिल्ली के बाद के G20 सहयोग की दिशा तय करते हैं, जहाँ क्रियान्वयन तंत्र, साझेदारियाँ और वित्तीय मॉडल वैश्विक विकास आकांक्षाओं को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. वैश्विक चुनौतियाँ जैसे स्वास्थ्य आपात स्थितियाँ, जलवायु परिवर्तन और संसाधन सुरक्षा, समन्वित अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई की मांग करती हैं। बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से समावेशी और सतत वैश्विक विकास को बढ़ावा देने में भारत की भूमिका का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए, तथा राष्ट्रीय और वैश्विक प्राथमिकताओं के बीच संतुलन स्थापित करने में आने वाली अवसरों और चुनौतियों को रेखांकित कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

चहल एकेडमी द्वारा निःशुल्क पहल



‘द हिंदू’ का एडिटरियल एनालिसिस

क्यू आर कोड स्कैन करें





अर्थव्यवस्था एवं कृषि

समुद्री मत्स्य पालन जनगणना (MFC) - 2025

चर्चा में क्यों: भारत सरकार ने मछुआरा समुदायों से संबंधित आँकड़ों के संकलन के तरीके को आधुनिक बनाने के लिए समुद्री मत्स्य पालन जनगणना (MFC) 2025 को पूर्णतः डिजिटल प्रारूप में शुरू किया है।

मुख्य विवरण

- यह परिवर्तन मछुआरों और तटीय समुदायों के लिए कल्याण, अवसंरचना और सहायता कार्यक्रमों की बेहतर योजना बनाने में नीति-निर्माताओं की मदद करेगा।

यह जनगणना क्यों महत्वपूर्ण है

- समुद्री मत्स्य पालन जनगणना कई वर्षों में एक बार आयोजित की जाती है ताकि मछुआरा परिवारों, नौकाओं, मत्स्य उपकरणों, तटीय अवसंरचना और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों की जानकारी एकत्र की जा सके।
- पारंपरिक रूप से यह कार्य कागज़ी प्रपत्रों से किया जाता था, जो धीमा और कभी-कभी त्रुटिपूर्ण होता था।
- वर्ष 2025 में सरकार ने पूरी प्रक्रिया का डिजिटलीकरण कर दिया है—जो मत्स्य क्षेत्र में आँकड़ा संग्रहण की ऐतिहासिक प्रगति को दर्शाता है।

जनगणना की प्रमुख विशेषताएँ

1. पूर्णतः डिजिटल और कागज़रहित गणना

- पहली बार पूरी जनगणना डिजिटल होगी।
- गणना कर्मी मोबाइल अनुप्रयोगों का उपयोग करेंगे, जिनमें वास्तविक समय का डेटा, भू-संदर्भित जानकारी शामिल होगी।
- इससे सरकार को यह देखने में सहायता मिलेगी कि डेटा कहाँ और कैसे एकत्र हो रहा है तथा उसकी सटीकता और अद्यतन स्थिति सुनिश्चित की जा सकेगी।
- प्रयुक्त डिजिटल उपकरण:**
 - ✓ **VyAS-NAV** — मछली पकड़ने वाले गाँवों और बंदरगाहों का मानचित्रण।
 - ✓ **VyAS-BHARAT** — परिवार और अवसंरचना संबंधी डेटा संग्रहण।
 - ✓ **VyAS-SUTRA** — गणनाकर्मियों की निगरानी और पर्यवेक्षण।

2. तटरेखा पर व्यापक कवरेज

- यह जनगणना लगभग 11.2 मिलियन मत्स्य परिवारों और लगभग 5,000 तटीय गाँवों व बस्तियों को कवर करेगी।

- यह 13 तटीय राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों, जिनमें अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह और लक्षद्वीप शामिल हैं, में आयोजित होगी।

3. अधिक समृद्ध और उपयोगी डेटा

- मूलभूत पारिवारिक जानकारी के अतिरिक्त, जनगणना निम्न सामाजिक-आर्थिक सूचनाएँ भी एकत्र करेगी:
 - ✓ पारिवारिक आय और प्रमुख व्यय
 - ✓ ऋण और बीमा तक पहुँच
 - ✓ कोविड-19 महामारी का प्रभाव
 - ✓ प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) और पीएम-एमकेएसएसवाई जैसी सरकारी योजनाओं के लाभ
 - ✓ मछुआरों और मत्स्य किसान संगठनों में भागीदारी
- यह समृद्ध डेटा बेहतर कल्याणकारी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाने और मछुआरों को सशक्त समर्थन में सहायक होगा।

4. सटीकता के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी

- डेटा की शुद्धता सुनिश्चित करने हेतु:
 - ✓ ड्रोन का उपयोग बंदरगाहों और अवतरण केंद्रों पर मछली पकड़ने वाली नौकाओं व अवसंरचना की गणना के लिए किया जा रहा है।
 - ✓ वेब डैशबोर्ड के माध्यम से अधिकारी वास्तविक समय में प्रगति और डेटा की गुणवत्ता पर नज़र रखेंगे।
- ये तकनीकें त्रुटियों को कम करेंगी तथा प्रक्रिया को तेज़ और अधिक विश्वसनीय बनाएँगी।

मछुआरा कल्याण पर सरकार का ध्यान

केंद्रीय राज्य मंत्री ने मछुआरों की आजीविका सुधारने के लिए इस जनगणना के महत्व पर बल दिया। उन्होंने मछुआरों और मत्स्य किसानों को राष्ट्रीय मत्स्य डिजिटल मंच (NFDP) पर पंजीकरण करने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वे विभिन्न सरकारी लाभ प्राप्त कर सकें।

भविष्य के लिए इसका महत्व

- यह डिजिटल जनगणना नीति-निर्माताओं को निम्न कार्यों के लिए मज़बूत डेटा आधार प्रदान करेगी:
- सरकारी सहायता का बेहतर लक्षित वितरण
- जलवायु-सहिष्णु नीतियों का निर्माण
- महिलाओं, युवाओं और सामुदायिक संगठनों हेतु समर्थन सुदृढ़ करना
- तटीय पारितंत्रों में सतत विकास को बढ़ावा देना

निष्कर्ष

समुद्री मत्स्य पालन डिजिटल जनगणना 2025 केवल एक सर्वेक्षण नहीं, बल्कि प्रौद्योगिकी-आधारित पहल है, जो भारत को मत्स्य क्षेत्र के लिए

आधुनिक और डेटा-आधारित दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करेगी। सटीक जानकारी के आधार पर सरकार बेहतर सेवाएँ प्रदान कर सकेगी, आवश्यक अवसंरचना की योजना बना सकेगी और विकास के लाभों को प्रत्येक तटीय समुदाय तक पहुँचा सकेगी।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: समुद्री मत्स्य पालन जनगणना 2025 में मछली पकड़ने वाले गाँवों और अवतरण केंद्रों के मानचित्रण के लिए निम्न में से कौन-सा डिजिटल उपकरण उपयोग किया जाता है?

- (a) VyAS-SUTRA
- (b) VyAS-NAV
- (c) VyAS-MITRA
- (d) VyAS-DATA

उत्तर: (b)

भारत का हथकरघा एवं हस्तशिल्प उद्योग

चर्चा में क्यों: वस्त्र मंत्रालय ने हथकरघा एवं हस्तशिल्प पर राष्ट्रीय सम्मेलन की घोषणा की है, जो भुवनेश्वर, ओडिशा में 31 अक्टूबर से 1 नवंबर 2025 तक आयोजित होने वाला है।

मुख्य विवरण

यह कार्यक्रम केंद्र और राज्य सरकारों के अधिकारियों, कारीगरों, बुनकरों तथा विशेषज्ञों को एक साथ लाकर पारंपरिक कला एवं शिल्प क्षेत्रों से जुड़े प्रमुख मुद्दों और नई नीतिगत दिशाओं पर चर्चा करेगा।

हथकरघा एवं हस्तशिल्प का महत्व

- भारत के हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र देश की सांस्कृतिक विरासत से गहराई से जुड़े हैं और ग्रामीण रोजगार, आजीविका तथा निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।
- ये क्षेत्र विशेष रूप से गाँवों और छोटे शहरों में लाखों कारीगरों, बुनकरों और शिल्पकारों को समर्थन प्रदान करते हैं।
- इन क्षेत्रों को सुदृढ़ करने वाली नीतियाँ आर्थिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं।
- ये नीतियाँ "वोकल फॉर लोकल" जैसे अभियानों के अनुरूप हैं, जो स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देकर हस्तनिर्मित वस्तुओं के लिए वैश्विक बाजार तक पहुँच सुनिश्चित करते हैं।

सम्मेलन के उद्देश्य

- **अवसरों की पहचान:** घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में विकास तथा स्थिरता के नए अवसरों का अन्वेषण।
- **चुनौतियों का समाधान:** बाजार पहुँच, वित्त, डिज़ाइन नवाचार और तकनीकी उन्नयन जैसी दीर्घकालिक समस्याओं को समझना और संबोधित करना।

- **नई योजनाओं पर विचार:** शासन-व्यवस्था सुधारने और कारीगरों तक कल्याणकारी उपायों की पहुँच बढ़ाने हेतु प्रस्तावित नई योजना पर चर्चा।

अपेक्षित परिणाम

सम्मेलन का उद्देश्य हस्तनिर्मित क्षेत्र के भविष्य के लिए एक मार्गदर्शिका तैयार करना है। इसके अपेक्षित परिणामों में शामिल हैं:

- नीतिगत सुधार और बेहतर प्रशासनिक संरचनाओं के लिए सुझाव।
- केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर समन्वय।
- योजनाओं के निर्माण और क्रियान्वयन में हितधारकों की अधिक भागीदारी।

अन्य समान सरकारी पहलें / योजनाएँ

1. **राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम (NHDP)**
 - ✓ वस्त्र मंत्रालय द्वारा क्रियान्वित
 - ✓ बुनकर कल्याण, अवसंरचना, विपणन सहायता और कौशल विकास पर केंद्रित
2. **राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम (NHDP-हस्तशिल्प)**
 - ✓ शिल्प क्लस्टर, डिज़ाइन विकास और निर्यात संवर्धन को समर्थन
 - ✓ कारीगरों की आजीविका और वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ाने का उद्देश्य
3. **पीएम विश्वकर्मा योजना**
 - ✓ पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों के समर्थन हेतु आरंभ
 - ✓ कौशल प्रशिक्षण, उपकरण, ऋण सहायता और बाजार संपर्क प्रदान करती है
4. **इंडिया हैंडलूम ब्रांड (IHB)**
 - ✓ हथकरघा उत्पादों के लिए गुणवत्ता प्रमाणन सुनिश्चित करता है
 - ✓ उपभोक्ता विश्वास बढ़ाता है और प्रीमियम उत्पादों को प्रोत्साहित करता है

आगे की राह

हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र की दीर्घकालिक वृद्धि और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित कदम आवश्यक हैं:

1) मजबूत केंद्र-राज्य समन्वय

- ✓ नियमित समन्वय से योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन और प्रयासों की पुनरावृत्ति से बचाव संभव होगा।

2) बाजार पहुँच और ब्रांडिंग

कारिगरों को समर्थन दिया जाए:

- ✓ ई-कॉमर्स मंचों के माध्यम से
- ✓ भौगोलिक संकेतक (GI) टैगिंग द्वारा
- ✓ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों के जरिए
 - इससे हस्तनिर्मित उत्पादों की आय और दृश्यता बढ़ेगी।

3) कौशल और डिज़ाइन उन्नयन

- ✓ आधुनिक डिज़ाइन, गुणवत्ता मानकों और नई तकनीकों में निरंतर प्रशिक्षण, साथ ही पारंपरिक कौशल का संरक्षण।

4) वित्तीय और ऋण सहायता

- ✓ संस्थागत ऋण, बीमा और कार्यशील पूंजी तक सुगम पहुँच, जिससे बिचौलियों पर निर्भरता कम होगी।

5) डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग

- ✓ प्रत्यक्ष विपणन, ऑनलाइन भुगतान, पंजीकरण और कारीगरों की ट्रेकिंग के लिए डिजिटल मंचों का उपयोग।
 - इससे पारदर्शिता और समावेशन बढ़ेगा।

निष्कर्ष

हथकरघा एवं हस्तशिल्प पर राष्ट्रीय सम्मेलन एक महत्वपूर्ण पहल है, जो संस्कृति और अर्थव्यवस्था को जोड़ने वाले क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करता है। इसका उद्देश्य नीति और व्यवहार के बीच की दूरी कम करना तथा भारत में सशक्त, समावेशी और सतत हस्तनिर्मित पारिस्थितिकी तंत्र की नींव मजबूत करना है। सरकार और कारीगर समुदायों की सक्रिय भागीदारी से इस क्षेत्र की समावेशी वृद्धि और बेहतर परिणाम सुनिश्चित हो सकते हैं।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: हथकरघा एवं हस्तशिल्प पर राष्ट्रीय सम्मेलन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सम्मेलन का उद्देश्य इस क्षेत्र की चुनौतियों का समाधान और विकास के अवसरों का अन्वेषण करना है।
2. इसका आयोजन वस्त्र मंत्रालय द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से किया जाता है।
3. इसके उद्देश्यों में क्षेत्र के बेहतर शासन के लिए नई योजनाओं पर चर्चा भी शामिल है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) 1, 2 और 3
- (d) केवल 2 और 3

उत्तर: (c)

रोजगार का संकट (एम्प्लॉयबिलिटी क्राइसिस)

चर्चा में क्यों: भारत में रोजगार का संकट बढ़ रहा है, जहाँ बड़ी संख्या में कॉलेज और विश्वविद्यालय के स्नातक अपनी योग्यताओं के अनुरूप रोजगार पाने में कठिनाई का सामना कर रहे हैं। यह चुनौती केवल बेरोजगारी तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा और उद्योग की आवश्यकताओं के बीच अंतर को भी दर्शाती है।

रोजगार के संकट के बारे में

- रोजगार के संकट (Employability Crisis) का अर्थ है कि स्नातकों के पास वास्तविक कार्यस्थल में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और दृष्टिकोण हों। इसमें शैक्षणिक प्रमाणपत्रों से आगे बढ़कर समस्या-समाधान, संचार, टीमवर्क और डिजिटल कौशल शामिल होते हैं।
- हालिया आकलनों के अनुसार, केवल लगभग 42.6% भारतीय स्नातक ही नौकरी के लिए-तैयार (जॉब-रेडी) माने जाते हैं; शेष को शिक्षा पूर्ण करने के बाद भी उपयुक्त रोजगार पाने में कठिनाई होती है।

प्रमुख कारण

- **पुराना शैक्षणिक पाठ्यक्रम:** अनेक कॉलेज और विश्वविद्यालय अब भी मुख्यतः सिद्धांत-आधारित पाठ्यक्रम पढ़ाते हैं, जिनमें उद्योग-सम्बद्ध व्यावहारिक प्रशिक्षण सीमित है।
- **कमजोर उद्योग-शिक्षा समन्वय:** उद्योग न्यूनतम प्रशिक्षण के साथ कार्य आरंभ करने योग्य स्नातक चाहते हैं, परंतु अकादमिक-उद्योग सहयोग कमजोर है। कई कंपनियाँ भर्ती अभियान चलाती हैं, पर पाठ्यक्रम विकास या इंटरशिप में भागीदारी सीमित रहती है।
- **कौशल असंगति:** प्रौद्योगिकी परिवर्तन (विशेषकर एआई, साइबर सुरक्षा, डेटा विश्लेषण, स्वचालन, डिजिटल सेवाएँ) के कारण रोजगार बाजार तेजी से बदल रहा है, जबकि अनेक स्नातकों के पास आवश्यक समकालीन कौशल नहीं हैं।
- **सॉफ्ट स्किल्स की कमी:** संचार, टीम वर्क, अनुकूलनशीलता और दृष्टिकोण जैसे कौशलों पर पर्याप्त ध्यान न होने से रोजगार-अंतर बढ़ता है।

युवाओं और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

रोजगार के संकट का प्रभाव केवल व्यक्तिगत विद्यार्थियों तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यापक अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है:

- शिक्षित युवाओं के बेरोजगार या अल्प-रोजगार रहने से निराशा बढ़ती है।
- डिग्रियाँ सार्थक रोजगार में न बदलने से मानव संसाधन की क्षमता व्यर्थ जाती है।
- उद्योगों को नए स्नातकों को कार्य-तैयार बनाने हेतु अतिरिक्त प्रशिक्षण लागत उठानी पड़ती है।

साझेदारी की आवश्यकता क्यों?

- विशेषज्ञों के अनुसार रोजगार संकट के अंतराल कम करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों व उद्योगों के बीच मजबूत साझेदारी आवश्यक है।

सफल साझेदारी कैसी हो?

कभी-कभार आयोजित होने वाले इंटरशिप कैम्पेन के स्थान पर:

- उद्योग विशेषज्ञों (इंडस्ट्री एक्सपर्ट) द्वारा विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर पाठ्यक्रम सह-डिज़ाइन।
- शिक्षा में व्यावहारिक प्रोजेक्ट (हैंड्स-ऑन प्रोजेक्ट), लाइव असाइनमेंट और अप्रेंटिसशिप का समावेश।
- फैकल्टी को इंडस्ट्री के ट्रेड्स और टेक्नोलॉजी की जानकारी मिलती रहे।
- विद्यार्थियों को कार्यस्थल मार्गदर्शन और वास्तविक समस्या-समाधान का अनुभव।

ऐसे गहन सहयोग से विद्यार्थी वास्तविक नौकरियों के लिए सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों कौशलों से सुसज्जित होते हैं।

उठाए गए कदम

भारत में कई नीतिगत एवं कार्यक्रम संबंधी पहलें रोजगार का संकट सुधारने का प्रयास कर रही हैं:

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020** — लचीले और अनुभवात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करती है।
- **स्किल इंडिया और डिजिटल कौशल कार्यक्रम** — डेटा विज्ञान, साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।
- **उद्योग-संबद्ध पाठ्यक्रम और इंटरशिप नीतियाँ** — विद्यार्थियों को प्रारंभिक कार्यानुभव देती हैं।

आगे की राह

रोजगार के संकट का वास्तविक समाधान करने के लिए निम्नलिखित उपाय महत्वपूर्ण हैं:

- **सह-निर्मित पाठ्यक्रम:** नियोक्ताओं के सुझावों से पाठ्यक्रम का नियमित अद्यतन।
- **अनुभवात्मक अधिगम:** इंटरशिप, अप्रेंटिसशिप, लाइव परियोजनाएँ और प्रयोगशाला कार्य को पाठ्यक्रम का अनिवार्य भाग बनाना।
- **सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण:** संचार, टीम वर्क, विश्लेषणात्मक सोच और अनुकूलनशीलता को सीखने का मुख्य हिस्सा बनाना।
- **डेटा-आधारित निगरानी:** कार्यस्थल में स्नातकों के प्रदर्शन का आकलन कर शिक्षण में सुधार।

निष्कर्ष

रोजगार का संकट प्रतिभा की कमी नहीं, बल्कि शिक्षा और श्रम-बाजार के बीच असंगति का परिणाम है। अकादमिक जगत और उद्योग के मजबूत सहयोग तथा प्रासंगिक कौशलों से युक्त शिक्षा के माध्यम से भारत सतत रोजगार और आर्थिक विकास की मजबूत नींव बना सकता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: भारत में रोजगार-संकट के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. रोजगार का संकट केवल किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से औपचारिक डिग्री प्राप्त करने को दर्शाती है।
2. उद्योग-शिक्षा सहयोग की कमी कम रोजगार का संकट का एक प्रमुख कारण है।
3. संचार और टीम वर्क जैसे सॉफ्ट स्किल्स की मांग नियोक्ताओं द्वारा बढ़ती जा रही है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 2 और 3
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

भारत का सेवा क्षेत्र

चर्चा में क्यों: भारत के सेवा क्षेत्र में रोजगार वृद्धि असमान है और उत्पादन वृद्धि से पीछे रह रही है—यह तथ्य पॉलिसी थिंक टैंक 'नीति आयोग' की एक नई रिपोर्ट में सामने आया है।

नीति आयोग रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष

1. उत्पादन में सेवा क्षेत्र का प्रभुत्व

- ✓ सेवा क्षेत्र भारत के सकल मूल्य वर्धन (GVA) का लगभग 55% योगदान देता है—जो एक दशक पहले लगभग 51% था। इससे स्पष्ट होता है कि सेवा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की मुख्य आधारशिला बना हुआ है।

2. रोजगार हिस्सेदारी अब भी कम

- ✓ उच्च उत्पादन योगदान के बावजूद, सेवा क्षेत्र कुल कार्यबल का लगभग 30% ही रोजगार देता है (2023-24 में लगभग 18.8 करोड़ कार्यकर्ता), जो 2011-12 के 26.9% से कुछ अधिक है। यह वैश्विक औसत (~50%) से काफी कम है, जो भारत में धीमे संरचनात्मक परिवर्तन को दर्शाता है।

3. रोजगार वृद्धि और गुणवत्ता असमान

- ✓ पिछले छह वर्षों में सेवा क्षेत्र ने लगभग 4 करोड़ नए रोजगार जोड़े।
- ✓ अधिकांश नौकरियाँ खुदरा, व्यापार, परिवहन और शिक्षा जैसे पारंपरिक, कम-वेतन क्षेत्रों में हैं; जबकि उच्च-मूल्य सेवाओं (आईटी, वित्त, पेशेवर सेवाएँ) में कम हिस्सेदारी है।
- ✓ अनेक नौकरियाँ अनौपचारिक, कम वेतन वाली और सामाजिक सुरक्षा से वंचित हैं।

4. क्षेत्रीय और जनसांख्यिकीय असमानताएँ

- ✓ राज्यों और समूहों के बीच उल्लेखनीय अंतर दिखाई देता है।

- ✓ दक्षिणी और पश्चिमी राज्य (जैसे कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, तेलंगाना) उच्च-मूल्य सेवाओं में अग्रणी हैं।
- ✓ कई उत्तरी और पूर्वी राज्य अभी भी बेहतर सेवा रोजगार की ओर धीमी गति से बढ़ रहे हैं।
- ✓ शहरी श्रमिकों की सेवा क्षेत्र में भागीदारी ग्रामीणों की तुलना में अधिक है, और महिलाएँ—विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में—उच्च-गुणवत्ता सेवा नौकरियों में कम भाग लेती हैं।

नीतिगत निहितार्थ

समावेशी और सतत वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए बहु-आयामी नीतिगत प्रतिक्रिया आवश्यक है:

- गिग अर्थव्यवस्था, एमएसएमई और अनौपचारिक रोजगार में श्रमिकों के लिए औपचारिकीकरण और सामाजिक सुरक्षा।
- महिलाओं, ग्रामीण युवाओं और अन्य वंचित समूहों के लिए लक्षित कौशल विकास और डिजिटल पहुँच।
- भविष्य की रोजगार संभावनाएँ बढ़ाने हेतु उभरती और हरित अर्थव्यवस्था कौशलों में निवेश।
- स्थानीय विशेषताओं के आधार पर टियर-II और टियर-III शहरों में सेवा क्षेत्रों के संतुलित क्षेत्रीय विकास की रणनीतियाँ।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

- भारत एक ऐसे चरण में प्रवेश कर रहा है जहाँ युवा और बढ़ती कार्यबल आर्थिक परिवर्तन को आकार दे रही है। कृषि से सेवाओं और विनिर्माण की ओर संरचनात्मक बदलाव सतत आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक है।
- नीति आयोग की रिपोर्ट यह रेखांकित करती है कि आर्थिक वृद्धि अपने-आप अच्छे रोजगार की गारंटी नहीं देती, इसलिए समावेशी विकास के लिए रणनीतिक नीतिगत कार्रवाई आवश्यक है।

आगे की राह

यह सुनिश्चित करने के लिए कि सेवा क्षेत्र गुणवत्तापूर्ण और समावेशी रोजगार का सशक्त स्रोत बने, भारत को एक केंद्रित और दीर्घकालिक रणनीति अपनानी होगी:

- **उच्च-मूल्य सेवा नौकरियों को बढ़ावा:** आईटी सेवाएँ, वित्त, स्वास्थ्य सेवा, अनुसंधान, पर्यटन और पेशेवर सेवाओं जैसे क्षेत्रों में अधिक निवेश की आवश्यकता है, जिनमें बेहतर वेतन और अधिक रोजगार सृजन की क्षमता है।
- **कौशल विकास और शिक्षा को सुदृढ़ करना:** कौशल कार्यक्रमों को बाज़ार की माँग के अनुरूप बनाना, विशेषकर डिजिटल कौशल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा विश्लेषण और उभरती प्रौद्योगिकियों में।
- **अनौपचारिक रोजगार का औपचारिकीकरण:** महिलाओं, ग्रामीण युवाओं और अनौपचारिक श्रमिकों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण तक बेहतर पहुँच सुनिश्चित करना।

औपचारिक रोजगार को प्रोत्साहन:

- ✓ ई-श्रम जैसी योजनाओं के अंतर्गत सामाजिक सुरक्षा कवरेज का विस्तार।
- ✓ एमएसएमई और गिग श्रमिकों को ऋण, बीमा और कानूनी संरक्षण प्रदान करना।

संतुलित क्षेत्रीय विकास:

- ✓ बड़े शहरों पर दबाव और क्षेत्रीय असमानता कम करने हेतु टियर-II और टियर-III शहरों में सेवा क्षेत्र की वृद्धि को प्रोत्साहित करना।

महिला कार्यबल भागीदारी में सुधार:

- ✓ सुरक्षित परिवहन, बाल देखभाल सुविधाएँ और लचीली कार्य व्यवस्थाओं में निवेश।
- ✓ शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और डिजिटल मंचों जैसे क्षेत्रों में महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों को बढ़ावा देना।

रोजगार सृजन में प्रौद्योगिकी की भूमिका:

- ✓ यह सुनिश्चित करना कि स्वचालन और डिजिटलीकरण श्रमिकों को विस्थापित करने के बजाय पुनःकौशल और कौशल उन्नयन के माध्यम से नए अवसर पैदा करना।

निष्कर्ष

नीति आयोग की रिपोर्ट एक महत्वपूर्ण चुनौती को उजागर करती है—सेवा क्षेत्र भारत की आर्थिक वृद्धि को आगे बढ़ा रहा है, पर पर्याप्त गुणवत्तापूर्ण रोजगार नहीं बना पा रहा। भारत को जनसांख्यिकीय लाभांश का पूरा लाभ लेने के लिए सेवा क्षेत्र को केवल वृद्धि के इंजन से आगे बढ़ाकर रोजगार सृजन का प्रमुख स्रोत बनाना होगा। उचित नीतिगत सुधार, कौशल विकास, औपचारिकीकरण और क्षेत्रीय संतुलन के साथ सेवा क्षेत्र उत्पादक, समावेशी और सुदृढ़ अर्थव्यवस्था के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: हाल की नीति आयोग रिपोर्ट के संदर्भ में भारत के सेवा क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सेवा क्षेत्र भारत के सकल मूल्य वर्धन (GVA) का आधे से अधिक योगदान देता है।
2. सेवा क्षेत्र में रोजगार का हिस्सा वैश्विक औसत से अधिक है।
3. सेवा क्षेत्र में रोजगार सृजन मुख्यतः उच्च-मूल्य और औपचारिक सेवाओं में केंद्रित है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

8वाँ केंद्रीय वेतन आयोग

चर्चा में क्यों: 28 अक्टूबर 2025 को प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 8वें केंद्रीय वेतन आयोग के गठन हेतु कार्य-क्षेत्र (Terms of Reference) को स्वीकृति दी।

केंद्रीय वेतन आयोग

- केंद्रीय वेतन आयोग एक सरकारी निकाय है जो केंद्रीय कर्मचारियों के वेतन, भत्तों, पेंशन और सेवा शर्तों की समीक्षा कर सिफारिशें देता है।
- सामान्यतः ऐसे आयोग हर 10 वर्ष में गठित किए जाते हैं।
- आयोग में एक अध्यक्ष, एक अंशकालिक सदस्य, एक सदस्य-सचिव और अन्य सदस्य शामिल होंगे।
- आयोग 18 माह के भीतर अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करेगा और आवश्यकता होने पर अंतरिम रिपोर्ट भी दे सकता है।

आयोग द्वारा विचारणीय बिंदु

- अपनी सिफारिशें तैयार करते समय आठवाँ केंद्रीय वेतन आयोग (8th CPC) निम्नलिखित बातों पर विचार करेगा:
 - देश की आर्थिक स्थिति;
 - राजकोषीय संयम और सार्वजनिक धन का सावधानीपूर्ण उपयोग;
 - विकास और कल्याण हेतु संसाधनों की उपलब्धता;
 - अ-वित्तपोषित पेंशन देनदारियां;
 - राज्य सरकारों की वित्तीय स्थिति पर प्रभाव;
 - वर्तमान वेतन संरचना, लाभ और कार्य परिस्थितियाँ—केंद्रीय सरकार तथा सार्वजनिक उपक्रमों में;

केंद्रीय वेतन आयोग क्यों महत्वपूर्ण है?

8वाँ केंद्रीय वेतन आयोग (सीपीसी) महत्वपूर्ण है क्योंकि यह लगभग 50 लाख केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों और लगभग 65 लाख पेंशनभोगियों के वेतन, पेंशन और सेवा शर्तों को प्रभावित करता है। इसका प्रभाव केवल सरकारी कर्मचारियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समग्र अर्थव्यवस्था और शासन व्यवस्था तक विस्तृत होता है।

1. निष्पक्ष और अद्यतन वेतन संरचना सुनिश्चित करना

- समय के साथ मुद्रास्फीति वेतन के वास्तविक मूल्य को कम कर देती है।
- 8वाँ CPC वेतन में संशोधन करेगा ताकि कर्मचारी सम्मानजनक जीवन स्तर बनाए रख सकें।
- यह वेतन को वर्तमान आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप भी बनाता है।

2. दक्षता और प्रेरणा में सुधार

- उचित वेतन से कार्य संतोष और मनोबल बढ़ता है।

- ✓ प्रेरित कर्मचारी बेहतर लोक सेवाएँ प्रदान करने की अधिक संभावना रखते हैं।
- ✓ यह शासन और प्रशासन में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है।

3. सरकारी वित्त पर व्यापक प्रभाव

- ✓ वेतन आयोग की सिफारिशों से सरकारी व्यय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।
- ✓ इसका प्रभाव केंद्रीय बजट, राजकोषीय घाटा और दीर्घकालिक पेंशन देनदारियों पर पड़ता है।
- ✓ इसलिए, केंद्रीय वेतन आयोग (सीपीसी) को कर्मचारी कल्याण व राजकोषीय अनुशासन के बीच संतुलन बनाए रखना होता है।

4. राज्य सरकारों पर प्रभाव

- ✓ अनेक राज्य सरकारें केंद्रीय वेतन आयोग की सिफारिशों का अनुसरण करती हैं।
- ✓ इसलिए, 8वाँ CPC उन राज्यों की वित्तीय स्थिति को भी प्रभावित करेगा जो पहले से ही राजकोषीय दबाव में हैं।

5. सामाजिक और आर्थिक महत्व

- ✓ वेतन वृद्धि से उपभोग बढ़ता है, जिससे अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिलता है।
- ✓ पेंशन संशोधन बुजुर्गों की सामाजिक सुरक्षा को सुदृढ़ करता है।
- ✓ यह सरकार व कर्मचारियों के बीच विश्वास को मजबूत करता है।

निष्कर्ष

8वाँ केंद्रीय वेतन आयोग निष्पक्ष वेतन, कुशल प्रशासन और आर्थिक संतुलन सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। हालाँकि इसका उद्देश्य कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के जीवन स्तर में सुधार करना है, परंतु राजकोषीय स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए सावधानीपूर्ण संतुलन आवश्यक है। उचित क्रियान्वयन के साथ यह आयोग प्रशासनिक सुधार और समावेशी आर्थिक वृद्धि का मजबूत आधार बन सकता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: 8वें केंद्रीय वेतन आयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसे केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा केंद्रीय कर्मचारियों के वेतन और पेंशन संशोधन हेतु गठित किया गया है।
2. यह गठन के 18 माह के भीतर अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करेगा।
3. इसकी सिफारिशें केंद्र और राज्य सरकारों दोनों पर बाध्यकारी होती हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1
- (d) 1, 2 और 3

भारत की मजबूत जीडीपी वृद्धि दर

चर्चा में क्यों: भारत सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही (Q2) के आर्थिक आँकड़े जारी किए, जिनमें वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 8.2% आँकी गई - जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में स्पष्ट तेजी दर्शाती है।

प्रमुख आर्थिक संकेतक

स्थिर मुद्रास्फीति, बढ़ते औद्योगिक उत्पादन और सुधरते रोजगार संकेतकों के साथ ये आँकड़े जटिल वैश्विक परिस्थितियों के बीच लचीली आर्थिक वृद्धि को दर्शाते हैं:

- **जीडीपी वृद्धि:** वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही में वास्तविक जीडीपी वृद्धि **8.2%** आँकी गई, जबकि Q1 में 5.6% थी। प्रथम अर्धवार्षिक (अप्रैल-सितंबर) वृद्धि **8.0%** रही, जो पिछले वर्ष के 6.1% से अधिक है।
- **मुद्रास्फीति:** उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित मुद्रास्फीति अक्टूबर 2025 में घटकर **0.25%** रही—मुख्यतः खाद्य कीमतों में नरमी के कारण।
- **औद्योगिक उत्पादन:** औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) सितंबर 2025 में **4.0%** वार्षिक वृद्धि के साथ बढ़ा, जिसमें विनिर्माण क्षेत्र प्रमुख रहा।
- **श्रमबल भागीदारी:** श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) अक्टूबर 2025 में **55.4%** के छह माह के उच्च स्तर पर पहुँची।
- **निर्यात:** अप्रैल-अक्टूबर 2025 के दौरान वस्तु एवं सेवा निर्यात में **4.84%** वृद्धि दर्ज हुई।

विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ

1. सतत वृद्धि की गति

- ✓ दूसरी तिमाही (Q2) में 8.2% वृद्धि भारत को वैश्विक स्तर पर तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में बनाए रखती है।
- ✓ यह वृद्धि विनिर्माण, निर्माण, सेवाओं और व्यापार जैसे विविध क्षेत्रों में व्यापक योगदान से समर्थित है।

2. नियंत्रित मुद्रास्फीति

- ✓ उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) मुद्रास्फीति का 0.25% तक गिरना मूल्य स्थिरता प्रबंधन की प्रभावशीलता दर्शाता है।
- ✓ कम मुद्रास्फीति से क्रय शक्ति, निवेश विश्वास और समाष्टि स्थिरता मजबूत होती है।
- ✓ आरबीआई की अनुमन्य सीमा के भीतर मुद्रास्फीति रहने से सहायक मौद्रिक नीति संभव होती है।

3. औद्योगिक गतिविधि और उत्पादन

- ✓ औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) में 4% वृद्धि, विशेषकर विनिर्माण के 4.8% विस्तार के साथ, औद्योगिक मजबूती का संकेत है।
- ✓ यह मेक इन इंडिया और उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन (PLI) जैसी नीतियों के अनुरूप है।

4. श्रम बाज़ार में सुधार

- ✓ श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) व महिला श्रम भागीदारी में वृद्धि समावेशी वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। स्किल इंडिया मिशन और EPFO सदस्यता वृद्धि रोजगार बाज़ार को सुदृढ़ कर रही है।

5. निर्यात लचीलापन

- ✓ वैश्विक चुनौतियों के बावजूद निर्यात में लगभग 5% वृद्धि प्रतिस्पर्धात्मकता दर्शाती है। निर्यात संवर्धन मिशन (EPM) जैसी नीतियाँ एमएसएमई को अवसंरचना, ऋण और बाज़ार पहुँच देती हैं।

नीतिगत निहितार्थ

● मौद्रिक और राजकोषीय नीति

- ✓ आरबीआई की मौद्रिक नीति और सरकारी व्यय के बीच संतुलन वृद्धि और मूल्य स्थिरता दोनों को बनाए रखता है।
- ✓ कम मुद्रास्फीति से ऋण उपलब्धता और निवेश पूर्वानुमेयता बढ़ती है।

● समावेशी विकास

- ✓ श्रम बाज़ार और निर्यात प्रदर्शन में सुधार संरचनात्मक परिवर्तन को दर्शाता है।
- ✓ महिला श्रम भागीदारी और औपचारिक रोजगार में वृद्धि एसडीजी लक्ष्यों के अनुरूप है।

निष्कर्ष

वित्त वर्ष 2025-26 के आर्थिक आँकड़े मजबूत वृद्धि, औद्योगिक पुनरुद्धार, कम मुद्रास्फीति, बेहतर रोजगार स्थितियाँ और सुदृढ़ बाह्य क्षेत्र को दर्शाते हैं। ये कारक मिलकर भारत को संतुलित और लचीली अर्थव्यवस्था की दिशा में आगे बढ़ाते हैं तथा 2030 तक वैश्विक नेतृत्व की संभावनाओं को मजबूत करते हैं।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही में भारत की अर्थव्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही में वास्तविक जीडीपी वृद्धि 8.2% रही, जो पिछले वर्ष की समान अवधि से अधिक थी।
2. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित मुद्रास्फीति घटकर 0.25% रह गई, जो वर्तमान CPI श्रृंखला में सबसे कम है।

3. औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) में 4.0% वृद्धि हुई, जिसका नेतृत्व खनन क्षेत्र ने किया।
 4. श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) छह माह के उच्च स्तर पर पहुँची, जो रोजगार स्थितियों में सुधार को दर्शाती है।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
- (a) केवल 1, 2 और 4
 - (b) केवल 1 और 3
 - (c) केवल 2, 3 और 4
 - (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (a)

राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण (NIC) 2025

चर्चा में क्यों: भारत की आर्थिक आँकड़ा प्रणाली को सुदृढ़ करने हेतु सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण 2025 जारी किया।

मुख्य विवरण

- इसे राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (NSS) की 75वीं वर्षगाँठ और विश्व सांख्यिकी दिवस 2025 के अवसर पर जारी किया गया।
- यह आर्थिक गतिविधियों के वर्गीकरण का प्रमुख सांख्यिकीय मानक है, जो सर्वेक्षण, जनगणना, राष्ट्रीय लेखा और नीति-निर्माण में उपयोग होता है।
- यह संशोधन अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तनों को दर्शाता है और वैश्विक मानकों के अनुरूप है।

राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण (NIC) के बारे में

- राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण (NIC) एक सुव्यवस्थित ढाँचा है, जो भारत की सभी आर्थिक गतिविधियों को वर्गीकृत करता है।
- इसे पहली बार 1962 में प्रस्तुत किया गया था और इसके बाद अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिकी तथा उत्पादन प्रक्रियाओं में हुए परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करने हेतु समय-समय पर अद्यतन किया गया है।
- इसके पूर्व संस्करणों में NIC 1970, 1987, 1990, 1998, 2004 और 2008 शामिल हैं। नवीनतम संस्करण NIC 2025 मानकीकरण और प्रासंगिकता में महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाता है।
- विश्वसनीय आर्थिक आँकड़े संकलित करने के लिए NIC अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो सरकारी नीति-निर्माण, शैक्षणिक अनुसंधान और व्यावसायिक निर्णयों को मार्गदर्शन देता है।
- यह जीडीपी आकलन, क्षेत्रीय प्रदर्शन मूल्यांकन और नीतिगत विश्लेषण के लिए प्रयुक्त आँकड़ों का आधार है।

NIC 2025 की प्रमुख विशेषताएँ

- **अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूपता:** NIC 2025 को संयुक्त राष्ट्र के ISIC संशोधन-5 के साथ समन्वित किया गया है।

- **अधिक सूक्ष्म वर्गीकरण:** नया छह-अंकीय कोडिंग ढाँचा पुराने पाँच-अंकीय तंत्र का स्थान लेता है, जिससे विविध आर्थिक गतिविधियों का अधिक विस्तृत और लचीला वर्गीकरण संभव होता है।
- **उभरते क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व:** वर्गीकरण में अब नवीकरणीय ऊर्जा, फिनटेक, ई-कॉमर्स, क्लाउड सेवाएँ, ब्लॉकचेन और डिजिटल मध्यस्थता जैसी विस्तारित श्रेणियाँ शामिल हैं, जो भारत के तीव्र डिजिटल परिवर्तन को दर्शाती हैं।
- **पर्यावरणीय और हरित अर्थव्यवस्था का समावेशन:** नई उप-श्रेणियाँ कार्बन कैप्चर, अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरणीय सुधार से संबंधित गतिविधियों को समाहित करती हैं, जिससे सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की निगरानी रूपरेखा के साथ समन्वय सुदृढ़ होता है।
- **स्वदेशी क्षेत्रों की मान्यता:** आयुष-आधारित स्वास्थ्य सेवा तथा हथकरघा उद्योग जैसे पारंपरिक क्षेत्रों को पृथक रूप से शामिल किया गया है, जो औपचारिक और अनौपचारिक आर्थिक खंडों के एकीकरण को दर्शाता है।

नीति और शासन के लिए NIC 2025 का महत्व

- **प्रमाण-आधारित नीति-निर्माण:** अधिक सूक्ष्म आँकड़ों के माध्यम से नीति-निर्माता उभरते उद्योगों और डिजिटल क्षेत्रों के लिए लक्षित आर्थिक हस्तक्षेप तैयार कर सकते हैं—जो आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत 2047 की दृष्टि के अनुरूप है।
- **बेहतर आर्थिक मापन:** सटीक वर्गीकरण से राष्ट्रीय खातों, रोजगार आँकड़ों और क्षेत्रीय उत्पादन के आकलन की शुद्धता बढ़ती है—जो समष्टि-आर्थिक योजना और निगरानी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- **अंतरराष्ट्रीय तुलनीयता:** वैश्विक मानकों के अनुरूपता से अंतरराष्ट्रीय सांख्यिकीय रिपोर्टिंग में भारत की भागीदारी सुदृढ़ होती है और अन्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ तुलनात्मक विश्लेषण बेहतर होता है।
- **डेटा-आधारित सुधार:** बेहतर वर्गीकरण कराधान, निवेश नीति, श्रम विनियमन और वित्तीय समावेशन से जुड़े सुधारों को समर्थन देता है—जो दीर्घकालिक आर्थिक शासन के लिए आवश्यक हैं।

चुनौतियाँ और आगे की राह

यद्यपि NIC 2025 एक दूरदर्शी ढाँचा है, इसकी सफल क्रियान्वयन निम्न पर निर्भर करता है:

- **क्षमता निर्माण:** विभिन्न मंत्रालयों और राज्य एजेंसियों में अधिकारियों और सांख्यिकीविदों को नए वर्गीकरण को अपनाने हेतु प्रशिक्षण।
- **डिजिटल एकीकरण:** वास्तविक समय डेटा संग्रहण और विश्लेषण के लिए डेटा प्रौद्योगिकियों का उपयोग।
- **राज्यों के साथ समन्वय:** निर्बाध डेटा संकलन हेतु उप-राष्ट्रीय वर्गीकरण प्रणालियों का सामंजस्य।

निष्कर्ष

NIC 2025 का शुभारंभ भारत की सांख्यिकीय शासन व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। आधुनिक अर्थव्यवस्था की गतिशीलता को

समाहित करते हुए और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप होकर यह उन आर्थिक आँकड़ों की नींव को सुदृढ़ करता है, जो नीति-निर्माण, शैक्षणिक अनुसंधान और सार्वजनिक विमर्श को दिशा देते हैं।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण (NIC) 2025 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. NIC 2025 संयुक्त राष्ट्र के ISIC संशोधन-5 के साथ पूर्णतः समन्वित है।
2. NIC 2025 उभरते क्षेत्रों जैसे फिनटेक, ई-कॉमर्स, ब्लॉकचेन और डिजिटल मध्यस्थता को समाहित करने हेतु छह-अंकीय कोडिंग संरचना प्रस्तुत करता है।
3. NIC ढाँचा मुख्यतः करायित उद्देश्यों के लिए उपयोग होता है और राष्ट्रीय खातों में इसका सीमित उपयोग है।
4. NIC 2025 में पर्यावरणीय और हरित अर्थव्यवस्था से संबंधित गतिविधियों को शामिल किया गया है, जिससे सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की निगरानी में सहायता मिलती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 4
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1, 3 और 4
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (a)

आरबीआई बुलेटिन: समष्टि-आर्थिक आधारों की मजबूती

चर्चा में क्यों: वैश्विक आर्थिक परिवेश नीतिगत अनिश्चितता, व्यापार तनाव और कमजोर होती बाह्य मांग से चिह्नित है—ऐसे कारक जिन्होंने वैश्विक वृद्धि की संभावनाओं को कमजोर किया है। इन चुनौतियों के बावजूद, कई घरेलू आर्थिक स्तंभों के मजबूत संरचनात्मक समर्थन के कारण भारत की वृद्धि-प्रवृत्ति बनी हुई है।

मुख्य विवरण

- **मजबूत घरेलू मांग:** जीएसटी संग्रह, डिजिटल भुगतान और ई-वे बिल जैसे उच्च-आवृत्ति संकेतक सेवाओं और उद्योग में सतत मांग दर्शाते हैं। शहरी और ग्रामीण उपभोग में निरंतर मजबूती समग्र मांग को समर्थन देती है।
- **कम और स्थिर मुद्रास्फीति:** शीर्षक सीपीआई मुद्रास्फीति में तीव्र गिरावट आई है—जो 2017 के बाद के न्यूनतम स्तरों तक पहुँची। इससे आरबीआई को मूल्य स्थिरता से समझौता किए बिना वृद्धि समर्थन हेतु नीतिगत गुंजाइश मिली है।

- **मजबूत बैंकिंग और कॉरपोरेट बैलेंस शीट:** वित्तीय क्षेत्र के स्वस्थ संकेतक—जैसे मजबूत पूंजी बफर और कम गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ—आर्थिक स्थिरता को सुदृढ़ करते हैं और ऋण वृद्धि व निवेश की संभावनाएँ बढ़ाते हैं।
- **विदेशी मुद्रा भंडार:** पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार विनिमय दर स्थिरता में विश्वास बढ़ाते हैं और अस्थिर पूंजी प्रवाह के दौरान मौद्रिक नीति की प्रभावशीलता को समर्थन देते हैं।
- **नीतिगत विश्वसनीयता:** विश्वसनीय मौद्रिक और राजकोषीय ढाँचा दीर्घकालिक समष्टि-आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करता है और बिना अति-प्रतिक्रिया के संकटों के प्रति संतुलित प्रतिक्रिया संभव बनाता है।

चुनौतियाँ

- **वैश्विक व्यापार तनाव और संरक्षणवाद:** बढ़ती शुल्क बाधाएँ और भू-राजनीतिक तनाव निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता और निवेश प्रवाह को प्रभावित कर सकते हैं।
- **विनिमय दर दबाव और एफपीआई बहिर्प्रवाह:** अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये का अवमूल्यन वैश्विक जोखिम-परहेज़ और पोर्टफोलियो निवेश अस्थिरता को दर्शाता है।
- **मध्यम एफडीआई प्रवाह:** प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में हालिया उतार-चढ़ाव वैश्विक निवेशकों की सतर्कता का संकेत देता है।

व्यापक वृद्धि परिदृश्य

हालिया आर्थिक आकलन आरबीआई के सकारात्मक दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं:

- वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की जीडीपी वृद्धि लगभग 7.4% रहने का अनुमान है—जो अधिकांश प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं से अधिक है।
- यह प्रदर्शन घरेलू मांग, निवेश गति और नीतिगत समर्थन से संचालित है—जो आरबीआई के विश्लेषण के अनुरूप है।

निष्कर्ष

आरबीआई बुलेटिन के निष्कर्ष एक संतुलित चित्र प्रस्तुत करते हैं: वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद, भारत के मजबूत समष्टि-आर्थिक आधार—कम मुद्रास्फीति, सुदृढ़ आंतरिक मांग और स्वस्थ वित्तीय क्षेत्र—अर्थव्यवस्था को संकटों को सहने और स्थिर वृद्धि बनाए रखने में सक्षम बना रहे हैं।

निजी क्षेत्र के विस्तार की न्यूनतम वृद्धि

चर्चा में क्यों: अक्टूबर 2025 में भारत के निजी क्षेत्र के विस्तार की गति पाँच माह के न्यूनतम स्तर पर आ गई, जैसा कि एचएसबीसी फ्लैश इंडिया कंपोजिट क्रय प्रबंधक सूचकांक (PMI)—जो एस एंड पी ग्लोबल द्वारा संकलित है—से संकेत मिलता है।

मंदी के प्रमुख कारण

1. कमजोर मांग की स्थिति

- ✓ मंदी का मुख्य कारण सेवा क्षेत्र में सुस्ती रहा, जहाँ नए व्यवसाय की वृद्धि कई महीनों के मजबूत विस्तार के बाद धीमी हो गई।
- ✓ यद्यपि विनिर्माण गतिविधि घरेलू मांग के कारण मजबूत रही, फिर भी यह समग्र सूचकांक में सेवा क्षेत्र की कमजोरी की भरपाई नहीं कर सकी।

2. उच्च उत्पादन मूल्य

- ✓ कंपनियों ने इनपुट लागत और उत्पादन मूल्य में वृद्धि की सूचना दी, जिसके कारण बिक्री मूल्य बढ़ाने पड़े। इससे कुछ क्षेत्रों में स्थायी मुद्रास्फीति दबाव का संकेत मिलता है।

3. निर्यात मांग में नरमी

- ✓ भारतीय वस्तुओं और सेवाओं की अंतरराष्ट्रीय मांग मध्यम रही, जिसका एक कारण प्रमुख बाजारों (जैसे अमेरिका) में उच्च शुल्क भी है। इससे माह के दौरान निर्यात वृद्धि की गति धीमी पड़ी।

महत्व और निहितार्थ

- **मांग प्रवृत्तियों का संकेतक:** पीएमआई आर्थिक गतिविधि का प्रमुख अग्रिम संकेतक है, जो मांग की स्थिति पर वास्तविक समय जानकारी देता है।
- **भविष्य की वृद्धि पर प्रभाव:** विस्तार क्षेत्र में रहने के बावजूद मंदी भविष्य में जीडीपी वृद्धि के धीमे होने का संकेत दे सकती है यदि मांग और कमजोर होती है।
- **मुद्रास्फीति दबाव:** बढ़ती लागत से संकेत मिलता है कि निजी क्षेत्र के कुछ हिस्सों में मुद्रास्फीति दबाव बने रह सकते हैं, जिससे आरबीआई को संतुलन बनाना होगा।
- **बाह्य क्षेत्र की चुनौतियाँ:** निर्यात मांग में नरमी प्रतिस्पर्धात्मकता और वैश्विक व्यापार अनिश्चितताओं की चुनौतियों को दर्शाती है।

आगे की राह

निजी क्षेत्र की गति बनाए रखने हेतु निम्न रणनीतिक कदम महत्वपूर्ण हो सकते हैं:

- **घरेलू मांग सुदृढ़ करना:** उपभोग और निवेश को समर्थन देने वाली राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ।
- **प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना:** निर्यात विविधीकरण और लागत बाधाओं को कम करने के लिए संरचनात्मक सुधार।
- **उत्पादकता वृद्धि:** प्रौद्योगिकी अपनाने, कौशल विकास और आपूर्ति श्रृंखला सुधार के माध्यम से दक्षता बढ़ाना।

निष्कर्ष

अक्टूबर 2025 के पीएमआई आँकड़े दर्शाते हैं कि भारत का निजी क्षेत्र अभी भी विस्तार कर रहा है, परंतु वृद्धि की गति में कमी—विशेषकर सेवा

क्षेत्र में—और स्थायी मूल्य दबाव उभरती चुनौतियों की ओर संकेत करते हैं। इन प्रवृत्तियों की सतत निगरानी और उपयुक्त नीतिगत प्रतिक्रिया भारत की स्थिर और सतत आर्थिक वृद्धि के लिए आवश्यक होगी।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: अक्टूबर 2025 में भारत के निजी क्षेत्र के संबंध में एचएसबीसी फ्लैश इंडिया पीएमआई द्वारा संकेतित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. समग्र पीएमआई पाँच माह के न्यूनतम स्तर पर गिरा, परंतु 50 से ऊपर बना रहा, जो विस्तार को दर्शाता है।
2. मंदी मुख्यतः विनिर्माण मांग में कमजोरी के कारण हुई।
3. कंपनियों ने बढ़ते उत्पादन मूल्यों की सूचना दी, जो स्थायी मुद्रास्फीति दबाव का संकेत है।
4. पीएमआई आर्थिक गतिविधि का एक अग्रिम संकेतक माना जाता है।

उपर्युक्त में से सही कथन कौन-से हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 1, 3 और 4
- (c) केवल 2 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न "निजी क्षेत्र की सतत वृद्धि रोजगार सृजन, निवेश और समग्र आर्थिक स्थिरता के लिए आवश्यक है।" वर्तमान आर्थिक परिदृश्य में भारत के निजी क्षेत्र की मजबूत वृद्धि बनाए रखने की चुनौतियों का परीक्षण कीजिए तथा उसकी लचीलापन और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने हेतु नीतिगत उपायों पर चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

मार्केट एक्सेस सपोर्ट (MAS) योजना

चर्चा में क्यों: वैश्विक प्रतिकूल परिस्थितियों और बढ़ते संरक्षणवाद के बीच भारत के निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने ₹4,531 करोड़ की मार्केट एक्सेस सपोर्ट (MAS) योजना शुरू की है।

मुख्य विवरण

- यह पहल विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT) द्वारा शुरू की गई और निर्यात संवर्धन मिशन (EPM) का पहला परिचालन घटक है, जिसका कुल व्यय 2025-26 से 2030-31 के लिए ₹25,060 करोड़ निर्धारित है।

- यह योजना ऐसे समय आई है जब भारतीय निर्यातकों को प्रमुख बाजारों (जैसे अमेरिका) में उच्च शुल्क जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे बाजार विविधीकरण और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने की आवश्यकता हुई है।

योजना की प्रमुख विशेषताएँ

1. **वैश्विक पहुँच के लिए वित्तीय सहायता:** अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेलों, प्रदर्शनों, खरीदार-विक्रेता बैठकों (BSM) और बड़े विदेशी खरीदार कार्यक्रमों में भागीदारी हेतु संरचित वित्तीय सहायता।
2. **लागत-साझेदारी तंत्र:** सरकार स्वीकृत लागत का 60% वहन करेगी (BSM के लिए ₹5 करोड़ और प्रति मेगा कार्यक्रम ₹10 करोड़ तक)। शेष व्यय उद्योग द्वारा वहन किया जाएगा।
3. **एमएसएमई को प्राथमिकता:** कम से कम 35% भागीदारी स्लॉट सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) के लिए आरक्षित। इससे समावेशिता और छोटे निर्यातकों की क्षमता-वृद्धि को बढ़ावा मिलेगा।
4. **नए बाजार और नवाचार समर्थन:** प्रौद्योगिकी-आधारित और उभरते क्षेत्रों में प्रूफ-ऑफ-कॉन्सेप्ट तथा उत्पाद प्रदर्शन को प्रोत्साहन, जिससे भारतीय वस्तुओं और सेवाओं की वैश्विक दृश्यता बढ़े।

निर्यात संवर्धन मिशन (EPM) से संबंध

- मार्केट एक्सेस सपोर्ट (MAS) योजना, निर्यात संवर्धन मिशन का हिस्सा है—एक एकीकृत ढाँचा जो कई बिखरी निर्यात योजनाओं का स्थान लेता है।
- **EPM के प्रमुख उद्देश्य:**
 - ✓ लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और अन्य उभरते क्षेत्रों में बाजार विविधीकरण।
 - ✓ गुणवत्ता अनुपालन, ब्रांडिंग और वैश्विक साझेदारी जैसे गैर-वित्तीय समर्थन को सुदृढ़ करना।
 - ✓ मंत्रालयों और निर्यात संवर्धन परिषदों को डिजिटल मंच के माध्यम से समन्वित करना।
- इसके अतिरिक्त, ₹7,295 करोड़ का ऋण सहायता पैकेज भी घोषित किया गया है, जिसमें ब्याज सब्सिडी और जमानत गारंटी शामिल हैं— विशेषकर एमएसएमई के लिए व्यापार वित्त को आसान बनाने हेतु।

भारत की निर्यात रणनीति के लिए महत्व

- **बाजार विविधीकरण:** गैर-पारंपरिक बाजारों में पहुँच बढ़ाकर कुछ बड़े खरीदारों पर निर्भरता कम करना और शुल्क जोखिम घटाना।
- **एमएसएमई सशक्तिकरण:** 35% आरक्षण और लक्षित सहायता से छोटे निर्यातकों की वैश्विक प्रतिस्पर्धा क्षमता बढ़ेगी।
- **समग्र निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र:** MAS (मांग-पक्ष) और EPM (आपूर्ति व वित्त-पक्ष) के संयोजन से **समग्र निर्यात संवर्धन ढाँचा** विकसित होगा।

चुनौतियाँ और आवश्यकताएँ

- **कार्यान्वयन क्षमता:** राज्यों और क्षेत्रों में प्रभावी निष्पादन तथा प्रथम-बार निर्यातकों के मार्गदर्शन की आवश्यकता।
- **गुणवत्ता मानक अनुपालन:** अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन की जटिलताएँ, विशेषकर एमएसएमई के लिए।
- **सतत बाजार उपस्थिति:** केवल मेलों तक सीमित न रहकर ब्रांड निर्माण, डिजिटल विपणन और दीर्घकालिक खरीदार संबंध आवश्यक।

निष्कर्ष

मार्केट एक्सेस सपोर्ट योजना वैश्विक चुनौतियों के बीच भारत की निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने की महत्वपूर्ण नीति पहल है। बाजार विविधीकरण, एमएसएमई समावेशन और संरचित वित्तीय सहायता पर ध्यान केंद्रित कर यह योजना अधिक सुदृढ़ और विविधीकृत निर्यात तंत्र की दिशा में रणनीतिक बदलाव दर्शाती है — जो महामारी-पश्चात और भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के दौर में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: हाल ही में शुरू की गई मार्केट एक्सेस सपोर्ट (MAS) योजना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह योजना भारत सरकार द्वारा स्वीकृत निर्यात संवर्धन मिशन (EPM) का एक घटक है।
2. यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेलों और खरीदार-विक्रेता बैठकों में भागीदारी हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
3. योजना में कम से कम 35% भागीदारी एमएसएमई के लिए आरक्षित है।
4. यह योजना भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा लागू की जाती है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 1 और 4
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. "मार्केट एक्सेस सपोर्ट (MAS) योजना भारत की निर्यात रणनीति को प्रोत्साहन-आधारित समर्थन से बाज़ार-उन्मुख सुविधा की ओर ले जाती है।" इस योजना की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए तथा एमएसएमई सशक्तिकरण और निर्यात विविधीकरण में इसके महत्व का विश्लेषण कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

सेबी द्वारा व्यापक सुधारों की घोषणा

चर्चा में क्यों: भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) ने विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (FPIs) के लिए नियामकीय अनुभव को बेहतर बनाने हेतु व्यापक सुधारों की घोषणा की है। यह भारत की पूंजी बाजार उदारीकरण रणनीति में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारत के पूंजी बाजार में एफपीआई की भूमिका

- एफपीआई भारत के वित्तीय बाजारों में तरलता, विविधीकरण और वैश्विक पूंजी लाते हैं। वर्ष 2025 के अंत तक, सूचीबद्ध इक्विटी बाजार का लगभग 17% हिस्सा एफपीआई के पास था, जिनकी प्रबंधनाधीन संपत्ति लगभग 876 अरब अमेरिकी डॉलर थी—जो भारतीय बाजार पारिस्थितिकी तंत्र में उनके महत्व को दर्शाता है।
- ऐतिहासिक रूप से सेबी ने बाजार विकास और निवेशक संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखा है, तथा वैश्विक निवेश प्रवृत्तियों के अनुरूप नियामकीय ढाँचे को अनुकूलित किया है।

सेबी द्वारा घोषित प्रमुख सुधार

1. डिजिटल रूपांतरण और कागज़रहित पंजीकरण

- ✓ एफपीआई पंजीकरण प्रक्रिया को पूर्णतः कागज़रहित बनाने की योजना, जिसमें डिजिटल हस्ताक्षर और मजबूत डेटा सुरक्षा उपाय शामिल हैं।
- ✓ एंड-टू-एंड डिजिटल प्रसंस्करण से प्रक्रियागत विलंब कम होंगे और अनुपालन बोझ घटेगा।
- ✓ कॉमन एप्लिकेशन फॉर्म (CAF) पोर्टल के माध्यम से डिजिटल हस्ताक्षर सुविधा—सुगम पंजीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम।

2. सरलीकृत और समन्वित अनुपालन ढाँचा

- ✓ जोखिम-आधारित विनियमन को बढ़ावा और कुछ श्रेणियों के एफपीआई (विशेषकर कम जोखिम वाले, संप्रभु ऋण निवेशक) के लिए सरल अनुपालन।
- ✓ भारतीय सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश हेतु **शिथिल मानदंड**, जैसे:
 - आरबीआई के साथ समन्वित केवाईसी समयसीमा
 - कम रिपोर्टिंग आवश्यकताएँ
 - निवेशक समूह प्रकटीकरण से छूट
- ✓ इससे संप्रभु ऋण बाजार में विदेशी रुचि बढ़ने और घरेलू ऋण बाजार की गहराई बढ़ने की अपेक्षा।

3. बाजार सूक्ष्म-संरचना की समीक्षा

- ✓ नकद और डेरिवेटिव बाजारों के बीच संबंध मजबूत करने हेतु कार्यदल का गठन। शेयर उधार और ऋण (SLB) ढाँचे की समीक्षा—मूल्य खोज और बाजार दक्षता सुधारने के लिए महत्वपूर्ण।

सुधारों का महत्व

- **पूंजी प्रवाह और बाजार विश्वास:** घर्षण कम होने से स्थिर और दीर्घकालिक विदेशी पूंजी आकर्षित होगी—जो चालू खाते के घाटे को कम करने और वृद्धि बनाए रखने में सहायक है।
- **बाजार गहराई और तरलता:** एफपीआई के लिए बेहतर पहुँच से इक्विटी और ऋण बाजार अधिक गहरे और तरल बनेंगे—जो परिपक्व बाजार की पहचान है।
- **वैश्विक एकीकरण:** डिजिटलीकरण और सुव्यवस्थित प्रक्रियाएँ भारत को वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप बनाती हैं, जिससे निवेश प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है।

चुनौतियाँ और सावधानियाँ

- **अस्थिरता जोखिम:** विदेशी पूंजी पर निर्भरता से अल्पकालिक बाजार उतार-चढ़ाव बढ़ सकते हैं।
- **नियामकीय समन्वय:** सेबी और आरबीआई के बीच विशेषकर केवाईसी, विदेशी मुद्रा और प्रत्यावर्तन नियमों पर समन्वय आवश्यक।
- **डेटा सुरक्षा:** पूर्ण डिजिटलीकरण के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा और अनुपालन ढाँचा ज़रूरी।

आगे की राह

- **नियामकीय समन्वय:** समान मानदंडों—जैसे केवाईसी, कराधान और पूंजी प्रवाह—को एकल-विंडो ढाँचे के माध्यम से सुनिश्चित करने हेतु सेबी, आरबीआई और वित्त मंत्रालय के बीच समन्वय को सुदृढ़ करना।
- **नीतिगत पूर्वानुमेयता:** नियामकीय स्थिरता और हितधारक परामर्श सुनिश्चित करना, ताकि अचानक परिवर्तन से दीर्घकालिक एफपीआई निवेश प्रभावित न हों।
- **बाजार गहराई:** तरलता और जोखिम-प्रबंधन विकल्पों को बढ़ाने के लिए कॉरपोरेट बॉन्ड और डेरिवेटिव बाजारों का विस्तार तथा प्रतिभूति उधार एवं ऋण (SLB) तंत्र को सुदृढ़ करना।
- **जोखिम प्रबंधन:** अचानक पूंजी प्रवाह और बहिर्प्रवाह से उत्पन्न अस्थिरता को नियंत्रित करने के लिए संतुलित समष्टि-सावधानी उपकरणों का उपयोग करना, साथ ही पेंशन और संप्रभु निधियों जैसे दीर्घकालिक एफपीआई निवेश को प्रोत्साहित करना।
- **डिजिटल सुरक्षा:** एफपीआई प्रक्रियाओं के पूर्ण डिजिटलीकरण के साथ साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण ढाँचों को मजबूत करना।

निष्कर्ष

सेबी के सुधार भारत के पूंजी बाजार अवसंरचना को आधुनिक, पारदर्शी और वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। डिजिटलीकरण, अनुपालन सरलीकरण और संस्थागत विश्वास के माध्यम से ये सुधार स्थायी विदेशी पूंजी आकर्षित करने, बाजार गहराई बढ़ाने और आर्थिक लचीलापन मजबूत करने में सहायक होंगे। इन सुधारों की सफलता प्रभावी क्रियान्वयन और संस्थागत समन्वय पर निर्भर करेगी।

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न "एफपीआई अनुभव सुधारने के लिए सेबी के हालिया सुधार भारत के पूंजी बाजार उदारीकरण और वित्तीय स्थिरता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास हैं।" इन सुधारों का विश्लेषण कीजिए तथा स्थायी और स्थिर विदेशी निवेश प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक अतिरिक्त उपाय सुझाइए। (15 अंक, 250 शब्द)

CHAHAL ACADEMY

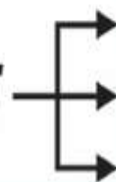
यूपीएससी-सिविल सेवा परीक्षा

2026/27/28

प्रवेश प्रारंभ

एनसीईआरटी+जीएस+सीसैट
फाउंडेशन बैच के लिए

माध्यम



English

हिंदी

द्विभाषी (Bilingual)

पर्यावरण एवं भूगोल

ताल ज्वालामुखी (फिलीपींस)

चर्चा में क्यों: फिलीपींस के ताल ज्वालामुखी में कम समय के भीतर तीन बार विस्फोट हुआ, जिससे आकाश में राख और भाप के गुबार (प्लूम) फैल गए। इसके कारण अधिकारियों ने ज्वालामुखी चेतावनी स्तर 1 (कम स्तर की अशांति) को बनाए रखा है और संभावित खतरों के कारण आगे की गतिविधियों पर नजर रख रहे हैं। इन विस्फोटों को फिलीपीन ज्वालामुखी और भूकंप विज्ञान संस्थान (फिवाॅल्क्स) द्वारा प्रलेखित (डॉक्यूमेंटेड) किया गया है।

ताल ज्वालामुखी के बारे में

- **अवस्थिति:** बटांगस प्रांत, लुजोन द्वीप, फिलीपींस; यह ताल झील के भीतर ज्वालामुखी द्वीप पर स्थित है—जो एक ज्वालामुखीय कलडेरा प्रणाली है।
- **महत्व:** यह फिलीपींस के सबसे सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक है, जिसमें ऐतिहासिक रूप से बार-बार छोटे और कभी-कभी बड़े विस्फोट होते रहे हैं, जो स्थानीय जनसंख्या, हवाई यात्रा और पर्यावरण को प्रभावित करते हैं।

हालिया गतिविधि का विवरण

- **विस्फोट:** विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग – फिलीपीन ज्वालामुखी और भूकंप विज्ञान संस्थान (DOST-PHIVOLCS) ने 26 अक्टूबर, 2025 को तीन छोटे विस्फोट दर्ज किए — मुख्य क्रेटर से उत्पन्न एक फ्रीएटिक विस्फोट और दो फ्रीएटोमैग्मैटिक विस्फोट।
 - ✓ फ्रीएटिक विस्फोट में वाष्प निष्काशित होती है जो मैग्मा द्वारा भूजल के गर्म होने के कारण होती है।
 - ✓ फ्रीएटोमैग्मैटिक विस्फोटों में मैग्मा और जल के बीच परस्पर क्रिया शामिल होती है, जिससे विस्फोटक प्रतिक्रिया और राख का उत्सर्जन होता है।
- **चेतावनी की स्थिति:** चेतावनी स्तर 1 जारी कि गयी, जो निम्न-स्तर की अशांति और छोटे विस्फोटों, ज्वालामुखीय भूकंपों, मामूली राख गिरने और गैस उत्सर्जन की संभावना को दर्शाता है।

ज्वालामुखीय गतिविधि के प्रभाव

1. पर्यावरणीय प्रभाव

- ✓ **वायु की गुणवत्ता:** राख और गैस (जैसे, सल्फर डाइऑक्साइड) वायु की गुणवत्ता को खराब कर सकते हैं, जिससे श्वसन संबंधी समस्याएं और पर्यावरणीय क्षरण हो सकता है।
- ✓ **जल और मृदा:** राख का गिरना जल स्रोतों और कृषि उत्पादकता को प्रभावित कर सकता है।

2. सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

- ✓ **स्वास्थ्य:** ताल झील के आसपास के निवासियों को श्वसन संबंधी जलन, आँखों की समस्या और गंभीर मामलों में दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्रभावों का अनुभव हो सकता है।
- ✓ **विमानन:** राख के बादलों के खतरों के कारण उड़ान प्रतिबंध जारी किए गए हैं, जो दृश्यता और विमान के इंजनों को प्रभावित करते हैं।
- ✓ **पर्यटन और आजीविका:** बढ़ी हुई गतिविधि के दौरान झील के आसपास स्थानीय पर्यटन और मछली पकड़ने की गतिविधियाँ बाधित हो सकती हैं।

व्यापक भूगर्भिक महत्व

- ताल ज्वालामुखी की गतिविधि काल्डेरा प्रणालियों में जल और मैग्मा के बीच परस्पर क्रिया के जटिल तालमेल को दर्शाती है।
- फिलीपींस के ज्वालामुखी प्रशांत अग्नि वलय (पैसिफिक रिंग ऑफ फायर) के साथ स्थित हैं, जो निरंतर विवर्तनिक (टेक्टोनिक) और ज्वालामुखीय गतिविधि का क्षेत्र है, जिससे आपदा तैयारी और जोखिम न्यूनीकरण के लिए निगरानी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: प्रशांत अग्नि वलय (पैसिफिक रिंग ऑफ फायर) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह सक्रिय ज्वालामुखियों और बार-बार आने वाले भूकंपों वाला क्षेत्र है।
2. ताल ज्वालामुखी इसी क्षेत्र का हिस्सा है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: फिलीपींस के ताल ज्वालामुखी में 2025 में हुए विस्फोटों के विशिष्ट संदर्भ में, स्थानीय समुदायों और विमानन पर बार-बार होने वाली ज्वालामुखीय गतिविधि के बहु-क्षेत्रीय प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

दुर्लभ धारीदार लकड़बग्घा (स्ट्राइप्ड हायना)

चर्चा में क्यों: कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले के काली टाइगर रिजर्व में गणेशगुड़ी पुल के पास एक दुर्लभ धारीदार लकड़बग्घा (स्ट्राइप्ड हायना) देखा गया और कैमरे में रिकॉर्ड किया गया—यह पश्चिमी घाट के इस हिस्से

में इस प्रजाति का पहला प्रलेखित दर्शन है, जहाँ इसे पहले कभी दर्ज नहीं किया गया था।



धारीदार लकड़बग्घा (स्ट्राइप्ड हायना) के बारे में

- **वैज्ञानिक नाम:** हायना हायना
- **वितरण:** दक्षिण एशिया (भारत, नेपाल, अफगानिस्तान), उत्तर और उप-सहारा अफ्रीका, पश्चिमी और मध्य एशिया।
- **पर्यावास:** आमतौर पर शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों, झाड़ियों, पथरीली पहाड़ियों और खुले जंगलों में पाया जाता है।
- **आईयूसीएन स्थिति:** निकट संकटग्रस्त (नियर थ्रेटेंड) — पर्यावास हानि, मानव-वन्यजीव संघर्ष, विषाक्तता, सड़क दुर्घटनाओं और कम आनुवंशिक विविधता के कारण।
- **स्थानिक नाम:** कर्नाटक में, कभी-कभी इसे 'कट्टे किरबा' या 'गधे जैसे कान वाला सफाईकर्मी' कहा जाता है।

मुख्य विशेषताएँ

- **आकार:** लगभग 1–1.2 मीटर शरीर की लंबाई, लगभग 35–45 किलोग्राम।
- **स्वरूप :** हल्के रंग का शरीर जिस पर खड़ी काली धारियाँ, पीठ के साथ सीधे खड़े बाल और बड़े कान होते हैं।
- **व्यवहार:** रात्रिचर (नॉक्टर्नल) और मुख्य रूप से एक अकेला रहने वाला अपमार्जक (स्कैवेंजर), जो सड़े हुए मांस हड्डियों और जानवरों के अवशेषों को खाता है; कभी-कभी छोटे स्तनधारी और फल भी खाता है।
- **पारिस्थितिकी भूमिका:** शवों (कैरकसेस) को साफ करने और बीमारी के प्रसार को सीमित करने में मदद करता है; पारिस्थितिकी तंत्र में एक अपमार्जक (स्कैवेंजर) के रूप में कार्य करता है।

अवलोकन का महत्व

- **पश्चिमी घाट में पहली पुष्टि:** इससे पहले इस घने आर्द्र वन क्षेत्र में लकड़बग्घा (हायना) के नियमित रूप से पाए जाने का कोई रिकॉर्ड नहीं था; इनके दर्शन आमतौर पर उत्तर कर्नाटक के शुष्क वनों जैसे धारवाड़ और आसपास के जिलों में होते थे।

- **पारिस्थितिकी जुड़ाव:** लकड़बग्घा (हायना) की उपस्थिति वन्यजीव गलियारों के माध्यम से संभावित प्रवास या प्रसार, अथवा भोजन की कमी या जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली गतिविधियों का संकेत देती है।
- **जैव विविधता संकेतक:** यह पुष्टि करता है कि इस रिजर्व के विविध पर्यावासों का मिश्रण—जो आर्द्र पर्णपाती से लेकर सदाबहार तक फैला है—पहले की तुलना में अधिक व्यापक मांसाहारी प्रजातियों को कभी-कभी सहारा देने या आकर्षित करने में सक्षम है।
- **निगरानी और अनुसंधान:** वन अधिकारी गतिविधियों और उपस्थिति पर नज़र रखने के लिए कैमरा ट्रैप और गैर-आक्रामक निगरानी का उपयोग कर रहे हैं, जो भविष्य के संरक्षण और पारिस्थितिकी मूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण है।

काली टाइगर रिजर्व:

- यह कर्नाटक में अवस्थित है और इस रिजर्व में **दांडेली वन्यजीव अभयारण्य** और **अंशी राष्ट्रीय उद्यान** के हिस्से शामिल हैं।
- यह पश्चिमी घाट में एक प्रमुख संरक्षित क्षेत्र बनाता है — जो समृद्ध वनस्पति और जीवों के साथ एक वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट है।

संरक्षण स्थिति और खतरे

- **निकट संकटग्रस्त (नियर थ्रेटेंड - आईयूसीएन):** यह पर्यावास अतिक्रमण, प्रतिशोधी हत्याओं, अंधविश्वास से प्रेरित उत्पीड़न और खंडित वितरण के कारण घटती जनसंख्या को दर्शाता है।
- भारत में वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची III के तहत सूचीबद्ध है, जो कुछ कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है, फिर भी बेहतर प्रवर्तन की आवश्यकता है।
- अपमार्जक (स्कैवेंजर) के रूप में लकड़बग्घा (हायना) की भूमिका उन्हें पोषक तत्व चक्रण और पारिस्थितिकी तंत्र की स्वच्छता के लिए महत्वपूर्ण बनाती है, जो कम दर्शन के बावजूद उनके संरक्षण के महत्व को रेखांकित करती है।

पारिस्थितिकी महत्व

- **अपमार्जक (स्कैवेंजर्स):** ये शवों (कैरकसेस) और जैविक कचरे का उपभोग करते हैं, जिससे बीमारियों के प्रसार को रोकने में मदद मिलती है।
- **पर्यावास संकेतक:** इनकी उपस्थिति पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य, खंडित परिदृश्यों के बीच जुड़ाव और मांसाहारी जीवों के लिए शिकार की उपलब्धता का संकेत दे सकती है।
- **मांसाहारी जीव समूहों की गतिशीलता (कार्निवोर गिल्ड डायनेमिक्स):** स्तनधारी मांसाहारी संघों के हिस्से के रूप में, अन्य शिकारियों (बाघ, तेंदुए) के साथ उनकी अंतःक्रिया पोषण संतुलन (ट्रॉफिक बैलेंस) बनाए रखने में मदद करती है, भले ही यह मुख्य रूप से अपमार्जक गतिविधियों के माध्यम से हो।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: स्टूडेंट्स हायना के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

1. यह मुख्य रूप से एक अपमार्जक (स्कैवेंजर) है।
2. इसे आईयूसीएन रेड लिस्ट में संकटग्रस्त (एंडेंजर्ड) के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।
3. यह वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत कानूनी रूप से संरक्षित है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर : (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. वन पारिस्थितिकी तंत्र में हायना जैसे अपमार्जकों (स्कैवेंजर्स) के पारिस्थितिकी महत्व और उनके सामने आने वाले प्रमुख खतरों की चर्चा कीजिए।

- ✓ विश्व की सबसे प्राचीन ज्ञात मृदांड बनाने की परंपरा।
- ✓ रस्सी के निशान वाले डिजाइन (जोमोन का अर्थ है 'रस्सी का पैटर्न')।
- **महत्व:** यह इस धारणा को चुनौती देता है कि मृदांडों का विकास केवल कृषि के साथ ही हुआ था।

यह खोज क्यों महत्वपूर्ण है

1. पुरातात्विक महत्व

- ✓ इस प्रमाण को मजबूती मिलती है कि मृदांड बनाने की शुरुआत स्थाई खेती से पहले ही हो गई थी।
- ✓ यह निम्नलिखित विषयों में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है:
 - प्रारंभिक मानव शिल्प कौशल।
 - भोजन भंडारण और खाना पकाने की पद्धतियां।

2. तकनीकी महत्व

- ✓ यह खोज इनके उपयोग से की गई:
 - जलमग्न स्कैनिंग (अंडरवाटर स्कैनिंग)।
 - 3D मैपिंग (थ्री-डी मैपिंग)।
 - स्वायत्त जलमग्न वाहन (एयूवी)।
- ✓ यह समुद्री और जलमग्न पुरातत्व की बढ़ती भूमिका को दर्शाता है।

3. संरक्षण मूल्य

- ✓ कम ऑक्सीजन और मीठे पानी की स्थिर स्थितियों ने इस पुरावशेष को सुरक्षित रखने में मदद की।
- ✓ जल के नीचे पाए गए सुरक्षित प्रागैतिहासिक अवशेष का यह एक दुर्लभ उदाहरण है।

कुनमिंग जैव विविधता कोष (KBF)

चर्चा में क्यों: सात देशों — कुक द्वीपसमूह, मेडागास्कर, मेक्सिको, नेपाल, श्रीलंका, तुर्की और युगांडा — ने कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचा के तहत प्रकृति-अनुकूल कृषि पद्धतियों और जैव विविधता संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए कुनमिंग जैव विविधता कोष (केबीएफ) से 5.8 मिलियन डॉलर का वित्तपोषण प्राप्त किया है।

कुनमिंग जैव विविधता कोष (केबीएफ) क्या है?

- **स्थापना:** चीन के पारिस्थितिकी और पर्यावरण मंत्रालय द्वारा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) और अन्य भागीदारों के सहयोग से 2021 में प्रारंभ किया गया एक वैश्विक जैव विविधता वित्त तंत्र।
- **उद्देश्य:** विकासशील देशों को जैव विविधता संरक्षण कार्यों को लागू करने और राष्ट्रीय नीतियों में जैव विविधता प्राथमिकताओं को एकीकृत करने के लिए समर्थन देना, विशेष रूप से कृषि जैसे क्षेत्रों में।
- **संदर्भ:** यह कोष कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचा (केएमजीबीएफ) को लागू करने में देशों की मदद करने के प्रयासों का हिस्सा है — जो 2030 तक जैव विविधता के हानि को रोकने और उसे

बीवा झील (जापान)

चर्चा में क्यों: जापान में पुरातत्वविदों ने बीवा झील के तल से एक अच्छी तरह से संरक्षित प्राचीन मृदांड खोजा है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह 10,000 वर्ष से अधिक पुराना है, जो संभवतः विश्व में ज्ञात सबसे पुराने मृदांड के अवशेषों में से एक है।

बीवा झील के बारे में

- **अवस्थिति:** शिगा प्रांत, होन्शू द्वीप, जापान
- **महत्व:**
 - ✓ जापान की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील
 - ✓ विश्व की सबसे पुरानी झीलों में से एक (लगभग 40 लाख वर्ष)
 - ✓ जैव विविधता और पुरातात्विक अवशेषों से समृद्ध

खोज के बारे में

- **स्थल:** त्सुजुराओजाकी जलमग्न पुरातात्विक स्थल
- **कलाकृति:** लगभग सुरक्षित मृदांड
- **अनुमानित आयु:** लगभग 10,000–11,000 वर्ष
- **सांस्कृतिक चरण:** प्रारंभिक जोमोन काल

जोमोन संस्कृति (संक्षिप्त तथ्य)

- **समयावधि:** लगभग 14,500 ईसा पूर्व – 1,000 ईसा पूर्व।
- **समाज का प्रकार:** उन्नत शिकारी और संग्राहक।
- **मुख्य विशेषता:**

पलटने तथा 2050 तक दीर्घकालिक जैव विविधता लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए 2022 में 196 देशों द्वारा अपनाया गया एक व्यापक वैश्विक योजना है।

- **उद्देश्य:** हालिया वित्तपोषण (5.8 मिलियन) निम्नलिखित क्षेत्रों में सात लाभार्थी देशों में परियोजनाओं का समर्थन करेगा:

- 1) **कृषि-खाद्य प्रणालियों में जैव विविधता का मुख्यधाराकरण**
 - ✓ राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीतियों को कृषि नीतियों के साथ संरेखित करना।
 - ✓ जैव विविधता-अनुकूल खेती को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत क्षमता, वित्तीय प्रोत्साहन और ज्ञान साझाकरण को बढ़ाना। (केंद्रित देश: मेडागास्कर, युगांडा, मेक्सिको)
- 2) **सामुदायिक सशक्तिकरण**
 - ✓ पारिस्थितिकी तंत्र डेटा और वर्गीकरण प्रणालियों को मजबूत करना।
 - ✓ पारंपरिक ज्ञान पर आधारित संधारणीय कृषि पारिस्थितिकी को बढ़ावा देना, जिसमें महिलाओं और युवाओं की भागीदारी पर जोर दिया गया है। (केंद्रित देश: कुक आइलैंड्स)
- 3) **आक्रामक प्रजाति प्रबंधन**
 - ✓ स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र और आजीविका के लिए खतरा पैदा करने वाली हानिकारक आक्रामक प्रजातियों के प्रबंधन के लिए समुदाय-आधारित रणनीतियाँ। (केंद्रित देश: नेपाल, श्रीलंका)
- 4) **पारिस्थितिकी तंत्र लचीलापन को सुदृढ़ करना**
 - ✓ संवेदनशील परिदृश्य और आजीविका को बनाए रखने के लिए जल-कुशल कृषि और जैव विविधता-अनुकूल प्रथाओं को बढ़ावा देना। (केंद्रित देश: तुर्की, एग्रदिर झील - Lake Eğirdir के आसपास)

महत्व

1. **जैव विविधता वित्त पोषण अंतराल को पाटना**
 - ✓ वैश्विक जैव विविधता वित्त की वार्षिक आवश्यकता लगभग 700 बिलियन डॉलर अनुमानित है, लेकिन वर्तमान संसाधन बहुत कम हैं। कुनमिंग जैव विविधता कोष (केबीएफ) जैसे कोष देश के स्तर पर कार्यान्वयन के लिए वित्त जुटाने में मदद करते हैं।
2. **कृषि को संरक्षण के साथ जोड़ना**
 - ✓ कृषि जैव विविधता के हानि का एक कारक भी है और संधारणीय प्रथाओं को अपनाए जाने पर एक संभावित समाधान भी। कृषि-खाद्य प्रणालियों में जैव विविधता को मुख्यधारा में लाने से खाद्य सुरक्षा, आजीविका और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य के बीच संतुलन बनाने में मदद मिलती है।
3. **विकासशील देशों के लिए समर्थन**

- ✓ इस कोष से मिलने वाला अनुदान उन देशों को लक्षित करता है जिनके पास वित्तीय संसाधन सीमित हैं लेकिन जैव विविधता मूल्य उच्च है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करने और अंतरराष्ट्रीय लक्ष्यों को पूरा करने की उनकी क्षमता मजबूत होती है।

चुनौतियाँ और सीमाएं

- कुनमिंग जैव विविधता कोष (केबीएफ) जैसे नए वित्तपोषण तंत्रों के बावजूद, वैश्विक जैव विविधता वित्त अंतराल बना हुआ है।
- कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क (केएमजीबीएफ) के लक्ष्यों को पूरी तरह से प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की निधियों के व्यापक जुटाव की अभी भी आवश्यकता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1. कुनमिंग जैव-विविधता कोष (KBF) मुख्यतः किस उद्देश्य से स्थापित किया गया था?

- (a) पेरिस समझौते के अंतर्गत जलवायु शमन परियोजनाओं को वित्तपोषित करना
- (b) जैव-विविधता संरक्षण का समर्थन करना तथा कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव-विविधता रूपरेखा के कार्यान्वयन को बढ़ावा देना
- (c) महासागर अन्वेषण परियोजनाओं को वित्त प्रदान करना
- (d) अंतरिक्ष-आधारित जैव-विविधता निगरानी को प्रोत्साहित करना

उत्तर: (b)

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन-सा कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव-विविधता रूपरेखा के अंतर्गत एक प्रमुख लक्ष्य है?

- (a) 2030 तक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 50% की कमी
- (b) 2030 तक जैव-विविधता वित्त के लिए प्रति वर्ष 200 अरब अमेरिकी डॉलर जुटाना
- (c) 2050 तक 100% नवीकरणीय ऊर्जा प्राप्त करना
- (d) 2030 तक सभी कीटनाशकों पर प्रतिबंध लगाना

उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. अंतरराष्ट्रीय जैव-विविधता वित्तीय तंत्रों, जैसे कुनमिंग जैव-विविधता कोष, की भूमिका पर चर्चा कीजिए, जो कृषि प्रणालियों में जैव-विविधता संबंधी विचारों के मुख्यधारा में समावेशन में सहायक हैं। वैश्विक संरक्षण के लिए पर्याप्त धन जुटाने में कौन-सी चुनौतियाँ बनी हुई हैं?

भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा क्रांति को नया रूप दिया

चर्चा में क्यों: भारत का नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र तेजी से क्षमता बढ़ाने के चरण से निकलकर अब एक मजबूत, लचीले और प्रणाली-एकीकृत ढांचे के निर्माण की ओर बढ़ रहा है। यह 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म क्षमता हासिल करने और विकसित भारत के दृष्टिकोण जैसे दीर्घकालिक

लक्ष्यों का समर्थन करता है। अब सारा ध्यान केवल मेगावाट की संख्या के बजाय प्रणाली की मजबूती — ग्रिड एकीकरण, ऊर्जा भंडारण, बाजार सुधार और बुनियादी ढांचे के विस्तार पर है।

पृष्ठभूमि: भारत की नवीकरणीय ऊर्जा यात्रा

- भारत ने पिछले दशक में अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को पांच गुना से अधिक बढ़ा दिया है, जो 2014 में ~35 गीगावाट (GW) से कम थी और अब ~197 गीगावाट (बड़ी जलविद्युत परियोजनाओं को छोड़कर) से अधिक हो गई है।
- 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ऊर्जा का लक्ष्य पेरिस समझौते के तहत भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं और 2070 तक नेट-जीरो लक्ष्य का हिस्सा है।
- नवीकरणीय ऊर्जा में सौर, पवन, जैव ऊर्जा, लघु जलविद्युत शामिल हैं, और अब इसमें ऊर्जा भंडारण तथा हाइब्रिड परियोजनाओं का पूरक सहयोग तेजी से बढ़ रहा है।

मुख्य घटक

- **ग्रिड एकीकरण और परीक्षण**
 - ✓ परीक्षण में निवेश (जैसे कि हरित ऊर्जा गलियारा, नवीकरणीय ऊर्जा से समृद्ध राज्यों को मांग केंद्रों से जोड़ने वाली उच्च-क्षमता वाली लाइनें)।
 - ✓ ग्रिड की तैयारी को प्राथमिकता देने के लिए केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग (सीईआरसी) के सामान्य नेटवर्क एक्सेस (जीएनए) नियमावली, 2025 जैसे सुधार।
- **ऊर्जा भंडारण और संकरण**
 - ✓ ग्रिड और परियोजना स्तर पर बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (बीईएसएस) की तैनाती सुनिश्चित करती है कि हरित शक्ति स्थिर और वितरण योग्य हो।
 - ✓ हाइब्रिड नवीकरणीय ऊर्जा और भंडारण निविदाएं बाजार के विश्वसनीयता की ओर झुकाव को दर्शाती हैं।
- **बाजार और अनुबंध सुधार**
 - ✓ आभासी विद्युत क्रय समझौते (वीपीपीए), हरित गुण व्यापार, सहायक बाजार और विद्युत बाजार सुधारों का उपयोग।
- **घरेलू मूल्य श्रृंखला, विनिर्माण और नीतिगत सहायता**
 - ✓ स्थानीय विनिर्माण को मजबूत करने और आयात निर्भरता कम करने के लिए उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना, घरेलू सामग्री आवश्यकताएं और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) पुनर्गणना जैसे राजकोषीय समायोजन।
- **विकास के बहुआयामी मार्ग**
 - ✓ केंद्रीय नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी की बोलियों के अलावा, राज्य एजेंसियां और वाणिज्यिक/औद्योगिक उपभोक्ता भी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता बढ़ा रहे हैं।

चुनौतियां और वर्तमान वास्तविकताएं

- **ग्रिड और संस्थागत अंतराल:** नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता की वृद्धि ग्रिड की तैयारी और संविदात्मक ढांचे से कहीं अधिक तेज रही है, जो तेजी से बदलते ऊर्जा संक्रमण की एक सामान्य चुनौती है।
- **वैश्विक बाधाएं:** आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, मॉड्यूल की कीमतों में अस्थिरता और कड़ा वित्तपोषण परियोजनाओं के प्रारंभ होने की समयसीमा को धीमा कर सकता है।
- **संक्रमण काल:** क्षमता वृद्धि की वर्तमान गति में हालिया कमी को एक पुनर्गणना (रिकैलिब्रेशन) के रूप में देखा जा रहा है — जो संधारणीय बुनियादी ढांचे और बाजार प्रणालियों के निर्माण के लिए आवश्यक है।

विकसित भारत दृष्टिकोण के साथ जुड़ाव

- विकसित भारत का लक्ष्य 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनना है, जो आर्थिक मजबूती, बुनियादी ढांचे के लचीलेपन और सतत विकास पर जोर देता है।
- ग्रिड की मजबूती, ऊर्जा भंडारण और विनिर्माण गहराई के साथ एक स्वच्छ ऊर्जा पारिस्थितिकी तंत्र इस दृष्टिकोण के साथ निम्नलिखित रूप में संरेखित है:
 - ✓ ऊर्जा सुरक्षा और रोजगार को बढ़ावा देना।
 - ✓ घरेलू और विदेशी निवेश को आकर्षित करना।
 - ✓ तकनीकी क्षमताओं को बढ़ाना (जैसे कि हरित हाइड्रोजन, पंप हाइड्रो, अपतटीय पवन)।

व्यापक ऊर्जा और जलवायु लक्ष्यों के साथ तालमेल

- भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं का समर्थन करता है:
 - ✓ 2070 तक नेट-जीरो।
 - ✓ 2030 तक 500 गीगावाट (GW) गैर-जीवाश्म क्षमता।
 - ✓ कार्बन तीव्रता और प्रदूषण में कमी।
- विकेंद्रीकृत सौर और ग्रामीण पहलों (जैसे कि प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना) के माध्यम से ऊर्जा न्याय और पहुंच को बढ़ावा देना।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: निम्नलिखित में से कौन सा भारत के नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण के वर्तमान चरण का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

- केवल क्षमता जोड़ने पर ध्यान देना।
- परिवहन बुनियादी ढांचे का निर्माण करना।
- प्रणाली एकीकरण और विश्वसनीयता की ओर संक्रमण।
- नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों को कम करना।

उत्तर: (c)

प्रश्न 2: नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में आभासी विद्युत क्रय समझौते (वीपीपीए) का मुख्य रूप से उपयोग किया जाता है:

- उद्योगों को सीधे जीवाश्म ईंधन बिजली की आपूर्ति करने के लिए
- भौतिक वितरण के बिना नवीकरणीय ऊर्जा का अनुबंध करने हेतु

- (c) कोयला बिजली उत्पादन बढ़ाने के लिए
- (d) केवल अंतरराज्यीय पारेषण का वित्तपोषण करने के लिए

उत्तर : (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. विश्लेषण कीजिए कि ग्रिड एकीकरण और ऊर्जा भंडारण सहित नवीकरणीय ऊर्जा नीति में सुधार, भारत को 2030 तक अपनी जलवायु प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में किस प्रकार मदद कर सकते हैं।

ब्राजील-नेतृत्व वाले TFFF पहल में भारत शामिल

चर्चा में क्यों: हाल ही में, बेलेम, ब्राजील में COP-30 (जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र का 30वां सम्मेलन) में, भारत पर्यवेक्षक के रूप में ब्राजील के नेतृत्व वाले **ट्रॉपिकल फॉरेस्ट्स फॉरएवर फैसिलिटी (TFFF)** में सम्मिलित हुआ और पेरिस समझौते के एक दशक बाद उच्च वैश्विक जलवायु महत्वाकांक्षा का आह्वान किया। भारत ने विकसित राष्ट्रों से उत्सर्जन में कटौती बढ़ाने और पर्याप्त जलवायु वित्त प्रदान करने का भी आग्रह किया।

पृष्ठभूमि: COP30 और पेरिस समझौता

- **COP30:** जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र रूपरेखा सम्मेलन (यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज) के अंतर्गत एक वैश्विक जलवायु शिखर सम्मेलन, जो 10-21 नवंबर, 2025 को बेलेम, ब्राजील में आयोजित हुआ।
- यह पेरिस समझौते (2015) के 10 वर्ष पूर्ण होने का प्रतीक है, जिसका लक्ष्य वैश्विक तापन को 2°C से काफी नीचे सीमित करना और पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 1.5°C ऊपर तक रखने के प्रयास करना है।
- देश राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (नेशनली डिटरमाइंड कॉन्ट्रिब्यूशंस) जमा करते हैं — जो शमन और अनुकूलन लक्ष्यों को रेखांकित करने वाली जलवायु कार्य योजनाएं हैं।

ट्रॉपिकल फॉरेस्ट्स फॉरएवर फैसिलिटी क्या है?

- **ब्राजील द्वारा पहल:** उष्णकटिबंधीय वन संरक्षण के समर्थन हेतु एक वैश्विक मिश्रित-वित्त तंत्र।
- **लक्ष्य:** सार्वजनिक, निजी और संप्रभु निवेशों के माध्यम से लगभग 125 बिलियन अमेरिकी डॉलर जुटाना।
- **कार्यप्रणाली:** निवेश से प्राप्त प्रतिफल का उपयोग उन उष्णकटिबंधीय वन देशों को पुरस्कृत करने हेतु किया जाता है जो वन आवरण को संरक्षित या विस्तारित करते हैं।
- **पर्यवेक्षक भूमिका:** भारत टीएफएफएफ में एक पर्यवेक्षक के रूप में सम्मिलित हुआ है — जो इस चरण में पूर्ण प्रतिबद्धता के बिना संवाद और सहयोग को सक्षम बनाता है।

उष्णकटिबंधीय वन संरक्षण का महत्व क्यों है?

- **जलवायु नियमन**

- ✓ उष्णकटिबंधीय वन महत्वपूर्ण कार्बन सिंक (कार्बन अवशोषक) हैं, जो कार्बन डाई ऑक्साइड CO₂ को अवशोषित करते हैं और जलवायु परिवर्तन को कम करते हैं।
- ✓ इनका संरक्षण संचित कार्बन के उत्सर्जन को रोकता है और वैश्विक जलवायु लक्ष्यों का समर्थन करता है।

• जैव विविधता हॉटस्पॉट:

- ✓ उच्च जैव विविधता — अनगिनत प्रजातियों और पारिस्थितिक तंत्रों का घर जो वनोन्मूलन और क्षरण के प्रति संवेदनशील हैं।

• पारिस्थितिक तंत्र सेवाएँ

- ✓ जल चक्र, मृदा उर्वरता, स्वदेशी आजीविका और जलवायु लचीलेपन का समर्थन करते हैं।

COP30 में भारत की स्थिति

• बहुपक्षीय जलवायु कार्रवाई का समर्थन

- ✓ भारत ने बहुपक्षीयवाद, पेरिस समझौते, और समानता के सिद्धांत तथा साझा परंतु विभेदित उत्तरदायित्व और संबंधित क्षमताएं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

• मजबूत महत्वाकांक्षा का आह्वान

- ✓ भारत ने कहा कि पेरिस के 10 वर्ष पश्चात भी वैश्विक जलवायु महत्वाकांक्षा अपर्याप्त बनी हुई है।
- ✓ इस बात पर बल दिया गया कि कई राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (नेशनली डिटरमाइंड कॉन्ट्रिब्यूशंस) तापमान वृद्धि को 1.5°C तक सीमित रखने के लिए आवश्यक जलवायु लक्ष्यों से कम हैं।

• विकसित देशों की भूमिका:

- ✓ वर्तमान में किए गए वादों की तुलना में उत्सर्जन में कटौती को और अधिक तीव्र करना।
- ✓ विकासशील देशों को पर्याप्त, पूर्वानुमेय और रियायती जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण और क्षमता निर्माण प्रदान करना।

• भारत की जलवायु उपलब्धियाँ: भारत ने रेखांकित किया:

- ✓ सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की उत्सर्जन तीव्रता में लगभग 36% (2005-2020) की कमी।
- ✓ गैर-जीवाश्म स्रोतों से 50% से अधिक स्थापित विद्युत क्षमता, जिससे अपने संशोधित राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान को समय से पूर्व प्राप्त कर लिया गया।
- ✓ वन और वृक्ष आवरण बढ़कर लगभग 25.17% हो गया है, जिससे महत्वपूर्ण कार्बन अवशोषक क्षमता जुड़ी है।

भारत के लिए महत्व

• दक्षिण-दक्षिण सहयोग को सुदृढ़ करना

- ✓ ट्रॉपिकल फॉरेस्ट फॉरएवर फैसिलिटी () में भारत की पर्यवेक्षक भूमिका दक्षिण-दक्षिण जलवायु सहयोग के अनुरूप है, विशेष रूप से ब्राजील और अन्य उष्णकटिबंधीय वन देशों के साथ।

- **जलवायु कूटनीति को बढ़ावा देना**

- ✓ यह वैश्विक जलवायु वित्त संरचना में भारत की भागीदारी और प्रकृति-आधारित समाधानों के समर्थन का संकेत देता है।

- **विश्वसनीयता में वृद्धि**

- ✓ यह अंतरराष्ट्रीय रूपरेखाओं में जलवायु स्थिरता और समानता के प्रति प्रतिबद्ध एक जिम्मेदार वैश्विक अभिनेता के रूप में भारत की छवि को सुदृढ़ करता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: ट्राॅपिकल फॉरेस्ट्स फॉरएवर फैसिलिटी (TFFF) का लक्ष्य क्या है?

- विकसित अर्थव्यवस्थाओं में जीवाश्म ईंधन चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने के लिए वित्त पोषण करना।
- उष्णकटिबंधीय वनों के संरक्षण और विस्तार के लिए देशों को पुरस्कृत करना।
- केवल शहरी वायु प्रदूषण नियंत्रण का वित्तपोषण करना।
- वैश्विक स्तर पर परमाणु ऊर्जा संक्रमण का समर्थन करना।

उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: "प्रकृति-आधारित समाधान जैसे कि वैश्विक वन निधि प्रभावी जलवायु कार्रवाई के लिए आवश्यक हैं।" COP30 में प्रारंभ की गई ट्राॅपिकल फॉरेस्ट्स फॉरएवर फैसिलिटी (टीएफएफएफ) के संदर्भ में इस कथन का परीक्षण कीजिए।

आइबेरियन लाईनक्स

चर्चा में क्यों: एक दुर्लभ सफेद आइबेरियन लाईनक्स (Iberian lynx) — जिसे जंगल में दर्ज अपनी तरह का पहला ल्यूसिस्टिक जीव माना जाता है — दक्षिण स्पेन के जाएन के पहाड़ों में कैमरे में कैद किया गया है। यह दर्शन वन्यजीव संरक्षण की सफलता और जैव विविधता अध्ययनों में आनुवंशिक विसंगतियों (जेनेटिक एनोमलीज) के महत्व दोनों को रेखांकित करता है।



आइबेरियन लाईनक्स (IBERIAN LYNX) के बारे में

- **वैज्ञानिक नाम:** लिंक्स पार्डिनस
- **वितरण:** आइबेरियन प्रायद्वीप का मूल निवासी (मुख्य रूप से स्पेन और पुर्तगाल)।
- **पर्यावास:** भूमध्यसागरीय झाड़ियाँ और घने आवरण वाले वन जहाँ पर्याप्त शिकार (यूरोपीय खरगोश) उपलब्ध हो।
- **शारीरिक लक्षण:** मध्यम आकार की जंगली बिल्ली जिसके शरीर पर धब्बेदार खाल, गुच्छेदार कान, छोटी पूंछ और चेहरे के चारों ओर रफ (बालों का घेरा) होता है।
- **संरक्षण स्थिति**
 - ✓ 2000 के दशक के प्रारंभ में 100 से भी कम आबादी के साथ इसे एक बार **गंभीर रूप से संकटग्रस्त (क्रिटिकली एंडेंजर्ड)** के रूप में वर्गीकृत किया गया था।
 - ✓ 2000 के दशक से निरंतर संरक्षण के माध्यम से, जनसंख्या बढ़कर ~2,000 से अधिक हो गई है, और अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आइयूसीएन) अब इसे संवेदनशील (वल्नरेबल) के रूप में सूचीबद्ध करता है।
- **महत्व:** विश्व की सबसे संकटग्रस्त बिल्ली प्रजातियों में से एक, आइबेरियन लाईनक्स एक शीर्ष शिकारी के रूप में महत्वपूर्ण पारिस्थितिक भूमिका निभाता है, जो शिकार की जनसंख्या को नियंत्रित करता है।

ल्यूसिज्म (LEUCISM) क्या है?

- **ल्यूसिज्म:** वर्णक-उत्पादक कोशिकाओं के कम विकास के कारण रंजकता की आंशिक हानि।
- **एल्बिनिज्म बनाम ल्यूसिज्म:**
 - ✓ **एल्बिनिज्म** — मेलेनिन की पूर्ण अनुपस्थिति; त्वचा, बाल और आँखों (गुलाबी/लाल आँखें) को प्रभावित करता है।
 - ✓ **ल्यूसिज्म** — आंशिक हानि; आँखों का सामान्य रंग बना रहता है।
- **पारिस्थितिक निहितार्थ:** यद्यपि यह देखने में आकर्षक है, किंतु हल्का आवरण छलावरण (कैमफ्लेज) को कम कर सकता है, जो संभावित रूप से शिकार और शिकारियों से बचाव को प्रभावित कर सकता है।

संरक्षण संदर्भ

- **ऐतिहासिक गिरावट**
 - ✓ 20वीं शताब्दी के दबाव:
 - पर्यावास हानि, अवैध शिकार, शिकार [यूरोपीय खरगोश (यूरोपियन रैबिट)] में कमी और कानूनी उत्पीड़न ने जनसंख्या को अत्यधिक कम कर दिया।
 - ✓ 2000 के दशक के प्रारंभ तक, 100 से भी कम शेष थे।
- **पुनर्प्राप्ति (रिकवरी) प्रयास**

दिल्ली-स्थानीय स्थलाकृति द्वारा वायु प्रदूषण में योगदान

- 2000 के दशक के मध्य से बंदी प्रजनन कार्यक्रम (कैप्टिव ब्रीडिंग प्रोग्राम्स) और नियोजित पुनर्प्राप्ति।
- पर्यावास संरक्षण और बहाली, साथ ही शिकार पुनरुद्धार के उपाय।
- यूरोपीय संघ लाइफ प्रोजेक्ट्स (ईयू लाइफ प्रोजेक्ट्स), राष्ट्रीय सरकारों और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा समर्थित।
- जनसंख्या अब >2,000 है, जिसके परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर) ने इसे सुभेद्य (वल्नरेबल) की श्रेणी में नीचे सूचीबद्ध कर दिया है।

वाइट लाईनक्स का महत्व

- पुनर्प्राप्ति की ओर अग्रसर जनसंख्या के भीतर आनुवंशिक विविधता का प्रतिनिधित्व करता है।
- संरक्षण की सफलता के प्रतीक के रूप में कार्य करता है, यह दर्शाता है कि गहन संरक्षण न केवल जनसंख्या बढ़ा सकता है बल्कि दुर्लभ आनुवंशिक लक्षणों को भी बनाए रख सकता है।
- **पारिस्थितिक महत्व**
 - ✓ **पोषण संबंधी भूमिका:** एक शीर्ष शिकारी के रूप में, शाकाहारियों और छोटे मांसाहारियों की जनसंख्या को विनियमित करने में सहायता करता है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बना रहता है।
 - ✓ **पर्यावास संकेतक:** स्वस्थ लाईनक्स जनसंख्या पर्याप्त शिकार और न्यूनतम मानवीय हस्तक्षेप वाले सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र का संकेत देती है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1. पशुओं में ल्यूसीज्म (Leucism) की विशेषता क्या है?

- (a) मेलानिन का पूर्ण अभाव तथा लाल पुतलियाँ
- (b) आँखों के रंग सामान्य स्थिति में आंशिक वर्णक हास
- (c) ऋतु के अनुसार शरीर के आवरण के रंग में परिवर्तन
- (d) पालतू प्रजातियों के लिए विशिष्ट वर्णक प्रतिरूप

उत्तर: (b)

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प आइबेरियन लाईनक्स की संरक्षण स्थिति में परिवर्तन का सर्वश्रेष्ठ वर्णन करता है?

- (a) न्यूनतम चिंताजनक से संकटग्रस्त तक
- (b) गंभीर रूप से संकटग्रस्त से संवेदनशील तक
- (c) संवेदनशील से वन्य क्षेत्र में विलुप्ति तक
- (d) विलुप्त से संकटग्रस्त तक

उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. "जंगली जनसंख्या में दुर्लभ आनुवंशिक प्रकारों का दिखना आनुवंशिक स्वास्थ्य का संकेतक और संरक्षण प्रबंधन के लिए एक चुनौती दोनों हो सकता है।" हाल के वन्यजीव दृश्यों के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

चर्चा में क्यों: भारत के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, विशेष रूप से दिल्ली, में निम्नगामी वायु गुणवत्ता का कारण मात्र वाहनों, उद्योगों तथा पराली दहन से होने वाला उत्सर्जन ही नहीं है, अपितु स्थानीय स्थलाकृति भी इस समस्या को संवर्धित करती है, जो प्रदूषकों को अवरुद्ध कर मौसमी स्मॉग की स्थितियों को अधिक गंभीर बना देती है।

वायु प्रदूषण का अवलोकन

- वर्ष 2024 की विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट के अनुसार, वार्षिक औसत PM2.5 सांद्रता के संदर्भ में भारत वैश्विक स्तर पर 5वां सबसे प्रदूषित देश रहा, जिसमें नई दिल्ली विश्व की सबसे प्रदूषित राजधानी रही।
- वायु प्रदूषण प्रकृति में सीमापारीय है, जो क्षेत्रों और सीमाओं के पार संचरित होता है, जो समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता को प्रदर्शित करता है।

स्थानीय स्थलाकृति क्या है?

- स्थलाकृति (टोपोग्राफी) किसी क्षेत्र की सतह की भौतिक विशेषताओं — जैसे कि पर्वत, पहाड़ियाँ, मैदान और पठार — को संदर्भित करती है जो पवन प्रतिरूप, वायुमंडलीय संचलन और प्रदूषक प्रकीर्णन को प्रभावित करती हैं।
- स्थानीय स्थलाकृतिक विशेषताएं प्राकृतिक बाधाएं या बेसिन निर्मित कर सकती हैं जो वायु द्रव्यमान और प्रदूषकों के संचलन को प्रभावित करती हैं।

स्थलाकृति वायु गुणवत्ता को कैसे प्रभावित करती है?

1. दिल्ली का कटोरेनुमा आकार

- दिल्ली भारत-गंगा के मैदानों (IGP) में एक कटोरे जैसी गहराई में स्थित है, जो घिरा हुआ है:
 - ✓ उत्तर में हिमालय से,
 - ✓ दक्षिण-पश्चिम में अरावली पहाड़ियों से,
 - ✓ दक्षिण में मालवा और दक्कन के पठारों से।

- यह संरचना प्रदूषित वायु की पार्श्व गति को रोकती है, जिससे उसका प्रसार कठिन हो जाता है।

2. अवरोधक प्रभाव:

- हिमालय एक अवरोध के रूप में कार्य करते हैं, जो प्रदूषित वायु को उत्तर दिशा की ओर निकलने से रोकते हैं और उसे विलुप्त होने के बजाय मैदानों के माध्यम से पूर्व दिशा की ओर प्रवाहित होने के लिए बाध्य करते हैं।

3. तापमान व्युत्क्रमण

- शीतकालीन तापमान व्युत्क्रमण तब होता है जब गर्म वायु की एक परत सतह के निकट ठंडी वायु को ढक लेती है।
- यह प्रदूषकों के ऊर्ध्वाधर प्रसार को रोकता है, उन्हें पृथ्वी के निकट अवरुद्ध कर देता है और स्मॉग के निर्माण का कारण बनता है।

4. कम मिश्रित ऊँचाई

- मानसून के बाद की स्थिति कम तापमान और हल्की वायु लाती है, जिससे मिश्रित ऊँचाई (वह ऊँचाई जहाँ तक प्रदूषक फैल सकते हैं) कम हो जाती है।
- इसके परिणामस्वरूप प्रदूषक सतह के निकट ही रहते हैं।

5. टर्बिडिटी आइलैंड प्रभाव (आविलेयता द्वीप प्रभाव)

- प्रदूषकों के साथ मिलकर कोहरा स्मॉग और धुंध पैदा करता है, जिससे दृश्यता और कम हो जाती है और मौसमी चरम के दौरान वायु गुणवत्ता की स्थिति जटिल हो जाती है।

क्षेत्रीय और मौसमी आयाम

- उत्तर-पश्चिमी दिशा से आने वाली शीतकालीन हवाएँ पंजाब और पड़ोसी राज्यों में कृषि अपशिष्ट (पराली) जलाने से उत्पन्न प्रदूषकों को लेकर आती हैं, जिससे दिल्ली का प्रदूषण भार और अधिक तीव्र हो जाता है।
- सर्दियों में तेज़ हवाओं और बारिश की कमी वातावरण की प्राकृतिक सफाई की प्रक्रिया को रोक देती है।

स्वास्थ्य और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

- वायु प्रदूषण अब वैश्विक स्तर पर मृत्यु हेतु उत्तरदायी द्वितीय प्रमुख जोखिम कारक है, जिसमें PM2.5 अनावरण श्वसन, हृदय, प्रतिरक्षा, तंत्रिका-विकासात्मक एवं अन्य दीर्घकालिक अवस्थाओं से संबद्ध है।
- शरीर के भार के अनुपात में उच्च श्वसन दर होने के कारण बच्चे विशेष रूप से सुभेद्य हैं।
- स्वास्थ्य परिचर्या व्यय तथा उत्पादकता की हानि राष्ट्रों पर महत्वपूर्ण आर्थिक भार अधिरोपित करती है।

सरकारी नीतियां और उपाय

- राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP):** जनवरी 2019 में प्रारंभ किया गया, जिसका उद्देश्य निगरानी और क्षेत्र-वार उत्सर्जन में कटौती की कार्रवाइयों के माध्यम से 131 शहरों में वायु गुणवत्ता में सुधार करना है।
- ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान (GRAP):** प्रदूषण की घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) के विभिन्न स्तरों द्वारा सक्रिय की जाने वाली कार्रवाइयों का एक श्रेणीबद्ध सेट।
- वाहन स्कैपेज और उत्सर्जन नियंत्रण:** पुराने, उच्च-उत्सर्जन वाले वाहनों को चरणबद्ध तरीके से हटाने और प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के प्रवेश को प्रतिबंधित करने की नीतियां।
- तकनीकी हस्तक्षेप (सीमाओं के साथ):** एंटी-स्मॉग गन, स्मॉग टावर, क्लाउड सीडिंग — प्रयास किए गए लेकिन प्रभावशीलता सीमित रही।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न 1: निम्नलिखित में से कौन सी मौसम संबंधी परिघटना प्रदूषकों को सतह के करीब फँसा लेती है, जिससे सर्दियों में वायु प्रदूषण और अधिक खराब हो जाता है?

- चक्रवाती परिसंचरण
- तापमान व्युत्क्रमण
- अल नीनो
- नार्वेस्टर

उत्तर: (b)

प्रश्न 2: दिल्ली गंभीर वायु प्रदूषण का अनुभव आंशिक रूप से इसलिए करती है क्योंकि यह निम्नलिखित में से किनके द्वारा घिरे एक स्थलाकृतिक पात्र (बाउल) में स्थित है?

- हिमालय
- अरावली पहाड़ियाँ
- पश्चिमी घाट

निम्नलिखित में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

- केवल 1 और 2
- केवल 1 और 3
- केवल 2 और 3
- 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. यह स्पष्ट कीजिए कि स्थानीय स्थलाकृति और मौसम संबंधी परिस्थितियाँ उत्तरी भारत, विशेषकर दिल्ली में, वायु प्रदूषण को किस प्रकार बढ़ाती हैं। इन भौगोलिक-संबंधित चुनौतियों के समाधान में वर्तमान नीतिगत उपायों की पर्याप्तता का मूल्यांकन कीजिए।

डब्ल्यूएमओ की 'अर्ली वार्निंग्स फॉर ऑल' रिपोर्ट

चर्चा में क्यों: विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने 'अर्ली वार्निंग्स फॉर ऑल इन फोकस: हैजर्ड मॉनिटरिंग एंड फोरकास्टिंग' (सभी के लिए प्रारंभिक चेतावनी: खतरा निगरानी और पूर्वानुमान) नामक एक नई रिपोर्ट प्रकाशित की है। यह रिपोर्ट बहु-खतरा प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को मजबूत करने में वैश्विक प्रगति का आकलन करती है — जो चरम मौसम, जलवायु और जल संबंधी खतरों से जीवन और संपत्ति की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण उपकरण हैं। इस पहल का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि 2027 तक पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति जीवन रक्षक प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों के दायरे में हो।

पृष्ठभूमि: सभी के लिए प्रारंभिक चेतावनी (EW4ALL)

- पहल का शुभारंभ:** 2022 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव द्वारा; यह विश्व मौसम विज्ञान संगठन, संयुक्त राष्ट्र आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यालय (यूएनडीआरआर), अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू) और

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रेड क्रॉस एंड रेड क्रिसेंट सोसाइटीज (आईएफआरसी) द्वारा सह-नेतृत्व में है।

- **लक्ष्य: 2027** तक बहु-खतरा प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों (एमएचईडब्ल्यूएस) का सार्वभौमिक कवरेज, ताकि कोई भी देश या समुदाय पीछे न छूटे।
- **आवश्यकता:** जलवायु परिवर्तन मौसम की चरम स्थितियों—चक्रवात, बाढ़, लू (हीटवेव्स), सूखा आदि—को तीव्र करता है, जिससे आपदा का जोखिम बढ़ जाता है। प्रारंभिक चेतावनी जीवन बचाती है और आर्थिक हानि को महत्वपूर्ण रूप से कम करती है।
- **महत्व:** प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियाँ विलासिता नहीं हैं—वे आपदा जोखिम न्यूनीकरण का एक लागत प्रभावी उपकरण हैं जो जीवन और संपत्ति के हानि को कम करके निवेश पर 10 गुना तक प्रतिफल (रिटर्न ऑन इन्वेस्टमेंट) प्रदान कर सकती हैं।

डब्ल्यूएमओ रिपोर्ट का मुख्य फोकस

डब्ल्यूएमओ (World Meteorological Organization - WMO) की रिपोर्ट 'अर्ली वार्निंग्स फॉर ऑल इन फोकस: हैजर्ड मॉनिटरिंग एंड फोरकास्टिंग' विशेष रूप से EW4All पहल के द्वितीय स्तंभ के तहत प्रगति का परीक्षण करती है — जो खतरा निगरानी, अवलोकन नेटवर्क और पूर्वानुमान प्रणालियों से संबंधित है। इसके अंतर्गत कवर किए गए प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं -

- **अवलोकन को सुदृढ़ करना**
 - ✓ ग्लोबल बेसिक ऑब्जर्विंग नेटवर्क (जीबीओएन) का विस्तार, राष्ट्रीय केंद्रों का स्वचालन और डेटा अंतराल को कम करना— विशेष रूप से अल्पविकसित देशों और छोटे द्वीप विकासशील राज्यों में।
- **डेटा साझाकरण और विनिमय**
 - ✓ विज 2.0 (डब्ल्यूआईएस 2.0) का शुभारंभ, जो एक खुला और क्लाउड-आधारित डेटा विनिमय मंच है। यह विश्व भर में पूर्वानुमानों (फोरकास्ट) का समर्थन करने के लिए वास्तविक समय में वैश्विक डेटा प्रवाह को सक्षम बनाता है।
- **पूर्वानुमान क्षमताएं**
 - ✓ डब्ल्यूएमओ एकीकृत प्रसंस्करण और भविष्यवाणी प्रणाली (डब्ल्यूआईपीपीएस) और उन्नत मॉडलिंग (कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरणों सहित) का उपयोग करना। इसका उद्देश्य उष्णकटिबंधीय चक्रवात, बाढ़, सूखा, लू और धूल भरी आंधी जैसे खतरों का पूर्वानुमान लगाना है।
- **प्रभाव-आधारित प्रारंभिक चेतावनी**
 - ✓ कॉमन अलर्टिंग प्रोटोकॉल (सीएपी) और क्लाइमवेब (ClimWeb) जैसे डिजिटल मंचों को अपनाना। साथ ही, डब्ल्यूएमओ समन्वय तंत्र का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए करना कि कार्रवाई योग्य चेतावनियाँ समुदायों और मानवीय कार्यकर्ताओं तक पहुँचें।

• अनुकूल वातावरण

- ✓ दीर्घकालिक प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली संचालन का समर्थन करने के लिए शासन, कानून, सतत वित्तपोषण और संस्थागत ढांचे का महत्व।

प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों का महत्व

• आपदा जोखिम न्यूनीकरण

- ✓ प्रारंभिक चेतावनियाँ समुदायों को तैयारी करने, सुरक्षित स्थानों पर जाने और बुनियादी ढांचे की रक्षा करने के लिए समय प्रदान करती हैं, जिससे आपदा से होने वाली मृत्यु दर और आर्थिक हानि कम होता है।

• जलवायु परिवर्तन अनुकूलन

- ✓ जलवायु परिवर्तन के कारण बार-बार आने वाली और तीव्र चरम मौसम की घटनाओं के साथ, मजबूत पूर्वानुमान और प्रारंभिक चेतावनियाँ जलवायु लचीलेपन और अनुकूलन योजना के महत्वपूर्ण घटक हैं।

• समानता और समावेश

- ✓ बहु-खतरा प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों का वर्तमान वैश्विक कवरेज अपर्याप्त है — कई संवेदनशील क्षेत्र (विशेष रूप से अल्प विकसित देश और छोटे द्वीपीय विकासशील राज्य) पीछे हैं। सार्वभौमिक कवरेज का लक्ष्य इस असमानता को दूर करना है।

चुनौतियों की पहचान

- **निगरानी क्षमता में अंतराल:** कई देशों में अभी भी गुणवत्तापूर्ण अवलोकन बुनियादी ढांचे की कमी है।
- **डिजिटल विभाजन:** डेटा और प्रौद्योगिकी के अंतराल को पाटने के लिए सबसे कम संसाधन वाले देशों को सहायता की आवश्यकता है।
- **वित्त और शासन:** प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों के विस्तार और उन्हें बनाए रखने के लिए निरंतर निवेश और सहायक नीतियां महत्वपूर्ण हैं।

वैश्विक लक्ष्यों के साथ जुड़ाव

- **सेंडाई फ्रेमवर्क फॉर डिजास्टर रिस्क रिडक्शन 2015-2030:** प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियाँ लक्ष्य-7 के केंद्र में हैं — जिसका उद्देश्य महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को होने वाले हानि और सेवाओं के व्यवधान में पर्याप्त कमी लाना है।
- **पेरिस समझौता (जलवायु कार्रवाई):** प्रारंभिक चेतावनियाँ अनुकूलन और लचीलेपन के स्तंभों का समर्थन करती हैं।
- **एसडीजी 13 (जलवायु कार्रवाई):** जलवायु परिवर्तन शमन और अनुकूलन के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को सुदृढ़ करना अनिवार्य है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1. EW4AII पहल का लक्ष्य 2027 तक क्या प्राप्त करना है?

- (a) पेयजल तक सार्वभौमिक पहुँच
- (b) बहु-आपदा प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों का सार्वभौमिक कवरेज
- (c) सभी जलवायु-संबंधित आपदाओं का उन्मूलन
- (d) शुद्ध-शून्य कार्बन उत्सर्जन

उत्तर: (b)

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन-सा WMO मंच प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों के समर्थन हेतु वास्तविक समय के जलवायु डेटा के वैश्विक आदान-प्रदान को सुगम बनाता है?

- (a) GBON
- (b) WIS 2.0
- (c) CREWS
- (d) IPCC आकलन रिपोर्ट

उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. "सुदृढ़ प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियाँ जलवायु अनुकूलन और आपदा लचीलेपन के लिए केंद्रीय हैं।" वैश्विक प्रयासों तथा WMO की 'अर्ली वार्निंग्स फॉर ऑल' पहल के संदर्भ में इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

चहल एकेडमी द्वारा निःशुल्क पहल**CCHAAHAL**
ACADEMY

'इंडियन एक्सप्रेस' में क्या पढ़ें?

क्यू आर कोड स्कैन करें





विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

जुवेनाइल हंटिंगटन डिजीज (JHD)

चर्चा में क्यों: भारत में न्यूरोलॉजिकल रिसर्च के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक घटनाक्रम में, जुवेनाइल हंटिंगटन डिजीज (JHD) से पीड़ित एक मरीज के परिवार ने वैज्ञानिक शोध (न्यूरोपैथोलॉजिकल और मॉलिक्यूलर रिसर्च) के लिए मरीज का दिमाग राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (NIMHANS), बेंगलुरु को दान कर दिया है।

जुवेनाइल हंटिंगटन डिजीज (JHD) के बारे में

- JHD एक **दुर्लभ वंशानुगत आनुवंशिक विकार** है जो बच्चों और किशोरों में मस्तिष्क में तंत्रिका कोशिकाओं के धीरे-धीरे खराब होने का कारण बनता है।
- यह HTT जीन (हंटिंगटिन जीन) में उत्परिवर्तन के कारण होता है, जिससे DNA अनुक्रम (CAG) का असामान्य रूप से लंबा दोहराव होता है जो तंत्रिका की मृत्यु दर में वृद्धि करता है।
- लक्षणों में, अकड़न, याददाश्त में कमी, चलने-फिरने में कठिनाई, व्यवहार में बदलाव, और तांत्रिका नियंत्रण में धीरे-धीरे कमी शामिल है - जो मुख्यतः वयस्क-शुरुआत वाले हंटिंगटन रोग की तुलना में अधिक गंभीर और तेज होते हैं।

नैदानिक महत्व

- जुवेनाइल शुरुआत आमतौर पर तब मानी जाती है जब यह बीमारी 20 साल की उम्र से पहले प्रकट होती है। आनुवंशिक उत्परिवर्तन की लंबाई अक्सर गंभीरता और शुरुआत की उम्र से संबंधित होती है।
- वर्तमान में, JHD का कोई इलाज नहीं है; उपलब्ध उपचार भौतिक चिकित्सा, दवाओं, परामर्श और सहायक देखभाल के माध्यम से लक्षणों के प्रबंधन पर केंद्रित हैं।

मस्तिष्क दान का महत्व

1. अनुसंधान में प्रगति

- मस्तिष्क ऊतक JHD जैसी न्यूरोलॉजिकल बीमारियों की पैथोलॉजी को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है, जहां आणविक और कोशिकीय परिवर्तनों को रक्त के नमूनों या पशु प्रतिरूप के माध्यम से पूरी तरह से दोहराया नहीं जा सकता है।
- दान किए गए मानव मस्तिष्क ऊतक की उपलब्धता शोधकर्ताओं को निम्नलिखित में सक्षम बनाती है:
 - तांत्रिक तंत्र के पतन के प्रतिरूप का अध्ययन करना

- ✓ रोग मार्गों और जैविक-चिन्हों (बायोमार्क) की जांच करना
- ✓ भविष्य के हस्तक्षेपों के लिए संभावित चिकित्सीय लक्ष्यों का विकास करना

2. भारत में ब्रेन बैंकिंग को मजबूत करना

- NIMHANS देश के अग्रणी मस्तिष्क बैंकों में से एक है, जिसे तंत्रिका-रोगविज्ञान और तंत्रिका-विज्ञान अनुसंधान सुविधाओं द्वारा समर्थन प्राप्त है।
- ऐतिहासिक रूप से, सांस्कृतिक, जागरूकता संबंधी और तार्किक चुनौतियों के कारण **भारत** में तंत्रिका-अपक्षयी रोगों के अनुसंधान हेतु मस्तिष्क दान सीमित रहा है। इस प्रकार के दान अब संवर्धित अनुसंधान सहभागिता का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

NIMHANS के बारे में

- राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (NIMHANS), बेंगलुरु, **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय** के तहत राष्ट्रीय महत्व का एक संस्थान है।
- यह रोगी देखभाल, प्रशिक्षण और उन्नत तंत्रिका विज्ञान अनुसंधान के लिए एक प्रमुख केंद्र है, जिसमें तंत्रिका-विकृति विज्ञान, नैदानिक तांत्रिक विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान शामिल हैं।
- संस्थान एक मानव मस्तिष्क ऊतक भंडार रखता है और न्यूरोलॉजिकल और मनोरोग स्थितियों पर अनुवाद संबंधी अध्ययन करता है।

नीति और सार्वजनिक स्वास्थ्य निहितार्थ

• अनुसंधान को प्राथमिकता देना:

- ✓ मस्तिष्क दान भारत में न्यूरोडीजेनेरेटिव विकारों की बढ़ती पहचान और मजबूत अनुसंधान ढांचे और ब्रेन बैंकों की आवश्यकता को उजागर करता है - जो साक्ष्य-आधारित निदान, उपचार और नीति निर्माण के लिए आवश्यक हैं।
- ✓ ऐसे कदम न्यूरोलॉजिकल स्वास्थ्य अनुसंधान बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और राष्ट्रीय स्वास्थ्य एजेंडा के भीतर दुर्लभ बीमारियों को संबोधित करने के व्यापक लक्ष्यों के अनुरूप हैं।

• जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी

- ✓ ब्रेन डोनेशन के बारे में बढ़ी हुई जागरूकता रिसर्च में योगदान बढ़ा सकती है और दुर्लभ मस्तिष्क विकार की समझ को बेहतर बना सकती है।
- ✓ सार्वजनिक शिक्षा अभियान और सहायक नीतियां मरणोपरांत ऊतक दान में कलंक और परिवहन बाधाओं को कम कर सकती हैं।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (NIMHANS) को पहले जुवेनाइल हंटिंगटन डिजीज के मस्तिष्क का दान भारत में न्यूरोसाइंस रिसर्च के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह दुर्लभ न्यूरोडीजेनेरेटिव स्थितियों की वैज्ञानिक समझ को गहरा करने के लिए एक मूल्यवान संसाधन प्रदान करता है और निदान और थेरेपी में भविष्य की सफलताओं के लिए नींव को मजबूत करता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु सभावित प्रश्न

प्रश्न. जुवेनाइल हंटिंगटन डिजीज (JHD) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. जुवेनाइल हंटिंगटन डिजीज HTT जीन में उत्परिवर्तन के कारण होता है जिससे असामान्य CAG विस्तार दोहराव होता है।
2. JHD आमतौर पर 40 साल की उम्र के बाद होता है और वयस्क हंटिंगटन रोग की तुलना में धीरे-धीरे बढ़ता है।
3. भारत में पहले जुवेनाइल हंटिंगटन डिजीज के मस्तिष्क का हालिया दान न्यूरोलॉजिकल रिसर्च के लिए NIMHANS, बेंगलुरु को किया गया था।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b) केवल 1 और 3

टाइफाइड कांजुगेट वैक्सीन (TCV)

चर्चा में क्यों: विश्व स्तर पर एक प्रमुख टीका निर्माता और उच्च टाइफाइड से ग्रसित देश होने के बावजूद, **भारत** ने अभी तक अपने सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम में टाइफाइड कांजुगेट वैक्सीन (TCV) को शामिल नहीं किया है।

टाइफाइड ज्वर के बारे में

- टाइफाइड ज्वर 'साल्मोनेला टाइफी' के कारण होने वाला एक जल-जनित संक्रामक रोग है, जो मुख्य रूप से दूषित भोजन और जल के माध्यम से फैलता है।
- यह विश्व स्तर पर एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य भार डालता है, जिसमें प्रतिवर्ष अनुमानित 9-12 मिलियन मामले और 1,00,000 से अधिक मृत्यु होती हैं। **भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश** इस भार के एक बड़े हिस्से के लिए उत्तरदायी हैं।
- **भारत** में, मॉडलिंग अध्ययन प्रतिवर्ष लगभग 4.5 मिलियन मामलों और लगभग 9,000 मृत्यु का सुझाव देते हैं।
- खराब स्वच्छता वाले शहरी और निम्न-आय वाले क्षेत्र संचरण के मुख्य केंद्र हैं।

बच्चों पर प्रभाव और निदान

- बच्चे विषम रूप से प्रभावित होते हैं, जिससे विद्यालय के दिनों की हानि और बाल्यकाल की रुग्णता होती है।
- नैदानिक लक्षण अक्सर अन्य ज्वर संबंधी रोगों (जैसे- डेंगू, मलेरिया) के समान होते हैं, जिससे शीघ्र निदान जटिल हो जाता है।
- आधारभूत संरचना की बाधाओं के कारण रक्त संवर्धन के माध्यम से सटीक निदान सीमित है, जबकि व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला विडाल परीक्षण (Widal Test) अविश्वसनीय है।

रोगाणुरोधी प्रतिरोध: बढ़ता संकट

- एंटीबायोटिक्स का दुरुपयोग और 'साल्मोनेला टाइफी' उपभेदों में बढ़ती एंटीबायोटिक प्रतिरोधकता - विशेष रूप से एज़िथ्रोमाइसिन और सेफ्ट्रैक्सोन जैसी औषधियों के प्रति - उपचार में चुनौतियाँ उत्पन्न करती हैं।
- पड़ोसी देशों में उभर रहे 'एक्सटेंसिवली ड्रग-रेसिस्टेंट' (XDR) टाइफाइड उपभेदों के सीमाओं के पार फैलने का भय है।
- टीकाकरण एंटीबायोटिक के उपयोग को कम कर सकता है और इस प्रकार प्रतिरोध को कम करने में सहायता कर सकता है।

टाइफाइड कांजुगेट वैक्सीन (TCV): विशेषताएँ और लाभ

- टाइफाइड कांजुगेट वैक्सीन विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 6 माह की आयु के बालकों के लिए अनुमोदित हैं और केवल एक खुराक की आवश्यकता होती है, जो दीर्घकालिक प्रतिरक्षा प्रदान करती है।
- कांजुगेट टीके पुराने टाइफाइड टीकों की सीमाओं को पार करते हैं, जो संवर्धित रोग क्षमता - छोटे शिशुओं के लिए उपयुक्त - प्रदान करते हैं।

वैश्विक साक्ष्य और प्रभावकारिता

- **बांग्लादेश, नेपाल और मलावी** सहित कई देशों में किए गए क्षेत्रीय परीक्षणों में TCV ने उच्च सुरक्षात्मक प्रभावकारिता (80% से अधिक) प्रदर्शित की है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्थानिक क्षेत्रों में एक प्रमुख निवारक रणनीति के रूप में TCV को सम्मिलित करने की दृढ़ अनुशंसा की है।

भारत में वर्तमान स्थिति:

- **भारत** के निजी बाजार में कई टाइफाइड कांजुगेट वैक्सीन (TCV) उपलब्ध हैं, जिनमें **भारत बायोटेक** और **ज़ाइडस लाइफ साइंसेज** द्वारा विकसित टीके सम्मिलित हैं, और इन्हें वैश्विक खरीद के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) से पूर्व-अनुमति प्राप्त हुई है।
- टीकाकरण पर राष्ट्रीय तकनीकी सलाहकार समूह (NTAGI) ने 2016/2022 से सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम में टाइफाइड

कांजुगेट वैक्सीन (TCV) को शामिल करने की अनुशंसा की है, परंतु औपचारिक कार्यान्वयन अभी भी लंबित है।

- निजी क्षेत्र में टीकों की उच्च लागत (लगभग ₹2,000 प्रति खुराक) न्यायसंगत पहुँच में बाधा डालती है।

जल, स्वच्छता और स्वच्छता (WASH)

सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता तक खराब पहुँच टाइफाइड के संचरण को बढ़ाती है। **स्वच्छ भारत मिशन** जैसी सरकारी पहलों के बावजूद शहरी परिवारों के केवल एक छोटे अंश को ही सुरक्षित जल आपूर्ति की गारंटी प्राप्त है।

भारत के लिए महत्व एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य सम्बंधी निहितार्थ

- समानता और सुलभता:** सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम में टाइफाइड कांजुगेट वैक्सीन (TCV) को सम्मिलित करने से सामाजिक-आर्थिक समूहों में निःशुल्क और न्यायसंगत पहुँच सुनिश्चित होगी।
- लागत-प्रभावशीलता:** टीकाकरण के माध्यम से टाइफाइड को रोकना उपचार की लागत, चिकित्सालय में भर्ती होने और उत्पादकता की हानि की तुलना में लागत प्रभावी है।
- समग्र रोग नियंत्रण रणनीति:** स्थायी रूप से टाइफाइड को नियंत्रित करने के लिए टीकाकरण को बेहतर निदान, AMR निगरानी और सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता द्वारा पूरक किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

अपने सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम में टाइफाइड कांजुगेट वैक्सीन (TCV) को शामिल करने में भारत की विफलता उच्च बोझ और बढ़ते प्रतिरोधी प्रतिरोध के साथ एक रोकथाम योग्य बीमारी के लिए अपने सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया में एक चूक अवसर का प्रतिनिधित्व करती है। शक्तिशाली साक्ष्य, WHO के समर्थन और घरेलू वैक्सीन उत्पादन क्षमता के साथ, यूआईपी में टीसीवी को तत्काल शामिल करने से रोगों की रोकथाम में वृद्धि होगी, स्वास्थ्य असमानताओं को कम किया जा सकेगा और राष्ट्रीय टीकाकरण परिणामों को और अधिक सशक्त किया जा सकेगा।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारम्भिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. टाइफाइड कांजुगेट वैक्सीन (TCV) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- टाइफाइड का टीका एक वर्ष से कम उम्र के बच्चों को लगाया जा सकता है।
- टीसीवी पुराने पॉलीसेकेराइड टाइफाइड टीकों की तुलना में लंबे समय तक चलने वाली प्रतिरक्षा प्रदान करता है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन केवल उन देशों में टीसीवी की सिफारिश करता है जिन्होंने खुले में शौच को समाप्त कर दिया है।

उपर्युक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a) केवल 1 और 2

क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (COPD)

चर्चा में क्यों: क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (COPD) एक प्रमुख वैश्विक और राष्ट्रीय स्वास्थ्य चिंता है जो मौन रूप से लाखों लोगों को प्रभावित करती है। यह जीवन की गुणवत्ता को कम करती है और रुग्णता तथा मृत्यु दर में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज के बारे में

- स्थायी बाधक फुफ्फुसीय रोग** (क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज - सीओपीडी) क्रोनिक फेफड़ों की स्थितियों के एक समूह को संदर्भित करता है जो निरंतर वायु प्रवाह सीमा और श्वास संबंधी कठिनाइयों का कारण बनता है। इसमें मुख्य रूप से **क्रोनिक ब्रोंकाइटिस** और **एम्फिसीमा** सम्मिलित हैं, दो स्थितियाँ जो अक्सर रोगियों में एक साथ पाई जाती हैं।
 - ✓ **क्रोनिक ब्रोंकाइटिस:** वायुमार्ग की दीर्घकालिक सूजन जिससे बलगम के साथ खांसी उत्पन्न होती है।
 - ✓ **एम्फिसीमा:** फेफड़ों की वायु थैलियों (एल्विओलाई) की क्षति और विस्तार, जिससे ऑक्सीजन विनिमय कम हो जाता है।
- सीओपीडी बढ़ने वाली और दीर्घकालिक बीमारी है — जिसका अर्थ है यह समय के साथ बिगड़ता जाता है और आमतौर पर ठीक नहीं होता। इसके उपचार का फोकस लक्षणों को मैनेज करना और बीमारी को बढ़ने से रोकना है।

रोग का भार – वैश्विक और राष्ट्रीय संदर्भ

- क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी)** विश्व स्तर पर मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक बना हुआ है, जो प्रतिवर्ष लाखों मृत्यु और **डिसेबिलिटी-एडजस्टेड लाइफ इयर्स DALYs** में एक महत्वपूर्ण हिस्से के लिए उत्तरदायी है। 70 वर्ष से कम आयु की लगभग 90% मृत्यु निम्न और मध्यम आय वाले देशों में होती है।
- उच्च प्रदूषण और धूम्रपान दर वाले देशों में, **क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी)** एक छिपा हुआ महामारी है, जो अक्सर क्रोनिक बीमारी और मृत्यु के शीर्ष कारणों में स्थान रखता है।

कारण: प्राथमिक कारण

- तंबाकू का धुआँ:** विश्व स्तर पर सबसे महत्वपूर्ण कारक — सक्रिय धूम्रपान अधिकांश मामलों से जुड़ा है।
- वायु प्रदूषण:** बाहरी (यातायात, औद्योगिक उत्सर्जन) और आंतरिक प्रदूषण (बायोमास कुकिंग फ्यूल्स) दोनों महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

- **व्यावसायिक खतरे:** कार्यस्थल पर धूल, रासायनिक धुएं और धुएं के लंबे समय तक संपर्क में रहना।
- **आनुवंशिक कारक:** अल्फा-1 एंटीट्रिप्सिन डिफिशिएंसी जैसी दुर्लभ स्थितियाँ धूम्रपान की अनुपस्थिति में भी व्यक्तियों को इसके प्रति संवेदनशील बनाती हैं।

जोखिम वाली जनसंख्या:

- ✓ मध्यम आयु वर्ग और वृद्ध वयस्क।
- ✓ उच्च वायु प्रदूषण या **सेकंड-हैंड स्मोक** के संपर्क में आने वाले व्यक्ति।
- ✓ धूल भरे या प्रदूषित वातावरण में कार्य करने वाले श्रमिक।

सामान्य लक्षण

- **COPD** के लक्षण अक्सर धीरे-धीरे उत्पन्न होते हैं और उन्हें सामान्य वृद्धावस्था समझने की भूल की जा सकती है:
 - ✓ निरंतर श्वास फूलना, विशेष रूप से परिश्रम करने पर।
 - ✓ बलगम या कफ के साथ क्रोनिक खांसी।
 - ✓ घरघराहट और सीने में जकड़न।
 - ✓ थकान और व्यायाम सहने की क्षमता में कमी।
- संक्रमण या प्रदूषण के कारण लक्षणों का अचानक बिगड़ना 'एक्ससेर्बेशन' के रूप में जाना जाता है।

संभावित जटिलताएँ

सीओपीडी निम्नलिखित जोखिमों को बढ़ाता है:

- ✓ फेफड़ों का संक्रमण (जैसे- निमोनिया)।
- ✓ हृदय रोग और **पल्मोनरी हाइपरटेंशन**।
- ✓ फेफड़ों का कैंसर।
- ✓ चिंता, अवसाद और जीवन की गुणवत्ता में कमी।

निदान:

- **क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी)** निदान का आधार **स्पाइरोमेट्री** है, जो एक फेफड़ों का कार्य परीक्षण है जो यह मापता है कि एक व्यक्ति एक सेकंड (**FEV1**) में कितनी वायु बलपूर्वक बाहर निकाल सकता है और फेफड़ों की समग्र कार्यक्षमता क्या है।
- शीघ्र निदान लक्षणों को कम करने, प्रगति को रोकने और जटिलताओं से बचने हेतु समय पर **उपचार** की अनुमति देता है।

प्रबंधन और उपचार:

1) गैर-औषधीय

- धूम्रपान का परित्याग: सबसे महत्वपूर्ण हस्तक्षेप।
- वायु प्रदूषकों और उत्तेजकों से बचाव।
- **पल्मोनरी पुनर्वास**: फेफड़ों की क्षमता और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हेतु व्यायाम और शिक्षा कार्यक्रम।

2) चिकित्सा उपचार:

- वायुप्रवाह में सुधार और सूजन कम करने हेतु **ब्रॉकोडायलेटर्स** और इनहेलड स्टेरॉयड।
- उन्नत रोग में पूरक ऑक्सीजन थेरेपी।
- फ्लेयर-अप को कम करने हेतु **इन्फ्लुएंजा** और **न्यूमोकोकल** संक्रमणों के विरुद्ध टीकाकरण।

निवारक रणनीतियाँ:

क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) का निवारण ज्ञात जोखिम कारकों के संपर्क को कम करने पर निर्भर करता है:

- तंबाकू नियंत्रण नीतियाँ और धूम्रपान परित्याग कार्यक्रम।
- आंतरिक वायु गुणवत्ता में सुधार (स्वच्छ रसोई ईंधन, उचित वेंटिलेशन)।
- पर्यावरणीय विनियमन और सार्वजनिक स्वास्थ्य पहलों के माध्यम से परिवेशी वायु प्रदूषण को कम करना।
- शीघ्र लक्षणों और जोखिम कारकों पर सार्वजनिक जागरूकता अभियान प्रारंभिक पहचान और बेहतर परिणामों को अत्यधिक बढ़ा सकते हैं।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारम्भिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (COPD) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सीओपीडी एक बढ़ने वाली फेफड़ों की बीमारी है जिसकी विशेषता लगातार वायु प्रवाह की सीमा है जो काफी हद तक अपरिवर्तनीय है।
2. क्रॉनिक ब्रॉकाइटिस और एम्फिसीमा दो प्राथमिक स्थितियाँ हैं, जो सीओपीडी के तहत शामिल हैं।
3. विकासशील देशों में बायोमास ईंधन से होने वाले इनडोर वायु प्रदूषण के लंबे समय तक संपर्क सीओपीडी के लिए एक महत्वपूर्ण जोखिम कारक है।
4. स्पाइरोमेट्री का उपयोग मुख्य रूप से संक्रामक फेफड़ों की बीमारियों का पता लगाने के लिए किया जाता है और COPD के निदान में इसकी कोई भूमिका नहीं है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 1 और 4
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. "क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) भारत में एक कम मान्यता प्राप्त सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती है। "बढ़ते वायु

प्रदूषण और जीवनशैली में बदलाव के संदर्भ में सीओपीडी के कारणों, बोझ और रोकथाम पर चर्चा करें। (15 अंक/250 शब्द)

घटते डिम्बग्रंथि रिजर्व (डिमिनिशिंग ओवेरियन रिजर्व)

चर्चा में क्यों: हाल के चिकित्सा अवलोकन और शोध भारत में एक चिंताजनक प्रवृत्ति दिखाते हैं: अधिक युवा महिलाएं – जिनमें उनके 20 के दशक के अंत और 30 के दशक की शुरुआत में शामिल हैं – घटते डिम्बग्रंथि रिजर्व (डीओआर) के लक्षण दिखा रही हैं, एक ऐसी स्थिति जो पारंपरिक रूप से बड़ी उम्र में बच्चे पैदा करने से जुड़ी है।

डिम्बग्रंथि रिजर्व (ओवेरियन रिजर्व)

डिम्बग्रंथि रिजर्व एक महिला के अंडे (Oocytes) की संख्या और गुणवत्ता को संदर्भित करता है, जो स्वाभाविक रूप से उम्र के साथ गिरावट आती है। हालांकि, डॉक्टर अब कम आयु समूहों में असामान्य रूप से कम भंडार (Unusually Low Reserves) देख रहे हैं।

घटते डिम्बग्रंथि रिजर्व (डीओआर) के बारे में

डीओआर एक नैदानिक स्थिति है, जिसमें डिम्बग्रंथि के रोम और अंडे (Ovarian follicles and eggs) की संख्या एक महिला के आयु वर्ग के लिए अपेक्षा से कम है। यह कमी प्रजनन क्षमता को प्रभावित कर सकती है और स्वाभाविक रूप से गर्भधारण की संभावना को कम कर सकती है।

नैदानिक महत्व

- एक महिला सभी अंडों के साथ पैदा होती है; ये उसके जीवन भर धीरे-धीरे कम होते जाते हैं।
- सामान्य प्रजनन उम्र बढ़ने में, डिम्बग्रंथि रिजर्व धीरे-धीरे कम होता है; जबकि डीओआर की स्थिति में, यह कमी समय से पहले तेज़ी से होती है।

मुख्य निष्कर्ष और साक्ष्य

1. युवा महिलाओं में जल्दी शुरुआत

- ✓ मेडिकल रिपोर्ट बताती है कि एक नया पैटर्न उभर रहा है, जिसमें युवा भारतीय महिलाओं को उम्मीद से पहले घटते डिम्बग्रंथि रिजर्व (डिमिनिशिंग ओवेरियन रिजर्व) का निदान किया जा रहा है।
- ✓ शहरी क्षेत्रों में प्रजनन विशेषज्ञों ने देखा है कि 35 वर्ष से कम आयु की कई महिलाएं परीक्षण के दौरान **एंटी-मुलरियन हार्मोन (एएमएच)** के निम्न स्तर प्रदर्शित किया, जो डिम्बग्रंथि रिजर्व का एक प्रमुख संकेतक है।

2. एएमएच परीक्षण :

- ✓ एंटी-मुलरियन हार्मोन (एएमएच) का स्तर अंडे की मात्रा से जुड़ा हुआ है; निम्न स्तर कम अंडे के पूल का संकेत देते हैं। एएमएच माप, अल्ट्रासाउंड द्वारा एंट्रल फॉलिकल काउंट (एएफसी) के साथ, डिम्बग्रंथि रिजर्व का आकलन करने के लिए आवश्यक है।

संभावित कारण

स्वास्थ्य और प्रजनन विशेषज्ञ कई आपस में जुड़े कारकों की ओर संकेत करते हैं जो समय से पहले डिम्बग्रंथि जीर्णता (Premature Ovarian Senescence) में योगदान कर सकते हैं:

1. जीवनशैली और पर्यावरणीय कारक:

- ✓ **शहरी जीवनशैली:** सुस्त आदतें, प्रसंस्कृत भोजन, अत्यधिक तनाव और नींद में असंतुलन के कारण तेज़ी से गिरावट आती है।
- ✓ **प्रदूषण और रासायनिक संपर्क:** प्लास्टिक, कीटनाशकों और प्रदूषण में अन्तःस्त्रावी-विघटनकारी रसायन (EDCs) हार्मोन की प्रणाली और डिम्बग्रंथि जीव विज्ञान (Ovarian Biology) में हस्तक्षेप कर सकते हैं।

2. बच्चे के जन्म में देरी:

- ✓ महिलाएं करियर और शिक्षा की तलाश में गर्भवस्था को स्थगित कर सकती हैं, और अनजाने में उनके अंडे का भंडार (Egg Reserves) खत्म हो सकता है।

3. आनुवंशिक और जातीय कारक:

- ✓ कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि अन्य जातीय पृष्ठभूमि की महिलाओं की तुलना में भारतीय महिलाओं में AMH स्तरों में तेज़ी से कमी आ सकती है, जो संभावित आनुवंशिक या एपिजेनेटिक प्रभावों का संकेत देता है।

4. अन्य स्वास्थ्य स्थितियाँ:

- ✓ पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (पीसीओएस), जननांग संक्रमण (जैसे, तपेदिक), डिम्बग्रंथि सर्जरी या हार्मोनल असंतुलन जैसी स्थितियां भी डिम्बग्रंथि रिजर्व को प्रभावित कर सकती हैं।

कम डिम्बग्रंथि रिजर्व के निहितार्थ

1. प्रजनन क्षमता और प्रजनन योजना:

- ✓ ओवरी का जल्दी कमजोर होना प्रजनन क्षमता को कम कर सकता है, प्रजनन की अवधि को छोटा कर सकता है, और आईवीएफ जैसी सहायक प्रजनन तकनीकों (ART) पर निर्भरता बढ़ा सकता है।

2. भावनात्मक और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव:

- ✓ युवा महिलाओं में अप्रत्याशित प्रजनन समस्याएं मनोवैज्ञानिक तनाव का कारण बन सकती हैं, परिवार नियोजन की समयसीमा को प्रभावित कर सकती हैं और प्रजनन उपचार के कारण वित्तीय बोझ पैदा कर सकती हैं।

विशेषज्ञों की सलाह

- **नियमित प्रजनन जांच:** प्रजनन आयु की महिलाओं के लिए व्यापक स्वास्थ्य जांच में AMH परीक्षण और डिम्बग्रंथि रिजर्व आकलन (Ovarian Reserve Assessment) को शामिल करने से शुरुआती पहचान और योजना बनाने में सहायता मिल सकती है।

- **जीवनशैली में बदलाव और जागरूकता:** विशेषज्ञ संतुलित आहार, तनाव प्रबंधन, धूम्रपान और पर्यावरण विषाक्त पदार्थों से बचने और निवारक उपायों के रूप में समय पर प्रजनन परामर्श की सलाह देते हैं।

सरकार और नीति प्रासंगिकता

- **सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकता:** भारत के प्रजनन परिदृश्य में बदलाव के साथ - जिसमें देर से माता-पिता बनने की प्रवृत्ति और घटती प्रजनन दर शामिल है - शुरुआती प्रजनन स्वास्थ्य स्क्रीनिंग और जागरूकता उभरती हुई सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकताएं हैं।
- **अनुसंधान और डेटा की आवश्यकता:** सामाजिक-आर्थिक समूहों में शुरुआती ओवेरियन रिज़र्व की कमी की व्यापकता, कारणों और दीर्घकालिक परिणामों को समझने के लिए विस्तारित जनसंख्या-स्तरीय अध्ययन की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

भारत में युवा महिलाओं में कम ओवेरियन रिज़र्व की घटना जीवनशैली, पर्यावरण, आनुवंशिकी और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित एक उभरती हुई प्रजनन स्वास्थ्य चुनौती को रेखांकित करती है। इस प्रवृत्ति को संबोधित करने और सूचित प्रजनन विकल्प सक्षम करने के लिए शुरुआती पहचान, जागरूकता और सक्रिय प्रजनन स्वास्थ्य रणनीतियाँ महत्वपूर्ण हैं।

रोगाणुरोधी प्रतिरोध 2.0 पर राष्ट्रीय कार्य योजना

चर्चा में क्यों: हाल ही में, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने नई दिल्ली में **रोगाणुरोधी प्रतिरोध 2.0 पर राष्ट्रीय कार्य योजना (2025–29)** के शुभारंभ की घोषणा की।

अन्य विवरण

- अद्यतन योजना रोगाणुरोधी प्रतिरोध (Antimicrobial resistance - AMR) की वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती के प्रति भारत की प्रतिक्रिया को सुदृढ़ करने का प्रयास करती है।
- रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR), जो एंटीबायोटिक्स और अन्य रोगाणुरोधी एजेंटों के अत्यधिक और दुरुपयोग के कारण होता है, जीवन रक्षक औषधियों की प्रभावशीलता को कम करता है और शल्य चिकित्सा, संक्रमण नियंत्रण, कैंसर देखभाल और अधिक में स्वास्थ्य परिणामों को संकट में डालता है।

AMR का महत्व और अद्यतन कार्ययोजना की आवश्यकता

- **रोगाणुरोधी प्रतिरोध का संकट**
 - ✓ AMR गहरे स्वास्थ्य, आर्थिक और सामाजिक निहितार्थों वाली एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता है।
 - ✓ रोगाणुरोधी दवाओं के प्रति प्रतिरोध उपचार की विफलताओं को बढ़ाता है, स्वास्थ्य देखभाल लागत बढ़ाता है और शल्य चिकित्सा,

कैंसर उपचार और गहन चिकित्सा सहित आधुनिक चिकित्सा प्रक्रियाओं की प्रगति को खतरे में डालता है।

संशोधन का औचित्य

- ✓ अप्रैल 2017 में आरंभ की गई AMR पर प्रथम राष्ट्रीय कार्य योजना ने आधार तैयार किया था, किंतु अंतर-क्षेत्रीय समन्वय और कार्यान्वयन में अंतराल प्रकट हुए।
- ✓ संशोधित योजना — **रोगाणुरोधी प्रतिरोध 2.0 पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAP-AMR 2.0)** — का लक्ष्य विभिन्न क्षेत्रों में स्वामित्व को गहरा करना और सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्रों के साथ समन्वय को सुदृढ़ करना है।

NAP-AMR 2.0 के अंतर्गत मुख्य रणनीतियाँ

1. जागरूकता और शिक्षा का सुदृढ़ीकरण

- ✓ रोगाणुरोधी दवाओं के उचित उपयोग पर सार्वजनिक और व्यावसायिक जागरूकता बढ़ाना।
- ✓ तर्कसंगत नुस्खे को प्रोत्साहित करने हेतु स्वास्थ्य देखभाल चिकित्सकों के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम।

2. बेहतर प्रयोगशाला क्षमता और संक्रमण नियंत्रण

- ✓ प्रयोगशाला नेटवर्क और नैदानिक क्षमताओं का विस्तार।
- ✓ प्रतिरोधी सूक्ष्मजीवों के संचरण को रोकने हेतु चिकित्सालयों और सामुदायिक स्वास्थ्य सेटिंग्स में संक्रमण नियंत्रण उपायों को बढ़ाना।

3. संवर्धित हितधारक समन्वय

- ✓ कार्यान्वयन की चुनौतियों के समाधान हेतु मंत्रालयों और विभागों के हितधारकों का नियमित आयोजन।
- ✓ समन्वित प्रतिक्रिया हेतु निजी क्षेत्र, व्यावसायिक निकायों, गैर-सरकारी संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों की सहभागिता।

वन हेल्थ दृष्टिकोण और बहुक्षेत्रीय कार्यवाही

- रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) नियंत्रण **वन हेल्थ दृष्टिकोण** पर आधारित है जो मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य, कृषि और पर्यावरणीय विषयों को एकीकृत करता है।
- रोगाणुरोधी प्रतिरोध 2.0 पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAP-AMR 2.0) के विकास में 20 से अधिक मंत्रालयों और विभागों के साथ परामर्श सम्मिलित था, जो क्षेत्रों में व्यापक कार्यवाही सुनिश्चित करता है।

रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) पर भारत की पहल

- **केरल** और **गुजरात** जैसे राज्यों ने **ओवर-द-काउंटर** एंटीबायोटिक विक्रय पर प्रतिबंध लगा दिया है और फसलों में रोगाणुरोधी उपयोग पर कड़ा नियंत्रण लागू किया है।
- **इंडिया एएमआर इनोवेशन हब** की स्थापना नवाचार, संसाधन जुटाने और राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय हितधारकों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने हेतु की गई थी।

आगे की राह

- योजना के शुरुआत के पश्चात, प्रत्येक हितधारक मंत्रालय/विभाग से स्पष्ट समय सीमा और संसाधन प्रतिबद्धताओं के साथ एक कार्यान्वयन रोडमैप विकसित करने की अपेक्षा की जाती है।
- योजना प्रगति पर नज़र रखने और रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) का प्रभावी नियंत्रण सुनिश्चित करने हेतु नियमित निगरानी और मूल्यांकन को बढ़ावा देती है।

निष्कर्ष

रोगाणुरोधी प्रतिरोध 2.0 पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAP-AMR 2.0) भारत की प्रबल प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करती है — जो एक जटिल, अंतर-क्षेत्रीय चुनौती है जिसके लिए समन्वित नीतिगत कार्यवाही, सुदृढ़ निगरानी, बेहतर स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं और निरंतर हितधारक सहभागिता की आवश्यकता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु अपेक्षित प्रश्न

प्रारम्भिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. रोगाणुरोधी प्रतिरोध 2.0 पर राष्ट्रीय कार्य (2025-29) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह भारत में शुरू की गई एएमआर पर पहली राष्ट्रीय योजना है।
2. यह योजना मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को एकीकृत करने वाले एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण का अनुसरण करती है।
3. प्रयोगशाला क्षमता और संक्रमण नियंत्रण को मजबूत करना योजना का एक प्रमुख घटक है।
4. इस योजना में कई मंत्रालयों और निजी क्षेत्र के बीच समन्वय शामिल है।

उपर्युक्त में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) 2, 3, और 4 केवल
- (c) 1, 3, और 4 केवल
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. "रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) भारत में एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती के रूप में उभर रहा है। NAP-AMR 2.0 (2025-29) पर राष्ट्रीय कार्य योजना के तहत रणनीतियों की गंभीर रूप से जांच करें और चर्चा करें कि "एक स्वास्थ्य" दृष्टिकोण एएमआर के प्रति भारत की प्रतिक्रिया को कैसे मजबूत कर सकता है।" (10 अंक/ 150 शब्द)

विश्व का सबसे छोटा स्वायत्त रोबोट

चर्चा में क्यों: यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिल्वेनिया और यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन के शोधकर्ताओं ने विश्व के सबसे छोटे पूर्णतः प्रोग्राम योग्य और स्वायत्त

रोबोट (Fully Programmable & Autonomous Robots) विकसित किए हैं, जो नग्न आंखों से लगभग अदृश्य हैं।

आकार और दृश्यता

- **प्रत्येक रोबोट अत्यंत सूक्ष्म है:** लगभग 0.2 मिमी × 0.3 मिमी × 0.05 मिमी। यह कई सूक्ष्मजीवों के आकार के समान है — नमक के दाने से भी बहुत छोटा — और आवर्धन के बिना लगभग अदृश्य है।

कार्यप्रणाली

- **प्रकाश-संचालित:** रोबोट अपने ऑनबोर्ड सिस्टम को शक्ति देने हेतु (छोटे सोलर सेल के माध्यम से) प्रकाश का उपयोग करते हैं।
- **सरल बुद्धिमत्ता (सिंपल इंटेलिजेंस):** ऑनबोर्ड कंप्यूटर अत्यंत कम ऊर्जा पर चलते हैं और स्वचालित रूप से प्रोग्राम किए गए निर्देशों का पालन करते हैं।
- **गतिशील उपकरणों के बिना प्रणोदन:** छोटे पैमाने पर, पानी एक मोटे तरल की तरह काम करता है, इसलिए प्रोपेलर के बजाय, रोबोट विद्युत क्षेत्र बनाते हैं जो तरल में आयनों को गति बनाने के लिए हिलाते हैं - प्रभावी रूप से तरल के माध्यम से खुद को धक्का देते हैं।

संवेदन और व्यवहार

- वे तापमान परिवर्तन को महसूस कर सकते हैं, उसके अनुसार अपनी संचलन को समायोजित कर सकते हैं और प्रो स्वचालित रूप से प्रोग्राम किए गए व्यवहार कर सकते हैं।
- प्रत्येक रोबोट की एक विशिष्ट पहचान होती है, जो झुंड में संभावित समन्वय या कार्य भिन्नता की अनुमति देती है।

लागत और पैमाने

- रिपोर्टों के अनुसार, मानक सेमीकंडक्टर निर्माण तकनीकों के कारण उन्हें सस्ते में - लगभग 1 अमेरिकी सेंट प्रति रोबोट - निर्मित किया जा सकता है।
- ये रोबोट प्रकाश जोखिम के बिना महीनों के लिए काम कर सकते हैं।

संभावित अनुप्रयोग

यद्यपि अनुसंधान अभी भी अपने प्रारंभिक चरण में है, वैज्ञानिक भविष्य के अनुप्रयोगों की कल्पना करते हैं जैसे:

- ✓ सूक्ष्म या दुर्गम स्थानों में पर्यावरणीय संवेदन।
- ✓ ये रोबोट स्वायत्त मशीनों की ओर एक बड़ा कदम है जो सूक्ष्म पैमाने पर काम करते हैं।
- ✓ चिकित्सा विज्ञान: लक्षित औषधि वितरण, कोशिका-स्तर की निगरानी।
- ✓ सूक्ष्म-विनिर्माण (माइक्रो-मैनुफैक्चरिंग) और भविष्य के सामूहिक रोबोट (स्वार्म रोबोटिक्स) अनुप्रयोग।

चुनौतियाँ और नैतिक चिंताएँ

- ✓ परिनियोजन के पश्चात नियंत्रण और पुनः प्राप्ति (रिकवरी)।

- ✓ जैव-सुरक्षा (बायो सेफ्टी) और पर्यावरणीय जोखिम।
- ✓ चिकित्सा अनुप्रयोगों में डेटा गोपनीयता।
- ✓ एक नियामकीय ढांचे की आवश्यकता।

निष्कर्ष

सूक्ष्म स्वायत्त रोबोटों (Micro Autonomous Robots) का विकास रोबोटिक्स में एक बड़ी छलांग का प्रतिनिधित्व करता है, जो नैनो टेक्नोलॉजी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग का संयोजन करता है। आगे बढ़ते हुए, अनुसंधान को नियंत्रण तंत्र में सुधार, सुरक्षित तैनाती सुनिश्चित करने और नैतिक और नियामक चिंताओं को दूर करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए संभावित जोखिमों को कम करते हुए, लक्षित चिकित्सा उपचार, पर्यावरण निगरानी और सटीक सूक्ष्म-विनिर्माण जैसे लाभकारी अनुप्रयोगों के लिए इन रोबोटों का उपयोग करने के लिए वैज्ञानिकों, नैतिकतावादियों और नीति निर्माताओं के बीच सहयोग महत्वपूर्ण होगा।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा में संभावित प्रश्न

प्रारम्भिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. विश्व के सबसे छोटे स्वायत्त (Autonomous) रोबोटों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

- वे सूक्ष्म बैटरियों से संचालित होते हैं और उनके संचालन के लिए बाहरी नियंत्रण की आवश्यकता होती है।
- वे जल में घूमने वाले सूक्ष्म प्रोपेलर्स के माध्यम से गति करते हैं।
- वे पर्यावरणीय परिवर्तनों को महसूस कर सकते हैं और पूर्व-प्रोग्रामित निर्देशों का स्वायत्त रूप से पालन करते हैं।
- उन्नत सामग्रियों के कारण प्रत्येक रोबोट के निर्माण की लागत लगभग 1,000 डॉलर है।

उत्तर: (c)

जेमिनिड उल्का बौछार

चर्चा में क्यों: जेमिनिड उल्का बौछार (Geminid meteor shower) एक वार्षिक खगोलीय घटना है जिसमें कई उल्का ("शूटिंग सितारे") दिखाई देते हैं, क्योंकि वे अंतरिक्ष मलबे की पृथ्वी की कक्षा से गुजरते हैं। यह वर्ष का सबसे चमकीला और सबसे विश्वसनीय उल्का वर्षा माना जाता है।

कब और कहाँ देखें

- ✓ **चरम रात्रि (पीक नाइट):** 13-14 दिसंबर, 2025 की रात्रि (14 दिसंबर की प्रातः)।
- ✓ **भारत में सर्वश्रेष्ठ दृश्य:** भारतीय मानक समय (IST) के अनुसार प्रातः 2 बजे से 4 बजे के बीच, जब **मिथुन** (Gemini) तारामंडल आकाश में उच्च स्थान पर होता है।
- ✓ नगर के प्रकाश से दूर अंधेरे और खुले क्षेत्रों से बेहतर दृश्यता होती है।

यह क्यों घटित होता है?

- उल्काएं क्षुद्रग्रह **3200 फेथॉन** (Phaethon) द्वारा छोड़े गए मलबे से उत्पन्न होती हैं — यह एक असामान्य स्रोत है क्योंकि अधिकांश उल्का बौछार धूमकेतुओं से आती हैं।
- जैसे ही पृथ्वी इस मलबे के क्षेत्र से गुजरती है, कण वायुमंडल में जल जाते हैं, जिससे चमकदार धारियाँ बनती हैं।

विशेषताएँ

- आदर्श परिस्थितियों में चरम रात्रि (पीक नाइट) में प्रति घंटे 100 से अधिक उल्काएं उत्पन्न हो सकती हैं।
- उल्काएं अक्सर इतनी चमकीली होती हैं कि वे प्रकाश प्रदूषण को भेद सकती हैं, जो नगरों से भी दृश्यमान होती हैं।

निष्कर्ष

जेमिनिड उल्का बौछार सबसे शानदार और विश्वसनीय वार्षिक खगोलीय घटनाओं में से एक बनी हुई है, जो तारे देखने वालों, खगोलविदों और शिक्षकों को उल्काओं का अवलोकन करने और खगोल विज्ञान से जुड़ने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करती है। भविष्य में, सार्वजनिक अवलोकन कार्यक्रमों (पब्लिक व्यूइंग इवेंट्स) के आयोजन, खगोलीय-विज्ञान शिक्षा को बढ़ावा और नागरिक विज्ञान (सिटीज़न साइंस) को उल्कापिंड की गतिविधियों को ट्रैक करने के लिए प्रोत्साहित करने, अंतरिक्ष और ग्रहीय विज्ञान (स्पेस और प्लैनेटरी साइंस) में लोगों की दिलचस्पी बढ़ाने में मदद कर सकता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारम्भिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: जेमिनिड उल्का बौछार के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

- अधिकांश अन्य उल्का वर्षा की तरह, ये उल्का धूमकेतु से आते हैं।
- यह 13-14 दिसंबर, 2025 को भारतीय समयानुसार दोपहर 2 बजे से 4 बजे के बीच भारत में सबसे अच्छा देखा जाएगा।
- यह बौछार आमतौर पर प्रति घंटे 10 से कम उल्का उत्पन्न करता है।
- इसकी कम चमक के कारण, यह शहरों से शायद ही कभी दिखाई देता है।

उत्तर: (b)

नई मंगल मिशन ब्लूप्रिंट

चर्चा में क्यों: हाल ही में, मंगल ग्रह हेतु मानव मिशनों का मार्गदर्शन करने के लिए एक लैंडमार्क ब्लूप्रिंट जारी किया गया है।

अन्य विवरण

- यह यूएस नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज, इंजीनियरिंग एंड मेडिसिन द्वारा नासा के नेतृत्व वाले विशेषज्ञ इनपुट के आधार पर तैयार किया गया है।
- यह भविष्य के मानवयुक्त मंगल मिशनों के लिए विज्ञान प्राथमिकताओं, उपकरणों की आवश्यकताओं, लैंडिंग-स्थल मानदंडों और पर्यावरणीय बाधाओं को रेखांकित करता है।

ब्लूप्रिंट के मुख्य उद्देश्य

- मंगल पर प्रथम मानव अन्वेषण मिशनों के लिए वैज्ञानिक लक्ष्यों को परिभाषित करना।
- इन लक्ष्यों को मिशन अभियानों में व्यवस्थित करना जो अन्वेषण चरणों को संरचना प्रदान करते हैं।
- लैंडिंग-स्थलों के लिए मानदंड प्रदान करना जो वैज्ञानिक लाभ और चालक दल की सुरक्षा को अधिकतम करते हैं।
- सतह पर संचालन के लिए आवश्यक उपकरणों और औजारों को निर्दिष्ट करना।
- योजना में पर्यावरणीय बाधाओं (विकिरण, धूल, भूभाग) को सम्मिलित किया गया है।

प्रमुख प्राथमिकताएँ

- **एस्ट्रोबायोलॉजी:** मंगल पर अतीत या वर्तमान जीवन के संकेतों की खोज।
- **वायुमंडलीय विज्ञान:** मंगल के मौसम, जलवायु और वायुमंडलीय प्रक्रियाओं को समझना।
- **ग्रहीय-भूविज्ञान:** सतह की संरचना, चट्टानों और ऐतिहासिक ग्रहीय विकास का अध्ययन।
- **जैविक और भौतिक विज्ञान:** मानव जीव विज्ञान और भौतिक प्रणालियों पर मंगल के वातावरण के प्रभावों की जांच करना।
- **चालक दल का स्वास्थ्य और सुरक्षा:** लंबी अवधि की अंतरिक्ष यात्रा और मंगल की स्थितियों द्वारा उत्पन्न स्वास्थ्य चुनौतियों पर शोध करना।

महत्व

- यह मंगल अन्वेषण के लिए एक संरचित विज्ञान कार्यसूची (स्ट्रक्चर्ड साइंस एजेंडा) प्रदान करता है, जो केवल ग्रह तक पहुँचने से परे, अर्थपूर्ण वैज्ञानिक खोज पर बल देता है।
- यह अंतरिक्ष एजेंसियों और नीति निर्माताओं द्वारा निर्णयों का मार्गदर्शन करने में सहायता करता है।

आगे की राह

- मंगल मिशन रूपरेखा पत्र वैज्ञानिक खोज और चालक दल की सुरक्षा दोनों पर बल देते हुए लाल ग्रह के मानव अन्वेषण हेतु एक व्यापक ढांचा प्रदान करता है। आगे बढ़ते हुए, अंतरिक्ष एजेंसियों को निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए:

- ✓ **प्रौद्योगिकीय विकास:** मंगल पर सुरक्षित और कुशल मानव संचालन सुनिश्चित करने हेतु जीवन-रक्षक प्रणालियों, विकिरण परिरक्षण, लैंडिंग प्रौद्योगिकियों और सतह गतिशीलता उपकरणों को उन्नत करना।
 - ✓ **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** विशेषज्ञता साझा करने, लागत कम करने और अन्वेषण अभियानों के समन्वय हेतु देशों, अंतरिक्ष एजेंसियों और निजी उद्यमों के बीच साझेदारी को प्रोत्साहित करना।
 - ✓ **मिशन सिमुलेशन और प्रशिक्षण:** उपकरणों के परीक्षण, मानव स्वास्थ्य प्रभावों के अध्ययन और परिचालन प्रोटोकॉल को परिष्कृत करने हेतु पृथ्वी-आधारित अनुरूप मिशन और सिमुलेशन आयोजित करना।
 - ✓ **लैंडिंग-स्थल चयन और ग्रह सुरक्षा:** मंगल और पृथ्वी के प्रति संदूषण जोखिमों को न्यूनतम करते हुए वैज्ञानिक लाभ को अधिकतम करने हेतु संभावित स्थलों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करना।
 - ✓ **क्रमिक अन्वेषण:** मानवयुक्त लैंडिंग से पूर्व पर्यावरणीय डेटा एकत्र करने, प्रौद्योगिकियों को मान्य करने और अनिश्चितताओं को कम करने हेतु पूर्ववर्ती रोबोटिक मिशनों के साथ आरंभ करना।
 - ✓ **नीति और नैतिक ढांचा:** मानव उपस्थिति को नियंत्रित करने, संभावित मंगल जीवन की सुरक्षा करने और उत्तरदायी अन्वेषण सुनिश्चित करने हेतु दिशा-निर्देश विकसित करना।
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सुरक्षा और नैतिकता को व्यवस्थित रूप से जोड़कर, मानवता मंगल के स्थायी और अर्थपूर्ण अन्वेषण के निकट पहुँच सकती है।

भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (IISF) 2025 के बारे में

- यह एक राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार और विज्ञान में सार्वजनिक सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए 2015 में आरंभ किया गया था।
- यह वैज्ञानिकों, छात्रों, नवाचारियों, उद्योग जगत के नेताओं, शिक्षकों और नीति निर्माताओं को एक मंच लाता है।
- वैज्ञानिक उपलब्धियों को प्रदर्शित करने, सहयोग को बढ़ावा देने और युवाओं को प्रेरित करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।
- IISF 2025 पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा आयोजित और आईआईटीम पुणे द्वारा समन्वित किया जा रहा है, जिसमें शामिल है - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT), वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR), अंतरिक्ष विभाग, परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE) तथा विज्ञान भारती (आउटरीच पार्टनर)।
- हाल ही में, IISF 2025 **पंचकूला (हरियाणा)** में आयोजित किया जाएगा; इसका विषय है 'विज्ञान से समृद्धि: एक आत्मनिर्भर भारत के लिए'।

IISF 2025 के उद्देश्य

- आम जनता के बीच वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना।
- अनुसंधान संस्थानों और नागरिकों के बीच के अंतर को कम करना।
- नवाचार को प्रोत्साहित करना और **भारत** के वैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र का प्रदर्शन करना।
- **स्टेम** (STEM) क्षेत्रों में छात्रों के लिए करियर के मार्ग बनाना।

दृष्टिकोण और फोकस क्षेत्र

- उभरती प्रौद्योगिकियों, अंतरिक्ष विज्ञान, स्वास्थ्य नवाचारों, जलवायु अनुसंधान और जैव प्रौद्योगिकी में उपलब्धियों का उत्सव मनाता है।
- राष्ट्रीय विकास और 'विकसित भारत @2047' के चालक के रूप में विज्ञान पर महत्व देता है।
- समाज के सभी वर्गों तक पहुँचने के लिए प्रयोगशालाओं से परे विज्ञान संचार को प्रोत्साहित करता है।

जुड़ाव और आउटरीच

- संरचित कार्यशालाएं, प्रदर्शनियां, हैकाथॉन, इंटरैक्टिव लैब और पैनल चर्चाएं।
- छात्रों के लिए क्रांटम टेक, एआई, रोबोटिक्स, बायोटेक और डीप-टेक उद्यमिता पर आधारित सत्र।

- युवा शिक्षार्थियों को शोधकर्ताओं, इन्व्यूटर्स और उद्योग संरक्षकों के साथ जोड़कर करियर निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना।

भारत के लिए महत्व

- **भारत** के वैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र, नवाचार क्षमता और वैश्विक स्थिति को सुदृढ़ करता है।
- अनुसंधान, नवाचार, कुशल मानव पूंजी और प्रौद्योगिकी नेतृत्व में राष्ट्रीय लक्ष्यों का समर्थन करता है।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में सार्वजनिक-निजी सहयोग को प्रोत्साहित करता है।

निष्कर्ष

IISF 2025 **भारत** की वैज्ञानिक उपलब्धियों का उत्सव मनाने, नवाचार को बढ़ावा देने और विज्ञान के साथ सार्वजनिक जुड़ाव को मजबूत करने के लिए एक जीवंत मंच के रूप में कार्य करता है। शोधकर्ताओं, छात्रों, उद्योग जगत के नेताओं और नीति निर्माताओं को एक साथ लाकर, यह महोत्सव न केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है बल्कि प्रयोगशालाओं और समाज के बीच की खाई को भी पाटता है। उभरती प्रौद्योगिकियों, **स्टेम** में करियर विकास और विज्ञान-संचालित राष्ट्रीय विकास पर अपने ध्यान के साथ, IISF 2047 तक एक आत्मनिर्भर और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी वैज्ञानिक राष्ट्र बनने के **भारत** के दृष्टिकोण को सुदृढ़ करता है।



रक्षा एवं सुरक्षा

दिल्ली कार विस्फोट 2025

चर्चा में क्यों: 11 नवंबर 2025 को दिल्ली के लाल किले के पास एक प्राणघाती कार विस्फोट हुआ, जिसकी जांच गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (UAPA) के तहत की गई। इसमें आठ लोगों की मौत हो गई और यह एक दशक से अधिक समय में राजधानी में आतंकवाद से जुड़ा पहला बड़ा विस्फोट था।

मुख्य विवरण

- यह धमाका लाल किले और चांदनी चौक के पास एक गहन सुरक्षा, अत्यधिक भीड़भाड़ वाले स्थान में हुआ, जिसमें 20 से अधिक लोग घायल हो गए और कई गाड़ियां क्षतिग्रस्त हो गईं।
- दिल्ली पुलिस ने UAPA के साथ-साथ विस्फोटक अधिनियम और आपराधिक कानूनों के तहत मामला दर्ज किया, जिससे आतंकवाद से जुड़े होने का संदेह है।

घटना की पृष्ठभूमि

- यह धमाका चांदनी चौक-नेताजी सुभाष मार्ग के पास, लाल किला मेट्रो स्टेशन के करीब हुआ, जो एक अधिक भीड़भाड़ वाला पर्यटन और व्यावसायिक क्षेत्र है।
- एक धीमी गति से चल रही कार ट्रैफिक सिग्नल पर रुकी और शाम 7 बजे के आसपास उसमें धमाका हो गया, जिससे आस-पास की गाड़ियां और बुनियादी ढांचा क्षतिग्रस्त हो गया।
- दिल्ली पुलिस ने मामला इन धाराओं के तहत दर्ज किया:
 - ✓ गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (UAPA)
 - ✓ विस्फोटक अधिनियम
 - ✓ भारतीय दंड संहिता (IPC) की संबंधित धाराएं

संवैधानिक और वैधानिक ढांचा

- **गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (UAPA), 1967**
 - ✓ भारत का मुख्य आतंकवाद विरोधी कानून, जिसमें 2004, 2008, 2012 और 2019 में महत्वपूर्ण संशोधन किए गए।
 - ✓ **अनुमति:**
 - व्यक्तियों को आतंकवादी के रूप में नामित करना (2019 संशोधन)
 - हिरासत की अवधि बढ़ाना
 - त्वरित सुनवाई के लिए विशेष अदालतें
 - ✓ **उद्देश्य:** भारत की संप्रभुता, अखंडता और सुरक्षा की रक्षा करना।

संघीय ढांचा और पुलिस व्यवस्था

- ✓ पुलिस और सार्वजनिक व्यवस्था राज्य के विषय हैं (सूची II, सातवीं अनुसूची)।
- ✓ हालांकि, आतंकवाद की जांच में अक्सर शामिल होते हैं:
 - NIA (राष्ट्रीय जांच एजेंसी)
 - IB और केंद्रीय खुफिया एजेंसियां
- ✓ दिल्ली, एक केंद्र शासित प्रदेश होने के नाते, अधिक केंद्रीय समन्वय की अनुमति देता है, जिससे यह शहरी सुरक्षा शासन के लिए एक परीक्षण मामला बन जाता है।

शहरी आतंकवाद (अर्बन टेररिज्म)

- प्रतीकात्मक स्थानों को निशाना बनाना (लाल किला - राष्ट्रीय और ऐतिहासिक महत्व)।
- लक्ष्य:
 - ✓ दहशत फैलाना
 - ✓ विश्व भर का ध्यान खींचना
 - ✓ राज्य पर सार्वजनिक विश्वास को कम करना

लॉन वुल्फ अटैक बनाम संगठित अपराध नेटवर्क

- लोन वुल्फ (Lone Wolf) शब्द का उपयोग आतंकवाद के संदर्भ में किया जाता है। इसका हिंदी में शाब्दिक अर्थ होता है 'अकेला भेड़िया'। 'लोन वुल्फ' उस हमलावर या आतंकवादी को कहते हैं जो बिना किसी संगठन के सीधे सहयोग या निर्देश के अकेले ही हमले को अंजाम देता है। यह हमला एक अकेला व्यक्ति करता है। वह किसी आतंकी समूह (जैसे ISIS या अलकायदा) का औपचारिक सदस्य या हिस्सा भी नहीं होता है। आमतौर पर वह किसी कट्टरपंथी विचारधारा, धार्मिक उन्माद या राजनीतिक सोच से प्रेरित होता है। वह सोशल मीडिया या ऑनलाइन प्रोपेगैंडा के माध्यम से ऐसी सोच से प्रभावित होता है।
- 21वीं सदी में दुनिया तेजी से विकसित हो रही है, लेकिन विकास के साथ अपराध भी नए रूपों में सामने आ रहे हैं। आज अपराध केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि संगठित गिरोह, नेटवर्क और अंतरराष्ट्रीय गैंग के रूप में फैल चुका है। ऐसे अपराध जो योजना, संसाधन और नेटवर्क के साथ लगातार किए जाते हैं, उन्हें **संगठित अपराध (Organized Crime)** कहा जाता है।

खुफिया विफलता या सामरिक कमी?

- अधिक निगरानी वाले इलाकों के बावजूद, हमला इन बातों पर सवाल उठाता है:
 - ✓ आखिरी-मील की खुफिया जानकारी

- ✓ एजेंसियों के बीच तालमेल
- ✓ रियल-टाइम जोखिम का आकलन

पिछली घटनाओं से तुलना (विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण)

घटना	वर्ष	प्रकृति	परिणाम
दिल्ली क्रमिक विस्फोट	2008	समन्वित आईईडी हमले	नीति में बदलाव, NSG केंद्र
मुंबई हमला	2008	बहु-लक्ष्यीय आतंकवादी हमला	तटीय सुरक्षा सुधार
दिल्ली विस्फोट	2011	हाई कोर्ट के पास बमबारी	शक्तिशाली सीसीटीवी नेटवर्क
दिल्ली कार विस्फोट	2025	वाहन-जनित विस्फोट	शहरी आतंकवाद पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया गया

सरकारी प्रतिक्रिया और संस्थागत तंत्र

- **तत्काल उपाय**
 - ✓ क्षेत्र को सील किया गया; फॉरेंसिक टीमों को तैनात किया गया
 - ✓ पूर्वोपाय के तौर पर मेट्रो स्टेशन बंद किया गया
 - ✓ गृह मंत्रालय द्वारा उच्च-स्तरीय निगरानी
- **दीर्घकालिक आवश्यकताएँ**
 - ✓ तंत्र मज़बूत करना:
 - CCTV और AI-आधारित निगरानी
 - वाहन ट्रैकिंग और विस्फोटक पहचान
 - सामुदायिक पुलिसिंग और खुफिया जानकारी साझा करना

आगे की राह

- **शहरी आतंकवाद विरोधी रणनीति:** भारत को शहरों के हिसाब से आतंकवाद विरोधी योजनाओं की आवश्यकता है, जो अधिक आबादी वाली और खास जगहों जैसे विरासत स्थल, मेट्रो केंद्रों और बाज़ारों पर मुख्य रूप से केंद्रित रहना। 2008 के मुंबई हमलों और 2025 के दिल्ली धमाके से पता चलता है कि शहरी जगहों पर कई स्तर की सुरक्षा, त्वरित कार्यवाही वाली इकाई और नियमित जोखिम के सततता की आवश्यकता है।
- **सूचना और निगरानी को मज़बूत करना:** मानवीय आसूचना को तकनीक -आधारित निगरानी जैसे AI-आधारित CCTV नेटवर्क और वास्तविक समय वाहनों की निगरानी से पूरा किया जाना चाहिए। 2011 के दिल्ली हाई कोर्ट धमाके के बाद, CCTV आवृत्ति क्षेत्र बढ़ाया गया था, लेकिन समय-समय पर **लेखांकन और वास्तविक समय डाटा एकीकरण** आवश्यक हैं।
- **UAPA के तहत कानूनी सुरक्षा और जवाबदेही:** हालांकि UAPA आतंकवाद से निपटने के लिए आवश्यक है, परंतु बिना परीक्षण के लंबे समय तक हिरासत में रखने से रोकने के लिए सुरक्षा उपायों की

आवश्यकता है। समय-समय पर न्यायिक समीक्षा और संसदीय निगरानी अनुच्छेद 21 के तहत राष्ट्रीय सुरक्षा और मौलिक अधिकारों के बीच संतुलन बनाने में सहायता कर सकती है।

- **अंतर-एजेंसी के साथ समन्वय:** प्रभावी आतंकवाद विरोधी प्रतिक्रिया दिल्ली पुलिस, आसूचना विभाग, NIA और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के बीच बिना किसी रुकावट के समन्वय पर निर्भर करती है। पिछली घटनाओं के अनुसार आसूचना की कमी मुख्य रूप से निवारक कार्रवाई में विलंब करती है, जो बड़े शहरों में एकीकृत कमांड संरचनाओं की आवश्यकता को दर्शाती है।
- **निजता सुरक्षा के साथ तकनीक की स्वीकृति:** चेहरे की पहचान, बम का पता लगाने वाला सेंसर और डेटा विश्लेषक का उपयोग स्पष्ट कानूनी ढांचे के तहत किया जाना चाहिए। उच्चतम न्यायालय का निजता के अधिकार पर बल (पुट्टास्वामी फैसला) निगरानी उपकरणों के आनुपातिक और कानूनी उपयोग को सुनिश्चित करना आवश्यक बनाता है।
- **कट्टरपंथ का मुकाबला और सामुदायिक जुड़ाव:** कट्टरपंथ को रोकने के लिए ऑनलाइन चरमपंथी सामग्री की निगरानी और सामुदायिक पुलिसिंग को मज़बूत करने की आवश्यकता है। विश्वास बनाने के उपायों के माध्यम से इकट्ठा की गई स्थानीय आसूचना कई वैश्विक शहरों में अकेले हमला करने वाले हमलों को रोकने में प्रभावी सिद्ध हुई है।

निष्कर्ष

2025 के दिल्ली कार बम विस्फोट इस बात की याद दिलाते हैं कि अत्यधिक सुरक्षित शहरी क्षेत्रों में भी आतंकवाद एक गतिशील और अनुकूल खतरा बना हुआ है। जबकि यूएपीए और संस्थागत ढांचे जैसे मज़बूत कानूनी उपकरण मौजूद हैं, उनकी प्रभावशीलता खुफिया सटीकता, अंतर-एजेंसी तालमेल और लोकतांत्रिक जवाबदेही पर निर्भर करती है।

न्योमा एयरबेस का परिचालन

चर्चा में क्यों: हाल ही में, पूर्वी लद्दाख में भारत का न्योमा एयरबेस, चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के पास स्थित है, भारतीय वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल ए. पी. सिंह के **सी-130जे एयरक्राफ्ट** को उतारने के साथ चालू हो गया, जिससे भारत के हवाई बुनियादी ढांचे और उत्तरी सीमा पर परिचालन सम्बंधी तैयारियों को एक बड़ा बढ़ावा मिला।

मुख्य विवरण

- **स्थान:** न्योमा (मुध-न्योमा सेक्टर), पूर्वी लद्दाख, चीन सीमा से लगभग 35 किमी दूर।
- **ऊंचाई:** लगभग 13,700 फीट, जो इसे दुनिया के सबसे ऊंचे परिचालन लड़ाकू -सक्षम एयरबेस में से एक बनाता है।
- **लागत और निष्पादन:** सीमा सड़क संगठन (BRO) द्वारा लगभग ₹200 करोड़ की लागत से विकसित किया गया।

- **क्षमता:** फाइटर जेट, ट्रांसमर्थन विमान और तेज़ गति वाले हवाई अभियान का समर्थन कर सकता है।

पृष्ठभूमि

- न्योमा को मूल रूप से 1962 में हेलीकॉप्टर और परिवहन विमानों के लिए एक बुनियादी हवाई पट्टी के रूप में बनाया गया था।
- 2020 में पूर्वी लद्दाख में PLA सैनिकों की तैनाती और झड़पों के बाद, भारत ने न्योमा को एक फ्रंटलाइन फाइटर एयरबेस में अपग्रेड करने का फैसला किया।
- रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सितंबर 2023 में इसकी आधारशिला रखी थी, और यह परियोजना केवल दो वर्ष से कुछ अधिक समय में पूरा हो गया।

न्योमा एयरबेस का रणनीतिक महत्व

- **चीन के खिलाफ बढ़ा नियंत्रण:** न्योमा का संचालन वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) के साथ भारत की निवारण स्थिति को महत्वपूर्ण रूप से सुदृढ़ करता है। चीन की सीमा से इसकी निकटता लड़ाकू विमानों की त्वरित तैनाती और किसी भी वृद्धि की स्थिति में तीव्र प्रतिक्रिया को महत्व देती है।
- **बेहतर परिचालन पहुंच और लचीलापन:** यह हवाई अड्डा भारतीय वायुसेना (IAF) को उच्च ऊंचाई पर निरंतर हवाई संचालन करने में सक्षम बनाता है, जिससे लेह जैसे दूरस्थ आधारों पर निर्भरता कम हो जाती है। यह सॉर्टी दरों, रसद सहायता और उत्तरी क्षेत्र में परिचालन लचीलेपन में सुधार के समन्वय को महत्व देता है।
- **संयुक्त सैन्य अभियानों को समर्थन:** न्योमा थल सेना और वायु सेना को एक मंच पर लाने वाले संयुक्त अभियानों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह अग्रिम क्षेत्रों में तैनात जमीनी बलों के लिए हवाई सहायता को बढ़ाता है और हताहतों को निकालने तथा रसद आपूर्ति के समन्वय में सुधार करता है।
- **सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का विकास:** यह परियोजना सीमावर्ती बुनियादी ढांचे के विकास पर भारत के ध्यान को महत्व देती है, विशेष रूप से 2020 के पश्चात। बेहतर हवाई क्षेत्र, सड़कें और रसद केंद्र सैन्य तैयारी और क्षेत्रीय संपर्क दोनों को सुदृढ़ करने हेतु संसाधनों को एक मंच पर लाते हैं।

सीमा सड़क संगठन (BRO) की भूमिका

- बीआरओ (सीमा सड़क संगठन) ने चुनौतीपूर्ण भूभाग और अत्यधिक प्रतिकूल मौसम की स्थितियों में इस परियोजना का निष्पादन किया।
- यह परियोजना निष्पादन क्षमता में सुधार और रणनीतिक बुनियादी ढांचे की प्राथमिकता को महत्व देती है।
- यह सीमावर्ती क्षेत्रों में तीव्र बुनियादी ढांचा विकास के लिए सरकार के व्यापक प्रयासों के साथ समन्वय स्थापित करती है।

व्यापक रक्षा और सुरक्षा संदर्भ

- भारत लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में कई हवाई अड्डा और उन्नत लैंडिंग ग्राउंड (ALG) को उन्नत कर रहा है।
- न्योमा लेह, थोइस और दौलत बेग ओल्डी (DBO) जैसे अन्य प्रमुख एअरबेस का पूरक है।
- यह चीन के साथ अनसुलझे सीमा विवादों के बीच विश्वसनीय पारंपरिक प्रतिरोध बनाए रखने की भारत की रणनीति में अनुकूल है।

चुनौतियाँ

- **अत्यधिक भूभाग और जलवायु परिस्थितियाँ:** न्योमा हवाई अड्डा लगभग 13,700 फीट की ऊँचाई पर स्थित है, जहाँ अत्यधिक शीत, ऑक्सीजन के निम्न स्तर और प्रचंड पवने कर्मियों और उपकरणों दोनों को प्रभावित करती हैं। ऐसी स्थितियाँ विमान के रखरखाव की आवश्यकताओं को बढ़ाती हैं और परिचालन की अवधि को सीमित करती हैं, विशेष रूप से शीतकालीन महीनों के दौरान।
- **रसद और आपूर्ति श्रृंखला की बाधाएं:** पूर्वी लद्दाख में उच्च-गति वाले हवाई संचालन को बनाए रखने के लिए ईंधन, स्पेयर पार्ट्स और गोला-बारूद की निर्बाध आपूर्ति की आवश्यकता होती है। सीमित सड़क संपर्क और मौसम के प्रति संवेदनशील मार्गों पर निर्भरता आपात स्थिति या लंबे गतिरोध के दौरान रसद के **समन्वय** को बाधित कर सकती है।
- **विमान और चालक दल पर परिचालन तनाव:** कम वायु घनत्व और शारीरिक चुनौतियों के कारण उच्च-ऊंचाई वाले ऑपरेशन विमान के इंजन और चालक दल पर अतिरिक्त तनाव डालते हैं। यह विशिष्ट प्रशिक्षण, अनुकूलन प्रोटोकॉल और उच्च परिचालन लागत को **महत्व देता है**।
- **शत्रु की निगरानी और सटीक हमलों के प्रति संवेदनशीलता:** वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) से इसकी निकटता को देखते हुए, **न्योमा** हवाई अड्डा **चीनी** उपग्रहों, ड्रोनों और इलेक्ट्रॉनिक इंटरलिजेंस प्रणालियों द्वारा निरंतर निगरानी में रह सकता है। यह संघर्ष की स्थिति में सटीक हमलों के जोखिम को बढ़ाता है।
- **बुनियादी ढांचे और सहायता पारिस्थितिकी तंत्र का अंतराल:** यद्यपि हवाई अड्डा स्वयं कार्यात्मक है, फिर भी युद्ध के दौरान उत्तरजीविता सुनिश्चित करने हेतु 'हार्डेड शेल्टर', एकीकृत वायु रक्षा प्रणाली और उन्नत रडार कवरेज जैसे सहायक बुनियादी ढांचे के निरंतर उन्नयन के **समन्वय** को यह **महत्व देता है**।

आगे की राह

- **एकीकृत वायु रक्षा प्रणालियों का सुदृढ़ीकरण:** न्योमा को हवाई खतरों से सुरक्षित करने हेतु **भारत** को सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध क्षमताओं सहित स्तरित वायु रक्षा प्रणालियों तैनात करनी चाहिए। उपग्रह-आधारित प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों के साथ एकीकरण प्रतिक्रिया समय और उत्तरजीविता को **महत्व देता है**।

- **रसद और अतिरिक्त व्यवस्था में वृद्धि:** प्रत्येक मौसम के अनुकूल सड़क संपर्क में सुधार, महत्वपूर्ण आपूर्ति का पूर्व-संचय और वैकल्पिक रसद मार्गों को विकसित करना निरंतर संचालन सुनिश्चित करेगा। रसद के **समन्वय** हेतु एयरलिफ्ट और मानवरहित रसद प्लेटफार्मों का अधिक उपयोग संवेदनशील जमीनी मार्गों पर निर्भरता को कम कर सकता है।
- **संयुक्तता और थिएटर कमांड दृष्टिकोण पर ध्यान:** न्योमा को थल सेना और वायु सेना को **एक मंच पर लाने** वाली संयुक्त परिचालन योजनाओं में पूर्णतः एकीकृत किया जाना चाहिए। भविष्य के **थिएटर कमांड** के अंतर्गत **समन्वय** तीव्र निर्णय लेने और जमीनी बलों के समर्थन में वायु शक्ति के प्रभावी उपयोग को **महत्व देता है**।
- **क्षमता निर्माण और मानव संसाधन तत्परता:** नियमित उच्च-ऊंचाई प्रशिक्षण, विशिष्ट चिकित्सा सहायता और कर्मियों की चक्रीय तैनाती थकान को कम करेगी और परिचालन दक्षता में सुधार करेगी। सिमुलेशन-आधारित प्रशिक्षण में निवेश वास्तविक संचालन के दौरान जोखिम को कम करने को **महत्व देता है**।
- **तकनीकी उन्नयन और नेटवर्क-केंद्रित युद्ध:** हवाई अड्डे को सुरक्षित संचार प्रणालियों, वास्तविक समय के खुफिया सूचना साझाकरण और उन्नत निगरानी प्लेटफार्मों के माध्यम से **भारत** के नेटवर्क-केंद्रित युद्ध ढांचे के साथ **एक मंच पर लाना** अनिवार्य है। यह सटीक संचालन और बेहतर स्थितिजन्य बोध को **महत्व देता है**।
- **राजनयिक और रणनीतिक संकेतन:** सैन्य बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने के साथ-साथ, **भारत** को गलत गणनाओं को रोकने के लिए स्थापित तंत्रों के माध्यम से **चीन** के साथ राजनयिक जुड़ाव जारी रखना चाहिए। **न्योमा** का संचालन अपनी क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए **भारत** के संकल्प के संकेत के रूप में कार्य करने को **महत्व देता है**।

निष्कर्ष

न्योमा हवाई अड्डे का संचालन **भारत** की रक्षा तत्परता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह हाल के सीमा तनावों से प्राप्त अनुभवों को दर्शाता है और उत्तरी सीमा पर अपनी वायु शक्ति, बुनियादी ढांचे और निवारण क्षमता को सुदृढ़ करने की **भारत** की प्रतिबद्धता के **समन्वय** को **महत्व देता है**।

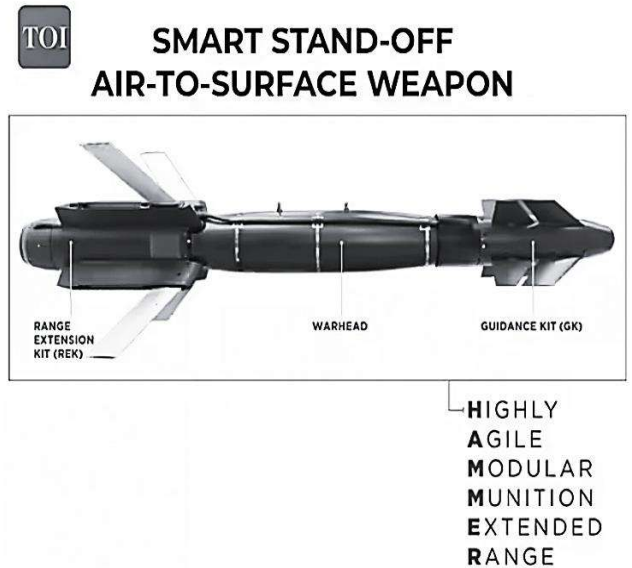
भारत के बम निरोधक तंत्र को सशक्त बनाना

चर्चा में क्यों? हाल ही में, बीआईएस ने विस्फोटक खतरों के खिलाफ सुरक्षा बलों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपकरणों की सुरक्षा, प्रदर्शन और विश्वसनीयता में सुधार के लिए बम निपटान प्रणालियों के परीक्षण के लिए भारत का पहला राष्ट्रीय मानक आईएस 19445:2025 अधिसूचित किया।

आईएस 19445:2025 की मुख्य विशेषताएं

- **स्वैच्छिक मानक:** यह मानक प्रकृति में स्वैच्छिक है और इसका उपयोग सरकारी खरीद एजेंसियों, निर्माताओं, परीक्षण संस्थानों और मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं द्वारा किया जाना है।

- **समान परीक्षण ढांचा:** यह बम निरोधक प्रणालियों के मूल्यांकन के लिए एक सामान्य और संरचित कार्यप्रणाली प्रदान करता है, जिससे परीक्षण एजेंसियों में एकरूपता सुनिश्चित होती है।
- **भारत-विशिष्ट अनुकूलन:** अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं से प्रेरणा लेते हुए, यह मानक भारतीय जोखिम के परिदृश्यों और परिचालन स्थितियों के अनुरूप बनाया गया है।
- **गुणवत्ता आश्वासन:** क्षेत्र में तैनाती से पहले बम निरोधक उपकरणों के प्रदर्शन, सुरक्षा और विश्वसनीयता पर बल देता है।



राष्ट्रीय मानक की आवश्यकता

- **विविध जोखिम का परिवेश:** भारत को कई तरह के विस्फोटक खतरों का सामना करना पड़ता है, जिसमें तात्कालिक विस्फोटक उपकरण (IEDs), वाहन-जनित विस्फोटक और बिना फटे आयुध शामिल हैं। मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय मानक घनी शहरी बसाव और विविध क्षेत्रों जैसी स्थानीय परिचालन स्थितियों को पूरी तरह से ध्यान में नहीं रखते हैं।
- **अंतरराष्ट्रीय मानकों की सीमाएं:** कई वैश्विक मानक या तो मुश्किल से उपलब्ध हैं या भारतीय सुरक्षा आवश्यकताओं के साथ पूरी तरह से संगत नहीं हैं। इससे परीक्षण प्रथाओं और खरीद निर्णयों में विसंगतियां पैदा हुईं।
- **बढ़ते स्वदेशी विनिर्माण:** भारत में कई सार्वजनिक और निजी खिलाड़ी बम निरोधक प्रणालियों का निर्माण कर रहे हैं, ऐसे में उपकरणों की सुरक्षा, विश्वसनीयता और अंतरसंचालनीयता सुनिश्चित करने के लिए एक समान परीक्षण मानक आवश्यक है।

आंतरिक सुरक्षा के लिए महत्व

- **सुरक्षा कर्मियों की बढ़ी हुई सुरक्षा:** मानकीकृत परीक्षण सीधा प्रसारण बम निरोधक अभियानों के दौरान उपकरण की विफलता के जोखिम को कम करता है, जिससे पुलिस, अर्धसैनिक बलों और विशेष बम दस्तों के कर्मियों की सुरक्षा में सुधार होता है।

- **बेहतर परिचालन आत्मविश्वास:** एक राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत परीक्षण ढांचा उच्च जोखिम वाले अभियानों के दौरान तैनात बम निरोधक प्रणालियों के प्रदर्शन के बारे में सुरक्षा एजेंसियों के बीच आत्मविश्वास बढ़ाता है।
- **बेहतर खरीद निर्णय:** सरकारी एजेंसियां उपकरण खरीदते समय एक स्पष्ट बेंचमार्क पर भरोसा कर सकती हैं, जिससे पारदर्शी और वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने में मदद मिलती है।

स्वदेशी रक्षा विनिर्माण पर प्रभाव

- स्पष्ट तकनीकी बेंचमार्क प्रदान करके गुणवत्ता-संचालित विनिर्माण को प्रोत्साहित करता है।
- भारतीय निर्माताओं को उत्पाद डिजाइन और परीक्षण प्रक्रियाओं को उन्नत करने में सहायता करता है।
- घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भारतीय बम निरोधक प्रणालियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत सिद्धांतों के साथ संरेखित करके उनकी वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाता है।

शामिल संस्थानों की भूमिका

- **भारतीय मानक ब्यूरो (BIS):** भारत के राष्ट्रीय मानक निकाय के रूप में मानक तैयार किए और अधिसूचित किए।
- **गृह मंत्रालय (MHA):** आंतरिक सुरक्षा आवश्यकताओं को देखते हुए इस आवश्यकता की पहल की।
- **टर्मिनल बैलिस्टिक अनुसंधान प्रयोगशाला (TBRL):** विस्फोटक खतरों और परीक्षण मानकों से संबंधित तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान की।

चुनौतियाँ

- चूंकि यह मानक स्वैच्छिक है, इसलिए इसका व्यापक रूप से अपनाया जाना हितधारकों के बीच जागरूकता और स्वीकृति पर निर्भर करता है।
- विकसित हो रही विस्फोटक तकनीकों और जोखिम के पैटर्न के साथ तालमेल बिठाने के लिए लगातार अपडेट करने की आवश्यकता होगी।
- प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए परीक्षण प्रयोगशालाओं की क्षमता निर्माण आवश्यक है।

आगे की राह

- सरकारी खरीद नीतियों में आईएस 19445:2025 का धीरे-धीरे एकीकरण।
- राज्यों भर में मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं की क्षमता बढ़ाना।
- उभरते खतरों से निपटने के लिए मानक की समय-समय पर समीक्षा और संशोधन।
- रक्षा और सुरक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भर भारत के व्यापक लक्ष्यों के साथ तालमेल।

निष्कर्ष

आईएस 19445:2025 की शुरुआत भारत के आंतरिक सुरक्षा बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। बम निपटान प्रणालियों के परीक्षण के लिए एक समान, भारत-विशिष्ट मानक स्थापित करके, देश ने परिचालन सुरक्षा में सुधार, स्वदेशी विनिर्माण का समर्थन करने और विस्फोटक खतरों के खिलाफ तैयारी बढ़ाने की दिशा में एक सक्रिय कदम उठाया है। समय के साथ, इस मानक का प्रभावी कार्यान्वयन आतंकवाद विरोधी अभियानों को सुरक्षित और अधिक विश्वसनीय बना सकता है।

भारत-फ्रांस रक्षा सहयोग: हैमर आयुध सामग्री

चर्चा में क्यों: हाल ही में, भारत और फ्रांस ने भारत में हाइली एजाइल मॉड्यूलर म्यूनिशन एक्सटेंडेड रेंज (HAMMER) सटीक-निर्देशित अस्त्र प्रणाली के विनिर्माण हेतु एक संयुक्त उद्यम सहयोग समझौते (JVCA) पर हस्ताक्षर किए हैं, जो द्विपक्षीय रक्षा औद्योगिक सहयोग के समन्वय को महत्व देता है।

मुख्य विवरण

- **हथियार प्रणाली:** हाइली एजाइल मॉड्यूलर म्यूनिशन एक्सटेंडेड रेंज (HAMMER)
- **विकास:** सफ़रन इलेक्ट्रॉनिक्स और रक्षा विभाग, फ्रांस
- **प्रकार:** सटीक निर्देशित वायु से सतह पर मार करने वाला (Precision-Guided Air-To-Ground) आयुध सामग्री
- **रेंज/ मारक क्षमता :** 70 किमी तक (सैन्य कूटनीति क्षमता)
- **प्लेटफॉर्म:** राफेल लड़ाकू विमान और तेजस हल्के लड़ाकू विमान (LCA)
- **स्वदेशीकरण लक्ष्य:** लगभग 60%

हैमर आयुध सामग्री के बारे में

- हैमर एक मॉड्यूलर हथियार प्रणाली है जो एक मार्गदर्शन और प्रणोदन किट का उपयोग करके पारंपरिक अनियंत्रित बमों को सटीक-निर्देशित आयुध सामग्री में बदल देती है। यह विभिन्न युद्ध स्थितियों में उच्च सटीकता के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **मुख्य विशेषताएं**
 - ✓ दुश्मन के वायु रक्षा क्षेत्र के बाहर से सैन्य कूटनीति हमले करने में सक्षम बनाता है।
 - ✓ GPS-रहित या इलेक्ट्रॉनिक युद्ध वाले स्थिति में भी सटीकता बनाए रखता है।
 - ✓ स्थिर और चलते-फिरते दोनों तरह के लक्ष्य के विरुद्ध प्रभावी।
- **परिचालन महत्व**
 - ✓ इस प्रणाली का उपयोग हाल ही में भारत ने ऑपरेशन सिंदूर में किया है और यह आयातित और स्वदेशी दोनों तरह के लड़ाकू

प्लेटफॉर्म के साथ समन्वित होकर भारतीय वायु सेना की परिचालन लचीलापन को बढ़ाता है।

• भारत के लिए रणनीतिक महत्व

- ✓ भारत की स्पष्ट हमले और गहरी आक्रामक क्षमताओं को बढ़ावा देता है।
- ✓ लड़ाकू विमानों को दुश्मन के वायु रक्षा प्रणाली से होने वाले जोखिम को कम करता है।
- ✓ घरेलू मैनुफैक्चरिंग बढ़ने से मेक इन इंडिया पहल को समर्थन मिलता है।
- ✓ भारत-फ्रांस रक्षा संबंधों को गहराई प्रदान करता है, जिसमें लड़ाकू विमान इंजन सह-विकास और राफेल मरीन की खरीद शामिल है।

निष्कर्ष

हैमर आयुध सामग्री (HAMMER munition) का स्वदेशी उत्पादन उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकियों में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, साथ ही फ्रांस के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी को भी सुदृढ़ करता है। यह बढ़ी हुई युद्ध की तैयारी और दीर्घकालिक रक्षा औद्योगिक क्षमता में योगदान देता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. हैमर आयुध सामग्री के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह फ्रांस में विकसित एक सटीक-निर्देशित वायु-से-जमीन हथियार है।
2. यह स्टैंड-ऑफ स्ट्राइक क्षमता प्रदान करता है और जीपीएस-वंचित वातावरण में भी कार्य कर सकता है।
3. यह भारतीय वायु सेना के केवल आयातित लड़ाकू विमानों के साथ संगत है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

अभ्यास 'त्रिशूल'

चर्चा में क्यों: हाल ही में, भारत ने पाकिस्तान के साथ पश्चिमी सीमा पर बड़े पैमाने पर त्रि-सेवा सैन्य अभ्यास 'त्रिशूल' शुरू किया, जिसका उद्देश्य सर क्रीक क्षेत्र में बढ़ी हुई सुरक्षा चिंताओं के बीच परिचालन तैयारी और संयुक्त युद्ध-क्षमता का प्रदर्शन करना है।

प्रमुख विवरण:

- **प्रकार:** त्रि-सेवा सैन्य अभ्यास (Tri-service military exercise)
- **भाग लेने वाली सेनाएँ:** भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेना
- **अवधि:** 30 अक्टूबर 2025 से 10 नवंबर 2025
- **कार्यक्षेत्र:** थार मरुस्थल क्षेत्र – जैसलमेर (राजस्थान) से सिर क्रीक (गुजरात) तक
- **आंतरिक कोडनेम:** महागुर्जर

अभ्यास 'त्रिशूल' के बारे में

- अभ्यास 'त्रिशूल' भारतीय सशस्त्र बलों का एक व्यापक त्रि-सेवा अभ्यास है, जिसका उद्देश्य तीनों सेनाओं (सेना, नौसेना और वायु सेना) के बीच समन्वय और अंतर-संचालन क्षमता को सुदृढ़ करना है। इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य जटिल और विकसित होती सुरक्षा परिस्थितियों में एकीकृत संचालन के लिए सैन्य तैयारियों को केंद्र में रखता है।
- **मुख्य उद्देश्य**
 - ✓ सेना, नौसेना और वायु सेना के संयुक्त परिचालन सिद्धांतों का परीक्षण और परिष्करण करना।
 - ✓ बहु-क्षेत्रीय युद्ध के लिए तैयारियों को बढ़ाना, जिसमें भूमि, समुद्र, वायु और साइबर क्षेत्र शामिल हैं।
 - ✓ गहन प्रहार संचालन, उभयचर हमले और समन्वित युद्ध मिशन का अभ्यास करना।
 - ✓ हाल ही में शामिल किए गए स्वदेशी हथियार प्रणालियों का निकट-वास्तविक युद्धक्षेत्र परिस्थितियों में सत्यापन करना।

परिमाण और भागीदारी

- **भारतीय सेना:** T-90S और अर्जुन मेन बैटल टैंक, आर्टिलरी सिस्टम, आर्म्ड हेलीकॉप्टर और मिसाइल यूनिट के साथ 20,000 से ज्यादा सैनिकों की तैनाती।
- **भारतीय वायु सेना:** राफेल और सुखोई -30 एमकेआई लड़ाकू विमान, परिवहन और हवाई ईंधन भरने वाले विमान (आईएल -78), एयरबोर्न अल्टी वार्निंग एंड कंट्रोल (AEW&C) प्लेटफार्मों और मानव रहित हवाई वाहनों के साथ तेजी से हवाई संचालन।
- **भारतीय नौसेना:** उभयचर और समुद्री युद्ध अभ्यास करने के लिए गुजरात व सौराष्ट्र के तटों पर फ्रिगेट & विध्वंसक तैनात किए गए हैं।

एयरस्पेस पर पाबंदियां (NOTAM)

- भारतीय वायु सेना ने एक नोटिस टू एयरमेन (NOTAM) जारी किया है, जिसमें अभ्यास के दौरान राजस्थान और गुजरात के कुछ हिस्सों के ऊपर नागरिक हवाई यातायात पर प्रतिबंध लगाया गया है। पाकिस्तान ने भी कथित तौर पर 28-29 अक्टूबर 2025 के आसपास अपनी सैन्य गतिविधियों के संबंध में अपने मध्य और दक्षिणी एयरस्पेस पर अस्थायी प्रतिबंध लगाए हैं।

निष्कर्ष

अभ्यास 'त्रिशूल' संयुक्त और एकीकृत थिएटर स्तर के संचालन पर भारत के बढ़ते जोर को दर्शाता है। पश्चिमी मोर्चे पर बड़े पैमाने पर तीनों सेनाओं का सैन्य अभ्यास आयोजित करके, भारत का लक्ष्य प्रतिरोध क्षमता बढ़ाना, तीनों सेनाओं के बीच समन्वय में सुधार करना और उभरते पारंपरिक और हाइब्रिड खतरों के खिलाफ युद्ध की तैयारी सुनिश्चित करना है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. अभ्यास 'त्रिशूल' के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह एक त्रि-सेवा सैन्य अभ्यास है जिसमें सेना, नौसेना और वायु सेना शामिल हैं।
2. यह भूमि, समुद्र, वायु और साइबर डोमेन में एकीकृत संचालन पर केंद्रित है।
3. यह विशेष रूप से उच्च ऊंचाई वाले हिमालयी क्षेत्रों में आयोजित किया जाता है।

उपर्युक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

सीडीडी-2025 के मुख्य फोकस क्षेत्र

- जटिल वैश्विक व्यवस्था में भारत की विकसित होती सुरक्षा चुनौतियाँ
- रक्षा सुधार तथा सैन्य आधुनिकीकरण
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वायत्त प्रणालियाँ, साइबर तथा अंतरिक्ष जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों की भूमिका
- संयुक्तता, एकीकरण तथा बहु-क्षेत्रीय युद्ध
- रणनीतिक स्वायत्तता तथा रक्षा में आत्मनिर्भरता

मुख्य विवरण

- **रक्षा मंत्री** ने वैश्विक शक्ति केंद्रों के बदलते स्वरूप और शांति एवं संघर्ष के बीच धुंधली होती रेखाओं के आलोक में रक्षा सुधारों की आवश्यकता पर बल दिया।
- **आत्मनिर्भर भारत**, डिजिटलीकरण, हरित पहल, बुनियादी ढांचे के विकास और सैनिकों एवं पूर्व सैनिकों के कल्याण पर विशेष बल दिया गया।
- रणनीतिक स्वायत्तता को परिचालन सैन्य क्षमता, लचीले रक्षा-औद्योगिक आधार, सुरक्षित प्रौद्योगिकियों और बाहरी निर्भरता में कमी पर निर्भर बताया गया।
- विचार-विमर्श युद्धक्षेत्र में समानता लाने वाली प्रौद्योगिकी, पारंपरिक युद्ध के सिद्धांतों में बदलाव और सूचना एवं संज्ञानात्मक सुरक्षा के बढ़ते महत्व पर केंद्रित था।

परिणाम एवं रणनीतिक महत्व

- एकीकृत, चुस्त और तकनीकी रूप से सक्षम सशस्त्र बलों की आवश्यकता को सुदृढ़ किया गया।
- **भारतीय सेना** के दीर्घकालिक परिवर्तन रोडमैप (ट्रांसफॉर्मेशन रोडमैप) के लिए व्यावहारिक इनपुट प्रदान किए गए।
- सैन्य अनुभव, रणनीतिक विचार और नीति निर्माण के बीच समन्वय को सशक्त किया गया।

निष्कर्ष

चाणक्य रक्षा संवाद 2025 ने रक्षा सुधारों, तकनीकी नवाचार और आत्मनिर्भरता के माध्यम से एक मजबूत, सुरक्षित और विकसित राष्ट्र के निर्माण के लिए भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। इस संवाद में इस बात पर जोर दिया गया कि राष्ट्रीय सुरक्षा, रणनीतिक स्वायत्तता और एक स्थिर वैश्विक शक्ति के रूप में भारत की भूमिका के लिए भविष्य के लिए तैयार सेना आवश्यक है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. चाणक्य रक्षा संवाद (CDD) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह भारतीय सेना द्वारा एक रणनीतिक थिंक टैंक के सहयोग से आयोजित किया जाता है।

चाणक्य डिफेंस डायलॉग (CDD) - 2025

चर्चा में क्यों: हाल ही में, सेंटर फॉर लैंड वारफेयर स्टडीज (CLAWS) के सहयोग से भारतीय सेना द्वारा आयोजित दो दिवसीय चाणक्य रक्षा संवाद (सीडीडी) 2025, रक्षा सुधारों, नई सुरक्षा चुनौतियों और प्रौद्योगिकी-संचालित परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करने के साथ नई दिल्ली के मानकशां सेंटर में संपन्न हुआ।

मुख्य विवरण

- **थीम:** रिफॉर्म टू ट्रांसफॉर्म – सशक्त, सुरक्षित और विकसित भारत
- **आयोजक:** भारतीय सेना तथा भू-युद्ध अध्ययन केंद्र (CLAWS)
- **स्थान:** मानकशां सेंटर, नई दिल्ली
- **अवधि:** दो दिवसीय (28 नवंबर 2025 को समाप्त)
- **मुख्य गणमान्य व्यक्ति:** रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह; जनरल उपेंद्र द्विवेदी, थलसेना प्रमुख

चाणक्य रक्षा संवाद के बारे में

- चाणक्य रक्षा संवाद (सीडीडी) **भारतीय सेना** का एक प्रमुख रणनीतिक मंच है जो भारत के सुरक्षा वातावरण, रक्षा सुधारों और भविष्य के युद्ध रुझानों पर विचार-विमर्श करने हेतु सैन्य नेतृत्व, नीति निर्माताओं, राजनयिकों, शिक्षाविदों और वैश्विक विशेषज्ञों को एक मंच पर लाता है।

2. इसका फोकस रक्षा सुधारों, संयुक्तता तथा युद्ध में उभरती प्रौद्योगिकियों पर रहता है।
3. यह भारत के रणनीतिक साझेदारों के साथ ही आयोजित होने वाला द्विपक्षीय संवाद है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

भारत की विमानन विजन 2047

चर्चा में क्यों: हाल ही में, नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने विकसित भारत @2047 के अनुरूप विमानन क्षेत्र के लिए भारत के दीर्घकालिक रोडमैप की रूपरेखा प्रस्तुत की, जिसमें समावेशी विकास और आर्थिक विस्तार के समर्थन हेतु उड़ान (UDAN), डिजी यात्रा (Digi Yatra), ड्रोन पीएलआई (Drone PLI) और विधायी सुधारों जैसी योजनाओं की परिवर्तनकारी भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

मुख्य विवरण

- **भारत** विश्व का तीसरा सबसे बड़ा घरेलू विमानन बाजार है।
- हवाई अड्डों की संख्या 2014 में 74 से बढ़कर 2025 में 163 हो गई है; जबकि 2047 तक 350-400 हवाई अड्डों का लक्ष्य है।
- विमानन क्षेत्र 7.7 मिलियन से अधिक नौकरियों को समर्थन देता है।
- **उड़ान:** 1.56 करोड़ यात्री, 3.23 लाख उड़ानें, 649 मार्ग, 93 हवाई अड्डे जोड़े गए।

भारत का विमानन विकास प्रक्षेप पथ

- **भारत** का विमानन क्षेत्र आर्थिक विकास, क्षेत्रीय एकीकरण और रोजगार सृजन के एक प्रमुख चालक के रूप में उभरा है।
- घरेलू यात्री यातायात पिछले दशक में 10-12% की वार्षिक दर से बढ़ा है, जिसे बढ़ती आय, नीतिगत सुधारों और बुनियादी ढांचे के विस्तार से समर्थन मिला है।
- 2040 तक, यात्री यातायात लगभग 1.1 बिलियन तक पहुँचने का अनुमान है, जिसके साथ वाणिज्यिक विमान बेड़े का महत्वपूर्ण विस्तार होगा।

उड़ान योजना तथा क्षेत्रीय संयोजकता

- उड़ान (उड़े देश का आम नागरिक - UDAN) योजना, जो 2016 में शुरू की गई, ने हवाई यात्रा को सस्ता तथा सुलभ बनाकर लोकतांत्रिक बनाया है।
- इसने छोटे शहरों, पहाड़ी क्षेत्रों, द्वीपों और आकांक्षी जिलों को राष्ट्रीय विमानन नेटवर्क से जोड़ा है, जिससे पर्यटन, व्यापार और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा मिला है।

- इस योजना ने वाणिज्यिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए 'वायबिलिटी गैप फंडिंग' के साथ सैकड़ों क्षेत्रीय मार्गों को क्रियान्वित किया है।

रोजगार एवं आर्थिक प्रभाव

- पर्यटन, लॉजिस्टिक, विनिर्माण और सेवाओं के माध्यम से विमानन का अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- यह क्षेत्र वर्तमान में लाखों नौकरियों को समर्थन देता है और 2047 तक लगभग 25 मिलियन नौकरियां पैदा करने की उम्मीद है, जो एक विकसित अर्थव्यवस्था की ओर **भारत** की यात्रा के मुख्य स्तंभ के रूप में उभर रहा है।

सरकार की प्रमुख पहलें

- **कृषि उड़ान:** कृषि और खराब होने वाले उत्पादों के तीव्र परिवहन की सुविधा प्रदान करता है, जिससे किसानों और पूर्वोत्तर एवं जनजातीय क्षेत्रों को लाभ होता है।
- **लाइफटाइम उड़ान:** कोविड-19 महामारी जैसी आपात स्थितियों के दौरान चिकित्सा और आवश्यक वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की।
- **ग्रीनफील्ड हवाई अड्डा नीति:** क्षमता विस्तार और भीड़भाड़ कम करने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से नए हवाई अड्डों के निर्माण को सक्षम बनाती है।
- **डिजी यात्रा:** चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग करके कागज रहित और संपर्क रहित हवाई यात्रा की शुरुआत की, जिससे यात्री अनुभव में सुधार हुआ।
- **ड्रोन नियम, 2021 एवं ड्रोन पीएलआई योजना:** घरेलू ड्रोन विनिर्माण और वाणिज्यिक उपयोग को बढ़ावा देती है, जिससे ड्रोन पारिस्थितिकी तंत्र मजबूत होता है।
- **भारतीय वायुयान अधिनियम, 2024:** वैश्विक मानकों के अनुरूप विमानन कानून का आधुनिकीकरण करता है और **'मेक इन इंडिया'** एवं **आत्मनिर्भर भारत** का समर्थन करता है।

विजन 2047

भारत का विमानन विजन समावेशी संपर्क, तकनीकी नवाचार, स्थिरता और कौशल विकास पर केंद्रित है। हवाई अड्डों का विस्तार, स्वच्छ ईंधन, डिजिटल प्रणाली और स्वदेशी विनिर्माण एक लचीला और भविष्य के लिए तैयार विमानन पारिस्थितिकी तंत्र तैयार करेगा।

निष्कर्ष

भारत का नागरिक उड्डयन क्षेत्र आर्थिक संवृद्धि, राष्ट्रीय एकीकरण और वैश्विक संपर्क का एक प्रमुख सक्षमकर्ता बन गया है। नीतिगत सुधारों, बुनियादी ढांचे के विस्तार और प्रौद्योगिकी अपनाने के माध्यम से, यह क्षेत्र **विकसित भारत @2047** को साकार करने में निर्णायक भूमिका निभाने के लिए तैयार है, यह सुनिश्चित करते हुए कि विकास समावेशी, टिकाऊ और रोजगार-प्रधान बना रहे।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. उड़ान योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसका उद्देश्य हवाई यात्रा को सस्ता बनाकर क्षेत्रीय हवाई संयोजकता को बढ़ाना है।
2. यह क्षेत्रीय मार्गों पर संचालन के लिए विमान कंपनियों को व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण प्रदान करती है।
3. यह नीति आयोग द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से कार्यान्वित की जाती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. भारत में समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में सिविल एविएशन सेक्टर की भूमिका पर चर्चा करें। जांच करें कि UDAN और Digi Yatra जैसी सरकारी पहल भारत के विजन 2047 में कैसे योगदान करती हैं। (150 शब्द, 10 अंक)

- निर्माता: कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (CSL), कोच्चि
- स्वदेशीकरण स्तर: 80% से अधिक स्वदेशी सामग्री
- परिचालन क्षेत्र: तटीय और उथले पानी के क्षेत्र

आईएनएस माहे के बारे में

- **आईएनएस माहे** आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत विकसित माहे-श्रेणी की ASW-SWC श्रृंखला का प्रमुख पोत है। यह मुख्य रूप से स्वदेशी प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके उन्नत नौसैनिक मंचों के डिजाइन और निर्माण में **भारत** की प्रगति को दर्शाता है।
- **परिचालन भूमिका**
 - ✓ इस पोत को विशेष रूप से तटीय और उथले पानी में उच्च गति के संचालन के लिए डिजाइन किया गया है। इसके प्राथमिक कार्यों में पनडुब्बी का पता लगाना और उसे नष्ट करना, तटीय निगरानी और तट के समीप महत्वपूर्ण समुद्री संपत्तियों की सुरक्षा करना शामिल है।
- **प्रमुख क्षमताएं**
 - ✓ उन्नत गतिशीलता (मैनूवरेबिलिटी) और गति के साथ तटीय युद्ध के लिए अनुकूलित।
 - ✓ पकड़े जाने की संभावना को कम करने के लिए इसमें स्टील्थ (गोपनीय) विशेषताएं शामिल हैं।
 - ✓ निकट-तटीय वातावरण में पानी के नीचे के खतरों के विरुद्ध सटीक संचालन के लिए सुसज्जित।

सांकेतिक महत्व

केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में मालाबार तट पर ऐतिहासिक तटीय शहर माहे के नाम पर रखा गया, यह जहाज कलारीपयट्टू में इस्तेमाल की जाने वाली एक पारंपरिक लचीली तलवार 'उरुमी' का प्रतीक है। यह प्रतीक युद्ध में चपलता, सटीकता और प्रभावशीलता का प्रतिनिधित्व करता है।

निष्कर्ष

आईएनएस माहे (INS Mahe) के चालू होने से स्वदेशी उथले पानी के लड़ाकू जहाजों की एक नई पीढ़ी को शामिल किया गया है। यह भारत की तटीय सुरक्षा मुद्रा को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाता है, साथ ही रक्षा विनिर्माण और समुद्री सुरक्षा तैयारियों में आत्मनिर्भरता को भी मजबूत करता है।

आईएनएस माहे : स्वदेशी पनडुब्बी-रोधी युद्ध पोत

चर्चा में क्यों: भारत मुंबई के नेवल डॉकयार्ड में आईएनएस माहे को सेवा में शामिल (कमीशन) किया गया है, जो स्वदेशी जहाज निर्माण क्षमताओं को सुदृढ़ करता है और तटीय एवं निकट-तटीय समुद्री सुरक्षा को मजबूत करता है।

मुख्य विवरण

- पोत प्रकार: एंटी-सबमरीन वॉरफेयर शैलो वाटर क्राफ्ट (ASW-SWC)
- श्रेणी: माहे-श्रेणी

सामाजिक मुद्दे

राजस्थान - बाल श्रम कानून में सुधार

चर्चा में क्यों: हाल ही में, राजस्थान सरकार ने राज्य में दुकानों और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को नियंत्रित करने वाले श्रम कानूनों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। इन परिवर्तनों का उद्देश्य बाल अधिकारों की रक्षा करना, कार्य परिस्थितियों में सुधार करना और राज्य के श्रम नियमों को राष्ट्रीय मानकों और वैश्विक बाल संरक्षण मानदंडों के साथ संरेखित करना है।

संशोधन की मुख्य विशेषताएं

- **14 वर्ष से कम आयु के बाल श्रम पर प्रतिबंध**
 - ✓ राजस्थान में 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों के दुकानों और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों में कार्य करने पर अब पूर्णतः प्रतिबंध लगा दिया गया है।
 - ✓ यह कदम मौजूदा बाल संरक्षण मानदंडों को सुदृढ़ करता है और यह सुनिश्चित करता है कि छोटे बच्चों का उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य की कीमत पर श्रम के लिए शोषण न हो।
- **प्रशिक्षुओं (अप्रेंटिस) के लिए न्यूनतम आयु में वृद्धि**
 - ✓ वाणिज्यिक कार्यस्थलों में शिक्षुओं के लिए न्यूनतम आयु 12 से बढ़ाकर 14 वर्ष कर दी गई है।
 - ✓ इस परिवर्तन का उद्देश्य स्कूली शिक्षा के शुरुआती वर्षों की रक्षा करना और यह सुनिश्चित करना है कि बच्चे पहले शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करें।
- **किशोरों (14-18 वर्ष) के कार्य पर प्रतिबंध**
 - ✓ 14 से 18 वर्ष की आयु के किशोरों को रात्रि के समय कार्य करने की अनुमति नहीं है।
 - ✓ इस प्रतिबंध का उद्देश्य उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, मानसिक विकास और समग्र कल्याण की रक्षा करना है।
- **संशोधित कार्य के घंटे के नियम**
 - ✓ संशोधन के माध्यम से अधिकतम दैनिक कार्य घंटों को 9 से बढ़ाकर 10 घंटे कर दिया गया है।
 - ✓ त्रैमासिक ओवरटाइम सीमा में भी वृद्धि की गई है, जिससे श्रमिक सुरक्षा बनाए रखते हुए नियोक्ताओं के लिए परिचालन लचीलेपन में सुधार होने की संभावना है।

सरकार का तर्क

- ये संशोधन आर्थिक विकास और श्रमिक कल्याण के बीच संतुलन स्थापित करते हैं।
- ये परिवर्तन संवेदनशील (सुभेद्य) आयु समूहों की रक्षा करते हुए राजस्थान में वाणिज्यिक गतिविधियों के विस्तार में सहायता करेंगे।

- 14 वर्ष से कम आयु के बाल श्रम को प्रतिबंधित करने और किशोरों के लिए रात्रि कार्य को सीमित करने से निरंतर स्कूली उपस्थिति और 14-18 वर्ष के बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य परिणामों का समर्थन होने की अपेक्षा है।

कानूनी और नीतिगत निहितार्थ

- ये संशोधन **भारत** के व्यापक विधायी ढांचे, जैसे 'बाल और किशोर श्रम (निषेध और विनियमन) अधिनियम, 1986' के अनुरूप हैं, जो पहले से ही 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के नियोजन पर रोक लगाता है और किशोरों की कार्य परिस्थितियों को विनियमित करता है।
- राज्य स्तर पर इन सुरक्षा उपायों को सुदृढ़ और विस्तारित करके, राजस्थान राष्ट्रीय बाल अधिकार कानूनों और बाल संरक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ अपने अनुपालन को सुदृढ़ करता है।

महत्व

- **बच्चों के लिए:** यह सुनिश्चित करता है कि उन्हें ऐसे कार्य से सुरक्षा मिले जो शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास में बाधा डाल सकते हैं।
- **नियोक्ताओं के लिए:** व्यवसायों को न्यूनतम कार्य आयु और कार्य के घंटों के संबंध में अद्यतन मानदंडों का पालन करना होगा।
- **समाज के लिए:** यह बाल श्रम को समाप्त करने और एक सुरक्षित एवं अधिक न्यायपूर्ण कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करता है।

निष्कर्ष

राजस्थान के श्रम सुधार बाल अधिकारों और कल्याण की सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। 14 वर्ष से कम आयु के श्रम पर प्रतिबंध लगाकर और किशोरों के कार्य समय को विनियमित करके, राज्य का लक्ष्य आर्थिक गतिविधि और बाल संरक्षण के बीच संतुलन बनाना है।

यूपीएससी सिविल सेवा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारम्भिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. राजस्थान में श्रम कानूनों में हालिया संशोधन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. दुकानों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के रोज़गार पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया है।
2. 14 से 18 वर्ष के किशोरों को नियोक्ताओं की अनुमति से रात्रि के घंटों में कार्य करने की अनुमति है।
3. व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में प्रशिक्षुओं के लिए न्यूनतम आयु बढ़ा दी गई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 3

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. 14 वर्ष से कम उम्र के बाल श्रम पर प्रतिबंध लगाने और किशोरों के लिए रात्रि में काम को प्रतिबंधित करने के महत्व पर चर्चा कीजिए। ऐसे उपाय भारत में बाल अधिकारों की सुरक्षा और सामाजिक विकास में कैसे योगदान करते हैं? (10 अंक, 150 शब्द)

भारत में भविष्य के कैंसर का बोझ

चर्चा में क्यों: हाल के एक रोग-पूर्वानुमान अध्ययन ने वर्ष 2030 तक भारत में अग्र्याशय, कोलोरेक्टल और स्तन कैंसर के कारण होने वाली मृत्यु में महत्वपूर्ण वृद्धि का अनुमान लगाया है।

मुख्य विवरण

- अध्ययन का उद्देश्य 2030 तक भारत में भविष्य की कैंसर मृत्यु दर के रुझानों का पूर्वानुमान लगाना था।
- इसने राष्ट्रीय स्तर पर कैंसर से होने वाली मौतों के ऐतिहासिक डेटा (2000 से 2019 तक) का उपयोग किया।
- इन अनुमानों को तैयार करने के लिए **एरिमा (ARIMA)** - ऑटोरेग्रेसिव इंटीग्रेटेड मूविंग एवरेज नामक सांख्यिकीय मॉडलिंग तकनीक का उपयोग किया गया था।
- समय के साथ जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन को ध्यान में रखने के लिए आयु-मानकीकृत मृत्यु दर (ASMR) की गणना की गई थी।

मुख्य निष्कर्ष

- **विशिष्ट कैंसर से बढ़ती मृत्यु दर**
 - ✓ **अग्र्याशय का कैंसर (Pancreatic Cancer):** इसकी आक्रामक प्रकृति के कारण भविष्य में कैंसर से होने वाली मौतों में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहने का अनुमान है।
 - ✓ **कोलोरेक्टल कैंसर:** इसकी मृत्यु दर में ऊपर की ओर रुझान देखा गया है और 2030 तक इसके बढ़ते रहने की अपेक्षा है।
 - ✓ **स्तन कैंसर:** महिलाओं में, 2025 और 2030 के बीच स्तन कैंसर से होने वाली मौतों में सबसे तीव्र वृद्धि होने का अनुमान है।
- **लिंग-विशिष्ट रुझान**
 - पुरुषों में, कोलोरेक्टल और अग्र्याशय कैंसर के कारण होने वाली मौतों में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है।
 - महिलाओं में, स्तन कैंसर की मृत्यु दर में सबसे अधिक वृद्धि होने की अपेक्षा है, जिसके बाद फेफड़े और कोलोरेक्टल जैसे अन्य कैंसर आते हैं।

कैंसर बोझ के बदलते स्वरूप

- ✓ भारत में समग्र कैंसर मृत्यु दर का स्वरूप संक्रमण से संबंधित कैंसर और तंबाकू से जुड़े कैंसर से हटकर जीवनशैली और चयापचय परिवर्तनों से जुड़े कैंसर की ओर स्थानांतरित हो रहा है।
- ✓ यह बदलाव आहार परिवर्तन, मोटापा और कम शारीरिक गतिविधि जैसे विकसित होते जोखिम कारकों को दर्शाता है।

ये परिवर्तन क्यों हो रहे हैं?

- **जनसंख्या की आयु वृद्धि और विस्तार:** भारत की जनसंख्या वृद्ध हो रही है, और वृद्ध आबादी में कैंसर विकसित होने का जोखिम अधिक होता है, जिससे अधिक मृत्यु होती है।
- **जीवनशैली और व्यवहारगत जोखिम कारक:** अस्वास्थ्यकर आहार, गतिहीन जीवनशैली, मोटापा और चयापचय रोगों के बढ़ते रुझान कैंसर के जोखिम को बढ़ाने में योगदान करते हैं।
- **कुछ पारंपरिक जोखिम कारकों में गिरावट:** तंबाकू के उपयोग और घरेलू वायु प्रदूषण से संबंधित कैंसर से होने वाली मौतें कम हो रही हैं, संभवतः बेहतर जागरूकता और कम जोखिम के कारण।

नीतिगत निहितार्थ

- **प्रारंभिक पहचान की आवश्यकता:** स्तन कैंसर के लिए मैमोग्राफी और कोलोरेक्टल कैंसर के लिए कोलोनोस्कोपी जैसे स्क्रीनिंग कार्यक्रमों का विस्तार करने से कैंसर का शीघ्र पता लगाने में सहायता मिल सकती है, जब उपचार अधिक प्रभावी होता है।
- **स्वास्थ्य देखभाल अवसंरचना को सुदृढ़ करना:** निदान और उपचार सेवाओं में सुधार की आवश्यकता है, विशेष रूप से ग्रामीण और कम सेवा वाले क्षेत्रों में।
- **सार्वजनिक जागरूकता और रोकथाम:** भविष्य में कैंसर से होने वाली मौतों को नियंत्रित करने के लिए परिवर्तनीय जोखिम कारकों (जैसे आहार, व्यायाम और धूम्रपान) के बारे में जागरूकता बढ़ाना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

वर्ष 2030 तक अग्र्याशय, कोलोरेक्टल और स्तन कैंसर से होने वाली मौतों में अनुमानित वृद्धि भारत में कैंसर के बढ़ते बोझ को रेखांकित करती है। यह रुझान भविष्य की मृत्यु दर को कम करने और स्वास्थ्य परिणामों में सुधार के लिए उन्नत स्क्रीनिंग, सुदृढ़ सार्वजनिक स्वास्थ्य रणनीतियों, शीघ्र निदान () और निवारक उपायों की आवश्यकता पर बल देता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. एक हालिया अध्ययन के अनुसार, वर्ष 2030 तक भारत में निम्नलिखित में से किस कैंसर की मृत्यु दर में महत्वपूर्ण वृद्धि होने का अनुमान है?

1. अग्र्याशय कैंसर
2. कोलोरेक्टल कैंसर
3. स्तन कैंसर
4. गर्भाशय ग्रीवा कैंसर

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1, 2 और 3
- (c) केवल 2, 3 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (b)

कर्नाटक - मासिक धर्म अवकाश नीति

चर्चा में क्यों: हाल ही में, कर्नाटक सरकार ने औपचारिक रूप से एक ऐतिहासिक **मासिक धर्म अवकाश नीति (Menstrual Leave Policy)** अधिसूचित की है, जिसके तहत महिला कर्मचारियों को उनके **मासिक धर्म के दौरान प्रत्येक माह एक सवैतनिक अवकाश (Paid Leave)** प्रदान किया जाएगा। यह कदम कर्नाटक को सभी क्षेत्रों में राज्यव्यापी मासिक धर्म अवकाश अधिकार लागू करने वाले पहले भारतीय राज्यों में से एक बनाता है।

मुख्य विवरण

- इस नीति के तहत, महिला कर्मचारी हर महीने एक दिन के सवैतनिक मासिक धर्म अवकाश का अधिकार हैं, जो वार्षिक **12 दिन** होता है।
- यह **18 से 52 वर्ष** की आयु की महिलाओं के लिए लागू है।
- यह नीति **सार्वजनिक (सरकारी) और निजी क्षेत्र** दोनों के कर्मचारियों को कवर करती है।
- यह स्थायी, संविदात्मक (contractual) और आउटसोर्स नौकरियों में कार्यरत उन महिलाओं पर लागू होता है जो फैक्ट्री अधिनियम, दुकान और वाणिज्यिक प्रतिष्ठान अधिनियम, बागान श्रमिक अधिनियम आदि सहित विभिन्न श्रम कानूनों के तहत पंजीकृत संस्थानों में कार्यरत हैं।

मुख्य विशेषताएं:

- **सवैतनिक अवकाश:** मासिक धर्म अवकाश पूर्ण वेतन के साथ होगा और इससे वेतन में कोई कटौती नहीं की जानी चाहिए।
- **चिकित्सा प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं:** अवकाश प्राप्त करने के लिए महिलाओं को कोई भी चिकित्सा दस्तावेज प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।
- **अगले माह हस्तांतरित नहीं (Non-Carry Forward):** अनुपयुक्त मासिक धर्म अवकाश को अगले महीने के लिए आगे नहीं बढ़ाया जा सकता; इसे उसी महीने के भीतर उपयोग करना अनिवार्य है।
- इस अवकाश को उपस्थिति/अवकाश रजिस्टर में अलग से दर्ज किया जाना चाहिए और इसे अन्य प्रकार के अवकाशों के साथ नहीं मिलाया जाना चाहिए।

नीति का औचित्य/तर्क

- सरकार का घोषित उद्देश्य मासिक धर्म स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पहचानना, कार्यस्थल पर महिलाओं के कल्याण को बढ़ाना और मासिक धर्म से जुड़ी सामाजिक वंचनाओं (Stigma) को कम करना है।
- ऐसी नीति का उद्देश्य एक समावेशी और सहायक कार्य वातावरण तैयार करना है जो महिलाओं की जैविक आवश्यकताओं को स्वीकार करता है।

अन्य प्रमुख पहलें

- **केरल (2017):** केरल सरकार ने राज्य संचालित उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्राओं के लिए मासिक धर्म अवकाश की शुरुआत की थी।
- **बिहार (1992):** बिहार महिला **सरकारी कर्मचारियों** के लिए **प्रति माह दो दिन** के मासिक धर्म अवकाश की अनुमति देने वाले शुरुआती राज्यों में से एक बना।
- **ओडिशा (2024):** ओडिशा सरकार ने "ममता योजना "और **मासिक धर्म स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर केंद्रित** कार्यस्थल संवेदीकरण कार्यक्रम शुरू किए, हालांकि इसमें **अनिवार्य अवकाश का प्रावधान नहीं** है।
- **निजी क्षेत्र की पहल:** ज़ोमैटो, स्विगी, बायजू और कल्चर मशीन जैसी कंपनियां **स्वेच्छा से मासिक धर्म अवकाश नीतियां प्रदान** करती हैं।

कार्यान्वयन और कानूनी चुनौती

- अधिसूचित होने के बाद, इस नीति को कर्नाटक उच्च न्यायालय में कानूनी चुनौती का सामना करना पड़ा, जिसमें याचिकाओं के माध्यम से श्रम कानून के तहत इस अधिसूचना के आधार पर प्रश्न उठाए गए।
- उच्च न्यायालय ने शुरू में ऐसे ही एक सरकारी आदेश पर रोक लगा दी थी, लेकिन बाद में उस रोक को हटा लिया और विस्तृत आपत्तियों पर सुनवाई की प्रक्रिया निर्धारित की गई।

महत्व

- इस अधिसूचना के साथ, **कर्नाटक निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में** औपचारिक रूप से मासिक धर्म अवकाश अनिवार्य करने वाले **भारतीय राज्यों में अग्रणी** बनकर उभरा है।
- यह उन वैश्विक रुझानों के अनुरूप है जहाँ कुछ देश मासिक धर्म अवकाश प्रदान करते हैं, जिससे मासिक धर्म स्वास्थ्य को कार्यस्थल के एक वैध विचार के रूप में स्थापित किया जा सके।

निष्कर्ष

कर्नाटक सरकार का सवैतनिक मासिक धर्म अवकाश नीति अधिसूचित करने का निर्णय **लैंगिक-संवेदी शासन (जेंडर-सेंसिटिव गवर्नेंस)** और समावेशी कार्यस्थलों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मासिक धर्म को

एक वैध स्वास्थ्य सरोकार के रूप में मान्यता देकर, यह नीति सामाजिक कलंक को कम करने में मदद करती है और महिला श्रमिकों की गरिमा, कल्याण और उत्पादकता को बढ़ावा देती है। हालांकि, सफल कार्यान्वयन के लिए उचित जागरूकता, नियोक्ताओं द्वारा अनुपालन और कानूनी स्पष्टता की आवश्यकता होगी ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह नीति अनपेक्षित कार्यस्थल भेदभाव पैदा किए बिना महिलाओं को सशक्त बनाए।

यूपीएससी सिविल सेवा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. कर्नाटक सरकार द्वारा अधिसूचित मासिक धर्म अवकाश नीति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह नीति महिला कर्मचारियों को प्रति माह एक दिन का सैवैतनिक मासिक धर्म अवकाश प्रदान करती है।
2. मासिक धर्म अवकाश का लाभ उठाने के लिए चिकित्सा प्रमाण पत्र अनिवार्य है।
3. यह नीति श्रम कानूनों के तहत पंजीकृत सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के प्रतिष्ठानों पर लागू होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

- **पुनर्कीकरण का प्रतीकात्मक संकेत:** सुरक्षाकर्मियों ने पूर्व कैडरों को भारतीय संविधान की प्रतियां भेंट कीं, जो लोकतांत्रिक जीवन में उनके पुनर्मिलन की दिशा में एक प्रतीकात्मक कदम था।

पुनर्वास और पुनर्कीकरण नीति

- राज्य सरकार की 'नक्सल आत्मसमर्पण और पुनर्वास नीति 2025' को कैडरों को आत्मसमर्पण के लिए प्रोत्साहित करने वाले एक प्रमुख कारक के रूप में रेखांकित किया गया।
- इस नीति के अंतर्गत, पूर्व माओवादियों को सुचारू पुनर्कीकरण की सुविधा के लिए वित्तीय सहायता, कौशल प्रशिक्षण, आजीविका सहायता, पीएमएवाई (PMAY) के तहत आवास सहायता और अन्य लाभ प्राप्त होते हैं।

महत्व

- **माओवादी आंदोलन को बड़ा झटका:** यह आत्मसमर्पण छत्तीसगढ़ में संगठन की परिचालन क्षमता के लिए एक बड़ा झटका है, विशेष रूप से दंडकारण्य क्षेत्र में — जो ऐतिहासिक रूप से मुख्य माओवादी गढ़ों में से एक रहा है।
- **हिंसा का अंत, विकास की शुरुआत:** अधिकारियों का मानना है कि यह घटना सशस्त्र विद्रोह को और कमजोर करेगी और प्रभावित क्षेत्रों में शांति, विकास और शासन पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देगी।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ में आत्मसमर्पण माओवादी उग्रवाद के विरुद्ध राज्य की लड़ाई में एक ऐतिहासिक मोड़ है। सैकड़ों कैडरों के निशस्त्रीकरण और नागरिक जीवन में लौटने के निर्णय के साथ, यह हिंसक आंदोलन के कमजोर होने और संघर्ष प्रभावित बस्तर क्षेत्र में शांति, स्थिरता और विकास की ओर बदलाव का संकेत देता है।

केरल: अति-निर्धनता का उन्मूलन करने वाला भारत का पहला राज्य

चर्चा में क्यों: हाल ही में, केरल ने आधिकारिक रूप से घोषणा की है कि उसने राज्य के भीतर 'अति-निर्धनता' (एक्सट्रीम पावर्टी) को पूर्णतः समाप्त कर दिया है। इसके साथ ही केरल यह उपलब्धि प्राप्त करने वाला भारत का प्रथम राज्य बन गया है।

'अति-निर्धनता' क्या है?

- अति-निर्धनता (एक्सट्रीम पावर्टी) अभाव के उस अत्यंत गंभीर रूप को संदर्भित करती है जहाँ परिवारों के पास निम्नलिखित मूलभूत आवश्यकताओं की कमी होती है:
 - ✓ पौष्टिक आहार
 - ✓ सुरक्षित आवास

छत्तीसगढ़ - माओवादी कैडरों का आत्मसमर्पण

चर्चा में क्यों: छत्तीसगढ़ में भारतीय राज्य और माओवादी विद्रोहियों के बीच लंबे समय से चल रहे संघर्ष में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम के तहत, 17 अक्टूबर 2025 को बस्तर क्षेत्र में बड़ी संख्या में माओवादी कैडरों ने हथियारों के साथ सरकारी अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। इस घटना को राज्य के हालिया इतिहास में एक ही दिन में होने वाले सबसे बड़े आत्मसमर्पणों में से एक और वामपंथी उग्रवाद (LWE) को कम करने की दिशा में एक प्रमुख मील का पत्थर माना जा रहा है।

मुख्य विशेषताएं

- बड़े पैमाने पर आत्मसमर्पण: जगदलपुर (बस्तर) में महिलाओं की एक महत्वपूर्ण संख्या सहित कुल 208-210 माओवादी कैडरों ने अपने हथियार डाल दिए और समाज की मुख्यधारा में लौट आए।
- **हथियार सौंपे गए:** आत्मसमर्पण करने वाले समूह ने 150 से अधिक हथियार सौंपे, जिनमें एके-47 (AK-47) असॉल्ट राइफलें, इंसास (INSAS) राइफलें, सेल्फ-लोडिंग राइफलें और अन्य हथियार शामिल थे, जिनका उपयोग पहले सुरक्षा बलों के खिलाफ किया जाता था।
- **वरिष्ठ नेताओं की भागीदारी:** आत्मसमर्पण करने वालों में प्रतिबंधित संगठन भाकपा (माओवादी) के कई वरिष्ठ नेता व सदस्य भी शामिल थे।

- ✓ बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएँ
- ✓ आय के सुरक्षित स्रोत
- इसका मापन केवल निम्न आय के आधार पर नहीं, बल्कि दैनिक जीवन को प्रभावित करने वाली **अनिवार्य क्षमताओं के अभाव** के आधार पर किया जाता है।

केरल ने यह लक्ष्य कैसे प्राप्त किया?

- **निर्धनों की लक्षित पहचान:** सरकार ने उन परिवारों की पहचान हेतु विस्तृत सर्वेक्षण किए जो अत्यधिक संकट में जीवन यापन कर रहे थे, विशेष रूप से वे जो मौजूदा कल्याणकारी योजनाओं के दायरे से बाहर थे। गंभीर अभाव सूचकांकों के आधार पर लगभग **64,006 परिवारों** को सहायता हेतु चिन्हित किया गया।
- **सामुदायिक नेतृत्व वाला दृष्टिकोण:** स्थानीय निकायों, स्वयंसेवकों और सामुदायिक कार्यकर्ताओं—जिनमें **कुटुम्बश्री**, आशा (ASHA) कार्यकर्ता और गैर-सरकारी संगठन (NGOs) शामिल हैं—ने उन परिवारों की पहचान और सत्यापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो पूर्व के कल्याणकारी प्रयासों में छूट गए थे।
- **परिवारों हेतु पृथक सूक्ष्म-योजनाएँ :** प्रत्येक चिन्हित परिवार को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप एक अनुकूलित योजना प्रदान की गई, जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित थे:
 - ✓ खाद्य सुरक्षा
 - ✓ आवास सहायता (नया निर्माण अथवा मरम्मत)
 - ✓ स्वास्थ्य सेवा एवं बीमा
 - ✓ जॉब कार्ड और आजीविका सहायता
 - ✓ पहचान पत्र (राशन कार्ड, आधार)

इस लक्षित कार्यक्रम के माध्यम से अधिकांश परिवारों (96% से अधिक) को अति-निर्धनता की श्रेणी से बाहर निकाला जा चुका है।

- **विद्यमान कल्याणकारी प्रणालियों के साथ एकीकरण:** केरल के सुदृढ़ कल्याणकारी ढांचे - जिसमें निःशुल्क स्वास्थ्य सुरक्षा (KASP), सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS), पेंशन और शैक्षिक सहायता शामिल हैं - को निर्धनता उन्मूलन के प्रयासों के साथ प्रभावी रूप से एकीकृत किया गया।
- **निरंतर सरकारी समर्थन:** राज्य सरकार ने उन कल्याणकारी उपायों पर **₹1,000 करोड़** से अधिक व्यय किए, जिन्होंने अति-निर्धनों को संकट से उबारने में सहायता की।

महत्व

- केरल में पहले से ही भारत की न्यूनतम निर्धनता दर थी, जहाँ **बहुआयामी निर्धनता सूचकांक (MPI)** 1% से कम था।
- अति-निर्धनता का उन्मूलन एक प्रमुख **मानव विकास उपलब्धि** के रूप में देखा जा रहा है, जो केरल के लंबे समय से चले आ रहे कल्याणकारी मॉडल की सफलता को पुष्ट करता है।

निष्कर्ष

केरल का भारत के प्रथम 'अति-निर्धनता मुक्त राज्य' के रूप में घोषित होना **लक्षित शासन**, सुदृढ़ कल्याणकारी प्रणालियों और सक्रिय सामुदायिक भागीदारी के प्रभाव को रेखांकित करता है। यद्यपि इस उपलब्धि की पूर्णता पर विभिन्न मत हो सकते हैं, किंतु यह पहल एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करती है कि कैसे अनुकूलित हस्तक्षेप और **सामाजिक समावेशन** के माध्यम से समाज के सर्वाधिक वंचित वर्ग के जीवन में महत्वपूर्ण सुधार लाया जा सकता है।

यूपीएससी सिविल सेवा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. केरल ने हाल ही में घोषणा की है कि उसने अत्यधिक गरीबी को खत्म कर दिया है। इस संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन "अत्यधिक गरीबी" का सर्वोत्तम वर्णन करता है?

- आधिकारिक आय गरीबी रेखा से नीचे रहना।
- भोजन, आवास, स्वास्थ्य सेवा और आजीविका जैसी बुनियादी ज़रूरतों तक पहुँच की कमी।
- स्थायी रोज़गार के बिना ग्रामीण क्षेत्रों में रहना।
- ऐसे परिवार जो किसी भी सरकारी योजना के तहत कवर नहीं हैं।

उत्तर: (b)

मानसिक स्वास्थ्य (मेंटल हेल्थ) की समझ

चर्चा में क्यों: पत्र सूचना कार्यालय (PIB) ने हाल ही में, मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने और इस क्षेत्र में सरकार के प्रयासों को उजागर करने के लिए "मानसिक स्वास्थ्य को समझना — वैश्विक परिप्रेक्ष्य और भारतीय पहल" शीर्षक से एक संक्षिप्त विवरण (इन्फॉर्मेटिव ब्रीफ) जारी किया है। मानसिक स्वास्थ्य को तेजी से एक बुनियादी मानवाधिकार (बेसिक ह्यूमन राइट) के रूप में मान्यता दी जा रही है जो व्यक्तिगत, सामुदायिक और सामाजिक-आर्थिक कल्याण (वेल-बीइंग) के लिए आवश्यक है।

मानसिक स्वास्थ्य (मेंटल हेल्थ) के बारे में

- मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ केवल मानसिक बीमारी से मुक्त होना नहीं है — इसमें भावनात्मक (इमोशनल), सामाजिक (सोशल), संज्ञानात्मक (कॉग्निटिव) और मनोवैज्ञानिक (साइकोलॉजिकल) कल्याण (वेल-बीइंग) सम्मिलित है।
- अच्छा मानसिक स्वास्थ्य लोगों को तनाव (स्ट्रेस) प्रबंधित करने, स्वस्थ संबंध बनाने, सही निर्णय लेने और समाज में सकारात्मक योगदान देने में सहायता करता है।

वैश्विक और भारतीय परिदृश्य

- वैश्विक स्तर पर, प्रत्येक 7 में से 1 व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति (मेंटल हेल्थ कंडीशन) के साथ जी रहा है, जो उत्पादकता और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

- **भारत** में, लगभग प्रत्येक 100 वयस्कों में से 11 किसी न किसी रूप में मानसिक विकार (मेंटल डिऑर्डर) से पीड़ित हैं।
- मानसिक स्वास्थ्य विकार दिव्यांगता (डिसेबिलिटी) में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, विशेष रूप से अवसाद और चिंता (एंजायटी) जैसी स्थितियां जो सभी आयु समूहों को प्रभावित करती हैं।

मानसिक स्वास्थ्य देखभाल में चुनौतियां

- **उपचार अंतराल (ट्रीटमेंट गैप):** भारत में मानसिक बीमारी से ग्रसित बड़ी संख्या में व्यक्तियों को जागरूकता की कमी, सामाजिक कलंक (सोशल स्टिग्मा) और प्रशिक्षित पेशवरों की कमी के कारण **उपचार** नहीं मिल पाता है।
- **भारत** में अनुशंसित संख्या की तुलना में मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों की बहुत कमी है — उदाहरण के लिए, जनसंख्या के अनुपात में मनोचिकित्सकों (साइकियाट्रिस्ट्स) की संख्या वैश्विक मानदंडों से बहुत नीचे है।
- **सामाजिक कलंक (सोशल स्टिग्मा):** भ्रातियां और भेदभाव **उपचार** में देरी या उससे बचने और सामाजिक बहिष्कार (सोशल एक्सक्लूजन) में योगदान करते हैं।

सरकारी कार्रवाई और पहलें

- सरकार ने मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से कई कार्यक्रम शुरू किए हैं, जिनमें प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (प्राइमरी हेल्थकेयर) में मानसिक स्वास्थ्य को एकीकृत करना, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का विस्तार करना और सामुदायिक जागरूकता को बढ़ावा देना शामिल है।
- **टेली मानस (Tele MANAS)** 'टेली मेंटल हेल्थ असिस्टेंस एंड नेटवर्किंग अक्रॉस स्टेट्स' जैसी पहल पूरे **भारत** में लोगों को वर्चुअल काउंसलिंग और सहायता सेवाएं प्रदान करती है।
- **आयुष्मान भारत** के अंतर्गत उन्नत स्वास्थ्य केंद्रों पर मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं, जिससे वे अधिक सुलभ (एक्सेसिबल) और सस्ती हो जाती हैं।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

- खराब मानसिक स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य, उत्पादकता, आर्थिक विकास और सामाजिक संबंधों को प्रभावित कर सकता है, तथा आत्महत्या के जोखिम और सामाजिक अलगाव (सोशल आइसोलेशन) को बढ़ाने में योगदान दे सकता है।
- सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज) प्राप्त करने और समग्र सामाजिक कल्याण (वेल-बीइंग) सुनिश्चित करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य देखभाल में सुधार आवश्यक है।

निष्कर्ष

PIB का यह विवरण नागरिकों, नीति निर्माताओं और हितधारकों (स्टेकहोल्डर्स) को मानसिक कल्याण के महत्व और **भारत** में मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के प्रति एक व्यापक, कलंक-मुक्त (स्टिग्मा-फ्री) दृष्टिकोण की आवश्यकता के बारे में संवेदनशील बनाना चाहता है। उपचार अंतराल (ट्रीटमेंट गैप) को पाटने और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से प्रभावित व्यक्तियों का समर्थन करने के लिए नीति, जागरूकता और सेवा वितरण (सर्विस डिलीवरी) में निरंतर प्रयास महत्वपूर्ण हैं।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. 'टेली-मानस' (Tele-MANAS) पहल, जो हाल ही में समाचारों में देखी गई, मुख्य रूप से किससे संबंधित है?

- ग्रामीण क्षेत्रों में दूरस्थ शिक्षा प्रदान करना।
- पूरे देश में सुलभ और मुफ्त मानसिक स्वास्थ्य परामर्श (काउंसलिंग) प्रदान करना।
- जनजातीय क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता (डिजिटल लिटरेसी) को बढ़ावा देना।
- संक्रामक रोगों की रियल-टाइम (रियल-टाइम) निगरानी करना।

उत्तर: (b)

भारत सरकार द्वारा नई श्रम संहिताएं लागू

चर्चा में क्यों: हाल ही में, भारत सरकार ने चार समेकित श्रम संहिता (लेबर कोड) को प्रभावी बनाकर देश के श्रम ढांचे में एक बड़ा सुधार किया है। यह ऐतिहासिक निर्णय 29 मौजूदा श्रम कानूनों को प्रतिस्थापित करता है, जिनमें से कई पुराने थे और दशकों पहले बनाए गए थे, और उन्हें अधिक आधुनिक एवं सुव्यवस्थित नियमों में बदलता है।

परिवर्तन की आवश्यकता क्यों?

- **भारत** के पूर्ववर्ती श्रम कानून जटिल, खंडित और स्वतंत्रता-पूर्व एवं स्वतंत्रता के प्रारंभिक काल के कई अधिनियमों में विस्तृत थे।
- ये कानून अक्सर कार्य की बदलती प्रकृति, नए उद्योगों और विकसित होते रोजगार संबंधों को प्रतिबिंबित नहीं करते थे। चार श्रम कोडों का उद्देश्य श्रमिकों और नियोक्ताओं दोनों के लिए एक सरल, आधुनिक और संतुलित श्रम कानून ढांचा प्रदान करना है।

वर्तमान में लागू चार श्रम संहिता (लेबर कोड)

- वेतन संहिता (कोड ऑन वेजेस), 2019
- औद्योगिक संबंध संहिता (इंडस्ट्रियल रिलेशंस कोड), 2020
- सामाजिक सुरक्षा संहिता (कोड ऑन सोशल सिक्योरिटी), 2020
- व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता (ऑक्यूपेशनल सेफ्टी, हेल्थ एंड वर्किंग कंडीशंस कोड), 2020

ये संहिताएँ सामूहिक रूप से मजदूरी, औद्योगिक संबंध, सामाजिक सुरक्षा लाभ, सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थितियों को कवर करते हैं।

मुख्य सुधार और लाभ

- **रोजगार का औपचारिककरण (फॉर्मलाइजेशन)**
 - ✓ सभी श्रमिकों को लिखित नियुक्ति पत्र (अपॉइंटमेंट लेटर) देना अनिवार्य है,
 - ✓ जो पारदर्शिता और नौकरी की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।
- **सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा**
 - ✓ गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों सहित सभी श्रमिकों को भविष्य निधि (PF), कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC) और बीमा जैसे सामाजिक सुरक्षा लाभ प्राप्त होंगे।
- **सभी के लिए न्यूनतम मजदूरी**
 - ✓ न्यूनतम मजदूरी प्रत्येक श्रमिक के लिए एक वैधानिक अधिकार (स्टैच्यूटरी राइट) बन गई है, जो उचित वेतन और वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करती है।
- **मजदूरी का समय पर भुगतान**
 - ✓ नियोक्ता कानूनी रूप से समय पर मजदूरी का भुगतान करने के लिए बाध्य हैं।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा**
 - ✓ नियोक्ताओं को 40 वर्ष से अधिक आयु के श्रमिकों के लिए निःशुल्क वार्षिक स्वास्थ्य जांच (हेल्थ चेक-अप) प्रदान करनी होगी।
- **महिलाओं की भागीदारी**
 - ✓ सुरक्षा उपायों और सहमति के साथ महिलाओं को रात्रि पाली (नाइट शिफ्ट) और सभी नौकरी भूमिकाओं में कार्य करने की अनुमति है।
- **सरलीकृत अनुपालन (कम्प्लायंस)**
 - ✓ एकल पंजीकरण (सिंगल रजिस्ट्रेशन), एकल लाइसेंस और एकल रिटर्न की शुरुआत नियोक्ताओं पर प्रशासनिक बोझ को कम करती है।

क्षेत्रवार प्रभाव

- **नियत अवधि के कर्मचारी (फिक्स्ड-टर्म एम्प्लॉइज)**
 - ✓ स्थायी श्रमिकों के समान लाभ और मजदूरी के हकदार;
 - ✓ 5 वर्ष के बजाय 1 वर्ष के बाद ग्रेच्युटी (ग्रेच्युटी) के लिए पात्र।
- **गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिक**
 - ✓ पहली बार कल्याणकारी प्रावधानों के साथ परिभाषित;
 - ✓ राज्यों में पोर्टेबिलिटी के लिए सामाजिक सुरक्षा को आधार से जोड़ा गया है।
- **संविदा कर्मचारी (कॉन्ट्रैक्ट वर्कर्स)**
 - ✓ मुख्य नियोक्ता को स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा लाभ सुनिश्चित करना होगा।
- **युवा श्रमिक**
 - ✓ न्यूनतम मजदूरी और औपचारिक नियुक्ति पत्र नौकरी की गुणवत्ता को सुदृढ़ करते हैं।

बागान और निर्यात श्रमिक

- ✓ बागान श्रमिक अब सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों के अंतर्गत आते हैं;
- ✓ निर्यात क्षेत्र के श्रमिकों को भविष्य निधि, ग्रेच्युटी और अवकाश लाभ मिलेंगे।

अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं

- मजदूरी को बुनियादी मानकों से नीचे गिरने से रोकने के लिए राष्ट्रीय न्यूनतम मजदूरी (नेशनल फ्लोर वेज)।
- लिंग-तटस्थ (जेंडर-न्यूट्रल) वेतन और नौकरी के अवसर।
- दंड देने के बजाय अनुपालन में सहायता के लिए 'निरीक्षक-सह-सुविधाप्रदाता' (इंस्पेक्टर-कम-फैसिलिटेटर) प्रणाली।
- त्वरित विवाद समाधान और सुदृढ़ श्रमिक सुरक्षा।

सुधारों का महत्व

- श्रम कोड का कार्यान्वयन भारत के श्रम शासन में एक ऐतिहासिक बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। यह वादा करता है:
 - ✓ बेहतर श्रमिक कल्याण
 - ✓ उन्नत औपचारिक रोजगार
 - ✓ व्यवसायों के लिए कम अनुपालन बोझ
 - ✓ व्यापक सामाजिक सुरक्षा कवरेज
 - ✓ एक अधिक लचीला और भविष्य के लिए तैयार श्रम पारिस्थितिकी तंत्र।
- सरकार का लक्ष्य आत्मनिर्भर भारत के लिए एक सुरक्षित, उत्पादक और लचीले कार्यबल को बढ़ावा देते हुए भारत के श्रम ढांचे को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना है।

निष्कर्ष

चार श्रम संहिताओं का कार्यान्वयन भारत के श्रम कानूनों में एक नए युग की शुरुआत है, जो श्रमिकों के अधिकारों, सामाजिक सुरक्षा और उचित मजदूरी सुनिश्चित करते हुए नियमों को सरल बनाता है। यह कदम एक आधुनिक, उत्पादक और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी कार्यबल के भारत के दृष्टिकोण को सुदृढ़ करता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा से संबंधित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. नए श्रम संहिताओं के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह 29 पुराने केंद्रीय श्रम कानूनों को चार संहिताओं में समेकित करता है।
2. गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को पहली बार सामाजिक सुरक्षा लाभों के दायरे में लाया गया है।
3. नियत अवधि के कर्मचारियों (फिक्स्ड-टर्म एम्प्लॉइज) के लिए ग्रेच्युटी की पात्रता अवधि 5 वर्ष से घटाकर 1 वर्ष कर दी गई है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सत्य हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d)

ऑनर किलिंग रोकने हेतु प्रस्तावित 'मान्य एक्ट'

चर्चा में क्यों: हाल ही में, मान्या पाटिल की नृशंस हत्या, जिसकी कथित तौर पर एक दलित पुरुष से विवाह करने के कारण उनके अपने माता-पिता द्वारा हत्या कर दी गई थी, ने कर्नाटक में 'ऑनर किलिंग' (तथाकथित सम्मान के नाम पर हत्या) को रोकने के लिए एक विशेष कानून की मांग को तीव्र कर दिया है।

'ऑनर किलिंग' परिवार या समुदाय के सदस्यों द्वारा उन व्यक्तियों के विरुद्ध की जाने वाली हिंसक कार्रवाई है जो जीवनसाथी चुनने में पारंपरिक जाति, समुदाय या पारिवारिक मानदंडों की अवहेलना करते हैं।

क्या मांग की जा रही है?

- जाति आधारित हिंसा के विरुद्ध अभियान चलाने वाले सामाजिक कार्यकर्ता और संगठन कर्नाटक सरकार से एक समर्पित कानून लाने का आग्रह कर रहे हैं, जिसे अस्थायी रूप से "मान्य एक्ट" (**Manya Act**) नाम दिया गया है। इसका उद्देश्य ऑनर किलिंग को रोकना और दोषियों के लिए कठोर दंड सुनिश्चित करना है। उनके तर्क निम्नलिखित हैं:
 - ✓ मौजूदा कानूनी प्रावधान 'ऑनर किलिंग' जैसे अपराधों को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।
 - ✓ एक विशिष्ट कानून अधिक प्रभावी निवारक (Deterrent) के रूप में कार्य करेगा और जाति आधारित हिंसा के विरुद्ध एक स्पष्ट संदेश देगा।

मुख्य दृष्टिकोण

- ऑनर किलिंग अंतर-जातीय विवाहों को हतोत्साहित करती है और सामाजिक समानता को कमजोर करती है।
- वर्तमान कानून गहरी जड़ें जमा चुकी जातीय पूर्वाग्रहों को संबोधित करने में पर्याप्त नहीं हैं।
- किसी भी नए विधान को **शक्ति वाहिनी (Shakti Vahini)** और विशाखा जैसे सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देशों पर आधारित होना चाहिए, ताकि विवाह में बाधा डालने वाले और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन करने वालों को प्रभावी ढंग से दंडित किया जा सके।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

ऑनर किलिंग (सम्मान के नाम पर हत्या) भारत के कुछ हिस्सों में एक गंभीर सामाजिक समस्या बनी हुई है, जो अक्सर जाति (कास्ट) और सामुदायिक दबावों से प्रेरित होती है। मान्य जैसे मामलों ने इस बहस को जन्म दिया है कि क्या मौजूदा कानून पर्याप्त हैं या व्यक्तियों के अपने साथी चुनने के अधिकार की सुरक्षा के लिए एक विशिष्ट वैधानिक ढांचा आवश्यक है।

आगे की राह

- **विधायी कार्रवाई (लेजिस्लेटिव एक्शन)**
 - ✓ एक विशेष कानून बनाना जो स्पष्ट रूप से ऑनर किलिंग को अपराध घोषित करे और दोषियों के लिए कठोर दंड का प्रावधान करे।
 - ✓ समय पर न्याय सुनिश्चित करने के लिए फास्ट-ट्रैक कोर्ट (फास्ट-ट्रैक कोर्ट) और गवाह सुरक्षा (विटनेस प्रोटेक्शन) के प्रावधानों को सम्मिलित करना।
- **कार्यान्वयन और प्रवर्तन (इम्प्लीमेंटेशन एंड एनफोर्समेंट)**
 - ✓ अंतर-जातीय और अंतर-सामुदायिक जोड़ों के विरुद्ध खतरों पर त्वरित प्रतिक्रिया देने के लिए पुलिस और न्यायिक तंत्र को सुदृढ़ करना।
 - ✓ ऑनर-आधारित हिंसा के शुरुआती चेतावनी संकेतों (अर्ली वार्निंग साइन्स) को पहचानने के लिए कानून प्रवर्तन एजेंसियों को प्रशिक्षित करना।
- **सामाजिक जागरूकता और शिक्षा**
 - ✓ जाति और लैंगिक पूर्वाग्रहों (जेंडर प्रेजुडिस) को चुनौती देने के लिए अभियान शुरू करना।
 - ✓ सामाजिक, सांस्कृतिक और सामुदायिक सहायता कार्यक्रमों के माध्यम से अंतर-जातीय विवाहों को बढ़ावा देना।
- **पीड़ित की सहायता (विक्टिम सपोर्ट)**
 - ✓ परिवार या समुदाय के खतरों से बचने वाले उत्तरजीवियों (सर्वाइवर्स) के लिए कानूनी सहायता, परामर्श और पुनर्वास प्रदान करना।
 - ✓ जोखिम वाले व्यक्तियों के लिए हेल्पलाइन (हेल्पलाइन) और आश्रय स्थल (शेल्टर) बनाना।
- **निगरानी और अनुसंधान:**
 - ✓ रुझानों और नीतिगत प्रभावशीलता को ट्रैक करने के लिए ऑनर किलिंग पर एक राज्यव्यापी डेटाबेस (डेटाबेस) बनाए रखना।
 - ✓ नीति निर्माण के लिए सामाजिक दृष्टिकोण पर शैक्षणिक और नागरिक समाज अनुसंधान को प्रोत्साहित करना।

निष्कर्ष

ऑनर किलिंग से निपटने के लिए सुदृढ़ कानून, सक्रिय प्रवर्तन, सामाजिक जागरूकता और पीड़ित सहायता के संयोजन के साथ एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। "मान्य एक्ट" एक मॉडल कानून बन सकता है जो

व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समानता की रक्षा के लिए राज्य की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

निष्कर्ष

"मान्य एक्ट" की मांग कर्नाटक में ऑनर किलिंग और जाति-आधारित हिंसा को संबोधित करने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। यद्यपि मौजूदा कानून कुछ सुरक्षा प्रदान करते हैं, लेकिन ऐसे अपराधों का बने रहना प्रवर्तन और निवारण में कमियों को उजागर करता है। संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार की रक्षा के लिए सामाजिक सुधार और सार्वजनिक जागरूकता के साथ-साथ एक समर्पित कानूनी ढांचा अनिवार्य है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: 'शक्ति वाहिनी बनाम भारत संघ' (2018) का ऐतिहासिक निर्णय मुख्य रूप से किससे संबंधित है?

- (a) कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न
- (b) ऑनर किलिंग और अपनी पसंद के व्यक्ति से विवाह करने का अधिकार।
- (c) निजता का अधिकार (राइट टू प्राइवेसी)।
- (d) सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम (AFSPA) में सुधार।

उत्तर: (b)

चहल एकेडमी द्वारा निःशुल्क पहल



'द हिंदू' और 'इंडियन एक्सप्रेस' से 10
बहुविकल्पीय प्रश्नों की दैनिक प्रश्नोत्तरी

क्यू आर कोड स्कैन करें






इतिहास एवं संस्कृति

अरुणाचलेश्वर मंदिर (तमिलनाडु)

चर्चा में क्यों: हाल ही में, तिरुवन्नामलाई, तमिलनाडु में कार्तिकेय दीपम उत्सव से पूर्व अरुणाचलेश्वर मंदिर के आसपास के अतिक्रमणों को हटा दिया गया ताकि उत्सव की अवधि के दौरान मंदिर आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए स्थान और आवागमन में सुधार किया जा सके।

अवस्थिति और महत्व

- तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई में स्थित, अरुणाचलेश्वर (अन्नामलाईयार) मंदिर पंचभूत स्थलों में से एक है, जो हिंदू परंपरा में अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह भगवान शिव को अरुणाचलेश्वर और देवी उन्नामलाई अम्मन के रूप में समर्पित है।
- मंदिर परिसर द्रविड़ वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें विशाल गोपुरम और विस्तृत मंडप हैं।

सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व

- यह दक्षिण भारत के सबसे पवित्र शैव मंदिरों में से एक है, जो विशेष रूप से उत्सवों के दौरान लाखों भक्तों को आकर्षित करता है।
- कार्तिकेय दीपम यहाँ का सबसे प्रमुख उत्सव है, जिसका मुख्य आकर्षण अरुणाचल पहाड़ी की चोटी पर एक विशाल पवित्र ज्योति (महा दीपम) जलाना है।
- तीर्थयात्री पूर्णिमा की रातों में पहाड़ी के चारों ओर नंगे पैर परिक्रमा करते हैं जिसे गिरिवलम कहा जाता है।

हालिया सरकारी कार्रवाई (समाचार फोकस)

- **अतिक्रमण का हटाना:** तिरुवन्नामलाई के अधिकारियों ने कार्तिकेय दीपम से पहले मंदिर परिसर और उसके आसपास की सड़कों से अतिक्रमण (अवैध दुकानें/स्टॉल और अन्य अनधिकृत संरचनाएं) हटाने का अभियान चलाया।
- **सफाई का उद्देश्य:**
 - ✓ बड़ी भीड़ के लिए पैदल यात्री पथों और गिरिवलम मार्ग को चौड़ा करना।
 - ✓ भीड़ प्रबंधन और सुरक्षा को बढ़ाना, उत्सव के जमावड़े के दौरान आग के खतरों के जोखिम को कम करना।
 - ✓ मंदिर और उसके आसपास की विरासत और पवित्रता को संरक्षित करना।

आगे की राह

- **स्थायी विरासत प्रबंधन:** स्थानीय व्यवसायों और समुदायों का सम्मान करते हुए अतिक्रमणों को रोकने के लिए दीर्घकालिक योजनाएं विकसित करना।
- **बुनियादी ढांचे का उन्नयन:** सुरक्षित तीर्थयात्रा अनुभवों के लिए मंदिर के आसपास के रास्तों, प्रकाश व्यवस्था, स्वच्छता और भीड़ नियंत्रण उपायों में सुधार करना शामिल है।
- **सामुदायिक जुड़ाव:** स्थानीय निवासियों और दुकानदारों को योजनाओं में शामिल करना ताकि ऐसे समाधान बनाए जा सकें जो आजीविका को विरासत संरक्षण के साथ जोड़ने का प्रयास करें।
- **नियमित निगरानी:** भविष्य में अवैध निर्माण को रोकने और तीर्थयात्रियों के लिए खुली जगह बनाए रखने के लिए एक निगरानी तंत्र स्थापित करना।
- **त्योहार की तैयारी:** बड़े आयोजनों के दौरान सुरक्षा, पहुंच और प्रभावी भीड़ प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए वार्षिक त्योहार से पहले ऑडिट लागू करना।

निष्कर्ष

अरुणाचलेश्वर मंदिर के आसपास से अतिक्रमण हटाना सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करने, भक्तों की सुगम आवाजाही की सुविधा प्रदान करने और एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्थल की पवित्रता बनाए रखने के जिम्मेदार प्रयास को दर्शाता है। यह विरासत संरक्षण और आधुनिक शहरी प्रबंधन के बीच नाजुक संतुलन को प्रतिबिंबित करता है, विशेष रूप से कार्तिकेय दीपम जैसे अत्यधिक भीड़ वाले उत्सवों के दौरान।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. तमिलनाडु में अरुणाचलेश्वर मंदिर के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है?

- (a) यह भगवान विष्णु को समर्पित है और कावेरी नदी के तट पर स्थित है।
- (b) सुरक्षा और सुलभता में सुधार के लिए कार्तिकेय दीपम उत्सव से पहले मंदिर के आसपास के अतिक्रमणों को हटा दिया गया था।
- (c) मंदिर अपने मुख्य वार्षिक आयोजन के रूप में दीपावली उत्सव की मेजबानी करता है।
- (d) अरुणाचलेश्वर मंदिर 20वीं शताब्दी में निर्मित एक आधुनिक मंदिर है।

उत्तर: (b)

भारत के शाही राज्यों का संग्रहालय

चर्चा में क्यों: 31 अक्टूबर 2025 को, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एकता नगर (स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के पास), गुजरात में भारतीय शाही रियासत संग्रहालय की आधारशिला रखी। यह आयोजन राष्ट्रीय एकता दिवस की पूर्व संध्या पर हुआ — यह दिन राष्ट्रीय एकता और रियासतों को भारत में एकीकृत करने में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका की स्मृति में मनाया जाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- 1947 में भारत की स्वतंत्रता के समय, उपमहाद्वीप में ब्रिटिश शासित क्षेत्रों के साथ 550 से अधिक रियासतें थीं।
- इन राज्यों को मुख्य रूप से तत्कालीन उपप्रधानमंत्री और गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन' (विलय पत्र) का उपयोग करके भारतीय संघ में एकीकृत किया गया था।
- 1949 तक, लगभग सभी रियासतें भारत में सम्मिलित हो चुकी थीं, जो राष्ट्र के राजनीतिक समामेलन और एकता में एक बड़ी उपलब्धि थी।

उद्देश्य

- भारत की शाही और रियासतों की विरासत का दस्तावेजीकरण और प्रदर्शन करना।
- उन विरासत कलाकृतियों और अभिलेखीय सामग्रियों को संरक्षित करना जो शाही परंपराओं और सांस्कृतिक पहचान पर उनके प्रभाव को दर्शाती हैं।
- एकीकरण की ऐतिहासिक प्रक्रिया और शासन के विकास पर जनता को शिक्षित और संलग्न करना।
- भारत की राजसी और लोकतांत्रिक यात्रा पर अनुसंधान, संरक्षण और सार्वजनिक शिक्षा की सुविधा प्रदान करना।

संग्रहालय का लेआउट — विषयगत गैलरी

- ओरिएंटेशन गैलरी**
 - ✓ फिल्मों और दृश्य-श्रव्य कहानियों के साथ राजशाही और सांस्कृतिक विरासत के विचार से परिचय कराती है।
- सिंहासन और राज्य**
 - ✓ रियासतों के शाही परिवारों, शासन प्रणालियों, परंपराओं, कल्याणकारी प्रथाओं और जीवन शैली को प्रदर्शित करती है।
- भारत के एकीकरण की कहानी:**
 - ✓ 1947 के बाद के राजनीतिक एकीकरण, प्रमुख दस्तावेजों और राष्ट्रीय सुदृढ़ीकरण के आधारभूत कार्यक्रमों पर केंद्रित है।
- एकता का हॉल:**
 - ✓ रियासतों के प्रतीकों और राजचिह्नों को प्रदर्शित करता है, जो राष्ट्रीय एकता में उनके योगदान को श्रद्धांजलि देते हैं।

- अतिरिक्त सुविधाओं में **स्टैच्यू ऑफ यूनिटी** की ओर देखने वाला एक 'व्यूइंग लाउंज' और संग्रहालय कैफे क्षेत्र शामिल हैं।

निष्कर्ष

एकता नगर में भारत के शाही राज्यों के संग्रहालय की स्थापना देश की समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और प्रदर्शित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। भारत की रियासतों की विरासत का दस्तावेजीकरण करके और सरदार वल्लभभाई पटेल के तहत हासिल किए गए राजनीतिक एकीकरण को उजागर करके, यह संग्रहालय एक शैक्षिक संसाधन और राष्ट्रीय एकता के प्रतीक दोनों के रूप में काम करेगा। यह न सिर्फ भारत की शाही परंपराओं का जश्न मनाता है, बल्कि देश की टूटी-फूटी रियासतों से एक मज़बूत लोकतांत्रिक गणराज्य बनने तक की यात्रा के बारे में लोगों की समझ को भी मज़बूत करता है, जिससे इतिहास, विरासत और शासन के प्रति सम्मान बढ़ता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. म्यूज़ियम ऑफ़ रॉयल किंगडम ऑफ़ इंडिया का प्राथमिक उद्देश्य है:

- आधुनिक भारतीय कला का प्रदर्शन करना
- भारत की शाही और रियासती विरासत को संरक्षित करना और प्रदर्शित करना
- केवल विदेशी पर्यटन को बढ़ावा देना
- औपनिवेशिक प्रशासन का दस्तावेजीकरण करना

उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. भारत की शाही और रियासती विरासत को संरक्षित करने और प्रदर्शित करने में प्रस्तावित "म्यूज़ियम ऑफ़ रॉयल किंगडम ऑफ़ इंडिया" के महत्व पर चर्चा करें। (250 शब्द, 15 अंक)

रम्माण उत्सव (उत्तराखंड)

चर्चा में क्यों: हाल ही में, उत्तराखंड विधानसभा के एक विशेष सत्र के दौरान, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को रम्माण मुखौटा (मास्क) और रम्माण उत्सव पर एक पुस्तक भेंट की गई।

रम्माण क्या है?

- रम्माण एक धार्मिक उत्सव और अनुष्ठानिक रंगमंच है जो उत्तराखंड के गढ़वाल हिमालय के लिए अद्वितीय है।
- यह प्रतिवर्ष अप्रैल के अंत में (बैसाखी के आसपास) चमोली जिले के जुड़वां गांवों सलूर-डुंगरा में मनाया जाता है।
- यह उत्सव समुदाय के स्थानीय संरक्षक देवता, भूमियाल देवता का सम्मान करता है।

यूनेस्को (UNESCO) द्वारा मान्यता

- 2009 में यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में अंकित किया गया।
- इसे एक बहुआयामी सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में मान्यता प्राप्त है - जो रंगमंच, संगीत, मौखिक और लिखित परंपराओं तथा ऐतिहासिक पुनर्निर्माणों को जोड़ता है जो समुदाय के पर्यावरणीय, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

ऐतिहासिक उत्पत्ति

- सटीक प्रारंभ तिथि अज्ञात है; प्रथाएं मध्यकालीन अवधि तक खोजी जा सकती हैं।
- प्रारंभ में यह वैष्णव संतों द्वारा गढ़वाल हिमालय में लाई गई रामायण परंपरा से जुड़ा था।
- समय के साथ, स्थानीय जनजातीय लोककथाओं और सामुदायिक वृत्तांतों को प्रदर्शनों में सम्मिलित किया गया।

घटनाक्रम और अनुष्ठान

- उत्सव की शुरुआत बाधाओं को दूर करने वाले भगवान गणेश के आह्वान के साथ होती है।
- इसके बाद सूर्य देव का नृत्य और ब्रह्मा एवं गणेश के जन्म के मिथक का मंचन होता है।
- अन्य अंकों में कृष्ण और राधिका के साथ बुर देवा का नृत्य शामिल है।
- मुख्य खंड रामकथा पर केंद्रित है — भगवान राम के जीवन के प्रसंग — जिन्हें सटीक लय और ताल के साथ गाया और प्रदर्शित किया जाता है।

मुख्य विशेषताएं

A. अनुष्ठानिक रंगमंच और प्रदर्शन

- ✓ इसमें रामायण और स्थानीय किंवदंतियों के प्रसंगों का नाटकीय मंचन शामिल है।
- ✓ इसे गीतों, नृत्यों और नाटकों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है, जो अक्सर स्थानीय लोककथाओं पर आधारित होते हैं।

B. मुखौटे (मास्क) और कला

- ✓ कलाकार भोजपत्र (हिमालयी बर्च छाल) से बने लगभग 18 विशिष्ट प्रकार के मुखौटों का उपयोग करते हैं।
- ✓ मुखौटे (मास्क) रंगीन होते हैं और शहद, हल्दी, ऊन, कालिख, गेहूं का आटा आदि जैसी प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग करके बनाए जाते हैं।

C. संगीत तत्व

- ✓ पारंपरिक ढोल (ढोल, दमाऊ) और वाद्ययंत्र प्रदर्शन के साथ होते हैं।
- ✓ जागर गायन — स्थानीय किंवदंतियों का एक अनुष्ठानिक संगीतमय वर्णन — एक महत्वपूर्ण प्रदर्शन तत्व है।

D. सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व

- ✓ यह मनुष्य, प्रकृति और दिव्य जीवन को जोड़ता है, जो मानव और पर्यावरण के बीच सद्भाव का जन्म मनाता है।
- ✓ यह स्थानीय पहचान, साझा मिथकों, मौसमी चक्र, कृषि समृद्धि और सामूहिक स्मृति को सुदृढ़ करता है।
- ✓ यह उत्सव मौखिक परंपराओं और लोक वृत्तांतों को संरक्षित करने का कार्य भी करता है।

समकालीन प्रासंगिकता

- राज्य अक्सर **रम्माण** को एक जीवंत सांस्कृतिक विरासत के रूप में उजागर करता है, और इसे हाल ही में प्रतीकात्मक रूप से स्वीकार किया गया था (जैसे, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को **रम्माण** मुखौटा (मास्क) भेंट करना)।
- यह परंपरा समुदाय-संचालित बनी हुई है, जिसका उद्देश्य पीढ़ियों तक ज्ञान पहुँचाना और स्थानीय सीमाओं से परे विरासत को संरक्षित करना है।

आगे की राह

- **सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण:** डिजिटल अर्काइविंग, अनुसंधान और युवाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से **रम्माण** जैसी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के दस्तावेजीकरण, संरक्षण और प्रचार की पहल को मजबूत करना।
- **सामुदायिक सहभागिता:** प्रदर्शन, कौशल हस्तांतरण और सांस्कृतिक कलाओं से जुड़े आजीविका के अवसर प्रदान करके स्थानीय समुदायों को उनकी परंपराओं को बनाए रखने में सहायता करना।
- **राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रचार:** क्षेत्रीय उत्सवों की ओर व्यापक ध्यान आकर्षित करने, पर्यटन और अंतर-सांस्कृतिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों और **यूनेस्को** मान्यता का उपयोग करना।
- **शिक्षा में एकीकरण:** भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति जागरूकता और सम्मान पैदा करने के लिए स्कूल और विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में **रम्माण** जैसे क्षेत्रीय लोक कलाओं और उत्सवों पर मॉड्यूल पेश करना।
- **नीतिगत समर्थन:** ऐसी सरकारी योजनाओं को प्रोत्साहित करना जो वित्तीय, तकनीकी और संस्थागत सहायता प्रदान करें ताकि स्थानीय रीति-रिवाजों और पारिस्थितिक विचारों का सम्मान करते हुए ऐसे विरासत उत्सवों की निरंतरता सुनिश्चित हो सके।

निष्कर्ष

यह दृष्टिकोण विरासत संरक्षण, सामुदायिक सशक्तिकरण और सांस्कृतिक जागरूकता को संतुलित करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि **रम्माण** जैसी परंपराएं भावी पीढ़ियों के लिए फलती-फूलती रहें।

यूपीएससी-सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: उत्तराखण्ड के रम्माण उत्सव के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

- यह प्रतिवर्ष सलूर-डुंगरा के गांवों में मनाया जाता है और भूमियाल देवता को समर्पित है।
- यह उत्सव मुख्य रूप से सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्म की स्मृति में मनाया जाता है।
- रम्माण प्रदर्शनों में महाभारत के पात्रों को दर्शाने वाले धातु के मुखौटों का उपयोग किया जाता है।
- इस उत्सव को यूनेस्को द्वारा मान्यता नहीं दी गई है।

उत्तर: (a)

- जनजातीय और समकालीन कलाकारों द्वारा साहस और पहचान को दर्शाने वाली कलाकृतियाँ।
- तेलंगाना**
 - नगरम के सरकारी एसटी बालिका कॉलेज छात्रावास में **बिरसा मुंडा जयंती** — 150वाँ उत्सव।
 - जनजातीय महानायक के सम्मान में पुष्पांजलि और समारोह।
- सिक्किम**
 - गंगटोक के 'खेलो इंडिया स्टेट सेंटर ऑफ़ एकसीलेंस' में जनजातीय छात्र खेल प्रतियोगिता और स्वास्थ्य शिविर।
 - जनजातीय युवाओं के बीच फिटनेस, स्वास्थ्य जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी पर ध्यान।
- महाराष्ट्र**
 - एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (EMRS) इसमें सम्मिलित हुए:
 - कविता पाठ
 - निबंध और रचनात्मक लेखन प्रतियोगिताएं
 - छात्रों के बीच जनजातीय इतिहास और गर्व की भावना को प्रोत्साहित किया गया।

जनजातीय गौरव वर्ष पखवाड़ा समारोह

चर्चा में क्यों: हाल ही में, भारत सरकार 1 से 15 नवंबर 2025 तक **जनजातीय गौरव वर्ष पखवाड़ा** का आयोजन किया। यह **भगवान बिरसा मुंडा** (जिन्हें **धरती आबा** भी कहा जाता है) की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रव्यापी उत्सव का हिस्सा है। इसका आयोजन जनजातीय संस्कृति, विरासत और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा किया गया है।

संपूर्ण भारत में मुख्य गतिविधियाँ

- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह**
 - जरावा क्षेत्र में वृक्षारोपण अभियान।
 - जनजातीय समुदायों के प्रकृति के साथ अंतर्निहित संबंध और पारिस्थितिक संरक्षण पर बल।
- आंध्र प्रदेश**
 - केबी आसिफाबाद के सिरपुर टी में जनजातीय संस्कृति पर केंद्रित चित्रकला प्रतियोगिता।
 - आईटीडीए (ITDA) के अंतर्गत अधिकारियों के लिए ओरिएंटेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिसमें निम्नलिखित योजनाओं को सम्मिलित किया गया है:
 - पीएम जनमन (PM JANMAN)
 - धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान
 - आदि कर्मयोगी अभियान
 - 25 प्रमुख जनजातीय विकास पहलों पर बहु-विभागीय सत्र।
- ओडिशा**
 - भगवान बिरसा मुंडा की विरासत और जनजातीय इतिहास पर चित्रकला प्रदर्शनी।

विषय और महत्व

- सांस्कृतिक और शैक्षिक एकीकरण**
 - जनजातीय विरासत के प्रति राष्ट्रीय समझ को मजबूत करने के लिए जनजातीय कला, साहित्य और सामुदायिक भागीदारी पर ध्यान केंद्रित करना।
- क्षमता निर्माण**
 - प्रशिक्षण कार्यक्रम सरकारी जनजातीय कल्याण योजनाओं के प्रभावी निष्पादन में योगदान देते हैं।
- खेल और स्वास्थ्य**
 - खेल प्रतियोगिताएं और स्वास्थ्य शिविर जनजातीय युवाओं के बीच शारीरिक कल्याण और सामुदायिक भावना को बढ़ावा देते हैं।
- पर्यावरण संरक्षण**
 - वृक्षारोपण अभियान पारिस्थितिक सुरक्षा से जुड़े पारंपरिक जनजातीय ज्ञान को उजागर करते हैं।

निष्कर्ष

जनजातीय गौरव वर्ष पखवाड़ा उत्सव **भगवान बिरसा मुंडा** जैसे जनजातीय नायकों को सम्मानित करने के साथ-साथ जनजातीय संस्कृति, विरासत और पहचान के संरक्षण को बढ़ावा देने के प्रति **भारत** की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। राष्ट्र भर में समुदायों, छात्रों और संस्थानों को सम्मिलित करके, यह पहल जनजातीय आबादी के बीच जागरूकता, गर्व और सामाजिक समावेश को **सुदृढ़** करती है।

भारत में शास्त्रीय भाषाओं की सूची में विस्तार

चर्चा में क्यों: अक्टूबर 2024 में, भारत सरकार ने पाँच अतिरिक्त भाषाओं: मराठी, पाली, प्राकृत, बंगाली और असमिया को यह दर्जा प्रदान करके शास्त्रीय भाषाओं की सूची का विस्तार किया, जिससे कुल संख्या 11 भाषाओं तक पहुँच गई। इससे पूर्व यह संख्या 6 थी।

शास्त्रीय भाषा क्या है?

- भारत में किसी भाषा को कठोर मानदंडों के आधार पर शास्त्रीय नामित किया जाता है, जो प्राचीनता, साहित्यिक उत्कृष्टता और विशिष्ट पहचान का संकेत देते हैं। मान्यता प्राप्त भाषाओं को समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक परंपराओं का संरक्षक माना जाता है।

शास्त्रीय भाषा के दर्जे हेतु आवश्यक मानदंड

भारत इस दर्जे को प्रदान करने के लिए विशिष्ट मानदंडों का पालन करता है:

- **प्राचीनता:**
 - ✓ कम से कम 1,500–2,000 वर्ष पुराने प्रारंभिक ग्रंथ या अभिलेख।
- **समृद्ध साहित्यिक परंपरा**
 - ✓ प्राचीन साहित्य का एक विशाल भंडार जिसे पीढ़ियों से सांस्कृतिक विरासत माना जाता हो।
- **विशिष्ट पहचान**
 - ✓ एक भाषाई परंपरा जो स्वतंत्र, अद्वितीय हो और केवल किसी दूसरी भाषा का व्युत्पन्न न हो।
- **विशिष्ट विकास:**
 - ✓ शास्त्रीय रूप और आधुनिक व्युत्पन्न रूपों के बीच स्पष्ट भिन्नता या विच्छेद।
- **पुरालेखीय और गद्य साक्ष्य**
 - ✓ शिलालेखों, व्याकरण ग्रंथों और विद्वानों की परंपरा के माध्यम से सुदृढ़ साक्ष्य।

शास्त्रीय भाषाओं की सूची (कुल 11)

संख्या	भाषा	शामिल वर्ष
		पहली शामिल शास्त्रीय भाषा
1	तमिल	(2004)
2	संस्कृत	2005
3	कन्नड	2008
4	तेलुगु	2008
5	मलयालम	2013
6	ओडिया	2014
7	मराठी	अक्टूबर 2024
8	पालि	अक्टूबर 2024

9	प्राकृत	अक्टूबर 2024
10	असमिया	अक्टूबर 2024
11	बंगाली	अक्टूबर 2024

शास्त्रीय भाषा के दर्जा का महत्व

- **सांस्कृतिक और सभ्यतागत महत्व:**
 - ✓ भारत की शास्त्रीय भाषाओं को हजारों साल पुराने दार्शनिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक ज्ञान का भंडार माना जाता है।
 - ✓ ऐसी भाषाएँ वर्तमान पीढ़ियों को प्राचीन ज्ञान से जोड़ती हैं, जिससे राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता समृद्ध होती है।
- **प्रतीकात्मक और व्यावहारिक प्रभाव:**
 - ✓ यह किसी भाषा को प्रतिष्ठा प्रदान करता है और भारतीय सभ्यता में उसके योगदान को स्वीकार करता है।
 - ✓ यह साहित्य और विद्वत्ता के दस्तावेज़ीकरण, अनुसंधान और प्रचार के लिए संस्थागत सहायता सुनिश्चित करता है।

शास्त्रीय भाषा की मान्यता के लाभ:

- विद्वानों के लिए अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, जो भारतीय भाषाई परंपराओं की वैश्विक मान्यता में सहायता करते हैं।
- उन्नत अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय विश्वविद्यालयों में उत्कृष्टता केंद्र और व्यावसायिक 'चेयर' की स्थापना।
- ग्रंथों, पुरालेखों और साहित्य के संरक्षण के लिए शैक्षणिक वित्तपोषण और अनुसंधान सहायता।
- अकादमिक, अभिलेखागार, अनुवाद, प्रकाशन और डिजिटल मीडिया में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना।

यूपीएससी सिविल सेवा पारी के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. भारत में किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित करने के लिए निम्नलिखित में से कौन सा/से मानदंड माना जाता है?

1. शुरुआती ग्रंथों की उच्च प्राचीनता
 2. वर्तमान में बोलने वालों की बड़ी संख्या
 3. मूल साहित्यिक परंपरा
 4. शास्त्रीय और आधुनिक रूपों के बीच विशिष्टता
- नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
- (a) केवल 1, 3 और 4
 - (b) केवल 1 और 2
 - (c) केवल 2 और 3
 - (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: भारत में किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित करने के लिए क्या मानदंड हैं? इस दर्जे के सांस्कृतिक महत्व की जांच करें। (150 शब्द, 10 अंक)

4,000 साल पुराने दिलमुन मंदिर की खोज

चर्चा में क्यों: हाल ही में, मोसगार्ड संग्रहालय की एक संयुक्त कुवैती-डेनमार्क पुरातत्व टीम द्वारा फारस की खाड़ी में कुवैत के तट पर स्थित फ़ैलाका द्वीप पर 4,000 वर्ष पुराना कांस्य युग का मंदिर खोजा गया है। इस खोज की घोषणा 'नेशनल काउंसिल फॉर कल्चर, आर्ट्स एंड लेटर्स' (NCCAL) द्वारा 2025 के उत्खनन सत्र के दौरान की गई थी।

अवस्थित मंदिर का विशिष्ट विवरण

- **मंदिर की विशेषताएं**
 - ✓ उत्खनन से एक बड़े मंदिर की संरचना का पूर्ण खाका (लेआउट) प्रकट हुआ है, जिसमें नींव, कई कक्ष और उससे जुड़े कमरे शामिल हैं।
 - ✓ खुदाई में मिट्टी के बर्तन, मुहरें, मनके और **दिलमुन सभ्यता** की विशिष्ट अन्य भौतिक सामग्रियां प्राप्त हुई हैं।
- **दो अध्यारोपित मंदिर**
 - ✓ असामान्य रूप से, एक ही स्थान पर एक-दूसरे के ऊपर स्थित दो मंदिर खोजे गए हैं, जो दोनों लगभग 1900-1800 ईसा पूर्व के हैं।
 - ✓ यह समय के साथ इस स्थल के निरंतर या बार-बार होने वाले अनुष्ठानिक/धार्मिक महत्व को दर्शाता है।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व

- **दिलमुन सभ्यता**
 - ✓ **दिलमुन** पूर्वी अरब की खाड़ी में एक महत्वपूर्ण कांस्य युगीन सभ्यता थी, जो लगभग 3000 से 1600 ईसा पूर्व तक फली-फूली।
 - ✓ प्राचीन **मेसोपोटामिया** के 'क्यूनीफॉर्म' (कीलाक्षर) लेखों में इसका संदर्भ एक समृद्ध भूमि के रूप में मिलता है, जो व्यापार, धर्म और पौराणिक कथाओं से जुड़ी थी।
- **फ़ैलाका द्वीप की रणनीतिक भूमिका**
 - ✓ **फ़ैलाका** बस्तियों के व्यापक **दिलमुन** नेटवर्क में एक प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करता था, जो आधुनिक **कुवैत**, **बहरीन** और पूर्वी **अरब** तक फैला हुआ था।
 - ✓ यह द्वीप **मेसोपोटामिया (इराक)** को **सिंधु घाटी** (दक्षिण एशिया) से जोड़ने वाले समुद्री मार्गों पर स्थित था, जो एक व्यापारिक और **सांस्कृतिक** चौराहे के रूप में कार्य करता था।

व्यापक पुरातात्विक संदर्भ

- **फ़ैलाका** पर **दिलमुन** युग के कई मंदिर और बस्तियां पाई गई हैं, जो इंगित करती हैं कि यह केवल एक अस्थायी चौकी नहीं बल्कि एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र था।
- पिछले पुरातात्विक सर्वेक्षणों से पता चला है कि यह द्वीप विभिन्न ऐतिहासिक चरणों — **दिलमुन**, **मेसोपोटामिया** की बस्तियों,

हेलेनिस्टिक काल और अन्य अवधियों के दौरान निरंतर आबाद रहा था।

इतिहास के लिए यह क्यों महत्वपूर्ण है?

- **खाड़ी की प्राचीनता की समझ को गहरा करना:** यह खोज प्रारंभिक शहरी समाजों के काल से संबंधित खाड़ी क्षेत्र में संगठित धार्मिक वास्तुकला के नए साक्ष्य प्रदान करती है।
- **व्यापार और संस्कृति में अंतर्दृष्टि:** मुहरों और मिट्टी के बर्तनों जैसी कलाकृतियां प्रशासनिक और वाणिज्यिक गतिविधियों की ओर संकेत करती हैं, जो अंतर-क्षेत्रीय विनिमय नेटवर्क में **दिलमुन** की भूमिका को सुदृढ़ करती हैं।
- **सांस्कृतिक विरासत:** यह खोज **कुवैत** की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत और विश्व पुरातत्व में **खाड़ी** के स्थलों के व्यापक महत्व को रेखांकित करती है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: फ़ैलाका द्वीप पर हाल ही में खोजा गया 4,000 वर्ष पुराना मंदिर किस प्राचीन सभ्यता से संबंधित है?

- मेसोपोटामिया
- दिलमुन
- सुमेरियन
- हड़प्पा

उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: प्राचीन समुद्री व्यापार नेटवर्क में दिलमुन सभ्यता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। फ़ैलाका द्वीप से प्राप्त हालिया पुरातात्विक निष्कर्षों के आलोक में इस कथन का परीक्षण कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

दीपावली : यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल

चर्चा में क्यों: भारतीय प्रकाश पर्व, **दीपावली** को आधिकारिक तौर पर **यूनेस्को** की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में सम्मिलित किया गया है। यह निर्णय **नई दिल्ली** के **लाल किले** में आयोजित अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए **यूनेस्को** अंतर-सरकारी समिति के 20वें सत्र (8-13 दिसंबर 2025) के दौरान घोषित किया गया।

दीपावली: सांस्कृतिक और सामाजिक आयाम

- **मूल अर्थ:** एक प्रमुख सांस्कृतिक उत्सव जो अंधकार पर प्रकाश, बुराई पर अच्छाई और आशा एवं नवीनीकरण की विजय का प्रतीक है।
- **उत्सव:**
 - ✓ तेल के दीयों, पटाखों का जलना और घरों एवं सार्वजनिक स्थानों का प्रकाश से जगमगाना।

- ✓ सामाजिक प्रथाओं में परिवार और समुदाय के साथ मिलना, उपहारों और मिठाइयों का आदान-प्रदान, अनुष्ठान और सार्वजनिक सभाएं शामिल हैं।

यूनेस्को और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH)

- **यूनेस्को कन्वेंशन (2003):** अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए कन्वेंशन (17 अक्टूबर 2003 को अपनाया गया) का उद्देश्य उन जीवित परंपराओं और प्रथाओं की रक्षा करना है जो आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के कारण संकट में हैं।
- **प्रतिनिधि सूची:** यह सूची उन सांस्कृतिक प्रथाओं को मान्यता देती है जो सामुदायिक भागीदारी, पीढ़ियों के बीच हस्तांतरण और मानवता के लिए सांस्कृतिक महत्व प्रदर्शित करती हैं।

प्रमुख भारतीय अमूर्त सांस्कृतिक विरासत स्थलों की सूची:

- **उत्सव और अनुष्ठान**
 - ✓ दीपावली (2025): प्रकाश का उत्सव।
 - ✓ गुजरात का गरबा (2023): नवरात्रि के दौरान भक्ति नृत्य।
 - ✓ कोलकाता की दुर्गा पूजा (2021): सामाजिक-धार्मिक उत्सव।
 - ✓ कुंभ मेला (2017): सबसे बड़ा शांतिपूर्ण तीर्थ।
 - ✓ नवरोज (2016, बहुराष्ट्रीय): पारसी नव वर्ष।
 - ✓ रम्माण (2009): गढ़वाल हिमालय का धार्मिक उत्सव।
- **प्रदर्शन कला और परंपराएं**
 - ✓ छाऊ नृत्य (2010): जनजातीय युद्ध नृत्य।
 - ✓ कालबेलिया लोक गीत और नृत्य (2010): राजस्थान का सपेरा समुदाय।
 - ✓ कुटियाट्टम (2008): संस्कृत रंगमंच।
 - ✓ रामलीला (2008): रामायण का नाटकीय प्रदर्शन।
 - ✓ संकीर्तन (2013): मणिपुर का अनुष्ठानिक गायन/नृत्य।
 - ✓ मुदियेट्टु (2010): केरल का अनुष्ठानिक रंगमंच।
- **ज्ञान और प्रथाएं**
 - ✓ योग (2016): प्राचीन भारतीय अभ्यास।
 - ✓ वैदिक जप (2008): पवित्र ग्रंथों का पाठ।
 - ✓ लद्दाख का बौद्ध जप (2012)।
- **शिल्प**
 - ✓ पारंपरिक पीतल और तांबे के बर्तन बनाने की कला (पंजाब के ठठेरे - 2014)।
- **नामांकन के लिए मानदंड**

किसी तत्व को सम्मिलित करने के लिए यह आवश्यक है कि वह:

 - ✓ समुदाय द्वारा मान्यता प्राप्त हो
 - ✓ एक जीवित परंपरा हो
 - ✓ पीढ़ियों तक हस्तांतरित हो
 - ✓ उसके संरक्षण के उपाय हों
 - ✓ समुदाय की स्वतंत्र, पूर्व और सूचित सहमति हो

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची का महत्व

- उन गैर-भौतिक विरासतों की रक्षा करना, जिन्हें स्मारक-केंद्रित दृष्टिकोणों में अनदेखा कर दिया गया है।
 - ✓ सांस्कृतिक विविधता और बहुलवाद को बढ़ावा देना।
 - ✓ सामुदायिक भागीदारी को सुदृढ़ करना।
 - ✓ सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ाना।
 - ✓ स्थानीय आजीविका और पारंपरिक ज्ञान का समर्थन करना

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संबंधित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

1. यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
2. यह 2003 में अपनाए गए यूनेस्को कन्वेंशन द्वारा शासित है।
3. इस सूची में केवल त्योहारों को शामिल किया गया है।
4. नामांकन के लिए सामुदायिक भागीदारी अनिवार्य है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 1
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. "यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची भारत की जीवित परंपराओं को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।" भारत से उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा करें। (150 शब्द, 10 अंक)

फूल वालों की सैर महोत्सव

चर्चा में क्यों: फूल वालों की सैर दिल्ली के मेहरौली में मनाया जाने वाला सदियों पुराना सांस्कृतिक उत्सव है, जो सांप्रदायिक सद्भाव और भारत की समन्वित संस्कृति का प्रतीक है।

मुख्य विवरण

- पारंपरिक रूप से आम बाग में आयोजित होने वाला यह उत्सव हिंदू और मुस्लिम समुदायों को एक साथ लाता है, जो ख्वाजा बख्तियार काकी दरगाह और योगमाया मंदिर में फूलों की श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, साथ ही सांस्कृतिक प्रदर्शन, झूले और जुलूस भी निकलते हैं

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- **19वीं** सदी की शुरुआत में शुरू हुआ यह त्योहार मुगल बादशाहों और स्थानीय शासकों द्वारा संरक्षण दिया जाता था।
- **इसका** नाम, "फूल वालों की सैर", का शाब्दिक अर्थ है "फूल बेचने वालों का जुलूस", जो धार्मिक स्थलों पर चढ़ाए जाने वाले फूलों को दर्शाता है।

- यह त्योहार सांप्रदायिक एकता के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है, जो दिल्ली की गंगा-जमुनी तहज़ीब को दिखाता है।

त्योहार की गतिविधियाँ

- स्थानीय लोगों और कारीगरों द्वारा फूलों के जुलूस निकाले जाते हैं।
- लोक संगीत, नृत्य और नाट्य प्रदर्शन सहित सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।
- खुले मैदानों में सामुदायिक दावतें और पारंपरिक झूले लगाए जाते हैं।
- बच्चे और युवा लोक प्रदर्शनों में भाग लेकर स्थानीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हैं।

प्रशासनिक और पर्यावरणीय पहलू

- यह त्योहार दिल्ली रिज क्षेत्र में होता है, जो पर्यावरण संरक्षण दिशानिर्देशों के तहत आता है।
- आयोजक अनुमति, सुरक्षा व पर्यावरणीय अनुपालन के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण (DDA) और स्थानीय अधिकारियों के साथ समन्वय करते हैं।
- हाल के वर्षों में, प्रक्रियात्मक और नियामक आवश्यकताओं के कारण मंजूरी में देरी हुई है, जो सरकार और सांस्कृतिक निकायों के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता को उजागर करता है।

महत्व

- यह भारत की सांस्कृतिक विविधता और सांप्रदायिक सद्भाव को सुदृढ़ करता है।

- यह पर्यटन आकर्षण का केंद्र बनता है और स्थानीय कारीगरों के लिए आजीविका के अवसर पैदा करता है।
- यह पारंपरिक कलाओं और प्रदर्शनों में युवाओं की भागीदारी के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

निष्कर्ष/आगे की राह

- 'फूल वालों की सैर' इस बात का उदाहरण है कि कैसे पारंपरिक त्योहार विरासत को संरक्षित करते हुए सामाजिक एकता को सुदृढ़ कर सकते हैं। निरंतरता और व्यापक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए:
 - ✓ अधिकारियों को विरासत और पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए मंजूरी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना चाहिए।
 - ✓ सुरक्षा और बुनियादी ढांचे के लिए सरकारी सहायता के साथ त्योहारों के सामुदायिक नेतृत्व वाले प्रबंधन को प्रोत्साहित करना चाहिए।
 - ✓ भारत की मिश्रित परंपराओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए शैक्षिक और पर्यटन आउटरीच को बढ़ावा देना चाहिए।
 - ✓ सांस्कृतिक समारोहों और पारिस्थितिक संरक्षण के बीच संतुलन बनाने के लिए पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों का विकास में सहयोग करना चाहिए।
- इन उपायों को अपनाकर, दिल्ली प्रशासनिक देरी के बिना अपने ऐतिहासिक उत्सवों की मेजबानी करना जारी रख सकती है, जो सांस्कृतिक गौरव और सद्भाव को बढ़ावा देते हैं।

सरकारी योजनाएं

Tex-RAMPS योजना

चर्चा में क्यों: केंद्र सरकार ने **वस्त्र मंत्रालय** (मिनिस्ट्री ऑफ टेक्सटाइल्स) के अंतर्गत वित्त वर्ष 2025-26 से ₹305 करोड़ के कुल परिव्यय (आउटले) के साथ एक नई केंद्रीय क्षेत्र की योजना (सेंट्रल सेक्टर स्कीम) के रूप में **टेक्स-रैम्पस** के शुभारंभ की आधिकारिक घोषणा की है।

Tex-RAMPS क्या है?

Tex-RAMPS का पूर्ण रूप से (Textiles Focused Research, Assessment, Monitoring, Planning and Start-up) योजना है। यह पूर्णतः भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है।

योजना की आवश्यकता क्यों थी?

रणनीतिक आवश्यकता

- ✓ वस्त्र क्षेत्र में न्यून अनुसंधान एवं विकास (R&D) गहनता → सीमित नवाचार।
- ✓ साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण हेतु खंडित डेटा एवं विश्लेषणात्मक क्षमता।
- ✓ विशेष रूप से 'स्मार्ट टेक्सटाइल्स', तकनीकी वस्तुओं एवं संधारणीयता में वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता संवर्धन की आवश्यकता।
- ✓ 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत' एवं वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकरण जैसी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप।

क्षेत्रीय महत्व

- ✓ वस्त्र एवं परिधान (T&A) विनिर्माण उत्पादन, रोजगार एवं निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं (भारतीय अर्थव्यवस्था में व्याप्त)।

Tex-RAMPS के घटक/विशेषताएँ:

इस योजना के पाँच मुख्य स्तंभ हैं:

1. अनुसंधान एवं नवाचार

निम्न क्षेत्रों में उन्नत अनुसंधान को प्रोत्साहन:

- ✓ स्मार्ट टेक्सटाइल्स (वियरेबल्स एवं तकनीकी वस्त्र)।
- ✓ संधारणीयता एवं चक्रीय वस्त्र।
- ✓ प्रक्रिया दक्षता (यथा: न्यून निस्सरण रंजक)।
- ✓ अनुसंधान एवं विकास संस्थानों तथा उद्योगों के मध्य समन्वय।

2. डेटा, विश्लेषण एवं निदान

- ✓ सुदृढ़ डेटासेट का सृजन (रोजगार गणना, आपूर्ति श्रृंखला मानचित्रण, इंडिया-साइज़ निदान)।
- ✓ साक्ष्य-आधारित आकलन एवं नियोजन को सक्षम बनाना।

3. एकीकृत वस्त्र सांख्यिकीय प्रणाली (ITSS)

- ✓ क्षेत्र विशिष्ट निगरानी, नीति मूल्यांकन एवं निर्णय लेने हेतु वास्तविक समय डेटा एवं विश्लेषण मंच।

4. क्षमता विकास एवं ज्ञान पारितंत्र

- ✓ राज्य-स्तरीय नियोजन, कार्यशालाओं, सर्वोत्तम प्रथाओं के प्रसार एवं क्षेत्रीय आयोजनों को सुदृढ़ करना।
- ✓ क्लस्टर स्तर पर डेटा गुणवत्ता एवं निगरानी हेतु राज्यों के साथ समझौता ज्ञापनों (MoUs) पर हस्ताक्षर।

5. स्टार्टअप एवं नवाचार समर्थन

- ✓ उद्यमिता एवं उच्च-मूल्य विनिर्माण को प्रोत्साहित करने हेतु स्टार्टअप, इन्क्यूबेटर्स, हैकार्थन एवं शिक्षाविदों-उद्योगों के मध्य सहयोग को समर्थन।

अपेक्षित परिणाम (लाभ/प्रभाव):

Tex-RAMPS योजना द्वारा निम्नलिखित अनुमानित किया गया है:

- भारतीय वस्त्र निर्यात की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को सुदृढ़ीकरण।
- नवाचार, अनुसंधान एवं विकास (R&D) गहनता तथा उत्पादकता को प्रोत्साहन।
- साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण को सक्षम करना।
- उच्च-मूल्य वाले खंडों में रोजगार के अवसरों को प्रोत्साहित करना।
- केंद्र, राज्यों, शिक्षाविदों एवं उद्योग के मध्य संघीय सहयोग में वृद्धि।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन सी Tex-RAMPS की मुख्य विशेषता है?

1. एकीकृत वस्त्र सांख्यिकीय प्रणाली
2. वस्त्र फर्मों को प्रत्यक्ष ऋण सब्सिडी
3. स्टार्टअप एवं नवाचार समर्थन

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (c)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. हाल ही में स्वीकृत Tex-RAMPS योजना भारत के वस्त्र क्षेत्र को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी और नवाचार-उन्मुख पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तित करने में किस प्रकार सहायक हो सकती है। परीक्षण कीजिए। (250 शब्द, 15 अंक)

भारतीय रेल द्वारा 'आभार' स्टोर को संरक्षण

चर्चा में क्यों: भारतीय रेलवे शिल्प और कारीगरों के उत्पादों के लिए एक डिजिटल बाजार मंच प्रदान करके भारत की स्वदेशी प्रतिभा को बढ़ावा देने के लिए नए लॉन्च किए गए ऑनलाइन स्टोर 'आभार' का प्रचार और समर्थन कर रहा है।

'आभार' ऑनलाइन स्टोर क्या है?

- आभार सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM) पोर्टल पर होस्ट किया गया एक ऑनलाइन स्टोर है।
- यह स्वदेशी जनजातियों, हथकरघा बुनकरों, जनजातीय शिल्पकारों, ग्रामीण उद्यमियों, महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों और स्वयं सहायता समूहों (SHGs) द्वारा निर्मित हस्तनिर्मित उपहार वस्तुओं और शिल्प कौशल उत्पादों की एक श्रृंखला प्रदर्शित करता है।
- इस संग्रह में 'एक जिला एक उत्पाद' (ODOP) पहल और 'भौगोलिक संकेतक' (GI) टैग के अंतर्गत आने वाले उत्पाद सम्मिलित हैं।
- यह सामान केंद्रीय कुटीर उद्योग एम्पोरियम (सीसीआईई), खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) और विभिन्न केंद्रीय/राज्य हस्तशिल्प और हथकरघा एम्पोरियम जैसी एजेंसियों से खरीदा जाता है।

उद्देश्य और महत्व

- **स्थानीय शिल्प कौशल को बढ़ावा देना:** डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से व्यापक बाजार पहुंच प्रदान करके पारंपरिक कला, हथकरघा और स्वदेशी शिल्प को प्रोत्साहित करता है।
- **संस्थागत मांग: भारतीय रेलवे** का संरक्षण संस्थागत सहायता और थोक मांग प्रदान करता है, जिससे शिल्पकारों को संधारणीय बिक्री सुरक्षित करने में सहायता मिलती है।
- **ग्रामीण और समावेशी विकास:** ग्रामीण शिल्पकारों, महिला उद्यमियों, जनजातीय समूहों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए आय के अवसरों को बढ़ाता है।
- **ओडीओपी और जीआई खंडों का प्रचार:** जिला/क्षेत्र-विशिष्ट पहचान वाले उत्पादों के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधता को उजागर करता है।

सरकारी नीतियों के साथ जुड़ाव

- **वोकल फॉर लोकल/आत्मनिर्भर भारत:** यह उन प्रमुख अभियानों के साथ संरेखित है जो आत्मनिर्भरता और स्थानीय उद्यम विकास पर बल देते हैं।
- **एक स्टेशन एक उत्पाद (OSOP):** आभार ऑनलाइन स्टोर 'एक स्टेशन एक उत्पाद' (OSOP) का पूरक है, जो रेलवे स्टेशनों पर स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देता है और उत्पादन से लेकर बिक्री तक एक पूर्ण मूल्य श्रृंखला बनाता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. 'आभार' ऑनलाइन स्टोर के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM) पोर्टल पर संचालित है।
2. यह भारत के डिजिटल लेनदेन बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
3. यह क्षेत्रीय ODOP एवं GI उत्पादों को प्रदर्शित करता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. चर्चा कीजिए कि 'आभार' जैसी डिजिटल बाजार पहल किस प्रकार ग्रामीण शिल्पकारों को समर्थन प्रदान कर सकती है और भारत में समावेशी आर्थिक विकास में योगदान दे सकती है।

विशिष्ट इस्पात प्रोत्साहन योजना

चर्चा में क्यों: हाल ही में, केंद्रीय इस्पात और भारी उद्योग मंत्री द्वारा नए निवेश को आकर्षित करने और उन्नत एवं रणनीतिक इस्पात उत्पादों में भारत की उत्पादन क्षमता का विस्तार करने के लिए विशिष्ट इस्पात प्रोत्साहन योजना के तीसरे चरण (पीएलआई 1.2) लॉन्च किया गया है।

विशिष्ट इस्पात हेतु पीएलआई योजना के बारे में

- विशिष्ट इस्पात के लिए पीएलआई योजना को जुलाई 2021 में कैबिनेट द्वारा आत्मनिर्भर भारत विजन के तहत भारत को उच्च अंत इस्पात उत्पादन के लिए वैश्विक केंद्र बनाने के लिए अनुमोदित किया गया था।
- **तीसरा चरण (पीएलआई 1.2)** विशिष्ट इस्पात उत्पादों (स्पेशियल्टी स्टील प्रोडक्ट्स) में निवेश और उत्पादन को बढ़ावा देने पर केंद्रित है, जिसमें शामिल हैं:
 - ✓ सुपर मिश्रधातु (Super alloys)।
 - ✓ कोल्ड रोल्ल ग्रेन ओरिएंटेड (CRGO) स्टील।
 - ✓ स्टेनलेस स्टील लंबे और सपाट उत्पाद
 - ✓ टाइटेनियम मिश्रधातु (Titanium alloys)।
 - ✓ लेपित स्टील एवं अन्य उन्नत श्रेणियाँ।

पीएलआई 1.2 की मुख्य विशेषताएँ

- **आवेदन की अवधि:** 30 दिनों के लिए खुली है।
- **पात्रता:** भारत में पंजीकृत वे कंपनियाँ जो निर्दिष्ट विशिष्ट इस्पात उत्पादों के शुरू से अंत तक (End-To-End) विनिर्माण में संलग्न हैं।

- **उत्पाद कवरेज:** रणनीतिक एवं वाणिज्यिक क्षेत्रों में विशिष्ट इस्पात की 22 उप-श्रेणियाँ सम्मिलित हैं।
- **प्रोत्साहन दर:** उत्पाद के प्रकार एवं उत्पादन वर्ष के आधार पर वृद्धिशील बिक्री के 4% से 15% तक भिन्न होती हैं।
- **प्रोत्साहन की अवधि:** वित्तीय वर्ष 2025-26 से आरंभ होकर पाँच वर्षों तक लाभ उपलब्ध है, जिसका भुगतान वित्तीय वर्ष 2026-27 से प्रारंभ होगा।
- **आधार वर्ष में संशोधन:** वर्तमान बाजार स्थितियों को प्रतिबिंबित करने हेतु वृद्धिशील बिक्री की गणना के लिए आधार वर्ष को 2019-20 से परिवर्तित कर 2024-25 कर दिया गया है।

उद्देश्य एवं महत्व

- **उच्च-स्तरीय विनिर्माण को बढ़ावा:** एयरोस्पेस, रक्षा, ऑटोमोटिव, ऊर्जा एवं बुनियादी ढांचे जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाले स्पेशियल्टी स्टील के घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करना।
- **आत्मनिर्भर भारत:** मूल्यवर्धित इस्पात विनिर्माण में बड़े पैमाने पर निवेश आकर्षित करके भारत के आत्मनिर्भरता के एजेंडे का समर्थन करना।
- **रोजगार सृजन:** इस्पात विनिर्माण एवं संबद्ध क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ने की संभावना।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता:** उन्नत इस्पात उत्पादों हेतु भारत को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करने में सहायता करना।

यह डिजिटल प्लेटफॉर्म 'डिजिटल इंडिया' दृष्टिकोण के अनुरूप, भारत के कोयला क्षेत्र में शासन, निर्णय लेने की प्रक्रिया और पारदर्शिता को सुदृढ़ करने हेतु कोयला उत्पादन, रसद, आपूर्ति और परिचालन पर वास्तविक समय के डेटा को एकीकृत करेगा।

"कोयला शक्ति" क्या है?

- यह **कोयला मंत्रालय** द्वारा विकसित एक 'स्मार्ट कोल एनालिटिक्स डैशबोर्ड' (SCAD) है।
- यह **कोयला** क्षेत्र के संचालन की वास्तविक समय की निगरानी और विश्लेषण के लिए एक केंद्रीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में कार्य करता है।
- इसका उद्देश्य **कोयला** मूल्य श्रृंखला (कोल वैल्यू चैन) में डेटा-संचालित शासन, परिचालन पारदर्शिता और दक्षता को बढ़ाना है।

उद्देश्य एवं महत्व

- **एकीकृत डेटा प्रणाली:** यह विभिन्न हितधारकों — कोयला उत्पादकों, निजी खनिकों, रेलवे, बिजली उपयोगिताओं, बंदरगाहों, सरकारी विभागों और राज्य कोयला इकाइयों के डेटा को समेकित करता है।
- **वास्तविक समय की निगरानी:** यह कोयला उत्पादन, प्रेषण (dispatch), परिवहन, रसद और आपूर्ति मैट्रिक्स की निरंतर निगरानी करता है।
- **साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण:** यह रणनीतिक नियोजन, पूर्वानुमान और परिचालन अनुकूलन हेतु विश्लेषणात्मक उपकरण प्रदान करता है।
- **बेहतर जवाबदेही:** मानकीकृत मैट्रिक्स और अलर्ट पूरे क्षेत्र में पारदर्शिता को बढ़ाते हैं। **डिजिटल रूपांतरण:** यह 'डिजिटल इंडिया' मिशन के अनुरूप है, जो सार्वजनिक क्षेत्र के शासन में दक्षता, स्वचालन और पारदर्शिता को बढ़ावा देता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. विशिष्ट इस्पात प्रोत्साहन योजना के तीसरे चरण (पीएलआई 1.2) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह पात्र उत्पादों की वृद्धिशील बिक्री के आधार पर प्रोत्साहन प्रदान करती है।
2. यह केवल बुनियादी निर्माण श्रेणी के इस्पात उत्पादों को कवर करती है।
3. यह वित्तीय वर्ष 2025-26 से पाँच वर्षों तक लाभ प्रदान करती है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. विशिष्ट इस्पात के संदर्भ में, भारत के विनिर्माण क्षेत्र को सुदृढ़ करने में उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाओं की भूमिका की विवेचना कीजिए। (250 शब्द, 15 अंक)

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. "कोयला शक्ति" डैशबोर्ड के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) यह विभिन्न हितधारकों से वास्तविक समय के कोयला डेटा को एकीकृत करता है।
- (b) यह केवल कोयला निर्यात और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर केंद्रित है।
- (c) यह कोयला क्षेत्र में डेटा-संचालित शासन का समर्थन करता है।
- (d) यह निजी क्षेत्र की एक पहल है।

उत्तर: (a&c)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. पारंपरिक ऊर्जा क्षेत्रों के शासन को बदलने में "कोयला शक्ति" जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों की भूमिका की विवेचना कीजिए। (250 शब्द, 15 अंक)

कोयला शक्ति – स्मार्ट कोल एनालिटिक्स डैशबोर्ड

चर्चा में क्यों: कोयला मंत्रालय ने 29 अक्टूबर 2025 को नई दिल्ली में एक स्मार्ट कोल एनालिटिक्स डैशबोर्ड, "कोयला शक्ति" का शुभारंभ किया है।

महत्वपूर्ण रिपोर्ट

भारत में धन का अंतर वृद्धि

चर्चा में क्यों: जी20 द्वारा प्रायोजित एक ऐतिहासिक वैश्विक असमानता रिपोर्ट ने दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में बढ़ती असमानताओं पर प्रकाश डाला है, जिसमें भारत के सबसे धनी 1% लोगों ने 2000 और 2023 के बीच अपनी संपत्ति का हिस्सा 62% तक बढ़ा दिया है।

मुख्य विवरण

दक्षिण अफ्रीका की जी20 अध्यक्षता में जारी किए गए और नोबेल पुरस्कार विजेता जोसेफ ई. स्टिग्लिट्ज़ के नेतृत्व में प्राप्त निष्कर्षों ने तीव्र आर्थिक परिवर्तन के समय में सामाजिक-आर्थिक असंतुलन के बारे में तत्काल चिंताएं जताई हैं।

मुख्य निष्कर्ष

रिपोर्ट में वैश्विक स्तर पर और भारत के भीतर धन वितरण में चौकाने वाले रुझान सामने आए हैं:

- **शीर्ष 1% की बढ़ती दौलत:** भारत में, वर्ष 2000 से लेकर अब तक सबसे धनी 1% लोगों की संपत्ति में लगभग 62% की वृद्धि हुई है, जो कई उभरती अर्थव्यवस्थाओं से कहीं अधिक है।
- **वैश्विक संपत्ति पर कब्जा:** विश्व स्तर पर, वर्ष 2000 से 2024 के बीच सृजित कुल नई संपत्ति का 41% हिस्सा सबसे धनी 1% लोगों ने हासिल किया, जबकि निचले 50% लोगों को केवल 1% लाभ प्राप्त हुआ।
- **असमानता का "आपातकालीन" स्तर:** अध्ययन में इस बात का वर्णन किया गया है कि यदि इस पर नियंत्रण नहीं रखा गया तो अत्यधिक असमानता लोकतंत्र, आर्थिक स्थिरता और जलवायु प्रगति के लिए खतरा बन सकती है।

भारत का भारत की दोहरी कहानी:

आर्थिक विकास बनाम असमान लाभ: उदारीकरण, डिजिटलीकरण और वैश्विक एकीकरण से प्रेरित भारत के तीव्र आर्थिक विस्तार ने लाखों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है। फिर भी, शीर्ष पर धन का संकेंद्रण समृद्धि के असमान वितरण को दर्शाता है।

- शीर्ष 10% लोग राष्ट्रीय संपत्ति के एक बड़े हिस्से पर अपना नियंत्रण रखते हैं, जबकि मध्यम और निम्न वर्ग पीछे रह जाते हैं। हाल के आंकड़ों से पता चलता है कि आबादी के निचले आधे हिस्से के पास कुलीन अल्पसंख्यक की तुलना में संपत्ति का अनुपातहीन रूप से छोटा हिस्सा है।
- गिनी गुणांक जैसे आधिकारिक असमानता माप से पता चलता है कि भारत में कुछ उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में आय असमानता कम है, लेकिन धन असमानता अभी भी अधिक है और मानक आंकड़ों में इसका सही आकलन नहीं किया गया है।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि उच्च असमानता के दूरगामी सामाजिक-राजनीतिक परिणाम हो सकते हैं:

- जिन देशों में असमानता गहरी जड़ें जमा चुकी है, उनमें लोकतांत्रिक व्यवस्था के क्षरण की संभावना सात गुना अधिक होती है।
- लगातार बनी रहने वाली कमियां संस्थानों में विश्वास को कमजोर करती हैं और सामाजिक तनाव को बढ़ाती हैं, खासकर अगर विकास के लाभ अभिजात वर्ग की ओर झुके हुए प्रतीत होते हैं।
- समावेशी विकास के उद्देश्यों का समर्थन करने वाले भारत के लिए,
- बढ़ती धन-संकेंद्रण स्थिति समान नीतियों और पुनर्वितरण तंत्रों पर नए सिरे से जोर देने की आवश्यकता का संकेत देती है।

रिपोर्ट से नीतिगत सुझाव

जी20 विशेषज्ञों ने असमानता से निपटने के लिए कई उपाय प्रस्तावित किए हैं:

- **असमानता पर अंतर्राष्ट्रीय पैनल (IPI):** जलवायु परिवर्तन पर अंतरसरकारी पैनल (IPCC) की तर्ज पर गठित एक विशेष निकाय वैश्विक स्तर पर असमानता के आंकड़ों की निगरानी करेगा और साक्ष्य-आधारित नीति का मार्गदर्शन करेगा।
- **लक्षित घरेलू सुधार:** सामाजिक सुरक्षा जाल को मजबूत करना, प्रगतिशील कराधान, आवश्यक सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच और बेहतर डेटा पारदर्शिता, अंतर को कम करने के प्रमुख उपकरण हैं।
- **वैश्विक सहयोग:** असमानता को जड़ जमाने और अस्थिरता पैदा करने से रोकने के लिए समन्वित नीतिगत कार्रवाई, विशेष रूप से जी20 देशों के बीच, महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

जी20 रिपोर्ट के निष्कर्ष इस बात की याद दिलाते हैं कि भारत की प्रभावशाली विकास गाथा में एक शर्त छिपी है — समान वितरण के बिना, व्यापक आर्थिक लाभ समाज के बड़े वर्गों तक नहीं पहुंच पाएंगे। वैश्विक मंच पर भारत की स्थिति मजबूत होने के साथ-साथ, आने वाले दशकों में सतत और समावेशी विकास के लिए आंतरिक असमानताओं का समाधान करना आवश्यक होगा।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: जी20 असमानता रिपोर्ट के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत के शीर्ष 1% लोगों की संपत्ति का हिस्सा 2000 और 2023 के बीच 60% से अधिक बढ़ गया।
2. वैश्विक स्तर पर, वर्ष 2000 के बाद से सृजित हुई नई संपत्ति का 40% से अधिक हिस्सा शीर्ष 1% लोगों ने हासिल किया है।

3. रिपोर्ट में आईपीसी की तर्ज पर असमानता पर एक अंतर्राष्ट्रीय पैनल के गठन की सिफारिश की गई है।
4. रिपोर्ट के अनुसार, भारत जैसे विकासशील देशों में आय असमानता, धन असमानता की तुलना में अधिक गंभीर चिंता का विषय है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: जी20 असमानता रिपोर्ट में धन के बढ़ते केंद्रीकरण को आर्थिक स्थिरता और लोकतांत्रिक शासन के लिए खतरा बताया गया है। इस संदर्भ में, भारत में धन असमानता के रुझानों का विश्लेषण कीजिए और इस चुनौती से निपटने के लिए सुझाए गए नीतिगत उपायों पर चर्चा कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

ईएटी-लैसेट रिपोर्ट - 2025

चर्चा में क्यों: 2025 ईएटी-लैसेट आयोग द्वारा किए गए एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक मूल्यांकन ने निष्कर्ष निकाला है कि वैश्विक खाद्य प्रणालियाँ ग्रह की सीमाओं के उल्लंघन का सबसे बड़ा कारण बन गई हैं, जो पृथ्वी की पारिस्थितिक स्थिरता, मानव स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय के लिए गंभीर खतरा पैदा करती हैं।

मुख्य विवरण

- पोषण, जलवायु विज्ञान, कृषि और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में अग्रणी विशेषज्ञों के योगदान से अक्टूबर 2025 में जारी की गई यह रिपोर्ट, खाद्य प्रणालियों का अब तक का सबसे व्यापक मूल्यांकन प्रदान करती है।

खाद्य प्रणालियों द्वारा ग्रहीय सीमाओं का उल्लंघन

ग्रहीय सीमाएँ पृथ्वी-प्रणाली की वे सीमाएँ हैं, जो मानवता के लिए एक "सुरक्षित परिचालन क्षेत्र" को परिभाषित करती हैं। 2025 की ईएटी-लैसेट रिपोर्ट दर्शाती है कि:

- खाद्य प्रणालियाँ उन छह वैश्विक सीमाओं में से पाँच के लिए जिम्मेदार हैं जिनका पहले ही उल्लंघन हो चुका है, जिनमें जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का नुकसान, मिठे पानी की कमी, भूमि-प्रणाली में परिवर्तन और नाइट्रोजन एवं फास्फोरस प्रदूषण शामिल हैं।
- वे वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के कुल 30% के लिए जिम्मेदार हैं, जिनमें पशुपालन और पोषक तत्वों का प्रदूषण प्रमुख कारक हैं।
- जीवाश्म ईंधन से पूरी तरह से वैश्विक स्तर पर दूर हटने से भी खाद्य प्रणालियों को 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान वृद्धि को बढ़ावा

देने से नहीं रोका जा सकेगा, जो यह दर्शाता है कि खाद्य आपूर्ति और उपभोग के तरीकों में बदलाव किए बिना केवल कार्बन उत्सर्जन कम करना ही पर्याप्त नहीं है।

- यह कठोर आकलन भोजन को केवल एक क्षेत्रीय मुद्दे के रूप में नहीं, बल्कि एक वैश्विक स्तर के पर्यावरणीय संकट के रूप में पुनर्परिभाषित करता है।

मानव स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय पर दबाव

रिपोर्ट पर्यावरणीय परिणामों को मानव कल्याण के साथ एकीकृत करती है:

- स्वस्थ और संधारणीय खान-पान की आदतों के अनुरूप वैश्विक आहार में बदलाव लाने से खराब आहार और पुरानी बीमारियों से जुड़े जोखिमों को कम करके सालाना 1.5 करोड़ तक समय से पहले होने वाली मौतों को रोका जा सकता है।
- वैश्विक स्तर पर पर्याप्त कैलोरी उत्पादन के बावजूद, एक अरब से अधिक लोग कुपोषण का शिकार हैं, जबकि खाद्य प्रणालियों में काम करने वाले श्रमिकों का एक बड़ा हिस्सा जीवन निर्वाह वेतन से कम कमाता है, जो गहरी असमानताओं को रेखांकित करता है।
- वर्तमान में वैश्विक आबादी के 1% से भी कम लोग ऐसे "सुरक्षित और न्यायपूर्ण क्षेत्र" में रहते हैं जहाँ ग्रह की सीमाओं के भीतर भोजन की जरूरतें पूरी की जाती हैं।
- विश्व की 30% सबसे धनी आबादी खाद्य-संबंधी पर्यावरणीय प्रभावों के 70% से अधिक के लिए जिम्मेदार है, जो उपभोग पैटर्न और पारिस्थितिक नुकसान के बीच अंतर्संबंध को उजागर करता है।

नीति और परिवर्तनकारी मार्ग

आयोग के निष्कर्ष केवल नैदानिक ही नहीं बल्कि निर्देशात्मक भी हैं:

- ग्रह-हितैषी आहार (प्लैनेटरी हेल्थ डाइट) की ओर बदलाव - जो फलों, सब्जियों, साबुत अनाज, फलियों और मेवों से भरपूर हो, और जिसमें लाल मांस और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का सेवन सीमित मात्रा में हो - पोषण में सुधार करते हुए पर्यावरणीय दबावों को काफी हद तक कम कर सकता है।
- खाद्य हानि और बर्बादी को कम करना, संधारणीय कृषि पद्धतियों को अपनाना और अक्षुण्ण पारिस्थितिक तंत्रों की रक्षा करना इस परिवर्तन के केंद्र में है।
- नीतिगत सुधारों को खाद्य प्रणालियों को जलवायु, जैव विविधता और सामाजिक समानता के लक्ष्यों के साथ संरेखित करना चाहिए, जिसमें छोटे किसानों का समर्थन करना, श्रम स्थितियों में सुधार करना और स्वस्थ भोजन को किफायती बनाना शामिल है।

भारत का संदर्भ और चुनौतियाँ

- भारत के लिए, जहाँ आहार मुख्य रूप से अनाज पर आधारित है और नाइट्रोजन उर्वरकों, कीटनाशकों के उपयोग और भूमि परिवर्तन से उत्पन्न पर्यावरणीय दबाव बढ़ रहे हैं, रिपोर्ट की अंतर्दृष्टि विशेष रूप से प्रासंगिक है।

- विविध आहार और संधारणीय कृषि पद्धतियों की ओर संक्रमण के लिए सांस्कृतिक प्रथाओं, खाद्य सुरक्षा लक्ष्यों और ग्रामीण आजीविका के साथ सावधानीपूर्वक समन्वय की आवश्यकता होगी।

निष्कर्ष

2025 की ईएटी-लैसेट रिपोर्ट खाद्य प्रणालियों के प्रति विश्व के दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। खाद्य प्रणालियाँ न केवल बढ़ती आबादी के पोषण के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि अब वे ग्रह की अस्थिरता के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक हैं। मानव स्वास्थ्य और पर्यावरणीय स्थिरता के दोहरे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आहार, उत्पादन, नीति और समानता के क्षेत्र में तत्काल और एकीकृत कार्रवाई की आवश्यकता है - जिससे खाद्य प्रणालियों में सुधार आने वाले दशकों की प्रमुख चुनौतियों में से एक बन जाता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: 2025 ईएटी-लैसेट आयोग की रिपोर्ट के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वैश्विक खाद्य प्रणालियाँ ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और जैव विविधता हानि में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से हैं।
2. खाद्य प्रणालियों ने ग्रह की उन सीमाओं के आधे से अधिक हिस्से के अतिक्रमण में योगदान दिया है जिनका पहले ही उल्लंघन हो चुका है।
3. खाद्य प्रणालियों में बदलाव किए बिना ऊर्जा क्षेत्र का पूर्णतः कार्बन-मुक्तीकरण भी वैश्विक तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखने के लिए अपर्याप्त होगा।
4. प्लेनेटरी हेल्थ डाइट वैश्विक कुपोषण से निपटने के लिए लाल मांस और डेयरी उत्पादों की खपत बढ़ाने की वकालत करती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: 2025 ईएटी लैसेट आयोग की रिपोर्ट के आलोक में, खाद्य प्रणालियों का ग्रहीय सीमाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करें और भारत में संधारणीय और न्यायसंगत खाद्य प्रणालियों के लिए आवश्यक नीतिगत उपायों पर चर्चा करें। (150 शब्द, 10 अंक)

हेनली पासपोर्ट इंडेक्स - 2025

चर्चा में क्यों: हेनली पासपोर्ट इंडेक्स की शुरुआत के 20 साल बाद पहली बार, संयुक्त राज्य अमेरिका का पासपोर्ट दुनिया के 10 सबसे शक्तिशाली पासपोर्टों की सूची से बाहर हो गया है।

मुख्य विवरण

- नवीनतम हेनली पासपोर्ट इंडेक्स - 2025 के अनुसार, अमेरिका अब 180 देशों में बिना वीजा के यात्रा करने की सुविधा के साथ मलेशिया के साथ 12वें स्थान पर है। यह वैश्विक यात्रा स्वतंत्रता और राजनयिक प्रभाव में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत है।

हेनली पासपोर्ट इंडेक्स क्या है?

- हेनली पासपोर्ट इंडेक्स एक विश्वसनीय वैश्विक रैंकिंग है जो यह मापती है कि पासपोर्ट धारक कितने देशों में बिना वीजा के जा सकता है, या कितने देशों में उसे आगमन पर वीजा मिल सकता है।
- पासपोर्ट से जितने अधिक गंतव्यों तक आसानी से पहुंचा जा सकता है, उसे उतना ही मजबूत माना जाता है। यह सूचकांक अंतर्राष्ट्रीय हवाई परिवहन संघ (आईएटीए) के आधिकारिक यात्रा आंकड़ों का उपयोग करता है, जिसमें 199 पासपोर्ट और विश्व भर के 227 गंतव्य शामिल हैं।

2025 सूचकांक की मुख्य विशेषताएं

1. एशिया ने नेतृत्व संभाला

2025 की रैंकिंग में एशियाई देशों का दबदबा कायम है:

- ✓ सिंगापुर दुनिया के सबसे अधिक देशों में अपने नागरिकों को वीजा-मुक्त प्रवेश की सुविधा प्रदान करने के मामले में पहले स्थान पर है।
- ✓ दक्षिण कोरिया और जापान क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं।
- ✓ ये शीर्ष एशियाई पासपोर्ट लगभग 190 से अधिक गंतव्यों तक पहुंच प्रदान करते हैं, जो बढ़ते वैश्विक एकीकरण और राजनयिक विस्तार को रेखांकित करते हैं।

2. पहली बार अमेरिकी पासपोर्ट अस्वीकृत हुआ

- ✓ दशकों तक, अमेरिकी पासपोर्ट विश्व स्तर पर सबसे शक्तिशाली पासपोर्टों में से एक था। 2014 में, यह सूचकांक में शीर्ष पर था। हालांकि, वीजा समझौतों और वैश्विक गतिशीलता के रुझानों में बदलाव ने इसकी शक्ति को कम कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप 2025 में यह शीर्ष 10 से बाहर हो गया। विशेषज्ञों का कहना है कि यह वैश्विक कूटनीति और यात्रा नीतियों में व्यापक बदलावों को दर्शाता है।

3. सूचकांक में भारत की स्थिति

- ✓ 2025 की सूची में भारत की रैंकिंग 85वीं है, और भारतीय नागरिक बिना पूर्व वीजा के 57 देशों की यात्रा कर सकेंगे। पिछले

वर्ष की तुलना में भारत की रैंकिंग में पांच पायदान की गिरावट आई है।

- ✓ इसका अर्थ यह है कि अन्य कई देशों की तुलना में भारतीय यात्रियों के पास वीजा-मुक्त यात्रा के अपेक्षाकृत कम विकल्प हैं, जो मजबूत द्विपक्षीय समझौतों और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की आवश्यकता को उजागर करता है।

4. वैश्विक गतिशीलता में अंतर

हेनली पासपोर्ट इंडेक्स विश्व भर में यात्रा की स्वतंत्रता में व्यापक अंतर को दर्शाता है:

- ✓ सबसे मजबूत पासपोर्ट धारकों को लगभग 200 गंतव्यों में बिना वीजा के यात्रा करने की अनुमति होती है।
- ✓ सबसे कमजोर पासपोर्ट 30 से भी कम देशों में प्रवेश की अनुमति देते हैं।
- ✓ अफगानिस्तान, सीरिया और इराक जैसे देश उन देशों में शामिल हैं जहां यात्रा की स्वतंत्रता सबसे कम है।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

पासपोर्ट की मजबूती केवल यात्रा की सुविधा से कहीं अधिक दर्शाती है। यह अंतरराष्ट्रीय संबंधों, आर्थिक प्रभाव और राजनयिक सहयोग का प्रतीक है। एक मजबूत पासपोर्ट अक्सर देशों के बीच मजबूत वैश्विक संबंधों और आपसी विश्वास को इंगित करता है। शीर्ष स्थान से अमेरिकी पासपोर्ट का गिरना यह दर्शाता है कि वैश्विक परिस्थितियां कैसे बदल रही हैं, और एशियाई और यूरोपीय देश अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता में अधिक प्रभावशाली होते जा रहे हैं।

निष्कर्ष

हेनली पासपोर्ट इंडेक्स 2025 वैश्विक गतिशीलता में आए महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है। जहां अमेरिका और ब्रिटेन जैसे पारंपरिक अग्रणी देशों का प्रदर्शन गिर गया है, वहीं एशियाई देशों का उदय हो रहा है। भारत के लिए चुनौती यह है कि वह अंतरराष्ट्रीय संबंधों को मजबूत करके और अधिक देशों के साथ यात्रा प्रतिबंधों में ढील देकर अपनी रैंकिंग में सुधार करे। तेजी से जुड़ती दुनिया में, पासपोर्ट की शक्ति किसी राष्ट्र की वैश्विक पहुंच और प्रासंगिकता का एक प्रमुख सूचक बनी हुई है।

वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक - 2025

चर्चा में क्यों: वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक (सीआरआई) - 2025 में भारत की स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन फिर भी पिछले 30 वर्षों में चरम मौसम की घटनाओं से सबसे अधिक प्रभावित शीर्ष दस देशों में भारत शामिल है। ये निष्कर्ष जर्मन पर्यावरण थिंक-टैंक जर्मनवॉच द्वारा तैयार की गई नवीनतम सीआरआई रिपोर्ट में प्रकाशित हुए हैं।

जलवायु जोखिम सूचकांक के बारे में

- जलवायु जोखिम सूचकांक एक वैश्विक रैंकिंग है जो यह दर्शाती है कि चक्रवात, बाढ़, तूफान और लू जैसी चरम मौसम घटनाओं से देशों को लंबे समय में कितना नुकसान हुआ है।
- इसमें मृत्यु, आर्थिक नुकसान, घटनाओं की संख्या और प्रभावित लोगों की संख्या जैसे कारक शामिल हैं। कम रैंक का मतलब कम जोखिम है, जबकि उच्च रैंक का मतलब अधिक गंभीर प्रभाव है।

नवीनतम रिपोर्ट में रैंकिंग में सुधार हुआ है

- 1995-2024 की अवधि को कवर करने वाली नवीनतम रिपोर्ट (सीओपी30 के दौरान अंतरराष्ट्रीय जलवायु चर्चाओं में जारी) के अनुसार, भारत की वर्तमान रैंकिंग इस प्रकार है:
 - ✓ दीर्घकालिक जलवायु जोखिम सूचकांक में 9वां स्थान
 - ✓ 2024 की वार्षिक रैंकिंग में 15वां स्थान
 - ✓ ये पिछली आकलनों की तुलना में बेहतर स्थिति है - भारत को पहले के सूचकांक में दीर्घकालिक रूप से 8वां स्थान दिया गया था और 2023 की वार्षिक सूची में 10वां स्थान दिया गया है।
 - ✓ यह सुधार आपदा की तैयारी और जोखिम प्रबंधन में वृद्धि का संकेत देता है, जिसमें बेहतर प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली और जलवायु अनुकूलन उपाय शामिल हैं।

भारत अभी भी क्यों असुरक्षित बना हुआ है?

रैंकिंग में सुधार के बावजूद, भारत कई कारणों से विश्व स्तर पर सबसे अधिक प्रभावित देशों में से एक बना हुआ है:

- पिछले तीन दशकों में चरम मौसम संबंधी घटनाएं लगातार और गंभीर रही हैं।
- 1995 और 2024 के बीच देश में 430 से अधिक बड़ी चरम मौसम संबंधी घटनाएं हुईं।
- इन घटनाओं के परिणामस्वरूप 80,000 से अधिक लोगों की मौत हुई और लगभग 170 अरब अमेरिकी डॉलर का आर्थिक नुकसान हुआ (मुद्रास्फीति समायोजित)।
- लू, बाढ़, चक्रवात और तूफानों के दीर्घकालिक प्रभाव से यह स्पष्ट होता है कि जलवायु परिवर्तन भारत के लोगों, बुनियादी ढांचे और अर्थव्यवस्था के लिए एक गंभीर चुनौती बनी हुई है।

वैश्विक संदर्भ

- सीआरआई की रिपोर्ट में इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है कि जलवायु चरम सीमाओं से सबसे अधिक प्रभावित देशों में से कई निम्न और मध्यम आय वाले देश हैं, विशेष रूप से ग्लोबल साउथ के देश।
- डोमिनिका, म्यांमार और होंडुरास दीर्घकालिक रूप से सबसे बुरी तरह प्रभावित होने वाले तीन देशों में शामिल हैं।
- इस बीच, फ्रांस, इटली और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे कुछ उच्च आय वाले देश भी भीषण तूफानों और आर्थिक नुकसान के कारण इस

सूचकांक में शामिल हैं - यह दर्शाता है कि कोई भी देश जलवायु जोखिमों से पूरी तरह सुरक्षित नहीं है।

भारत के लिए इसका क्या अर्थ है?

- बेहतर रैंकिंग बेहतर तैयारी और प्रतिक्रिया को दर्शाती है।
- यद्यपि, लगातार और तीव्र चरम मौसम की घटनाओं के कारण उच्च स्तर की संवेदनशीलता बनी हुई है।
- इन परिणामों से देश भर में जलवायु परिवर्तन से निपटने की क्षमता, आपदा जोखिम न्यूनीकरण और अनुकूलन उपायों को मजबूत करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।
- जोखिम प्रबंधन में प्रगति के साथ-साथ लगातार उच्च प्रभाव की यह दोहरी तस्वीर इस बात पर जोर देती है कि जलवायु परिवर्तन आने वाले वर्षों में भारत के लिए एक प्रमुख विकास चुनौती बना रहेगा।

निष्कर्ष

जलवायु जोखिम सूचकांक में भारत की बेहतर रैंकिंग दर्शाती है कि देश ने आपदा तैयारियों, प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों और प्रतिक्रिया तंत्रों में प्रगति की है। हालांकि, जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित दस देशों में बने रहना इस बात को उजागर करता है कि चरम मौसम की घटनाएं जीवन, आजीविका और बुनियादी ढांचे को गंभीर नुकसान पहुंचाती रहती हैं। जलवायु परिवर्तन अब भारत के लिए भविष्य का खतरा नहीं है—यह एक वर्तमान और निरंतर वास्तविकता है जो आर्थिक विकास और मानव सुरक्षा को सीधे प्रभावित करती है।

आगे की राह

- **जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन मजबूत करना:** जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीले बुनियादी ढांचे पर ध्यान केंद्रित करें, विशेष रूप से तटीय, बाढ़-प्रवण और गर्मी से प्रभावित क्षेत्रों में।
- **प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों में सुधार करना:** संवेदनशील समुदायों तक समय पर चेतावनी पहुंचाने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी और स्थानीय स्तर पर संचार का उपयोग करें।
- **जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीली कृषि को बढ़ावा देना:** सूखा प्रतिरोधी फसलों, कुशल जल उपयोग और संधारणीय कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करना।
- **आपदा की तैयारी को मजबूत करना:** स्थानीय आपदा प्रतिक्रिया क्षमता, प्रशिक्षण और सामुदायिक भागीदारी में निवेश करना।
- **जलवायु परिवर्तन को कम करने के प्रयासों में तेजी लाना:** नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार करना, उत्सर्जन कम करें और अंतरराष्ट्रीय समझौतों के तहत भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं को पूरा करना।

- **जलवायु वित्त और अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाना:** अनुकूलन और नुकसान एवं क्षति के उपायों का समर्थन करने के लिए वैश्विक मंचों से धन और प्रौद्योगिकी सहायता जुटाना।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक जलवायु भेद्यता का आकलन कैसे करता है? सूचकांक में भारत की स्थिति का विश्लेषण कीजिए और जलवायु जोखिमों को कम करने के लिए आगे का रास्ता सुझाइए। (150 शब्द, 10 अंक)

वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI) - 2025

चर्चा में क्यों: 2025 का वैश्विक भुखमरी सूचकांक (जीएचआई) - जिसका शीर्षक है "प्रगति पर नज़र रखने के 20 वर्ष: शून्य भूख के प्रति फिर से प्रतिबद्ध होने का समय" - दर्शाता है कि भुखमरी कम करने में वैश्विक प्रगति काफी हद तक रुक गई है, और दुनिया 2030 तक संयुक्त राष्ट्र के शून्य भूख के लक्ष्य को प्राप्त करने की राह पर नहीं है। यह रिपोर्ट कंसर्न वर्ल्डवाइड और वेल्थहंगरहाइफ द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित की गई थी और यह विश्व स्तर पर भुखमरी की निगरानी के दो दशकों को चिह्नित करती है।

वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI) क्या है?

- वैश्विक भुखमरी सूचकांक (ग्लोबल हंगर इंडेक्स) एक वार्षिक उपकरण है जो चार प्रमुख संकेतकों का उपयोग करके देशों में भुखमरी के स्तर को मापता है:
 1. जनसंख्या में कुपोषण
 2. बच्चों में बौनापन (उम्र के हिसाब से कम कद)
 3. बच्चों में दुर्बलता (ऊंचाई के हिसाब से कम वजन)
 4. बाल मृत्यु दर
- इन संकेतकों के आधार पर, देशों को जीएचआई स्कोर दिया जाता है और उन्हें कम भुखमरी से लेकर चिंताजनक भुखमरी तक की श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है। कम स्कोर और रैंक भुखमरी को कम करने में बेहतर प्रगति दर्शाते हैं।

जीएचआई 2025 के मुख्य निष्कर्ष

- **वैश्विक स्तर पर मामूली सुधार:** 2016 तक वर्षों की धीमी लेकिन स्थिर प्रगति के बाद, 2025 के जीएचआई से पता चलता है कि वैश्विक स्तर पर भुखमरी की स्थिति में कोई खास बदलाव नहीं आया है। 2025 में विश्व का जीएचआई स्कोर 18.3 है, जो 2016 के 19.0 से थोड़ा ही बेहतर है, और यह अभी भी "मध्यम" भुखमरी की श्रेणी में आता है।
- **प्रगति में रुकावट सतत विकास लक्ष्य 2 के लिए खतरा:** रिपोर्ट में बताया गया है कि संघर्ष, जलवायु परिवर्तन और आर्थिक संकटों ने

भुखमरी कम करने के प्रयासों में लगातार बाधा डाली है। परिणामस्वरूप, सतत विकास लक्ष्य 2 - 2030 तक शून्य भुखमरी का लक्ष्य प्राप्त करना - प्रगति की वर्तमान गति को देखते हुए अब असंभव सा प्रतीत होता है।

- **संघर्ष एक प्रमुख कारक है:** सशस्त्र संघर्ष भूख का एक प्रमुख कारण बना हुआ है, जो खाद्य उत्पादन, बाजारों और भोजन तक पहुंच को बाधित करता है। कई क्षेत्रों में, जारी हिंसा ने खाद्य आपात स्थिति को और भी बदतर बना दिया है और खाद्य असुरक्षा को और भी गहरा कर दिया है।
- **मानवीय संसाधनों में गिरावट:** बढ़ती ज़रूरतों के बावजूद, मानवीय सहायता बजट में भारी गिरावट आई है, जबकि सैन्य खर्च में वृद्धि हुई है। यह असंतुलन भुखमरी और खाद्य संकटों से प्रभावी ढंग से निपटने की वैश्विक क्षमता को कमजोर करता है।

क्षेत्रीय और देश पैटर्न

- हालांकि कुछ देशों ने भुखमरी कम करने में प्रगति की है, फिर भी कई देश गंभीर या चिंताजनक भुखमरी की स्थिति का सामना कर रहे हैं। कई राष्ट्र लगातार पिछड़ते जा रहे हैं, और पिछले दशक में भुखमरी का स्तर और भी बिगड़ गया है।
- उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया जैसे क्षेत्रों में भुखमरी की समस्या सबसे गंभीर बनी हुई है, जहां कुपोषण और बाल कुपोषण की दर अधिक है और खाद्य प्रणालियां अभी भी कमजोर हैं।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

ध्यातव्य है कि भुखमरी केवल भोजन की कमी तक सीमित नहीं है। यह स्वास्थ्य, शिक्षा, उत्पादकता और मानवीय गरिमा को प्रभावित करती है। लगातार भूख आर्थिक विकास को बाधित करती है और असमानताओं को बढ़ाती है। लगभग करोड़ों लोग अभी भी कुपोषण का शिकार हैं, ऐसे में भुखमरी को समाप्त करने की चुनौती अत्यंत महत्वपूर्ण और जटिल है।

आगे की राह

- **खाद्य प्रणालियों को सुदृढ़ करना:** कृषि उत्पादकता और आपूर्ति श्रृंखलाओं में सुधार करना, ताकि संकट के समय भी खाद्य उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।
- **संघर्ष समाधान:** हिंसा और विस्थापन के कारण होने वाली भुखमरी को रोकने के लिए शांति निर्माण प्रयासों का समर्थन करना।
- **मानवीय सहायता के लिए धन बढ़ाना:** खाद्य और पोषण संबंधी हस्तक्षेपों के लिए बजट का विस्तार करना, विशेष रूप से उच्च बोझ वाले देशों में।
- **जलवायु परिवर्तन से निपटने की रणनीतियाँ:** ऐसी कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना, जो सूखे और बाढ़ जैसे जलवायु झटकों का सामना कर सकना।

- **पोषण पर ध्यान देना:** बच्चों में बौनापन और कुपोषण को रोकने के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित करने हेतु कैलोरी से परे जाकर अन्य बातों पर भी ध्यान देना।

ये सभी कदम मिलकर शून्य भुखमरी के लक्ष्य की ओर प्रगति को तेज करने में मदद कर सकते हैं, जिससे सभी के लिए स्वस्थ और पर्याप्त भोजन एक वास्तविकता बन सके।

निष्कर्ष

2025 का वैश्विक भुखमरी सूचकांक एक चेतावनी है: वर्षों की क्रमिक प्रगति के बाद, भुखमरी के खिलाफ प्रगति रुक गई है। जब तक राष्ट्र मजबूत नीतियों, बेहतर वित्तपोषण और शांतिपूर्ण, जलवायु-अनुकूल खाद्य प्रणालियों के प्रति फिर से प्रतिबद्ध नहीं होते, 2030 तक शून्य भुखमरी का लक्ष्य प्राप्त करना एक अवास्तविक लक्ष्य बना रहेगा।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: वैश्विक भुखमरी सूचकांक (जीएचआई) 2025 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. जीएचआई कुपोषण, बच्चों में बौनापन, बच्चों में दुर्बलता और बाल मृत्यु दर का उपयोग करके भूख को मापता है।
2. जीएचआई 2025 के अनुसार, भूख को कम करने की दिशा में वैश्विक प्रगति काफी हद तक रुक गई है।
3. उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया में भुखमरी की स्थिति अब सबसे कम गंभीर है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: "दो दशकों की निगरानी और प्रगति के बावजूद, वैश्विक भुखमरी सूचकांक 2025 इंगित करता है कि विश्व 2030 तक शून्य भूख के लक्ष्य से बहुत दूर है।" प्रगति में आई इस रुकावट के लिए जिम्मेदार कारकों पर चर्चा कीजिए और वैश्विक स्तर पर तथा भारत में भूख कम करने की प्रक्रिया को गति देने के उपाय सुझाइए। (250 शब्द, 15 अंक)

जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI) - 2026

चर्चा में क्यों: हाल ही में, ब्राजील के बेलेम में COP30 के दौरान, न्यू क्लाइमेट इंस्टीट्यूट, जर्मनवॉच और क्लाइमेट एक्शन नेटवर्क (CAN) इंटरनेशनल द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI) 2026 ने प्रमुख उत्सर्जकों द्वारा किए जा रहे वैश्विक शमन प्रयासों का एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन प्रस्तुत किया।

सीसीपीआई की प्रमुख विशेषताएं

- यह वार्षिक रैंकिंग उत्सर्जन, नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा उपयोग और नीतिगत प्रतिबद्धताओं के आधार पर राष्ट्रीय जलवायु प्रदर्शन का मूल्यांकन करती है।
- लगातार 21वें संस्करण में, कोई भी देश शीर्ष तीन स्थानों पर कब्जा नहीं कर पाया है, जिसका अर्थ है कि कोई भी देश पेरिस समझौते के लक्ष्यों के अनुरूप वैश्विक तापमान वृद्धि को सीमित करने की दिशा में सही रास्ते पर नहीं है।
- जलवायु नीति के मजबूत ढांचे और नवीकरणीय ऊर्जा, विशेष रूप से अपतटीय पवन ऊर्जा में नेतृत्व के कारण डेनमार्क शीर्ष स्थान (चौथा स्थान) पर है।
- यूनाइटेड किंगडम (5वां स्थान) एक पायदान ऊपर चढ़ गया, जो निरंतर नीतिगत प्रयासों और कोयले को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने की उसकी योजना को दर्शाता है।
- मोरक्को (छठा स्थान) प्रति व्यक्ति कम उत्सर्जन और महत्वाकांक्षी परिवहन और जलवायु लक्ष्यों के साथ सभी श्रेणियों में अच्छा प्रदर्शन करता है।
- सबसे निचले पायदान पर सऊदी अरब (67वां), ईरान (66वां) और विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका (65वां) हैं - जो प्रमुख उत्पादकों के बीच जीवाश्म ईंधन पर लगातार निर्भरता को उजागर करता है।
- वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 75% से अधिक का योगदान होने के बावजूद, केवल ब्रिटेन ही "उच्च" श्रेणी में आता है। चीन, जापान, रूस, अमेरिका और सऊदी अरब सहित दस जी20 देश "बहुत निम्न" प्रदर्शन करने वाले देशों की श्रेणी में हैं।

भारत का प्रदर्शन : रैंकिंग में गिरावट

जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI) - 2026 में भारत 23वें स्थान पर है, जो पिछले वर्षों की तुलना में एक महत्वपूर्ण गिरावट है, और भारत 'उच्च' प्रदर्शनकर्ता की श्रेणी से 'मध्यम' प्रदर्शनकर्ता की श्रेणी में आ गया है:

- **गिरावट का कारण क्या है?**
 - ✓ कोयले को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने की कोई ठोस योजना न होना और नए कोयला ब्लॉकों की नीलामी जारी रहना।
 - ✓ जीवाश्म ईंधन से दूर जाने की प्रक्रिया के लिए अंतरिम, बाध्यकारी समय-सीमाओं का अभाव।
 - ✓ क्षमता में वृद्धि के बावजूद नवीकरणीय ऊर्जा के प्रदर्शन को निम्न स्तर का माना जाता है।
 - ✓ हाल के वर्षों में उत्सर्जन और ऊर्जा उपयोग के रुझान प्रतिकूल रहे हैं।
- **विशेषज्ञों की सिफारिशें**
 - ✓ सीसीपीआई ने कोयले के उपयोग को समयबद्ध तरीके से कम करने और अंततः इसे पूरी तरह से समाप्त करने, जीवाश्म ईंधन पर दी जाने वाली सब्सिडी को विकेंद्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा

की ओर पुनर्निर्देशित करने और ऊर्जा संक्रमण में मजबूत सामाजिक और पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों की मांग की है।

भारत की जलवायु नीति: इसकी खूबियाँ और कमियाँ

भारत के जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI) प्रदर्शन से सूक्ष्म वास्तविकताओं का पता चलता है:

1. ताकत (स्ट्रेंथ)

- ✓ जीवाश्म ईंधन के अलावा अन्य स्रोतों से बिजली उत्पादन की स्थापित क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है।
- ✓ ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) लेबलिंग और परफॉर्म, अचीव एंड ट्रेड (पीएटी) योजनाओं जैसे संस्थागत तंत्र व्यवस्थित ऊर्जा दक्षता लाभ प्रदान करते हैं।

2. सीमाएँ

- ✓ कोयले के उपयोग को बंद करने की कोई स्पष्ट समयसीमा न होने से शमन संबंधी कथनों की विश्वसनीयता बाधित होती है।
- ✓ नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग, हालांकि काफी मात्रा में किया जा रहा है, फिर भी जीवाश्म ईंधन की बढ़ती मांग की भरपाई करने के लिए पर्याप्त नहीं है।
- ✓ विस्तृत अंतरिम लक्ष्यों (जैसे, 2035, 2040) और क्षेत्रीय चरणबद्ध रणनीतियों की कमी जवाबदेही को सीमित करती है।

वैश्विक जलवायु शासन के अंतर्गत पेरिस समझौता और सीसीपीआई

जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI) एक पारदर्शिता उपकरण के रूप में कार्य करता है जो 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य के सापेक्ष राष्ट्रीय प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है। इसके निष्कर्ष इस बात पर जोर देते हैं कि प्रति व्यक्ति उत्सर्जन में गिरावट और नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार के बावजूद, पेरिस लक्ष्यों के लिए यह प्रगति अपर्याप्त है। यह प्रतिज्ञाओं (एनडीसी) और उनके कार्यान्वयन के बीच के अंतर को उजागर करता है, जो सीओपी प्रक्रियाओं में बार-बार सामने आने वाला एक मुद्दा है।

व्यापक वैश्विक निहितार्थ

- **नवीकरणीय ऊर्जा बनाम जीवाश्म ईंधन:** सीसीपीआई नवीकरणीय ऊर्जा में तेजी को दर्शाता है, फिर भी कई अर्थव्यवस्थाएं स्वच्छ ऊर्जा के साथ-साथ जीवाश्म ईंधन उत्पादन का विस्तार कर रही हैं - यह एक विरोधाभास है जो वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में कमी को धीमा कर रहा है।
- **समानता के आयाम:** सीमित उत्सर्जन योगदान करने वाले निम्न-आय वाले राष्ट्र प्रति व्यक्ति के मामले में अक्सर बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जबकि प्रमुख औद्योगिक अर्थव्यवस्थाएं पिछड़ जाती हैं - यह जलवायु वार्ताओं के केंद्र में विभेदित जिम्मेदारियों की बहस को दर्शाता है।
- **कार्यान्वयन अंतर:** राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) प्रतिज्ञाओं और जमीनी स्तर पर नीति कार्यान्वयन के बीच लगातार बना अंतर एक गंभीर चुनौती है, जिसके लिए मजबूत घरेलू नीतिगत तालमेल और निगरानी ढांचे की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI) रिपोर्ट वैश्विक जलवायु कार्रवाई का एक गंभीर लेकिन शिक्षाप्रद चित्र प्रस्तुत करती है। नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता की ओर तकनीकी बदलाव सकारात्मक पहलू हैं, लेकिन नीतिगत निष्क्रियता, विशेष रूप से जीवाश्म ईंधन को चरणबद्ध तरीके से

समाप्त करने के संबंध में, जलवायु लक्ष्यों को कमजोर करने का जोखिम पैदा करती है। भारत के लिए, संरचनात्मक नीतिगत कमियों को दूर करना - विशेष रूप से कोयला आधारित परिवर्तन और नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार में - घरेलू विकास और अंतरराष्ट्रीय जलवायु प्रतिबद्धताओं दोनों में नेतृत्व की विश्वसनीयता हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (सीसीपीआई) 2026 के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सीसीपीआई का प्रकाशन संयुक्त रूप से न्यूक्लाइमेट इंस्टीट्यूट, जर्मनवॉच और क्लाइमेट एक्शन नेटवर्क (सीएएन) इंटरनेशनल द्वारा किया जाता है।
2. सीसीपीआई 2026 में, शीर्ष तीन स्थान खाली रह गए क्योंकि किसी भी देश का जलवायु प्रदर्शन 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य के साथ पूरी तरह से संगत नहीं पाया गया।
3. नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता के तेजी से विस्तार के कारण भारत को सीसीपीआई 2026 में "उच्च प्रदर्शन करने वाले" देश के रूप में वर्गीकृत किया गया था।

4. जी20 देशों में, यूनाइटेड किंगडम एकमात्र ऐसा देश था जिसने "उच्च प्रदर्शन" श्रेणी में स्थान प्राप्त किया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 4
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 2, 3 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a)

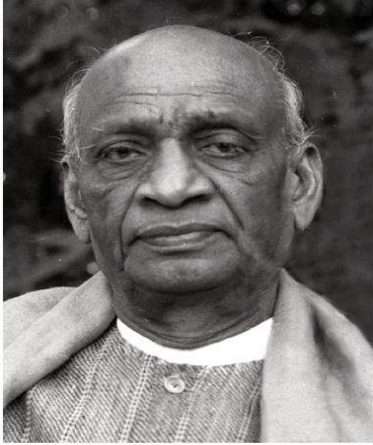
मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (सीसीपीआई) 2026 के आलोक में, इस कार्यान्वयन अंतराल के कारणों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। साथ ही, भारत के जलवायु प्रदर्शन का मूल्यांकन कीजिए और जलवायु नेतृत्वकर्ता के रूप में इसकी विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए उपाय सुझाइए। (250 शब्द, 15 अंक)

समाचारों में चर्चित प्रमुख व्यक्तित्व

सरदार वल्लभभाई पटेल

चर्चा में क्यों: 31 अक्टूबर 2025 को, भारत (भारत) के उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन (श्री सी. पी. राधाकृष्णन) ने सरदार वल्लभभाई पटेल (सरदार वल्लभभाई पटेल) की 150वीं जयंती को अत्यंत गरिमा के साथ मनाया, जिन्हें व्यापक रूप से "भारत के लौह पुरुष" के रूप में जाना जाता है।



मुख्य विवरण

- **राष्ट्रीय एकता दिवस** शपथ: उपस्थित लोगों के बीच एकता और अखंडता की भावना की पुष्टि की गई।
- **अंतर-संस्थागत सहयोग:** इस समारोह ने उपराष्ट्रपति सचिवालय और भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के बीच सहयोग को रेखांकित किया, जो विरासत को शासन के मूल्यों से जोड़ता है।

सरदार वल्लभभाई पटेल के बारे में

- सरदार वल्लभभाई पटेल (1875-1950) भारत के सबसे बड़े नेताओं में से एक और आधुनिक भारत के एक प्रधान निर्माता थे।
- **उपनाम:** भारत के लौह पुरुष
- **मुख्य भूमिकाएँ:** स्वतंत्रता सेनानी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, स्वतंत्र भारत के पहले उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री थे।
- **मुख्य योगदान:** 1947 के बाद 500 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में राजनीतिक रूप से शामिल करने में अहम भूमिका निभाई।
- **विरासत:** भारत के आधुनिक प्रशासनिक ढांचे की स्थापना की और एकता को मुख्य राष्ट्रीय मूल्य के रूप में बढ़ावा दिया।

जीवन परिचय

- **1875** – गुजरात में जन्म
- **1913** – इंग्लैंड से बैरिस्टर बनकर लौटे
- **1917** – सार्वजनिक जीवन में प्रवेश; अहमदाबाद स्वच्छता आयुक्त

- **1918** – खेड़ा सत्याग्रह का नेतृत्व किया
- **1928** – बारडोली सत्याग्रह का नेतृत्व किया → "सरदार" की उपाधि प्राप्त की
- **1930** – सविनय अवज्ञा आंदोलन; कारावास
- **1942** – भारत छोड़ो आंदोलन
- **1947** – उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री; रियासतों का एकीकरण
- **1950** – निधन

राष्ट्र-निर्माण में उनका योगदान

- **सरदार पटेल** की राज्यकौशलता (स्टेट्समैनशिप) ने एक एकीकृत भारत की आधारशिला रखी।
- **देशी रियासतों का एकीकरण:** प्रमुख देशी रियासतों के विलय के लिए सफलतापूर्वक बातचीत की, जिससे राजनीतिक और क्षेत्रीय एकता का आधार निर्मित हुआ।
- **शासन को सुदृढ़ करना:** एक विविध, लोकतांत्रिक गणराज्य के लिए आवश्यक सुदृढ़ प्रशासनिक संस्थानों और शासन प्रणालियों को बढ़ावा दिया।
- **एकता के पक्षधर:** भारत के इतिहास के एक महत्वपूर्ण समय के दौरान राष्ट्रीय अखंडता की वकालत की और विभाजनकारी ताकतों को हतोत्साहित किया।
- उनका दृष्टिकोण **भारत** के सद्भाव, लचीलेपन और समावेशी प्रगति के लक्ष्य का मार्गदर्शन करना जारी रखता है।

व्यक्तित्व लक्षण और नेतृत्व की शैली

- वे अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और निर्णायक नेतृत्व के लिए जाने जाते थे।
- उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में सरलता और सादगी(संयम) का पालन किया।
- उन्होंने ईमानदारी, अनुशासन और कर्तव्य को सदैव महत्व दिया।
- वे वाक्यदृता के स्थान पर कृत्य (एक्शन) को प्राथमिकता देते थे।

विरासत और पहचान

- "भारत के लौह पुरुष" के तौर पर याद किए जाते हैं
- प्रत्येक वर्ष उनकी जयंती पर **राष्ट्रीय एकता दिवस** मनाया जाता है
- गुजरात में विश्व की सबसे ऊंची मूर्तिका 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' देश बनाने में उनके बड़े योगदान को श्रद्धांजलि के तौर पर खड़ी है

प्रशासनिक योगदान

- अखिल भारतीय सेवा के दृढ़ समर्थक तथा इन्हें बनाने में अहम भूमिका निभाई:
 - ✓ भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS)

- ✓ भारतीय पुलिस सेवा (IPS)
- इन्हें "भारत का स्टील फ्रेम" कहा जाता है।

चर्चित नारा:

"सिर्फ भाषणों से एकता नहीं बनाई जा सकती।"

(Unity cannot be forged by speeches alone.)

निष्कर्ष

सरदार वल्लभभाई पटेल के निर्णायक नेतृत्व और एकता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता ने एक मजबूत, एकीकृत भारत की आधारशिला रखी। यह योगदान उन्हें राष्ट्रीय अखंडता और प्रभावी शासन का एक स्थायी प्रतीक बनाता है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: सरदार वल्लभभाई पटेल को मुख्य रूप से "भारत का लौह पुरुष" के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उनकी भूमिका थी:

- भारतीय संविधान का ड्राफ्ट बनाना
- भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व करना
- रियासतों को भारतीय संघ में मिलाना
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना करना

उत्तर: (c)

बंकिम चंद्र चटर्जी

चर्चा में क्यों: भारत ने बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ मनाई, जिससे उनकी साहित्यिक प्रतिभा और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन पर उनके प्रभाव पर फिर से ध्यान केंद्रित हुआ। यह गीत देशभक्ति की भावना और राष्ट्रीय एकता का एक शक्तिशाली प्रतीक बना हुआ है।



बंकिम चंद्र चटर्जी के बारे में

- बंकिम चंद्र चटर्जी बंगाल के प्रकाण्ड विद्वान् तथा महान् कवि और उपन्यासकार थे।
- **उल्लेखनीय कार्य:** वंदे मातरम (भारत का राष्ट्रीय गीत) की रचना की, जो पहली बार **आनंदमठ** उपन्यास (1882) में प्रकाशित हुआ था।
- **प्रारंभिक जीवन और शिक्षा:** बंकिम चंद्र चटर्जी का जन्म जून 1838 में नैहाटी, बंगाल के पास हुआ था। उन्होंने हुगली मोहसिन कॉलेज और प्रेसीडेंसी कॉलेज में अध्ययन किया और 1858 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक किया — वे इसके सबसे प्रारंभिक स्नातकों में से एक थे।
- **करियर:** अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, बंकिम ब्रिटिश इंडियन सिविल सर्विस में शामिल हो गए, जहाँ उन्होंने डिप्टी मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलेक्टर के रूप में कार्य किया, और बाद में आरामबाग के पहले सब-डिवीजनल मजिस्ट्रेट बने। उन्होंने 1869 में कानून की डिग्री भी प्राप्त की और 1891 में सेवा से सेवानिवृत्त हुए।
- साहित्यिक प्रसिद्धि: बंकिम को अपने पहले उपन्यास **दुर्गेशानंदिनी** (1865) से प्रसिद्धि मिली, जो **गढ़ मन्दारन किले** के खंडहरों से प्रेरित था। इसे आधुनिक बंगाली साहित्य में एक मील का पत्थर माना जाता है। बंगाली साहित्यिक हलकों में '**साहित्य सम्राट**' के रूप में प्रसिद्ध, उन्होंने 14 उपन्यासों के साथ-साथ निबंधों और ग्रंथों की रचना की।

जीवन परिचय

- 1838: **नैहाटी, बंगाल** के पास जन्म।
- 1858: **कलकत्ता विश्वविद्यालय (कलकत्ता यूनिवर्सिटी)** से स्नातक किया।
- 1865: **दुर्गेशानंदिनी** प्रकाशित हुआ — जो उनका पहला प्रमुख उपन्यास था।
- 1870 के दशक में: 'वंदे मातरम' की रचना की (जिसे बाद में **आनंदमठ** में शामिल किया गया)।
- 1882: **आनंदमठ** प्रकाशित हुआ, जिसमें 'वंदे मातरम' को प्रस्तुत किया गया।
- 1891: सिविल सेवा से सेवानिवृत्त हुए; 'राय बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किए गए।
- 1894: 'कंपेनियन ऑफ द मोस्ट एमिनेंट ऑर्डर ऑफ द इंडियन एम्पायर' (**CMEIOE**) से सम्मानित।
- 1894: निधन, एक अमिट विरासत पीछे छोड़ गए।

उनका योगदान

- **साहित्यिक विरासत:** बंकिम आधुनिक भारतीय साहित्य में एक अग्रणी आवाज थे। उनके उपन्यासों ने ऐतिहासिक आख्यान को सामाजिक टिप्पणी के साथ मिश्रित किया, जिससे पाठकों और विचारकों की पीढ़ियों को प्रेरणा मिली। उनके लेखन ने औपनिवेशिक शासन के दौरान एक विशिष्ट भारतीय सांस्कृतिक और साहित्यिक पहचान स्पष्ट करने में सहायता की।

- **राष्ट्रवाद और वंदे मातरम:** वंदे मातरम एक गीत से कहीं अधिक बन गया — यह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारत के संघर्ष के दौरान स्वतंत्रता के लिए एक युद्धघोष (बैटल क्राई) के रूप में उभरा। भारत को 'माता' के रूप में इसके मानवीकरण ने विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों में देशभक्ति की भावनाओं और एकता को प्रज्वलित किया।
- **स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव:** यह गीत 20वीं शताब्दी की शुरुआत में राजनीतिक सभाओं और विरोध प्रदर्शनों में व्यापक रूप से गाया गया था, विशेष रूप से बंगाल विभाजन के बाद 'स्वदेशी आंदोलन' के दौरान। इसने स्वतंत्रता की राष्ट्रव्यापी खोज को सांस्कृतिक गौरव के साथ बांधने में सहायता की।

निष्कर्ष

बंकिम चंद्र चटर्जी केवल एक लेखक नहीं थे - वे एक दूरदर्शी थे जिन्होंने भारत को भक्ति और विरोध की आवाज़ दी। वंदे मातरम राष्ट्र के प्रति प्रेम और उन लोगों के बलिदान का एक स्थायी प्रतीक बना हुआ है जिन्होंने भारत की नियति को आकार दिया।



वैश्विक प्रतिनिधित्व

इस शिखर सम्मेलन में भारत और विदेशों में आर्य समाज की इकाइयों के प्रतिनिधियों और प्रत्ययुक्त (Delegates) ने भाग लिया, जो आर्य समाज के सुधारवादी आदर्शों की वैश्विक पहुंच और निरंतर प्रासंगिकता को दर्शाता है।

प्रदर्शनी

- “सेवा के 150 स्वर्णिम वर्ष (150 Golden Years of Service)” शीर्षक वाली एक प्रदर्शनी में शिक्षा, सामाजिक सुधार, आध्यात्मिक उत्थान और राष्ट्र निर्माण में आर्य समाज की परिवर्तनकारी यात्रा को प्रदर्शित किया गया।

स्मारक सिक्के

- इस अवसर पर, महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती और आर्य समाज की सेवा के 150 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में ₹200 और ₹150 के स्मारक सिक्के जारी किए गए।

महर्षि दयानंद सरस्वती के बारे में

- महर्षि दयानंद सरस्वती (1824-1883) एक दूरदर्शी सामाजिक और धार्मिक सुधारक थे जिन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। वेदों से प्रेरित होकर, उन्होंने “वेदों की ओर लौटो” का आह्वान किया - जो मूल वैदिक शिक्षाओं की ओर लौटने पर जोर देता है, जिसमें सत्य, ज्ञान, समानता और सामाजिक उत्थान शामिल हैं।
- दयानंद सरस्वती ने जातिगत भेदभाव, मूर्ति पूजा, बाल विवाह और अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों को चुनौती दी और शिक्षा, तर्कसंगत सोच और सामाजिक सुधार को बढ़ावा दिया।

उनका योगदान

1. धार्मिक और सामाजिक सुधार

- ✓ दयानंद सरस्वती ने वैदिक शिक्षाओं के माध्यम से हिंदू समाज के सुधार का समर्थन किया, और कर्मकांडों एवं अंधविश्वासों के

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. वंदे मातरम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह मूल रूप से शुद्ध संस्कृत में लिखा गया था।
2. यह सबसे पहले बंकिम चंद्र चटर्जी के उपन्यास आनंदमठ में छपा था।
3. रवींद्रनाथ टैगोर ने इस गीत को संगीत दिया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

महर्षि दयानंद सरस्वती

चर्चा में क्यों: हाल ही में, भारत के प्रधानमंत्री ने 31 अक्टूबर 2025 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्य शिखर सम्मेलन 2025 में भाग लिया। यह शिखर सम्मेलन ज्ञान ज्योति महोत्सव का एक मुख्य हिस्सा था, जो महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती और आर्य समाज की समाज सेवा के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में मनाया गया।

आलोचनात्मक परीक्षण को प्रोत्साहित किया। उनकी शिक्षाओं ने एक आधुनिक और तर्कसंगत आध्यात्मिक दृष्टिकोण की आधारशिला रखी।

2. शिक्षा और सामाजिक उत्थान

- ✓ उनके प्रभाव में, आर्य समाज ने ज्ञान, समानता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए स्कूलों और शैक्षिक संस्थानों की स्थापना की, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए।

3. स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव

- ✓ आर्य समाज के सिद्धांतों ने कई स्वतंत्रता सेनानियों और सुधारकों को प्रेरित किया, जिससे भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन के बौद्धिक और नैतिक आधार में योगदान मिला।

4. वैश्विक पहुंच

- ✓ 150 वर्षों में, **आर्य समाज** के सेवा, वैदिक ज्ञान और सामाजिक सुधार के आदर्शों ने वैश्विक स्तर पर प्रतिध्वनि प्राप्त की है, जिससे शिक्षा और आध्यात्मिक उत्थान में सामुदायिक जुड़ाव बढ़ा है।

निष्कर्ष

अंतरराष्ट्रीय आर्य सम्मेलन 2025 केवल एक स्मरणीय कार्यक्रम नहीं था — यह **भारत** की सांस्कृतिक विरासत, सुधारवादी परंपरा और वैदिक आदर्शों की वैश्विक पहुंच का उत्सव था। **महर्षि दयानंद सरस्वती** की विरासत का सम्मान करते हुए और **आर्य समाज** की 150 वर्षों की सेवा को मान्यता देते हुए, इस शिखर सम्मेलन ने ज्ञान, समानता, सेवा और राष्ट्रीय गौरव के उन मूल्यों को पुनर्मिलन प्रदान किया जो 'विकसित **भारत 2047**' की ओर **भारत** की यात्रा के लिए अभिन्न हैं।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न अंतरराष्ट्रीय आर्य शिखर सम्मेलन 2025 मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस आयोजन से सम्बंधित था:

1. महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती
2. आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष
3. स्वदेशी आंदोलन के 100 वर्ष

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

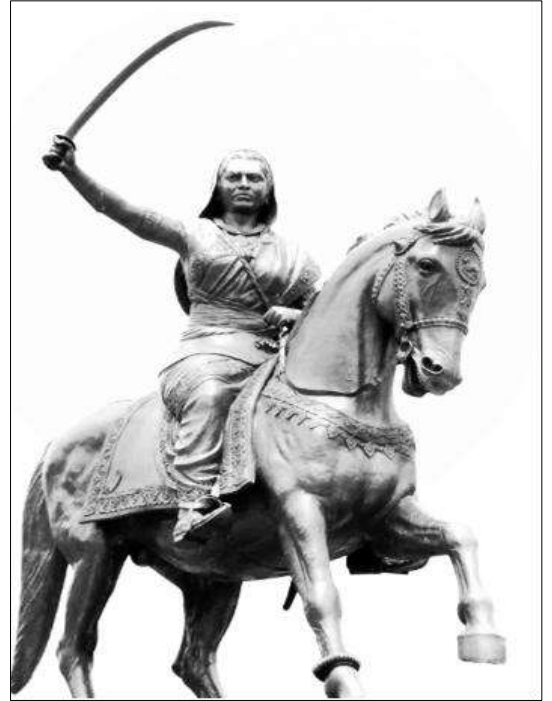
उत्तर: (b)

रानी चेत्रम्मा

चर्चा में क्यों: हाल ही में, किचूर रानी चेत्रम्मा उत्सव कर्नाटक के किचूर में आयोजित किया गया, जो 1824 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ रानी चेत्रम्मा की ऐतिहासिक जीत की 200वीं वर्षगांठ है।

मुख्य विवरण

- कर्नाटक में प्रत्येक वर्ष होने वाला किचूर रानी चेत्रम्मा उत्सव, उनके साहस और विरासत को याद करता है, जो उनके उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष और नारीवादी कहानियों में उनकी प्रतीकात्मक भूमिका से नई पीढ़ियों को प्रेरित करता है।
- रानी चेत्रम्मा को 1824 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ उनके बहादुर विद्रोह के लिए याद किया जाता है, जो भारत में औपनिवेशिक विस्तार के खिलाफ शुरुआती सशस्त्र प्रतिरोधों में से एक था।



मुख्य विशेषताएँ

- **प्रथम बड़ा सशस्त्र विद्रोह:** 1824 में किचूर किले की युद्ध को भारत में महिलाओं के नेतृत्व वाले शुरुआती उपनिवेशवाद विरोधी संघर्षों में से एक के रूप में दर्ज किया गया है, जो 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम से दशकों पहले हुआ था।
- **व्यपगत सिद्धांत के खिलाफ प्रतिरोध:** विद्रोह तब शुरू हुआ जब अंग्रेजों ने उनके गोद लिए हुए वारिस, शिवलिंगप्पा को राजा मानने से इनकार कर दिया, जो बाद में गवर्नर-जनरल डलहौजी के तहत व्यपगत सिद्धांत नीति का शुरुआती कदम था।
- **सांस्कृतिक प्रतीक:** उनकी कहानी न केवल औपनिवेशिक दस्तावेजों में बल्कि लोकगीतों, लावणी और मौखिक इतिहास के माध्यम से भी जीवित है जो उनके शौर्य का जश्न मनाते हैं।

उनके विद्रोह की विशेषताएं

- **संख्या में कम फिर भी निडर:** हालांकि उन्हें सैन्य रूप से बेहतर ब्रिटिश सेना का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया और अपने राज्य की स्वायत्तता के लिए लड़ने का फैसला किया।
- **प्रारंभ में ब्रिटिश की हार:** प्रथम मुठभेड़ में, ब्रिटिश अधिकारी जॉन ठाकरे किचूर के रक्षकों द्वारा मारे गए - उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए यह एक दुर्लभ हार थी।
- **बाद में ब्रिटिश सुदृढीकरण:** अंत में एक शक्तिशाली ब्रिटिश रेजिमेंट ने किले पर हमला किया, जिससे किचूर का पतन हुआ और दिसंबर 1824 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

उनके जीवन के बारे में

- रानी चेत्रम्मा का जन्म 23 अक्टूबर 1778 को कागती गांव (अब बेलगावी जिले में) में एक लिंगायत परिवार में हुआ था। 15 साल की उम्र में उनकी शादी किचूर के शासक राजा मल्लसर्जा से हुई थी।
- **राज्याभिषेक और संघर्ष:** 1816 में अपने पति की मृत्यु और बाद में अपने बेटे की मृत्यु के बाद, चेत्रम्मा ने शिवलिंगप्पा को किचूर सिंहासन के उत्तराधिकारी के रूप में गोद लिया।
 - ✓ जब अंग्रेजों ने गोद लिए बच्चे को राज्य मानने से इनकार कर दिया और राज्य पर कब्जा करने की कोशिश की, तो उन्होंने विरोध किया - किचूर किले से व्यक्तिगत रूप से अपने सैनिकों का नेतृत्व करते हुए युद्ध में उतरीं।

जीवन परिचय

- **1778 (23 अक्टूबर):** कागती, कर्नाटक में जन्म।
- **1793:** लगभग 15 साल की उम्र में किचूर के राजा मल्लसारजा से विवाह हुआ।
- **1816:** उनके पति की मृत्यु; उनका बेटा शिवलिंगरुद्र शासक बना।
- **1824 (23 अक्टूबर):** पहले टकराव के दौरान ब्रिटिश अधिकारी जॉन थैकरे मारा गया; चेत्रम्मा पहला युद्ध विजयी रहीं।
- **1824 (3-4 दिसंबर):** ब्रिटिश सेना ने किचूर किले पर कब्जा कर लिया; चेत्रम्मा को कैद कर लिया गया।
- **1829:** रानी चेत्रम्मा की जेल में मृत्यु हो गई।

विरासत और स्मृति

रानी चेत्रम्मा, हालांकि रानी लक्ष्मीबाई के रूप में प्रसिद्ध नहीं है, उनकी कहानी कर्नाटक के ऐतिहासिक मानस और क्षेत्र के गौरव में एक विशेष स्थान रखती है। किचूर रानी चेत्रम्मा उत्सव और विभिन्न सांस्कृतिक मंचों पर श्रद्धांजलि जैसे वार्षिक समारोह उनकी बहादुरी का सम्मान करते हैं।

निष्कर्ष

अंग्रेजों के खिलाफ रानी चेत्रम्मा का विद्रोह साहस और अवज्ञा का प्रतीक है — न केवल शुरुआती उपनिवेश विरोधी संघर्षों में, बल्कि स्वायत्तता और न्याय की रक्षा करने वाली महिलाओं और नेताओं के लिए एक स्थायी प्रेरणा भी है। उसका जीवन शाही शक्ति का विरोध करने के साहस और प्रतिकूलता का सामना करने के दृढ़ संकल्प को प्रदर्शित करता है।

विविध समाचार

भारतीय विश्वविद्यालयों में तीन नवीन डॉ. अंबेडकर पीठ

चर्चा में क्यों: सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के अधीन डॉ. अंबेडकर फाउंडेशन ने भारत के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में तीन नए डॉ. बी. आर. अंबेडकर अध्यक्षों के निर्माण के लिए समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर करने के लिए एक समारोह का आयोजन किया।

मुख्य विवरण

- यह कार्यक्रम 'डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर' (DAIC), नई दिल्ली में आयोजित किया गया।
- भारत रत्न डॉ. बी. आर. अंबेडकर के नाम पर निम्नलिखित संस्थानों में तीन नवीन शैक्षणिक पीठ स्थापित करने पर सहमति व्यक्त की गई है:
 - मुंबई विश्वविद्यालय
 - जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी
 - जी. बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (उत्तराखंड)
- ये पीठ डॉ. अंबेडकर के दर्शन और दृष्टिकोण पर अनुसंधान, शिक्षा एवं सार्वजनिक संवाद को बढ़ावा देने हेतु एक व्यापक राष्ट्रीय पहल का हिस्सा हैं।
- इन तीन नई पीठों के जुड़ने के साथ, अब देश भर में इस योजना के अंतर्गत संचालित डॉ. अंबेडकर पीठों की कुल संख्या 28 हो गई है।

महत्व

नवीन डॉ. अंबेडकर पीठों की स्थापना का उद्देश्य निम्नलिखित है:

- डॉ. बी. आर. अंबेडकर के जीवन, कार्यों और विचारों के साथ शैक्षणिक जुड़ाव को गहरा करना।
- सामाजिक न्याय, समानता, संवैधानिक मूल्यों और वंचित समुदायों के सशक्तिकरण पर नीति-उन्मुख अनुसंधान को प्रोत्साहित करना।
- अंबेडकरवादी चिंतन से प्रेरणा लेकर समकालीन सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने हेतु भारत के शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करना।

निष्कर्ष

यह विस्तार संस्थागत सहयोग और अनुसंधान के माध्यम से डॉ. अंबेडकर के आदर्शों को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है। अतिरिक्त अध्यक्ष पूरे भारत में शैक्षणिक उत्कृष्टता और सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने, सीखने, संवाद और नवाचार के केंद्र के रूप में काम करेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय पर्पल फेस्ट

चर्चा में क्यों: हाल ही में, गोवा में आयोजित 'अंतर्राष्ट्रीय पर्पल फेस्ट' के दूसरे दिन, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय (एमएसजेई) के तहत दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (DEPwD) ने समावेशी शिक्षा, सुगम्यता (एक्सेसिबिलिटी) और कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए तीन प्रमुख पहलों का अनावरण किया है।

तीन प्रमुख पहलें

1. विकलांग व्यक्तियों के लिए आईईएलटीएस प्रशिक्षण पुस्तिका

- यह अपनी तरह की पहली हैंडबुक है, जिसे विशेष रूप से विकलांग बच्चों के लिए अंतर्राष्ट्रीय अंग्रेजी भाषा परीक्षण प्रणाली (आईईएलटीएस) परीक्षा की तैयारी के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (DEPwD) के समर्थन से बिलीव इन द इनविजिबल (बीटीआई) द्वारा विकसित यह गाइड, सुनने, पढ़ने, लिखने और बोलने के कौशल को बेहतर बनाने के लिए सरल तकनीक और उपकरण प्रदान करता है।
- इसमें मानक तैयारी में आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए अनुकूलन रणनीतियाँ, सुगम अभ्यास सामग्री, अध्ययन योजनाएं और 'भारतीय सांकेतिक भाषा' (ISL) वीडियो लिंक सम्मिलित हैं।
- यह पुस्तिका (हैंडबुक) दिव्यांगजनों के साथ कार्य करने वाले प्रशिक्षकों के लिए एक शिक्षण नियमावली के रूप में भी कार्य करती है,
- जिसका उद्देश्य वैश्विक भाषा दक्षता प्रशिक्षण में बाधाओं को दूर करना है।

2. ISL इंटरप्रिटेशन के लिए ISLRTC RPL सर्टिफिकेशन इंटरप्रिटेशन हेतु ISLRTC RPL सर्टिफिकेशन

- भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र (इंडियन साइन्स लैंग्वेज रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेंटर - ISLRTC), नई दिल्ली (न्यू दिल्ली) — जो सांकेतिक भाषा प्रशिक्षण हेतु शीर्ष निकाय (अपैक्स बॉडी) है — ने 'भारतीय सांकेतिक भाषा' (इंडियन साइन्स लैंग्वेज - ISL) व्याख्या में 'पूर्व शिक्षण की मान्यता' (रिकग्निशन ऑफ प्रायर लर्निंग - RPL) कौशल प्रमाणन पूर्ण कर लिया है।
- यह पाठ्यक्रम SODA (सब्लिंग्स ऑफ डेफ एडल्ट्स) और CODA (चिल्ड्रन ऑफ डेफ एडल्ट्स) के लिए 11-29 अगस्त 2025 तक ISLRTC में ऑफलाइन मोड (ऑफलाइन मोड) में आयोजित किया गया था।

- ✓ पूरे भारत (इंडिया) से कुल 17 प्रतिभागियों ने सफलतापूर्वक मूल्यांकन (असेसमेंट) पूर्ण किया।
- ✓ इस प्रथम बैच (फर्स्ट बैच) का प्रमाणपत्र वितरण समारोह 03 दिसंबर 2025 को 'अंतरराष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस' (इंटरनेशनल डे फॉर पर्सन्स विद डिसेबिलिटीज) के अवसर पर निर्धारित है।
- ✓ यह प्रमाणन सांकेतिक भाषा व्याख्या (साइन लैंग्वेज इंटरप्रीटेशन) में कौशल को सुदृढ़ करता है और बधिर समुदाय के हितधारकों के सार्थक व्यावसायिक विकास (प्रोफेशनल डेवलपमेंट) का समर्थन करता है।

3. ASL और BSL में बुनियादी प्रशिक्षण कार्यक्रम

- ✓ भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र (ISLRTC) ने अमेरिकी सांकेतिक भाषा (अमेरिकन साइन लैंग्वेज-ASL) और ब्रिटिश सांकेतिक भाषा (BSL) पर एक विशेष बुनियादी प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने की भी घोषणा की है।
- ✓ हाल ही में, शारीरिक प्रशिक्षण (फिजिकल ट्रेनिंग) 03 दिसंबर 2025 से नई दिल्ली स्थित भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र (ISLRTC) में प्रस्तावित किया गया।
- ✓ यह कार्यक्रम सांकेतिक भाषा पेशेवरों (साइन लैंग्वेज प्रोफेशनल्स) को ASL और BSL की बुनियादी बातों से परिचित कराएगा, जिसमें व्याकरण (ग्रामर), वाक्य-विन्यास (स्टेटमेंट-स्ट्रक्चर) और शब्दावली सम्मिलित हैं।
- ✓ इसका उद्देश्य वैश्विक प्रदर्शन को बढ़ाना और भारतीय सांकेतिक भाषा दुभाषियों के लिए अंतरराष्ट्रीय अवसरों को व्यापक बनाना है।

पहलों का महत्व

- **शिक्षा में समावेशिता:** इंटरनेशनल इंग्लिश लैंग्वेज टेस्टिंग सिस्टम (IELTS) हैंडबुक दिव्यांगजनों के लिए अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक और आजीविका के अवसरों तक पहुँचने के मार्ग खोलती है।
- **कौशल विकास:** प्रमाणन और प्रशिक्षण (सर्टिफिकेशन & ट्रेनिंग) व्यावसायिक दक्षताओं और रोजगार क्षमता को सुदृढ़ करते हैं।
- **वैश्विक एकीकरण:** ASL और BSL का ज्ञान भारतीय पेशेवरों को अंतरराष्ट्रीय मंचों (इंटरनेशनल फोरम) में भागीदारी के लिए सुसज्जित करता है।

निष्कर्ष

हाल ही में, गोवा में आयोजित 'अंतरराष्ट्रीय पर्पल फेस्ट' में शुरू की गई ये तीन पहलें दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदर्शित करती हैं। ये पहलें शिक्षा, संचार और कौशल पर केंद्रित हैं। ये प्रयास सरकार के एक समावेशी समाज के निर्माण के विज्ञान के अनुरूप हैं, जहाँ दिव्यांगजन बिना किसी बाधा के उन्नति कर सकें।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

मुख्य परीक्षा प्रश्न

भारत सरकार ने हाल ही में दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने हेतु कई पहलें शुरू की हैं, जिनमें भारतीय सांकेतिक भाषा (ISL) में कौशल प्रमाणन और अंतरराष्ट्रीय परीक्षाओं हेतु सुगम प्रशिक्षण सामग्री सम्मिलित है।

प्रश्न 1. दिव्यांगजनों हेतु सामाजिक समावेश और समान अवसरों को बढ़ावा देने में ऐसी पहलों के महत्व की विवेचना कीजिए। (250 शब्द, 15 अंक)

प्रश्न 2. भारत में शिक्षा और कौशल विकास तक पहुँच प्राप्त करने में दिव्यांगजनों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों का परीक्षण कीजिए। (250 शब्द, 15 अंक)

प्रश्न 3. 'दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016' के अंतर्गत भारत की प्रतिबद्धताओं के अनुरूप, दिव्यांगजनों के शैक्षिक और व्यावसायिक सशक्तिकरण को और सुदृढ़ करने हेतु उपाय सुझाएं। (250 शब्द, 15 अंक)

समाचारों में चर्चित स्थल - विश्व

1. **जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका** - ने वर्ष 2025 के जी20 शिखर सम्मेलन (22-23 नवंबर) की मेजबानी की, अफ्रीकी महाद्वीप पर पहला शिखर सम्मेलन, जिसमें वैश्विक आर्थिक और भू-राजनीतिक मुद्दों पर प्रमुख चर्चा हुई।



2. **बलख प्रांत और मजार-ए-शरीफ, अफगानिस्तान** - नवंबर 2025 के प्रारंभ में आए तीव्र भूकंप (तीव्रता ~6.2/6.3) का केंद्र, जिसके कारण उत्तरी अफगानिस्तान में जान-माल की हानि हुई और पड़ोसी क्षेत्रों में भी झटके महसूस किए गए।



3. **दुबई, संयुक्त अरब अमीरात** - दुबई एयरशो 2025 (17-21 नवंबर) का आयोजन स्थल, एक प्रमुख वैश्विक एयरोस्पेस और रक्षा कार्यक्रम जो अंतर्राष्ट्रीय विमानन और रक्षा सौदों को प्रभावित करेगा।



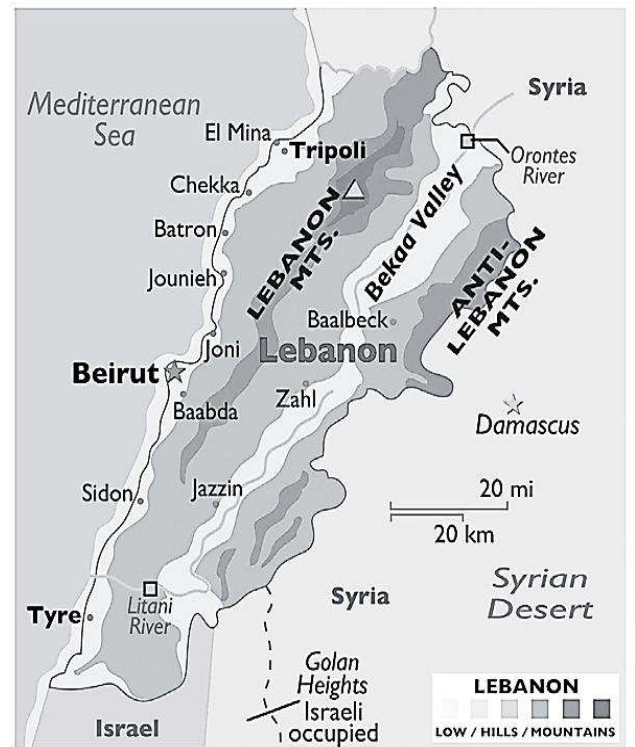
4. अबू धाबी और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) — नवंबर 2025 तक कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की मेजबानी की, जिसमें एडीआईपीईसी, इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ म्यूजियम का महा सम्मेलन, अरब स्काउट कॉन्फ्रेंस और विभिन्न व्यापारिक मंच (बिजनेस फोरम) शामिल हैं।



5. **रियाद, सऊदी अरब** - 2025 यूसीआई अर्बन साइक्लिंग वर्ल्ड चैंपियनशिप (4-8 नवंबर) का आयोजन स्थल, जो वैश्विक खेल आयोजनों की मेजबानी हेतु सऊदी अरब के बढ़ते प्रयासों का हिस्सा है।



6. **लेबनान (तैबेह, ऐन अल-हिलवेह, हरेट हरेइक क्षेत्र)** - नवंबर 2025 के दौरान इजरायली हवाई हमलों और संघर्ष की घटनाओं के केंद्र, जिसने सुरक्षा और मध्य पूर्व के तनाव की ओर अंतर्राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया।



7. **डार्विन, ऑस्ट्रेलिया** - नवंबर के अंत में श्रेणी-3 का उष्णकटिबंधीय चक्रवात 'फिना' (Cyclone Fina), से प्रभावित हुआ, जिसके कारण जनजीवन बाधित हुआ और गंभीर मौसम का प्रभाव देखा गया।



10. **ढाका, बांग्लादेश** नवंबर 2025 के मध्य में विश्व के **सर्वाधिक प्रदूषित शहरों** में दर्ज किया गया, जिससे पर्यावरणीय स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ उत्पन्न हुईं।

8. **हाट याई, थाईलैंड** - नवंबर 2025 के अंत में भीषण बाढ़ का सामना करना पड़ा, जिसने जलवायु परिवर्तन और आपदा प्रतिक्रिया के मुद्दों को रेखांकित किया।



9. **उत्तरी सुमात्रा और सिबोलगा, इंडोनेशिया** - भारी वर्षा के कारण नवंबर के अंत में भूस्खलन और बाढ़ से प्रभावित हुआ, जो पर्यावरणीय समाचारों की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा।

'द हिन्दू' एवं 'इंडियन एक्सप्रेस' से दैनिक अभ्यास प्रश्न

(नवम्बर 2025)

दैनिक वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. AQI एक ऐसा उपकरण है जो वायु प्रदूषण के स्तर और उससे जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों को समझने का एक स्पष्ट और सरल मार्ग प्रदान करता है।
2. इसकी गणना मुख्य प्रदूषकों की सांद्रता के आधार पर की जाती है जिसमें PM_{2.5}, PM₁₀, NO₂, SO₂, CO, O₃, और NH₃ सम्मिलित हैं।
3. 300 से ऊपर के AQI मान 'अच्छी' वायु गुणवत्ता का संकेत देते हैं, जो सामान्य जनसंख्या के लिए न्यूनतम स्वास्थ्य जोखिम उत्पन्न करते हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) केवल 1, 2 और 3

प्रश्न 2. जापान के भौगोलिक विशेषताओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. जापान एक द्वीपसमूह है जिसमें 6,000 से अधिक द्वीप सम्मिलित हैं, जिनमें से होंशू, होक्काइडो, क्यूशू और शिकोकू सबसे बड़े हैं।
2. यह देश प्रशांत महासागरीय रिंग ऑफ फायर के निकट स्थित है, जो इसे बार-बार आने वाले भूकंपों और ज्वालामुखी विस्फोटों के प्रति संवेदनशील बनाता है।
3. जापान पूरे देश में समशीतोष्ण जलवायु का अनुभव करता है, जिसमें इसके उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्रों के मध्य न्यूनतम भिन्नता होती है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) केवल 1, 2 और 3

प्रश्न 3. खैबर पख्तूनख्वा (KPK) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. खैबर पख्तूनख्वा अपनी सीमा अफगानिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (POK) दोनों के साथ साझा करता है।
2. खैबर दर्रा, जो एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यापार मार्ग है, इसी प्रांत के भीतर स्थित है।
3. सिंधु नदी उत्तर से दक्षिण की ओर पूरी तरह से खैबर पख्तूनख्वा से होकर बहती है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: भारत में संघवाद और लोकतांत्रिक जवाबदेही की भावना को बनाए रखने के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष राज्य चुनाव आवश्यक हैं।

कथन 2: भारत निर्वाचन आयोग संबंधित राज्य निर्वाचन आयोगों की देखरेख में राज्य विधानसभा चुनाव आयोजित करता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: भारत के कई क्षेत्रों में फसल उत्पादकता में गिरावट आ रही है, भले ही उच्च उपज देने वाली किस्मों के बीजों का उपयोग किया जा रहा हो।

कथन 2: रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग और भूजल के अति-दोहन ने मृदा स्वास्थ्य को खराब कर दिया है और उर्वरता कम कर दी है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है:

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, किंतु कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 1 गलत है, किंतु कथन 2 सही है।

प्रश्न 6. भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना 1969 में राष्ट्रीय विकास हेतु अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के उपयोग के दृष्टिकोण के साथ की गई थी।
2. चंद्रयान मिशनों का उद्देश्य मंगल ग्रह का अन्वेषण करना है।
3. भारतीय क्षेत्रीय नेविगेशन उपग्रह प्रणाली (IRNSS), जिसे नाविक (NavIC) भी कहा जाता है, भारत और आसपास के क्षेत्रों में सटीक स्थिति की जानकारी प्रदान करने हेतु निर्मित है।
4. गगनयान भारत का प्रथम अंतरग्रहीय (इंटरप्लेनेटरी) मिशन है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से गलत हैं?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 2 और 4
- (c) केवल 1, 3 और 4
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 7. प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (PM-KUSUM) योजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. इसका उद्देश्य किसानों के लिए ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु सौर पंपों और ग्रिड से जुड़े सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना को बढ़ावा देना है।
2. यह योजना व्यक्तिगत सौर पंपों और मौजूदा ग्रिड से जुड़े पंपों के सौरीकरण (सोलराइजेशन) दोनों का प्रावधान करती है।

3. इसे नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) द्वारा राज्य नोडल एजेंसियों के सहयोग से कार्यान्वित किया जाता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

प्रश्न 8. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: भारत-चीन सीमा विवाद का पश्चिमी क्षेत्र लद्दाख और अक्साई चिन के मध्य स्थित है।

कथन 2: चीन ने तिब्बत को शिनजियांग से जोड़ने हेतु इस क्षेत्र के माध्यम से अक्साई चिन राजमार्ग (G219) का निर्माण किया है, जिसे भारत लद्दाख के हिस्से के रूप में दावा करता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
(b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
(d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 9. रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (RTGS) प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. RTGS वास्तविक समय और सकल आधार पर धन को एक बैंक खाते से दूसरे बैंक खाते में स्थानांतरित करने में सक्षम बनाता है।
2. इसका उपयोग मुख्य रूप से उच्च-मूल्य वाले लेनदेन के लिए किया जाता है, जिसकी न्यूनतम राशि सीमा भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा निर्धारित की जाती है।
3. RTGS के अंतर्गत लेनदेन केवल कार्य दिवसों पर बैंकिंग घंटों के दौरान ही संसाधित और निपटाए जाते हैं।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

प्रश्न 10. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: आसियान (ASEAN) सचिवालय जकार्ता, इंडोनेशिया में स्थित है।

कथन 2: आसियान के महासचिव की नियुक्ति आसियान शिखर सम्मेलन द्वारा पांच वर्ष के कार्यकाल के लिए की जाती है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
(b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
(d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 11. हिमालय में अवस्थित प्रमुख तीर्थ स्थलों की स्थिति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. केदारनाथ उत्तराखंड में मंदाकिनी नदी के निकट स्थित है।
2. गंगोत्री गंगा नदी का उद्गम स्थल है और यह उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में स्थित है।

3. यमुनोत्री, यमुना नदी का उद्गम स्रोत, उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2, और 3

प्रश्न 12. गुलदाउदी पुष्पों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. गुलदाउदी मूल रूप से पूर्वी एशिया और उत्तर-पूर्वी यूरोप का पौधा है।
2. भारत में, गुलदाउदी की कृषि मुख्य रूप से सजावटी उद्देश्यों और पुष्प सजावट के लिए की जाती है।
3. गुलदाउदी के पौधों में कीटनाशक और औषधीय गुण होते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से गलत हैं?

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) 1, 2, और 3
(d) केवल 1 और 3

प्रश्न 13. राज्यसभा में संघ राज्य क्षेत्रों के प्रतिनिधित्व के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. सभी संघ राज्य क्षेत्रों का राज्यसभा में प्रतिनिधित्व नहीं है।
2. संघ राज्य क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले सदस्य उन क्षेत्रों की विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं, जहाँ ऐसी विधानसभाएँ अस्तित्व में हैं।
3. प्रत्येक संघ राज्य क्षेत्र के लिए राज्यसभा में कम से कम एक सीट की गारंटी (प्रत्याभूति) दी गई है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

प्रश्न 14. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: डोनबास क्षेत्र पूर्वी यूक्रेन का एक औद्योगिक क्षेत्र है जिसमें डोनेट्स्क और लुहान्स्क ओब्लास्ट सम्मिलित हैं।

कथन 2: रूस समर्थित अलगाववादी आंदोलनों के कारण यह क्षेत्र 2014 से संघर्ष का केंद्र बना हुआ है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
(b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
(d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 15. भारतीय न्यायालयों में निष्पादन याचिकाओं (एग्ज़िक्यूशन पिटीशन) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एक निष्पादन याचिका (एग्ज़िक्यूशन पिटीशन) तब दायर की जाती है जब न्यायालय ने डिक्री पारित कर दी हो लेकिन उसे अभी तक लागू नहीं किया गया हो।
2. भारत में लंबित कुल नागरिक मामलों में निष्पादन याचिकाओं (एग्ज़िक्यूशन पिटीशन) का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

3. भारत का उच्चतम न्यायालय सीधे उच्च न्यायालयों से उत्पन्न होने वाली सभी निष्पादन याचिकाओं (एग्ज़िक्यूशन पिटीशन) का संचालन करता है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2, और 3

प्रश्न 16. दक्षिण-पूर्वी एशियाई राष्ट्रों के संगठन (आसियान) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. आसियान की स्थापना 1967 में बैंकॉक घोषणा द्वारा की गई थी।
2. आसियान सचिवालय जकार्ता, इंडोनेशिया में स्थित है।
3. भारत आसियान का एक संस्थापक सदस्य है।

निम्नलिखित में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

प्रश्न 17. कार्बन सीमा समायोजन तंत्र (CBAM) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. यह यूरोपीय संघ द्वारा प्रस्तावित एक कार्बन मूल्य निर्धारण प्रणाली है, जिसका उद्देश्य आयातित वस्तुओं पर उनके निहित उत्सर्जन के आधार पर कर लगाकर "कार्बन रिसाव" को रोकना है।
2. इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि यूरोपीय संघ के उद्योग उन देशों के उत्पादकों की तुलना में नुकसान में न रहें जहाँ जलवायु नीतियां कमजोर हैं।
3. यह उन देशों सहित सभी देशों पर समान रूप से लागू होता है, जिनके पास समकक्ष कार्बन मूल्य निर्धारण तंत्र है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 18. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना (CCTS) का उद्देश्य उत्सर्जन कटौती प्रमाणपत्रों के व्यापार हेतु एक राष्ट्रीय ढांचा स्थापित करना और कम कार्बन वाले आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

कथन 2: ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE) इस योजना के अंतर्गत कार्बन क्रेडिट की रजिस्ट्री को विनियमित करने, सत्यापित करने और बनाए रखने के लिए नोडल प्राधिकरण के रूप में कार्य करता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 19. पाकिस्तान और अफगानिस्तान के साथ भारत की सीमाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. डूरंड रेखा पाकिस्तान और अफगानिस्तान के मध्य सीमा बनाती है।

2. रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य सीमा का निर्धारण करती है।

3. भारत, जम्मू और कश्मीर क्षेत्र में अफगानिस्तान के साथ प्रत्यक्ष भूमि सीमा साझा करता है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 20. एचआईवी (HIV) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एचआईवी मुख्य रूप से सीडी 4 टी-लिम्फोसाइटों पर हमला करता है, जो शरीर की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
2. यदि नियमित रूप से लिया जाए तो एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (ART) शरीर से एचआईवी वायरस को पूरी तरह समाप्त कर सकती है।
3. एचआईवी असुरक्षित यौन संपर्क, रक्ताधान और प्रसव या स्तनपान के दौरान मां से बच्चे में फैल सकता है।
4. भारत का राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (NACO) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1, 3 और 4
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2, 3 और 4

प्रश्न 21. अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार (2025) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. यह संयुक्त रूप से फिलिप एघियन, पीटर हॉवित और जोएल मोक्यार को प्रदान किया गया था।
2. यह पुरस्कार दीर्घकालिक आर्थिक विकास और तकनीकी नवाचार को समझने में उनके योगदान को मान्यता देता है।
3. उनका शोध दर्शाता है कि नवाचार शुरू होने के बाद विकास स्वतः ही होने लगता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 22. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति ने हस्तचालित उत्पादन विधियों से मशीन-आधारित विनिर्माण की ओर एक प्रमुख संक्रमण को चिन्हित किया।

कथन 2: भाप इंजन के आविष्कार और वस्त्र उद्योग के विकास ने इस परिवर्तन के लिए तकनीकी आधार प्रदान किया।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 23. भारत में उर्वरकों के लिए पोषक तत्व आधारित सब्सिडी (NBS) योजना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस योजना के अंतर्गत, उर्वरक कंपनियों को उर्वरकों की पोषक तत्व सामग्री (N, P, K, S) के आधार पर सब्सिडी प्रदान की जाती है।
2. यह योजना केवल यूरिया उर्वरकों पर लागू होती है।
3. योजना का उद्देश्य उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देना और मृदा स्वास्थ्य में सुधार करना है।

निम्नलिखित में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

प्रश्न 24. क्रांटम कंप्यूटिंग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. क्रांटम कंप्यूटर क्यूबिट्स का उपयोग करते हैं, जो सुपरपोज़िशन के सिद्धांत के कारण एक साथ कई अवस्थाओं में मौजूद हो सकते हैं।
2. क्रांटम कंप्यूटिंग में जटिलता दूर स्थित क्यूबिट्स को इस तरह से सह-संबंधित करने की अनुमति देता है, जैसा कि क्लासिकल बिट्स (bits) नहीं कर सकते।
3. क्रांटम कंप्यूटर पहले से ही व्यापक स्तर पर व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हैं और सभी संगणनात्मक समस्याओं के लिए क्लासिकल कंप्यूटरों की तुलना में तीव्र हैं।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 25. पीएम श्री (PM SHRI) योजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. इसका उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)-2020 के अनुरूप 14,500 से अधिक स्कूलों को मॉडल स्कूलों के रूप में विकसित करना है।
2. यह योजना पूरी तरह से केंद्र सरकार द्वारा वित्तपोषित है जिसमें राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों का कोई योगदान नहीं है।
3. पीएम श्री स्कूल NEP-2020 के कार्यान्वयन को प्रदर्शित करेंगे और अपने क्षेत्र के अन्य स्कूलों के लिए मार्गदर्शक स्कूलों के रूप में कार्य करेंगे।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 26. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: अनुच्छेद 75 प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद की नियुक्ति और कार्यकाल से संबंधित है।

कथन 2: मंत्रिपरिषद राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत पद धारण करती है, जो प्रधानमंत्री की सहायता और सलाह पर कार्य करते हैं।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।

- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 27. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: एनडीपीएस अधिनियम, 1985 को भारत में मादक द्रव्यों और मनोभावी पदार्थों (नारकोटिक ड्रग्स & साइकोट्रोपिक सबस्टेंस) से संबंधित कार्यों को नियंत्रित और विनियमित करने के लिए अधिनियमित किया गया था।

कथन II: यह अधिनियम मादक द्रव्य कानूनों को लागू करने में विभिन्न केंद्रीय और राज्य एजेंसियों द्वारा की जाने वाली कार्रवाइयों के समन्वय हेतु नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) की स्थापना का प्रावधान करता है।

कथन III: एनडीपीएस अधिनियम राज्य की अनुमति के अंतर्गत मनोरंजक उद्देश्यों के लिए मादक दवाओं की खेती, कब्जे और उपभोग की अनुमति देता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन II और कथन III दोनों सही हैं और वे दोनों कथन I की व्याख्या करते हैं।
- (b) कथन II और कथन III दोनों सही हैं किंतु उनमें से केवल एक ही कथन I की व्याख्या करता है।
- (c) कथन II और III में से केवल एक ही सही है और वह कथन I की व्याख्या करता है।
- (d) न तो कथन II और न ही कथन III सही है।

प्रश्न 28. भारत में वैज्ञानिक वर्षा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत में क्लाउड सीडिंग के निरंतर परिणाम नहीं मिले हैं, क्योंकि इसकी सफलता काफी हद तक आर्द्रतायुक्त बादलों की उपलब्धता पर निर्भर करती है।
2. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने क्लाउड सीडिंग को बड़े पैमाने पर सूखा प्रबंधन के लिए एक सिद्ध पद्धति के बजाय एक प्रयोगात्मक तकनीक घोषित किया है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 29. वन अधिकार अधिनियम (FRA), 2006 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. यह अधिनियम वन संसाधनों पर वनवासी अनुसूचित जनजातियों और अन्य पारंपरिक वनवासियों के अधिकारों को मान्यता देता है।
2. ग्राम सभा के पास व्यक्तिगत या सामुदायिक वन अधिकारों की प्रकृति और सीमा निर्धारित करने की प्रक्रिया शुरू करने की शक्ति है।
3. यह अधिनियम ग्राम सभा की सहमति के बिना गैर-वन उद्देश्यों के लिए वन भूमि के विचलन की अनुमति देता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 30. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) की स्थापना वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के अंतर्गत बाघ संरक्षण को सुदृढ़ करने के लिए की गई थी।

कथन 2: इसकी स्थापना 'टाइगर टास्क फोर्स' की सिफारिशों पर की गई थी और 2006 के अधिनियम संशोधन द्वारा इसे वैधानिक दर्जा दिया गया था।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 31. फेंटानिल (FENTANYL) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- फेंटानिल एक कृत्रिम ओपियोइड है जो मॉर्फिन की तुलना में काफी अधिक शक्तिशाली है।
- इसका उपयोग चिकित्सा क्षेत्र में कानूनी रूप से एनेस्थेटिक के रूप में और दर्द प्रबंधन के लिए किया जाता है।
- अवैध रूप से निर्मित फेंटानिल का दुरुपयोग विश्व स्तर पर ड्रग ओवरडोज से होने वाली मौतों का एक प्रमुख कारण बन गया है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- केवल 1 और 2
- केवल 2 और 3
- केवल 1 और 3
- 1, 2 और 3

प्रश्न 32. भारत में वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- AQI की गणना राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता निगरानी कार्यक्रम (NAMP) के अंतर्गत निगरानी किए जाने वाले आठ प्रदूषकों के आधार पर की जाती है।
- केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) भारत में AQI डेटा की गणना और प्रसार के लिए उत्तरदायी नोडल एजेंसी है।
- AQI पैमाने में, उच्च संख्यात्मक मान बेहतर वायु गुणवत्ता का संकेत देता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- केवल 1 और 2
- केवल 2
- केवल 1 और 3
- 1, 2 और 3

प्रश्न 33. महत्त्वपूर्ण खनिज (क्रिटिकल मिनरल्स) संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

- महत्त्वपूर्ण खनिज वे हैं, जो आर्थिक विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं, और जिनकी आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित होने के प्रति संवेदनशील हैं।
- भारत की महत्त्वपूर्ण खनिज सूची (2023) में 30 खनिज सम्मिलित हैं, जिन्हें खान मंत्रालय द्वारा पहचाना गया है।
- लिथियम, कोबाल्ट और निकल उन प्रमुख महत्त्वपूर्ण खनिज में से हैं जिनका उपयोग स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों जैसे कि (EV) बैटरी और सौर पैनलों में किया जाता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- केवल 1 और 2
- केवल 2 और 3
- केवल 1 और 3
- 1, 2 और 3

प्रश्न 34. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) विस्तारित निधि सुविधा (EFF) उन देशों की सहायता के लिए निर्मित है जो संरचनात्मक कमजोरियों के कारण गंभीर मध्यम अवधि की भुगतान संतुलन समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

कथन 2: विस्तारित निधि सुविधा (EFF) ऋण आमतौर पर कम शर्तों के साथ अल्पकालिक होते हैं और इनका उद्देश्य त्वरित संकट प्रतिक्रिया है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 35. भारत की निवेश दर के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: भारत को लगभग 7% की वार्षिक आर्थिक विकास दर बनाए रखने के लिए अपनी निवेश दर को GDP के लगभग 34-35% तक बढ़ाने की आवश्यकता है।

कथन 2: उच्च निवेश दर से अधिक पूंजी निर्माण होता है, जो अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता को बढ़ाता है।

कथन 3: बढ़ा हुआ निवेश तकनीकी उन्नयन और रोजगार सृजन को बढ़ावा देता है, जो दोनों निरंतर आर्थिक विकास में योगदान करते हैं।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- सभी तीनों कथन सही हैं, और कथन 2 तथा 3 मिलकर कथन 1 की व्याख्या करते हैं।
- सभी तीनों कथन सही हैं, किंतु कथन 2 और 3 कथन 1 की व्याख्या नहीं करते हैं।
- कथन 1 और कथन 2 सही हैं, किंतु कथन 3 गलत है।
- कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 और 3 गलत हैं।

प्रश्न 36. एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (APEC) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- APEC एक क्षेत्रीय मंच है, जिसकी स्थापना 1967 में एशिया-प्रशांत क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाओं के मध्य मुक्त व्यापार और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए की गई थी।
- भारत APEC का पूर्ण सदस्य है और इसने एक बार APEC शिखर सम्मेलन की मेजबानी की है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- केवल 1
- केवल 2
- 1 और 2 दोनों
- न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 37. शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SCI) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

- शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SCI) पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के अंतर्गत एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है।
- इसकी स्थापना 1961 में 'ईस्टर्न शिपिंग कॉर्पोरेशन' और 'वेस्टर्न शिपिंग कॉर्पोरेशन' के विलय के माध्यम से हुई थी।
- शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SCI) को 'नवरत्न' का दर्जा दिया गया था, जिससे इसे अधिक वित्तीय और परिचालन स्वायत्तता प्राप्त हुई।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- केवल 1 और 2
- केवल 2 और 3

- (c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

प्रश्न 38. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: 1991 के LPG सुधारों को भुगतान संतुलन के संकट से निपटने के लिए पेश किया गया था।

कथन 2: ये सुधार नरसिम्हा समिति की सिफारिशों द्वारा निर्देशित थे।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
(b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
(d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 39. हाल ही में भूकंप के कारण चर्चा में रहे नेग्रोस द्वीप के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नेग्रोस द्वीप फिलीपींस द्वीपसमूह में स्थित है और प्रशांत महासागरीय रिंग ऑफ फायर के भीतर स्थित है।
2. यह द्वीप मुख्य रूप से ज्वालामुखीय मूल का है और इसमें कई सक्रिय तथा सुप्त ज्वालामुखी हैं।
3. यह सेबू द्वीप से तानोन जलडमरूमध्य द्वारा अलग होता है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

प्रश्न 40. भारत में यूरिया के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यूरिया एकमात्र नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक है जो पोषक तत्व आधारित सब्सिडी (NBS) योजना के अंतर्गत नहीं आता है।
2. यूरिया का नीम-लेपन इसके विचलन (diversion) को कम करने में मदद करता है और नाइट्रोजन-उपयोग दक्षता में सुधार करता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 41. प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव (इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग - IPO) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. IPO का तात्पर्य किसी निजी कंपनी द्वारा जनता को शेयरों की पहली बिक्री से है।
2. भारत में IPO को भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) द्वारा विनियमित किया जाता है।
3. IPO के बाद, कंपनी के शेयरों का कारोबार NSE (नेशनल स्टॉक एक्सचेंज) और BSE (बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज) जैसे स्टॉक एक्सचेंजों पर किया जा सकता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

प्रश्न 42. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: UNFCCC का उद्देश्य वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों की सांद्रता को उस स्तर पर स्थिर करना है जो जलवायु प्रणाली के साथ खतरनाक मानवीय हस्तक्षेप को रोक सके।

कथन 2: UNFCCC के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता के लिए इसके ढांचे के अंतर्गत क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौते को अपनाया गया था।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
(b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
(d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 43. एचआईवी (HIV) और मानव प्रतिरक्षा प्रणाली पर इसके प्रभाव के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एचआईवी मुख्य रूप से मैक्रोफेज को संक्रमित और नष्ट करता है, जो मानव शरीर में प्रतिरक्षी उत्पादन के लिए उत्तरदायी होते हैं।
2. (CD4 T-lymphocytes) में क्रमिक गिरावट शरीर की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को कमजोर कर देती है, जिससे यह अवसरवादी संक्रमणों के प्रति संवेदनशील हो जाती है।
3. एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (ART) रक्तप्रवाह में मौजूद एचआईवी को सीधे मारकर कार्य करती है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2
(c) केवल 1 और 3
(d) केवल 2 और 3

प्रश्न 44. मौद्रिक नीति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: जब मुद्रास्फीति लक्ष्य सीमा से ऊपर बढ़ जाती है, तब भारतीय रिज़र्व बैंक एक कठोर मौद्रिक नीति का रुख अपनाता है।

कथन 2: एक कठोर मौद्रिक नीति अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति और ऋण उपलब्धता को कम करती है, जिससे मुद्रास्फीति के दबाव को नियंत्रित किया जा सकता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
(b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, किंतु कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं है।
(c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
(d) कथन 1 गलत है, किंतु कथन 2 सही है।

प्रश्न 45. "पिग बुचरिंग" (PIG BUTCHERING) घोटालों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. "पिग बुचरिंग" साइबर धोखाधड़ी का एक रूप है जो निवेश और रोमांस घोटालों के तत्वों को जोड़ता है।
2. यह शब्द भावनात्मक या आर्थिक रूप से पीड़ितों का शोषण करने से पहले उन्हें "मोटा" करने के अभ्यास से आता है।
3. इसके शिकार मुख्य रूप से सरकारी अधिकारी होते हैं।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 46. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: राज्य विधानसभा में सीटों की कुल संख्या उस राज्य की जनसंख्या द्वारा निर्धारित की जाती है।

कथन 2: भारत का संविधान यह प्रावधान करता है कि विधानसभा की अधिकतम संख्या 500 से अधिक नहीं होगी और न्यूनतम 60 सदस्यों से कम नहीं होगी।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 47. निम्नलिखित में से कौन सी प्रौद्योगिकियां सामान्यतः जलवायु नवाचार और स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण से जुड़ी हैं?

1. कार्बन कैप्चर एंड स्टोरेज (CCS)
2. ग्रीन हाइड्रोजन
3. डायरेक्ट एयर कैप्चर
4. हाइड्रोलिक फ्रैक्चरिंग

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1, 2 और 3
- (c) केवल 2, 3 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

प्रश्न 48. संयुक्त राज्य अमेरिका के शेल तेल उद्योग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. शेल ऑयल निष्कर्षण में हाइड्रोलिक फ्रैक्चरिंग और क्षैतिज ड्रिलिंग की प्रक्रिया सम्मिलित है।
2. जब कच्चे तेल की कीमतें उच्च होती हैं, तब शेल तेल उद्योग अधिक लाभदायक हो जाता है।
3. रूस के तेल पर अमेरिकी प्रतिबंधों ने शेल तेल निष्कर्षण को आर्थिक रूप से अव्यवहार्य बना दिया है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 49. मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?

1. इसने सड़क अनुशासन को बढ़ावा देने के लिए यातायात उल्लंघन हेतु उच्च दंड की शुरुआत की।
2. इसने यातायात कानूनों की इलेक्ट्रॉनिक निगरानी और प्रवर्तन के प्रावधान निर्मित किए।
3. इसने सार्वजनिक अनुपालन को आसान बनाने के लिए मामूली अपराधों हेतु दंड कम कर दिया।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 50. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: यू.एस. प्रतिनिधि सभा संयुक्त राज्य कांग्रेस का निचला सदन है, जिसमें प्रतिनिधित्व प्रत्येक राज्य की जनसंख्या पर आधारित होता है।

कथन 2: यह संरचना नागरिकों के समानुपातिक प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करती है, जिससे बड़े राज्यों को विधायी निर्णयों में अधिक प्रभाव प्राप्त होता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 51. लोकसभा चुनावों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा सही नहीं है?

- (a) चुनाव सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर आयोजित किए जाते हैं।
- (b) प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र लोकसभा के लिए एक सदस्य का चुनाव करता है।
- (c) राष्ट्रपति अपना कार्यकाल पूर्ण होने से पूर्व लोकसभा को भंग कर सकते हैं।
- (d) राज्यसभा लोकसभा चुनावों के संचालन का पर्यवेक्षण करती है।

प्रश्न 52 कुशल भारत मिशन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के अंतर्गत एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी है।
2. कुशल भारत मिशन का लक्ष्य 2022 तक 400 मिलियन से अधिक लोगों को विभिन्न कौशल में प्रशिक्षित करना है।
3. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) सीधे राज्य कौशल विकास मिशनों द्वारा कार्यान्वित की जाती है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 53. 'स्वस्थ, संधारणीय और न्यायसंगत खाद्य प्रणालियों पर ईएटी-लांसेट आयोग' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. आयोग इस बात पर प्रकाश डालता है कि वर्तमान खाद्य प्रणालियाँ छह में से पांच ग्रहीय सीमाओं के उल्लंघन के लिए उत्तरदायी हैं।
2. यह पाता है कि पशु-आधारित खाद्य पदार्थ कृषि ग्रीनहाउस-गैस उत्सर्जन में सबसे अधिक योगदान देते हैं, जबकि अनाज नाइट्रोजन और जल के उपयोग में प्रमुख स्थान रखते हैं।
3. यह पृथ्वी के स्वास्थ्य में सुधार के लिए केवल कृषि उत्पादकता पर ध्यान केंद्रित करने की सिफारिश करता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 54. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: सारोगेसी (विनियमन) अधिनियम, 2021 भारत में केवल परोपकारी सारोगेसी की अनुमति देता है और व्यावसायिक सारोगेसी को प्रतिबंधित करता है।

कथन 2: यह अधिनियम रिप्रोडक्टिव टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए (NRIs) और विदेशी नागरिकों सहित केवल भारतीय जोड़ों को सारोगेसी कराने की अनुमति देता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 55. विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

- (a) यह प्रतिवर्ष संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) द्वारा प्रकाशित की जाती है।
- (b) यह मुख्य रूप से सैन्य शक्ति और राजनीतिक स्थिरता के आधार पर देशों को रैंक प्रदान करती है।
- (c) यह संधारणीय विकास समाधान नेटवर्क (SDSN) द्वारा आय, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता और सामाजिक समर्थन जैसे कारकों का उपयोग करके जारी की जाती है।
- (d) यह केवल प्रति व्यक्ति जीडीपी के माध्यम से प्रसन्नता को मापती है।

प्रश्न 56. संविधान के अनुच्छेद 22 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह नागरिकों और गैर-नागरिकों दोनों को मनमानी गिरफ्तारी और निरोध के विरुद्ध संरक्षण प्रदान करता है।
2. उच्चतम न्यायालय ने यह अनिवार्य किया है कि सभी अपराधों के लिए गिरफ्तारी के कारणों को अभिलिखित किया जाना चाहिए।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 57. मुख्यमंत्री और राज्यपाल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. मुख्यमंत्री राज्य का वास्तविक कार्यकारी प्रमुख होता है, जबकि राज्यपाल संवैधानिक प्रमुख होता है।
2. मुख्यमंत्री मंत्रिपरिषद का नेतृत्व करता है, जिसकी सलाह अनुच्छेद 163 के अंतर्गत राज्यपाल के लिए बाध्यकारी होती है (विवेकाधीन मामलों को छोड़कर)।
3. मुख्यमंत्री मंत्रियों के मध्य विभागों के आवंटन का निर्धारण करता है और राज्यपाल को उनकी नियुक्ति या बर्खास्तगी की सिफारिश कर सकता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 58. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: राज्य विधानसभा का सामान्य कार्यकाल इसकी पहली बैठक की तिथि से पांच वर्ष का होता है।

कथन 2: राज्य का राज्यपाल राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान विधानसभा के कार्यकाल को एक बार में एक वर्ष के लिए बढ़ा सकता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 59. चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (QUAD) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसमें भारत, जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया सम्मिलित हैं।
2. QUAD का प्राथमिक उद्देश्य सदस्य देशों के मध्य आर्थिक सहयोग है।
3. QUAD मालाबार अभ्यास के ढांचे के अंतर्गत संयुक्त सैन्य अभ्यास आयोजित करता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 60. अंतर-विश्वविद्यालय खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी केंद्र (IUCAA) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान है।
2. यह पुणे, महाराष्ट्र में स्थित है।
3. यह विश्वविद्यालय के छात्रों के मध्य खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी में अनुसंधान तथा प्रशिक्षण को बढ़ावा देता है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 61. वन्यजीवों और वनस्पतियों की संकटग्रस्त प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. CITES एक कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय समझौता है जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि वन्य जीवों और पौधों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से उनके अस्तित्व को कोई संकट न हो।
2. यह प्रजातियों को उनके आवश्यक संरक्षण की मात्रा के आधार पर तीन परिशिष्टों में वर्गीकृत करता है।
3. CITES का सचिवालय संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) द्वारा प्रशासित किया जाता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 62. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: प्रधानमंत्री को सदेव लोकसभा का सदस्य होना चाहिए।

कथन 2: वह व्यक्ति जो संसद के किसी भी सदन का सदस्य नहीं है, उसे प्रधानमंत्री नियुक्त किया जा सकता है, किंतु उसे छह महीने के भीतर किसी भी सदन के लिए निर्वाचित होना अनिवार्य है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 63. आयनी एयरबेस के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. आयनी एयरबेस ताजिकिस्तान में स्थित है और भारत की सहायता से इसका नवीनीकरण किया गया है।
- 2. यह मध्य एशिया को पाकिस्तान से जोड़ने वाले वखान कॉरिडोर तक सामरिक पहुँच प्रदान करता है।
- 3. इस एयरबेस का संचालन संयुक्त रूप से भारत, रूस और ताजिकिस्तान द्वारा किया जाता है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 64. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) स्वरूपों की तीव्र तैनाती से जुड़ी चिंता निम्नलिखित में से कौन सी है?

- 1. डेटा गोपनीयता और सुरक्षा
- 2. एल्गोरिदम संबंधी पक्षपात
- 3. निर्णय लेने में स्पष्टीकरण की क्षमता का अभाव

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) 1, 2 और 3
- (d) केवल 1

प्रश्न 65. जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

- 1. इसे 1992 में रियो डी जनेरियो में पृथ्वी शिखर सम्मेलन में अपनाया गया था।
- 2. यह एक कानूनी रूप से बाध्यकारी संधि है जो सभी सदस्य देशों के लिए विशिष्ट उत्सर्जन कटौती लक्ष्य निर्धारित करती है।
- 3. (UNFCCC) क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौते जैसे समझौतों पर बातचीत के लिए रूपरेखा प्रदान करता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3

- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 66. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) की स्थापना 1948 में संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत अपनाए गए एक सम्मेलन द्वारा की गई थी और यह 1959 में कार्यशील हुआ।

कथन 2: IMO की प्राथमिक भूमिका वैश्विक सम्मेलनों के माध्यम से नागरिक उड्डयन मानकों और हवाई नेविगेशन सुरक्षा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 67. हानि और क्षति कोष (लॉस एंड डैमेज फण्ड) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. इस पर औपचारिक रूप से शर्म अल-शेख, मिस्र में आयोजित 27वें पक्षकारों के सम्मेलन (COP27) के दौरान सहमति बनी थी।
- 2. इस कोष का उद्देश्य उन देशों की सहायता करना है जो जलवायु परिवर्तन के अपरिवर्तनीय प्रभावों का सामना कर रहे हैं जिन्हें कम या अनुकूलित नहीं किया जा सकता है।
- 3. इसका प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा किया जाता है।
- 4. यह कोष विकासशील देशों को ऋण नहीं बल्कि अनुदान प्रदान करेगा।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1, 2 और 4
- (d) केवल 1, 3 और 4

प्रश्न 68. चीन द्वारा प्रस्तावित 'विश्व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सहयोग संगठन' (WAICO) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. WAICO का प्रस्ताव 2025 में शंघाई में आयोजित विश्व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सम्मेलन WAIC के दौरान दिया गया था।
- 2. इसका उद्देश्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में वैश्विक सहयोग, मानक-निर्धारण और समावेशी विकास को बढ़ावा देना है।
- 3. संगठन का मुख्यालय शंघाई, चीन में प्रस्तावित किया गया है।
- 4. WAICO संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत एक विशिष्ट एजेंसी के रूप में कार्य करेगा।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 2, 3 और 4
- (c) केवल 1 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

प्रश्न 69. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

- 1. इसकी स्थापना 1919 में वर्साय की संधि के भाग के रूप में की गई थी जिसने प्रथम विश्व युद्ध को समाप्त किया था।
- 2. यह 1946 में संयुक्त राष्ट्र की पहली विशिष्ट एजेंसी बना।

3. इसका मुख्यालय पेरिस, फ्रांस में स्थित है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 70. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: कर्मचारी राज्य बीमा (ESI) अधिनियम, 1948 को बीमारी, प्रसूति और रोजगार की चोट के मामले में श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा लाभ प्रदान करने के लिए अधिनियमित किया गया था।

कथन 2: कर्मचारी राज्य बीमा (ESI) योजना अनिवार्य और अंशदायी सामाजिक बीमा के सिद्धांत पर आधारित है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 71. हाल ही में समाचारों में उल्लिखित "K4" संदर्भित करता है:

- (a) भूटान के चौथे राजा जिन्होंने भारत-भूटान संबंधों को सुदृढ़ किया
- (b) भारत और भूटान द्वारा संयुक्त रूप से विकसित एक जलविद्युत परियोजना
- (c) DRDO द्वारा विकसित एक बैलिस्टिक मिसाइल
- (d) एक ट्रांस-हिमालयी व्यापार गलियारा

प्रश्न 72. पशु व्यवहार और प्रबंधन के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- 1. नसबंदी और टीकाकरण सड़क के कुत्तों की जनसंख्या नियंत्रण के लिए अनुशंसित वैज्ञानिक तरीके हैं।
- 2. आवारा कुत्तों की आबादी के प्रबंधन के लिए 'कलिंग' सबसे प्रभावी दीर्घकालिक तरीका है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 73. निम्नलिखित में से कौन सा संरक्षित क्षेत्र 'पामेड़ वन्यजीव अभयारण्य' के सबसे निकट स्थित है?

- (a) कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान
- (b) उदंती वन्यजीव अभयारण्य
- (c) अचानकमार टाइगर रिजर्व
- (d) बारनवापारा वन्यजीव अभयारण्य

प्रश्न 74. वैश्विक भू-राजनीति में "G2" की अवधारणा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. G2 का विचार संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के मध्य प्रमुख वैश्विक मुद्दों को संयुक्त रूप से प्रबंधित करने के लिए एक प्रस्तावित रणनीतिक साझेदारी को संदर्भित करता है।
- 2. यह अवधारणा वैश्विक वित्तीय शासन, जलवायु वार्ता और रणनीतिक स्थिरता पर चर्चा के दौरान प्रमुखता से उभरी।
- 3. भारत G2 समूह का एक संस्थापक सदस्य है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने गलत हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

प्रश्न 75. केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा पारित संकल्पों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

- 1. कैबिनेट संकल्पों को कार्यान्वयन से पूर्व अनिवार्य अनुमोदन के लिए संसद के समक्ष रखा जाता है।
- 2. केंद्रीय मंत्रिमंडल भारत सरकार द्वारा हस्ताक्षरित होने से पूर्व अंतर्राष्ट्रीय संधियों और समझौतों को मंजूरी देने के लिए संकल्प पारित कर सकता है।
- 3. कैबिनेट द्वारा पारित संकल्प भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों पर बाध्यकारी होते हैं।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: किसी राज्य का राज्यपाल राज्य विधानसभा के चुनाव का कार्यक्रम और संचालन तय करता है।

कथन 2: राज्य विधानसभा का कार्यकाल इसकी पहली बैठक की तिथि से पांच वर्ष का होता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 77. भारत के संविधान के अनुच्छेद 32 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

- 1. यह व्यक्तियों को मौलिक अधिकारों के प्रवर्तन हेतु उच्चतम न्यायालय जाने का अधिकार देता है।
- 2. यह उच्चतम न्यायालय को बंदी प्रत्यक्षीकरण, परमादेश, प्रतिषेध, उत्प्रेषण और अधिकार-पृच्छा जैसे रिट जारी करने का अधिकार देता है।
- 3. इसे केवल अनुच्छेद 352 के अंतर्गत घोषित राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान ही निलंबित किया जा सकता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 78. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: बुकर पुरस्कार प्रतिवर्ष अंग्रेजी भाषा में लिखे गए और यूनाइटेड किंगडम या आयरलैंड में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ मूल उपन्यास के लिए दिया जाता है।

कथन 2: 2014 में पात्रता मानदंडों का विस्तार किया गया, ताकि किसी भी राष्ट्रीयता के लेखकों को अनुमति दी जा सके, बशर्ते उनका कार्य यूके में प्रकाशित हो और अंग्रेजी में लिखा गया हो।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 79. भारत में क्रिप्टोकॉर्सेसी उद्योग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- भारत में क्रिप्टोकॉर्सेसी उद्योग के तेजी से बढ़ने की आशा है, जो 2035 तक 15 बिलियन डॉलर के बाजार आकार तक पहुँच जाएगा।
- भारत में क्रिप्टो उद्योग के लिए विनियामक ढांचा और सुरक्षा उपाय सुदृढ़ और सुस्थापित हैं, जो वित्तीय अपराधों के जोखिम को न्यूनतम करते हैं।
- डेटा का प्रकटीकरण, कानूनी बाधाएं और संपत्तियों की जल्दी जैसी चुनौतियां क्रिप्टो मामलों में कानून प्रवर्तन जांच को जटिल बनाती हैं।
- पंप-एंड-डंप योजनाएं और नकली सिक्कों को लॉन्च करना, भारतीय क्रिप्टो बाजार में धोखाधड़ी के सामान्य तरीकों में से हैं।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- केवल 1 और 2
- केवल 2 और 3
- केवल 1, 3 और 4
- 1, 2, 3 और 4

प्रश्न 80. शहरी शासन में भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) द्वारा हाल की पहलों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- सीएजी 101 प्रमुख शहरों में "जीवन की सुगमता" का आकलन करने हेतु एक लेखांकन कर रहा है, जो बुनियादी ढांचे, पर्यावरणीय स्थिरता और स्थानीय आर्थिक विकास जैसे नागरिक-केंद्रित आयामों पर केंद्रित है।
- लेखांकन अपना आकलन केवल भौतिक बुनियादी ढांचे के मापदंडों तक सीमित रखेगा, जिसमें रोजगार, शिकायत निवारण या बुनियादी साक्षरता जैसे पहलुओं की जांच नहीं की जाएगी।
- यह पहल पहली बार है, जब सीएजी ने शहरी लेखांकन को अनुमानित जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के साथ जोड़ा है, जैसे कि 2047 तक आधी से अधिक जनसंख्या का शहरी क्षेत्रों में निवास करना।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- केवल 1 और 3
- केवल 2 और 3
- केवल 1
- 1, 2 और 3

प्रश्न 81. भारत में पश्च-प्रभावी पर्यावरणीय मंजूरी (Post-Facto Environmental Clearance) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- उच्चतम न्यायालय द्वारा मई 2024 के 'वनशक्ति' निर्णय को हाल ही में वापस लेना, पश्च-प्रभावी पर्यावरणीय मंजूरी व्यवस्था के समर्थन के समान है।
- पश्च-प्रभावी मंजूरी उन परियोजनाओं को नियमित करने का प्रयास करती है जिन्होंने पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) अधिसूचना,

2006 के अंतर्गत पूर्व पर्यावरणीय मंजूरी प्राप्त किए बिना परिचालन शुरू कर दिया था।

- 2017 की MoEFCC अधिसूचना और 2021 की मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) ने पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) ढांचे के अंतर्गत उल्लंघन के मामलों के प्रसंस्करण हेतु एक तंत्र प्रदान किया।

निम्नलिखित में से कितने कथन सही हैं?

- केवल एक
- केवल दो
- सभी तीन
- कोई नहीं

प्रश्न 82. प्रायः समाचारों में चर्चित रहा 'सर क्रीक' भारत और पाकिस्तान के मध्य एक विवादित क्षेत्र है, जो निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में स्थित है?

- गुजरात तट के साथ कच्छ के रण क्षेत्र में
- सिंध-पंजाब सीमा के निकट सिंधु नदी डेल्टा में
- काराकोरम श्रेणी में शक्सगाम घाटी में
- जम्मू और कश्मीर में (LoC) के साथ पीर पंजाल श्रेणी में

प्रश्न 83. पीएम-किसान PM-KISAN के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

- PM-KISAN सभी पात्र किसान परिवारों को प्रति वर्ष ₹6,000 की आय सहायता प्रदान करता है, जिसका भुगतान तीन समान किश्तों में किया जाता है।
- यह योजना पूरी तरह से भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित है।
- बटाईदार किसान PM-KISAN के अंतर्गत लाभ के लिए स्वतः पात्र हैं।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- केवल 1 और 2
- केवल 2 और 3
- केवल 1 और 3
- 1, 2 और 3

प्रश्न 84. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) भारत में राष्ट्रीय जलमार्गों के नियमन और विकास के लिए उत्तरदायी है।

कथन 2: भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) की स्थापना 1986 में भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण अधिनियम के अंतर्गत की गई थी।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 85. संसद द्वारा पारित विधेयकों के संबंध में भारत के राष्ट्रपति के विषय में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

- राष्ट्रपति एक गैर-धन विधेयक को संसद के पुनर्विचार के लिए एक बार वापस कर सकता है।
- राष्ट्रपति संविधान संशोधन विधेयक पर सहमति देने के लिए बाध्य है; वह इसे वापस नहीं कर सकता/सकती।
- राष्ट्रपति धन विधेयक को वापस भेज सकता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 86 निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: राज्यपाल के पास राज्य में राष्ट्रपति शासन की सिफारिश करने की विवेकाधीन शक्ति होती है।

कथन 2: ऐसी रिपोर्ट भेजते समय राज्यपाल केवल मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर कार्य करता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 87. भारत में वामपंथी उग्रवाद (LWE) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत सरकार एलडब्ल्यूई से सबसे अधिक प्रभावित जिलों में आवश्यक बुनियादी ढांचे की कमी को दूर करने के लिए विशेष केंद्रीय सहायता (एससीए) योजना लागू करती है।
2. वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित जिलों की संख्या एक दशक पहले के 100 से घटकर हाल के वर्षों में लगभग 11 रह गई है।
3. 2004 में गठित सीपीआई (माओवादी) का गठन पीपुल्स वॉर ग्रुप और माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर के विलय से हुआ था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

प्रश्न 88. तलाक-ए-हसन की प्रथा पर उच्चतम न्यायालय की हालिया टिप्पणियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उच्चतम न्यायालय ने संकेत दिया कि इस मुद्दे को संविधान पीठ को भेजा जा सकता है, क्योंकि इसमें बड़े पैमाने पर समाज को प्रभावित करने वाले प्रश्न सम्मिलित हैं।
2. तलाक-ए-हसन के अंतर्गत, पति द्वारा एक ही साथ में तीन बार "तलाक" बोलने के तुरंत बाद तलाक अंतिम हो जाता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 89. COP-30 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. COP-30 दक्षिण अमेरिका में आयोजित होने वाला पहला संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन है।
2. ब्राजील 2025 वर्ष के लिए COP-30 की अध्यक्षता करेगा।
3. COP-30 से आशा है कि वह देशों को 1.5°C लक्ष्य के अनुरूप अधिक महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 90. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: अनुच्छेद 142 के अंतर्गत, उच्चतम न्यायालय अपने समक्ष किसी मामले में पूर्ण न्याय सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कोई भी आदेश पारित कर सकता है।

कथन 2: अनुच्छेद 143 के अंतर्गत एक राष्ट्रपति संदर्भ उच्चतम न्यायालय को सलाहकार राय जारी करने की अनुमति देता है, जो सरकार पर बाध्यकारी होती है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 91. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: महान्यायवादी (अटॉर्नी जनरल) भारत का सर्वोच्च कानून अधिकारी होता है, जिसकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।

कथन II: संविधान द्वारा महान्यायवादी का कार्यकाल पांच वर्ष के लिए निश्चित किया गया है।

कथन III: महान्यायवादी एक पूर्णकालिक सरकारी कर्मचारी है, जो निजी कानूनी अभ्यास नहीं कर सकता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन II और कथन III दोनों सही हैं और वे दोनों कथन I की व्याख्या करते हैं।
- (b) कथन II और कथन III दोनों सही हैं किंतु उनमें से केवल एक ही कथन I की व्याख्या करता है।
- (c) कथन II और III में से केवल एक ही सही है और वह कथन I की व्याख्या करता है।
- (d) न तो कथन II और न ही कथन III सही है।

प्रश्न 92. भारत में नदी प्रदूषण की निगरानी के लिए संस्थागत तंत्र के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) प्रदूषित नदी खंडों की संयुक्त निगरानी के लिए राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों के साथ समन्वय करने हेतु सशक्त है।
2. स्वच्छ गंगा के लिए राष्ट्रीय मिशन (NMCG) राष्ट्रीय गंगा परिषद की कार्यान्वयन शाखा के रूप में कार्य करता है और इसे राष्ट्रीय हरित अधिकरण NGA द्वारा सुधारात्मक उपाय करने के लिए निर्देशित किया जा सकता है।
3. राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड केंद्रीय एजेंसियों को प्रमुख नालों और सहायक नदियों के नियमित जल गुणवत्ता डेटा जमा करने के लिए उत्तरदायी हैं।

निम्नलिखित में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

प्रश्न 93. भारत में प्रजाति संरक्षण के संदर्भ में, निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

1. चीता को IUCN रेड लिस्ट में 'संवेदनशील' (Vulnerable) के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।
2. भारत में 'प्रोजेक्ट चीता' ऐतिहासिक आवासों में अफ्रीकी चीतों को पुनः लाने पर केंद्रित है।
3. वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के अंतर्गत केवल केंद्र सरकार ही किसी प्रजाति को 'संकटग्रस्त' (Endangered) घोषित कर सकती है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 94. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: उच्चतम न्यायालय ने हाल ही में कहा कि विधेयकों पर कार्रवाई करने के लिए राज्यपाल या राष्ट्रपति हेतु सख्त समय-सीमा निर्धारित करना संविधान के अंतर्गत शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत का उल्लंघन होगा।

कथन II: अनुच्छेद 200 के अंतर्गत, एक राज्यपाल विधेयक में अनिश्चित काल तक देरी नहीं कर सकता है, और सहमति को लंबे समय तक, अस्पष्ट और अनिश्चित काल तक रोकने के मामलों में उच्चतम न्यायालय हस्तक्षेप कर सकता है।

कथन III: संविधान स्पष्ट रूप से एक निश्चित समय-सीमा प्रदान करता है जिसके भीतर राज्यपाल या राष्ट्रपति को राज्य विधायिका द्वारा पारित विधेयकों पर निर्णय लेना चाहिए।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन II और कथन III दोनों सही हैं और वे दोनों कथन I की व्याख्या करते हैं।
- (b) कथन II और कथन III दोनों सही हैं किंतु उनमें से केवल एक ही कथन I की व्याख्या करता है।
- (c) कथन II और III में से केवल एक ही सही है और वह कथन I की व्याख्या करता है।
- (d) न तो कथन II और न ही कथन III सही है।

प्रश्न 95. संविधान के अनुच्छेद 200 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:

1. राज्यपाल किसी विधेयक पर सहमति दे सकता है, सहमति रोक सकता है, या पुनर्विचार के लिए राज्य विधायिका को विधेयक (धन विधेयक के अतिरिक्त) वापस कर सकता है।
2. राज्यपाल किसी विधेयक को राष्ट्रपति के विचारार्थ सुरक्षित रख सकता है।
3. जब विधेयक पर पुनर्विचार किया जाता है और विधायिका द्वारा इसे पुनः पारित किया जाता है, तो राज्यपाल सहमति देने के लिए संवैधानिक रूप से बाध्य होता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 96. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: लोक स्वास्थ्य और स्वच्छता संविधान की राज्य सूची के अंतर्गत एक विषय है।

कथन 2: राज्यों के पास सार्वजनिक स्वास्थ्य मामलों पर कानून बनाने की विशेष शक्ति है जब तक कि संविधान अन्यथा प्रावधान न करे।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) कथन 1 सही है, किंतु कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 2 सही है, किंतु कथन 1 गलत है।

प्रश्न 97. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: शंघाई सहयोग संगठन (SCO) का निर्माण क्षेत्रीय सुरक्षा और सहयोग बढ़ाने के लिए किया गया था।

कथन II: SCO का विकास 1996 में गठित 'शंघाई फाइव' से हुआ था।

कथन III: उज्बेकिस्तान मूल 'शंघाई फाइव' का सदस्य था।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन II और कथन III दोनों सही हैं और वे दोनों कथन I की व्याख्या करते हैं।
- (b) कथन II और कथन III दोनों सही हैं किंतु उनमें से केवल एक ही कथन I की व्याख्या करता है।
- (c) कथन II और III में से केवल एक ही सही है और वह कथन I की व्याख्या करता है।
- (d) न तो कथन II और न ही कथन III सही है।

प्रश्न 98. भारत में हाल ही में कार्यान्वित श्रम संहिताओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. चार श्रम संहिताएं पारिश्रमिक, औद्योगिक संबंध, सामाजिक सुरक्षा और व्यावसायिक सुरक्षा से संबंधित सभी केंद्रीय श्रम कानूनों को समेकित करती हैं।
2. इन सुधारों के अंतर्गत पहली बार गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों के अधीन सम्मिलित किया गया है।
3. श्रम संहिताओं का कार्यान्वयन और प्रवर्तन पूरी तरह से केंद्र सरकार का उत्तरदायित्व है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 99. दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 20वें G20 शिखर सम्मेलन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह पहली बार है जब अफ्रीकी महाद्वीप पर G20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी की जा रही है।
2. दक्षिण अफ्रीकी अध्यक्षता विकास के मुद्दों, ऋण स्थिरता, आपदा सहिष्णुता, न्यायसंगत ऊर्जा संक्रमण के लिए वित्त और क्रिटिकल मिनिस्ट्रस के माध्यम से समावेशी विकास पर केंद्रित है।
3. शिखर सम्मेलन में भारत की भागीदारी 2023 उसकी G20 अध्यक्षता पर आधारित है, जो वैश्विक विकास, जलवायु कार्रवाई और 'ग्लोबल साउथ' के प्रतिनिधित्व जैसी पहलों को उजागर करती है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

प्रश्न 100. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: भारत में प्रथम निजी तौर पर निर्मित PSLV रॉकेट अंतरिक्ष क्षेत्र के व्यावसायीकरण में एक मील का पत्थर है।

कथन II: निजी कंसोर्टियम PSLV प्रक्षेपण यान का निर्माण करेगा, किंतु ISRO प्रारंभ में पेलोड प्रदान करेगा या उनका अनुबंध करेगा।

कथन III: निजी कंसोर्टियम पहले ही मिशन से स्वतंत्र रूप से PSLV लॉन्च का विपणन और शेड्यूलिंग करेगा।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प सही है?

- (a) कथन II और कथन III दोनों सही हैं और वे दोनों कथन I की व्याख्या करते हैं।
- (b) कथन II और कथन III दोनों सही हैं किंतु उनमें से केवल एक ही कथन I की व्याख्या करता है।
- (c) कथन II और III में से केवल एक ही सही है और वह कथन I की व्याख्या करता है।
- (d) न तो कथन II और न ही कथन III सही है।

उत्तर कुंजी

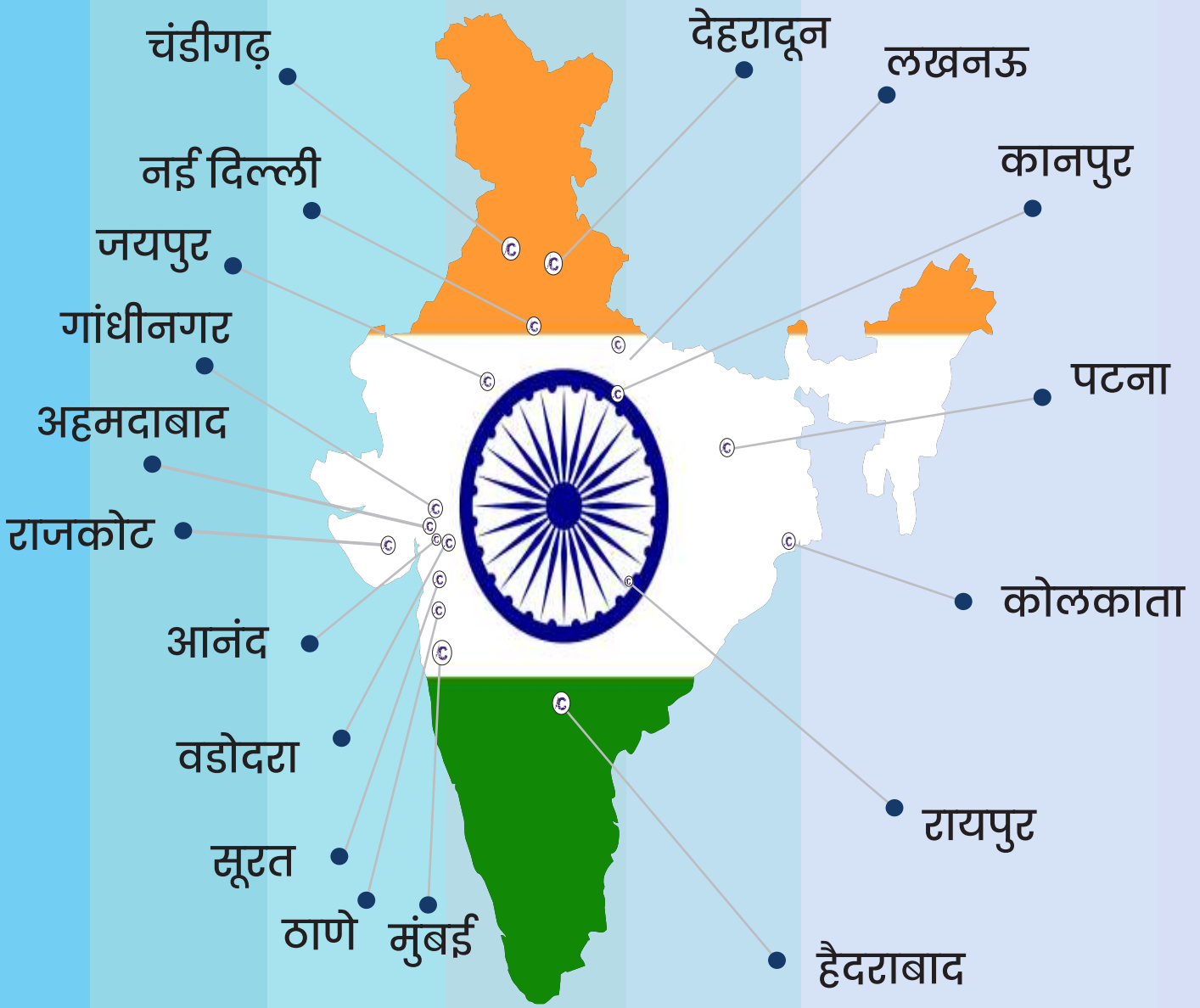
प्रश्न 1 - (b)	प्रश्न 11 - (a)	प्रश्न 21 - (a)	प्रश्न 31 - (d)	प्रश्न 41 - (d)	प्रश्न 51 - (d)	प्रश्न 61 - (d)	प्रश्न 71 - (c)	प्रश्न 81 - (b)	प्रश्न 91 - (c)
प्रश्न 2 - (a)	प्रश्न 12 - (d)	प्रश्न 22 - (a)	प्रश्न 32 - (a)	प्रश्न 42 - (a)	प्रश्न 52 - (a)	प्रश्न 62 - (d)	प्रश्न 72 - (a)	प्रश्न 82 - (a)	प्रश्न 92 - (c)
प्रश्न 3 - (a)	प्रश्न 13 - (a)	प्रश्न 23 - (b)	प्रश्न 33 - (d)	प्रश्न 43 - (b)	प्रश्न 53 - (a)	प्रश्न 63 - (a)	प्रश्न 73 - (b)	प्रश्न 83 - (a)	प्रश्न 93 - (b)
प्रश्न 4 - (c)	प्रश्न 14 - (a)	प्रश्न 24 - (a)	प्रश्न 34 - (c)	प्रश्न 44 - (a)	प्रश्न 54 - (c)	प्रश्न 64 - (c)	प्रश्न 74 - (a)	प्रश्न 84 - (b)	प्रश्न 94 - (c)
प्रश्न 5 - (a)	प्रश्न 15 - (a)	प्रश्न 25 - (c)	प्रश्न 35 - (a)	प्रश्न 45 - (a)	प्रश्न 55 - (c)	प्रश्न 65 - (c)	प्रश्न 75 - (b)	प्रश्न 85 - (a)	प्रश्न 95 - (a)
प्रश्न 6 - (b)	प्रश्न 16 - (b)	प्रश्न 26 - (a)	प्रश्न 36 - (a)	प्रश्न 46 - (a)	प्रश्न 56 - (c)	प्रश्न 66 - (c)	प्रश्न 76 - (d)	प्रश्न 86 - (c)	प्रश्न 96 - (a)
प्रश्न 7 - (d)	प्रश्न 17 - (a)	प्रश्न 27 - (c)	प्रश्न 37 - (d)	प्रश्न 47 - (b)	प्रश्न 57 - (d)	प्रश्न 67 - (c)	प्रश्न 77 - (a)	प्रश्न 87 - (c)	प्रश्न 97 - (c)
प्रश्न 8 - (a)	प्रश्न 18 - (a)	प्रश्न 28 - (c)	प्रश्न 38 - (b)	प्रश्न 48 - (a)	प्रश्न 58 - (c)	प्रश्न 68 - (a)	प्रश्न 78 - (b)	प्रश्न 88 - (a)	प्रश्न 98 - (a)
प्रश्न 9 - (a)	प्रश्न 19 - (a)	प्रश्न 29 - (a)	प्रश्न 39 - (d)	प्रश्न 49 - (a)	प्रश्न 59 - (a)	प्रश्न 69 - (a)	प्रश्न 79 - (c)	प्रश्न 89 - (b)	प्रश्न 99 - (c)
प्रश्न 10 - (b)	प्रश्न 20 - (b)	प्रश्न 30 - (a)	प्रश्न 40 - (c)	प्रश्न 50 - (a)	प्रश्न 60 - (b)	प्रश्न 70 - (a)	प्रश्न 80 - (a)	प्रश्न 90 - (c)	प्रश्न 100 - (c)



CHAHAL ACADEMY

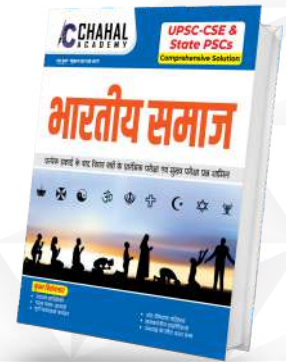
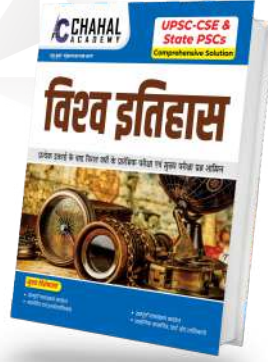
सिविल सेवा परीक्षाओं के लिए एक अग्रणी संस्थान

हमारी अखिल भारतीय स्तर पर अवस्थिति



चहल एकेडमी द्वारा ब्लू बुक सीरीज

हमारी "ब्लू बुक" सीरीज की पुस्तकें



किसी भी जानकारी या ऑर्डर करने के लिए  9205927650

 **CHAHAL ACADEMY**
(Chahal Academy Pvt. Ltd.)

www.chahalacademy.com
Follow Us    

MRP. ₹ 120.00